श्री

विविधपूजासंग्रह

भाग पहेलो.

श्रीवीरविजयादि पंडित विरचित भि
न्न भिन्न विधिरूप अनेक पूजाओनो
समुच्चय, तथा ते पूजाओ भणाव
वाना विधि विगेरे कटलीएक वा
तोना समावेश सहित.

स्वबुद्ध्यनुसार शोधन करीने
“ शा० आनंदजी खेतशीयें ”
श्री मोहमय्याख्य पत्तन मध्ये
निर्णयसागर प्रेसमा छपावी प्रसिद्ध कीधो छे

संवत् १९३६ शके १८०२ सने १८८०
चैत्र शुद्ध ३ चंद्रवासर.

॥ विज्ञप्तिः

आ " विविध जिनपूजा संग्रहाख्य " प्रथम भागनुं पुस्तक, मुद्रित करी प्रसिद्धतामां मूकतां म्हारी समग्र जैनधर्माग्रही सुज्ञ भाइउने प्रार्थनाछे के, आ ग्रंथ छापतां केटली एक अशुद्ध प्रतियो मलवाने लीधे कोइ ठेकाणे अशुद्धता रही गएली जणायछे जेमके, नंदीश्वरद्वीपनी पूजाना प्रारंभना दोहामां (समतशिखर ए पाचमो) ते स्थानकें (समेत शिखर ए पाचमें) तथा (रचुं पूजा हुं रसाल) ते स्थानकें (हुं रचुं पूजा रसाल) तथा (वाजशे मंगलतूर) ते स्थानके (वाजते मंगलतूर) एवा पाठ जोइता हता. तेमज चोशठ प्रकारी पूजामां तृतीयदिवसे अध्यापनीय पूजाष्टकनी प्रथम ढालनुं बीजुं पद, (तीर्थोदकनां जल मेलाय)ते स्थानके(तीर्थोदकना कलश मेलाय)एवो पाठ अर्थानुसंधानवालो तथा पुनरुक्तिदोष रहित भासेछे.

तेमज सकलचंदजी उपाध्यायकृत एकवीशप्रकारी पूजा तथा मेघराजमुनिकृत सत्तरभेदी पूजा विगेरे पूजाउनी घणी प्रतियो मेलवी परंतु तेमां प्राचीन लखेली प्रतियो म्हारा हस्तगत न थवाथी तथा म

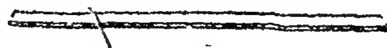
ह्मारी पोतानी अविछत्तायुक्त अल्पमतिना दोषथी त था दृष्टिदोषथी तथा कंपोसकारकनी चूकथी जे जे कांइ आ पुस्तकने विषे ह्रस्व, दीर्घ, कानो, मात्रा तथा न्यूनाधिक अक्षर विगेरेनी अशुद्धता, सद्धर्मानुयायी सुज्ञजनोने दृष्टिपथगत थाय, ते सर्व मने अनिपुण तथा अज्ञ जाणी गुण ग्रहण करी दोष त्यागीने वांचशो. एज परमार्थप्रचुरत्वपदप्राज्ञ जनोने मह्मारी सप्रणय पूर्ण प्रार्थनाछे.

देवपालकृत स्नात्रपूजानी केटली एक जोजकोना हाथनी लखेली प्रतियोमां देशकालनी अपेक्षायें अन्य मुनिरचित स्नात्रपूजाउना पाठ लेइ लेइने कोइमां दश, कोइमां नव, कोइमां आठ, कोइमां सात, कोइमां पांच कुसुमांजलि राखीछे परंतु प्रयासपूर्वक शोधन करतां पांच कुसुमांजलि,तत्कविकृत छे. एवो बोध थवाथी पांचज कुसुमांजलि एतद्ग्रंथगत करीछे. तथा श्री रूषजादिक तीर्थंकरोना जन्माजिषेक तथा विधिउ विगेरेमां पण पाठ फेरफार हता तथापि ते पुरातन लखेली प्रतियोने अनुसारें सुधारी आ पुस्तकप्राप्त कर्याछे. आ पुस्तकनो बीजो जाग छपीश तो तेमां सर्व पूजाउनुं महत्व मह्मारी प्रज्ञानुसारें सत्पुरुषोने निवेदन करीश.

॥ अनुक्रमणिका ॥

॥ ग्रंथकर्त्ता सहित ग्रंथोनां नाम. पृष्ठ.

॥ ग्रंथकर्त्ता सहित ग्रंथोना नाम. पृष्ठ.



॥ अथ पंमित श्रीदेवचंद्रजीकृत स्नात्रपूजाप्रारंनः ॥

(पांखडी गाथा) ॥ ढाल पहेली ॥

॥ चोतिसे अतिसय जुर्ज, वचनातिसय जुत्त; सो परमेसर देखि नवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

॥ सिंहासन बेठा जग नाण, देखि नविक जन गुण मणि खाण ॥ जे दीठे तुज निरमल नाण, लहिएं परम महोदय ठाण ॥ कुसुमांजलि मेहेलो आदि जिणंदा, तोरां चरणकमल सेवे चोसठ इंदा, ॥ कु० ॥ १ ॥ चोवीश वैरागी, चोवीश सोनागी, चोवीश जिणंदा ॥ कु० ॥ एमकही प्रनुना चरणे पूजा करीएं ॥

॥ गाथा ॥

॥ जो नियगुण पज्जवरम्यो, तसु अनुनव एगंत; सुद्द पुग्गल आरोपतां, जो तसु रंगनिरत्त ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ जो निज आतमगुण आणंदि, पुग्गल संगे जेह

अफंदी ॥ जे परमेश्वरनिज पदलीन, पूजो प्रणमो नव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेहेलो शांति जिणंदा ॥तो०॥कु०॥१॥ एम कही प्रजुना जानुंएं पूजा करीएं।

॥ गाथा ॥

॥ निम्मल नाण पयासकर, निम्मल गुण संपन्न ॥ निम्मल धम्मोवएस कर, सो परमप्पाधन्न ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ लोकालोक प्रकाशक नाणी, नविजन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानंदतणी नीसाणी, तसुनगतें मुज मति वहराणी ॥ कुसुमांजलि मेहेलो नेम जिणंदा ॥ तो०॥कु० ॥२॥ एम कही प्रजुना बे हाथे पूजा करीएं।

॥ गाथा ॥

॥ जे सिद्धासिद्धंति जे, सिद्धं संति अणंत ॥ जसु आलंबन नवियमण, सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ शिव सुख कारण जेह त्रिकालें, समपरिणामें जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेहेलो पास जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥४॥ एम कही प्रजुना खंनाएं पूजा करीएं।

॥ गाथा ॥

॥ समदिठ्ठी देस जय, साहुसाहुणीसार ॥ आचा रिज उवज्झायमुणि, जो निम्मल आधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ चउविह संघें जे मन धार्युं, मोक्ष तणुं कारण नि रधार्युं ॥ विविह कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥ कुसुमांजलि मेहेलो वीर जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ ६ ॥ एम कही प्रभुना मस्तकें पूजा क रीएं ॥ इति पांखडी गाथा. ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ सयल जिनवर सयल जिनवर, नमिय मनरंग ; क ल्लाणकविहि संघविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इगसत्तरि तिहंकर ॥ एक समय विहरंति मही यल, चवण समय इगवीस लिण; जम्मण समय इ गवीस ॥ भत्तीय भावें पूजीया, करो संघ सुजगीस ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ एक दिन अचिरा हुलरावती ॥ एदेशी ॥

॥ भव त्रीजे समकित गुणरम्या, जिन भक्ति प्रमु ख गुण परणम्या, तजि इंद्रिय सुखआशंसना, करी

स्थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्र भावता, मन भावना एहवी भावता, सवि जीव करुं शासन रसी, इसी भाव दया मन उल्लसी ॥ २ ॥ ल ही परिणाम एहवुं भलुं, निपजावी जिनपद निर्मलुं, आयु बंधे विचे एक भव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥ ३ ॥ त्यांथी चविह लहे नरभव उदार, भरतें तेम ऐरवतेंज सार, महा विदेहें विजयेंवर प्रधान, मध्य खंडें अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपनानी ॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ पुण्यें सुपनह देखे, मनमांहें हर्ष विशेषे ; गजव र उज्वल सुंदर, निर्मल वृषभ मनोहर ॥ १ ॥ निर्भ य केशरीसिंह, लक्ष्मी अतिही अबीह; अनुपम फुल नी माल, निर्मल शशी सुकुमार ॥ २ ॥ तेजतरणी अती दीपे, इंद्र ध्वजा जगझींपे ; पूरण कलश पंडूर, पद्म सरोवर पूर ॥ ३ ॥ अग्यारमे रयणायर, देखे मा ताजी गुण सायर; बारमे भुवन विमान, तेरमे अनुप म रत्न निधान ॥ ४ ॥ अग्नि शिखा निर धूम, देखे माताजी अनुपम ; हरषी रायने भाषे, राजा अरथ प्रकाशे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होशे

पुत्र मनो हर; इंद्रादिक जसु नमशे, सकल मनो रथ फलशे ॥ ६ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ पुण्यउदय पुण्यउदय उपना जिननाह, माता तव रयणी समे; देखी सुपन हरखंति जागीय, सुपन कही निज कंतने; सुपन अरथ सांजलो लोन्नागीय, त्रिजुवन तिलक महागुणी; होशे पुत्र निधान, इंद्रादिक जसु पय नमी, करशे सिद्ध विधान ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ चोथी ॥ चंडावलानी देशी छे ॥

॥ सोहमपति आसन कंपीउए, देइ अवधि मन आणंदीयोए ॥ निज आतम निर्मल करण काज, नव जलतारण प्रगट्यो जहाज ॥ १ ॥ नवअडवी पारग सह्रवाह, केवल नाणाइय गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूरो जेह, कारण उलट्यो आसाढि मेह ॥ २ ॥ हरखें विकसी तव रोमराय, वलयादिकमां निज तनु न माय ॥ सिंहासनथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आनंदकंद ॥ ३ ॥ सग अड पय साह्मो आवि तह, करि अंजलीय प्रणमीय मह ॥ मुखें नांपे एहण आज सार, तीय लोय पहु दीठो उदार ॥४॥

रेरे निसुणो सुर लोय देव, विषयानल तापित तुम सवेव ॥ तसु शांति करण जलधर समान, मिथ्या विष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव सकल तारण समत्त, प्रगट्यो तसु प्रणमी हवो सनाथ ॥ एम जंपी शक्र स्तव करेवि, तव देवदेवी हरखें सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंना गीत गान, सुरलोक हवो मंगल निधान ॥ नरक्षेत्रें आरिजवंस गाम, जिनराज वधे सुर हर्ख धाम ॥७॥ पिता माता घरे उत्सव अशेष, जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हर्ख संग, संयम अर्थिजनने उमंग ॥ ८ ॥ शुनवेला लगने तीर्थ नाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ख साथ ॥ सुख पाम्या त्रिनुवन सर्वजीव, वधाई वधाई थई अतीव ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ पांचमी ॥

॥ श्रीशांति जिननो कलश कहिशुं
प्रेम सागर पूर ॥ एदेशी ॥

॥ श्रीतीर्थपतिनुं कलश मज्जन, गाइएं सुखकार ॥ नरखेत्त मंमण छुह विहंमण, नविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हर्ष उत्सव, थयो जग जयकार ॥ दिशि कुमरी अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्ख अपार ॥ १ ॥

निय अमर अमरी संग कुमरी, गावती गुणवृंद ॥ जि
न जननी पासें आवि पोहोती, गहगहति आणंद ॥
हे माय ! तें जिनराज जायो, शुचिवधायो रम्य ॥ अम
जम्म निम्मल करण कारण, करीश सुईकम्म ॥२॥ ति
हां नूमि शोधन दीप दर्पण, वायवींजण धार ॥ ति
हां करीय कदली गेह जिनवर, जननि मज्जनकार ॥ व
रराखडी जिन पाणी बांधि, दीए एम आशीश ॥ जुग
कोडि कोडि चिरंजीवो, धर्म दायक ईश ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ ७ठी ॥ एकवीशानी ॥

॥ जग नायकजी त्रिभुवन जन हितकारए; ॥
॥ परमातमजी चिदानंद घनसारए ॥ एदेशी. ॥
॥ जिन रयणीजी, दश दिशी उज्वलता धरे ॥ शुन्नलगनें
जी, ज्योतिप चक्रते संचरे ॥ जिनजन्म्याजी, जेणे अव
सर माता घरे ॥ तेणे अवसरजी, इंद्रासन पण थरहरे॥

॥ त्रुटक ॥

॥ थरहरे आसन इंद्र चिंते, कोण अवसर ए बन्यो, जि
न जन्म उत्सव काल जाणी, अतिही आनंद ऊपन्यो ॥
निज सिद्धि संपति हेतु जिनवर, जाणी नगतें ऊमह्यो ॥
विकसित वदन प्रमोद वधते, देव नायक गहगह्यो ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

॥ तव सुरपतिजी, घंटानाद करावए ॥ सुर लोकें जी, घोषणा एह देवरावए ॥ नरक्षेत्रें जी, जिनवर जन्म हुर्ड अछे ॥ तसु जगतें जी, सुरपति मंदिरगिरि गछे ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ गछेति मंदिर शिखर उपर, जुवन जीवन जिन तणो ॥ जिन जन्म उत्सव करण कारण, आवजो स वि सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकित थाशे निर्मल, देवा धिदेव निहालतां ॥ आपणां पातिक सर्व जाशे, नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ एम सांजलीजी, सुरवर कोडि बहुमली ॥ जिनवं दनजी, मंदिरगिरि सामां चली ॥ सोहमपतीजी, जि न जननी घर आविया ॥ जिन माताजी, वंदि स्वा मी वधाविया ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ वधाविया जिन हर्ष बहुलें, धन्य हुं कृत पुन्यए ॥
त्रैलोक्य नायक देव दीगे, मुज समो कोण अन्यए ॥
हे जगत जननी ! पुत्र तुमचो, मेरु मज्जन वरकरी ॥
उत्संग तुमचे वलीय थापिश, आतमा पुण्यें जरी ॥३॥

॥ ढाल ॥

॥ सुर नायकजी, जिन निज कर कमलें ठव्या, ॥ पंच रूपेंजी, अतिशें महिमाएं स्तव्या ॥ नाटक विधिजी, तव बत्रीश आगल वहे ॥ सुर कोडिजी, जिन दर्शनने उमहे ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ सुरकोडि कोडि नाचती वली, नाथ शुचि गुण गावती ॥ अप्सरा कोडि हाथ जोडी, हाव नाव देखावती ॥ जयो जयो तुं जिनराज जगगुरु, एम दे आशिश ए ॥ अम्हत्राण शरण आधार जीवन, एक तुं जगदीश ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ सुरगिरिवर जी, पांडुक वनमें चिहुं दिशें ॥ गिरि शिल परजी, सिंघासन सासय वसे ॥ तिहां आणीजी, शक्रें जिन खोले ग्रह्या ॥ चोसठ्ठेजी, तिहां सुरपति आवी रह्या ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ आविया सुरपति सर्व नगतें, कलश श्रेणी वणावए ॥ सिद्धार्थ पमूहा तीर्थ ओपधि, सर्व वस्तु अणावए ॥ अचुअपति तिहां हुकम कीनो, देव कोडा

कोडिने ॥ जिन मज्जनारथ नीर लावो, सवे सुर क
र जोडीने ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ सातमी ॥

॥ शांतिने कारणे इंद्र कलशा जरे ॥ एदेशी ॥

॥ आत्मसाधन रसी देवकोडीहसी, उल्लसीने धसी खीरसागरदिशी ; पउमदह आदिदह गंगपमुहान ई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कलश करि सहस अघोत्तरा, छत्रचामर सिंहास ण शुजतरा; उपगरण पुष्फ चंगेरी पमुहा सवे, आग मे जासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय कर कलस करि देवता, गावता जावता धर्म उन्नति र ता; तिरिय नर अमरने हर्ख उपजावता, धन्य अम्ह शक्ति शुचि जक्ति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजल सीचता, मेरुसिहरोवरे सर्व आव्या वही; शक्र उछंग जिन देखि मन गहगही ॥ ४ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ हंहो देवा हंहो देवा अणाइ कालो, अदिठ पुवो, तिलोयतारणो तिलोय बंधु, मिछत्त मोहविद्धंसणो ॥

अणाई तिण्हा विणासणो, देवाहि देवो दिठ्ठ वोहिय कामेहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥

॥ एम पन्नणंत वण भवण जोईसरा ॥ देव वेमाणि या भत्ति धम्मायरा ॥ केवि कप्पठिया केवि मित्ताणु गा ॥ केवि वर रमणि वयणेण अई उछंगा ॥ ६ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ तह अच्चुय तह अच्चुय इंद, आदेस ॥ करजोडि सवि देवगण, लेय कलस आदेस पामिय ॥ अद भूतरूप सरूप जुअ, कवण एह पूछंत सामिय ॥ इंद कहे जग तारणो, पारग अम परमेस ॥ नायक दाय क धम्म निहि, करिएं तसु अभिसेस ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ आठमी ॥

॥ तीर्थकमलदल उदक भरीने पुस्कर ॥

॥ सागर आवे ॥ एदेशी छे ॥

॥ पूरणकलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगें नामे ॥ आतम निरमल भाव करंता, वधते शुभ परिणा मे ॥ अच्चुतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, एम अभिषेक करंत ॥ १ ॥

अथ पंमित श्रीवीरविजयजीकृत-
स्नात्रपूजाप्रारंभः



॥ काव्य ॥ डुतविलंबितवृत्तम् ॥

सरस शांति सुधारस सागरं ॥
शुचितरं गुणरत्न महागरं ॥
भविक पंकज बोध दिवाकरं ॥
प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरं ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुसुमाभरण उतारिने, पडिमा धरिय विवेक ॥ मज्जन पिठें थापीने, करियें जल अभिषेक ॥ २ ॥

(गाथा) आर्या गीति ॥

जिण जम्म समय मेरु ॥
सिहरंमि रयण कणय कलसेहिं ॥
देवा सुरे हि एहविउ ॥
ते धन्ना जेहिं दिठोसि ॥ ३ ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ निर्मलजल कलशें न्हवरावे ॥ वस्त्रअमूलक अंग धरावे ॥ कुसुमांजलि मेहेलो आदि जिणंदा ॥ सिद्धस्वरूपी अंगपखाली ॥ आतिम निर्मल हुइ सुखमाली ॥कु०॥४

(गाथा) आर्या गीति ॥

मचकुंद चंप मालय ॥
कमलाइं पुप्फ पंच वसाइं ॥
जगनाह एहवण समए ॥
देवा कुसुमांजली दंती ॥ ५ ॥

॥ कुसुमांजलि मेहेलो आदि जिणंदा ॥ १ ॥
"नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ रयण सिंहासन जिन थापीजें ॥ कुसुमांजलि प्रभु चरणे दीजें, कुसमांजलि मेहेलो शांति जिणंदा ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिण तिहुं कालय सिद्धनी, पडिमा गुण भंडार ॥

तसु चरणे कुसुमांजलि, नविक डुरित हरनार ॥ ६ ॥
"नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ कृस्नागर वर धूप धरीजें ॥ सुगंध कर कुसुमांजलि दीजें ॥ कुसुमांजलि मेहेलो नेमि जिणंदा ॥

(गाथा) आर्या गीति ॥

जसु परिमल बल दहदिसि ॥
महुकर जंकार सद्द संगीया ॥
जिण चलणोवरि मुक्का ॥
सुरनर कुसुमांजलि सिद्धा ॥ ७ ॥
"नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः"

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ पासजिणेसर जगजय कारी ॥ जल थल फूल उदक कर धारी ॥ कुसुमांजलि मेहेलो पार्श्व जिणंदा ॥

॥ दोहा ॥

॥ मूके कुसुमांजलि सुरा ; वीरचरण सुकमाल ॥ ते कुसुमांजलि नविकना ; पाप हरे त्रण काल ॥ ८ ॥
"नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः"

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ विविध कुसुम वरजाति गहेवी ॥ जिनचरणे पणमंत ठवेवी ॥ कुसुमांजलि मेहेलो वीर जिणंदा ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ न्हवणकालें न्हवणकालें ॥ देवदाणव समुच्चिय ॥ कुसुमांजलि तहिं संठविय ॥ पसरंत दिसि परिमल सुगंधिय ॥ जिणपयकमलें निवडेइं ॥ विग्घहर जस नाम मंतो ॥ अनंतह चउवीस जिन ॥ वासव मलिय असेस ॥ सा कुसुमांजलि सुह करो ॥ चउविह संघ विसेस ॥ए॥ कुसुमांजलि मेहेलो चउवीश जिणंदा ॥ए॥५॥

"नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः"

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ अनंत चउवीसी जिनजी जुहारुं, वर्त्तमान चउवीसी संभारुं ॥ कुसुमांजलि मेहेलो चोवीश जिणंदा ॥

॥ दोहा ॥

॥ महाविदेहें संप्रति ; विहरमान जिन वीश॥
भक्तिभरें ते पूजिया ; करो संघ सुजगीस॥१०॥६॥

"नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः"

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

॥ अपछरमंमलि गीत उचारा ॥ श्री शुभवीर विजय जयकारा ॥ कुसुमांजलि मेहेलो सर्व जिणंदा ॥ इति श्री कुसुमांजलयः ॥

॥ अथ कलश, दोहा ॥

॥सयल जिणेसर पाय नमि, कल्याणक विधि तास॥
वरणवतां सुणतां थकां, संघनी पूगे आश॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ एकदिन अचिरा हुल-रावती ॥ एदेशी ॥

॥ समकितगुणठाणे परिणम्या ॥ वली व्रतधर संयमसुख रम्या ॥ वीश थानिक विधियें तप करी ॥ इसी नाव दया दिलमां धरी ॥ १ ॥ जो होवे मुज शक्ती इसी ॥ सवि जीव करुं शासन रसी ॥ शुचिरस ढलते तिहां बांधतां ॥ तीर्थंकरनाम निकाचता ॥ २ ॥ सरागथी संयम आचरी ॥ विचमां एकदेवनो नव करी ॥ चवि, पन्नर क्षेत्रें अवतरे ॥ मध्यखंमें पण राजवी कुलें ॥ ३ ॥ पटराणी कूखें गुणनिलो ॥ जिम मान सरोवर हंसलो ॥ सुखसज्यायें रजनी शेषें ॥ उतरतां चवद सुपन देखे ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ स्वप्ननी ॥

॥ पेहेले गजवर दीठो ॥ बीजे वृषभ पइठो ॥ त्री
जे केसरी सिंह ॥ चोथे लखमी अबीह ॥ १ ॥ पांच
मे फूलनी माला ॥ छठ्ठे चंद्र विशाला ॥ रवि रा
तो ध्वज मोहोटो ॥ पूर्णकलश नहिं छोटो ॥ २ ॥
दशमे पद्म सरोवर ॥ अगियारमे रत्नागर ॥ भुवन वि
मान रत्नगंजी ॥ अग्निशिखा धूमवर्जी ॥ ३ ॥ स्वप्न
लही जइ रायने भासे ॥ राजा अर्थ प्रकाशे ॥ पुत्र ती
र्थंकर त्रिभुवन नमशे ॥ सकल मनोरथ फलशे ॥ ४ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ अवधि नाणे अवधि नाणे ॥ उपना जिनराज ॥ ज
गत जस परमाणुआ ॥ विस्तर्या विश्व जंतु सुखकार ॥
मिथ्यात्व तारा निर्बला ॥ धर्म उदय परभातसुंद
र ॥ माता पण आणंदियां ॥ जागति धर्म विधान ॥
जाणति जगतिलक समो ॥ होशे पुत्र प्रधान ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुभलग्ने जिन जनमिया, नारकीमां सुख ज्योत ॥
सुख पाम्या त्रिभुवन जना, हुओ जगत उद्योत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सांजलो कलश जन! महोत्सवनो इहां ॥ छप्पन कुमरी दिशि, विदिशि आवे तिहां ॥ मात सुत नमिय, आणंद अधिको धरे ॥ अष्ट संवर्त्त, वायुथी कचरो हरे॥१॥ वृष्टिगंधोदकें, अष्ट कुमरी करे॥ अष्ट कलशा जरी, अष्ट दर्पण धरे ॥ अष्ट चामर धरे, अष्ट पंखा लही ॥ चार रक्षा करी, चार दीपक ग्रही ॥२॥ घर करी केलनां, माय सुत लावती ॥ करण शुचि कर्म जल, कलशें न्हवरावती ॥ कुसुम पूजी, अलंकार पेहेरावती ॥ राखडी बांधी जइ, शयन पधरावती ॥३॥ नमिय कहे माय, तुज बाल लीलावती ॥ मेरु रवि चंद्र लगे, जीव जो जगपती॥ स्वामिगुण गावती, निज घर जावती ॥ तिणे समे इंद्र, सिंहासन कंपती ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ एकवीशानी देशी ॥

॥ जिन जन्म्याजी, जिणि वेला जननी घरे ॥ तिणि वेलाजी, इंद्रसिंहासन थरहरे ॥ दाहिणोत्तरजी, जेता जिन जनमे यदा ॥ दिशिनायकजी, सोहम ईशान बिहुं तदा ॥ १ ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ तदा चिंते इंद्र मनमां, कोण अवसर ए बन्यो ॥ जिनजन्म अवधि नाणे जाणि, हर्ष आणंद उपनो॥ सुघोष आदें घंटनादें, घोषणा सुरमें करे ॥ सवि देवी देवा जन्ममहोत्सवें, आवजो मलि सुरगिरिवरें ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ पूर्वनी ॥

॥ इम सांजलीजी, सुरवरकोडि आवि मले ॥ जन्म महोत्सवजी, करवा मेरु उपर चले ॥ सोहमप तिजी, बहु परिवारें आविया ॥ माय जिननेंजी, वंदी प्रनुने वधाविया ॥ ३ ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ वधावी बोले हे रत्नकुख, धरणी! तुझ सुत तणो॥ हुं शक्र सोहम नामें करशुं, जन्म उत्सव अतिघणो ॥ इम कही जिन प्रतिबिंब थापी, पंच रूपें प्रनु ग्रही ॥ देव देवी नाचे हर्ष साचे, सुरगिरी आव्या वही ॥४॥

॥ ढाल ॥ पूर्वनी ॥

॥मेरु उपरजी,पांमुकवनमें चिहुं दिशें ॥ शिला उपरजी, सिंहासन मन उल्लसे ॥ तिहां बेशीजी, शक्रें जिन खोलें धस्या ॥ हरि त्रेशठजी, बीजा तिहां आवि मल्या ॥ ५ ॥

॥ त्रुटक ॥

॥ मल्या चोसठ सुरपति तिहां, करे कलश अड जातिना ॥ मागधादि जल तीर्थ ओषधि, धूप वलि बहु जातिना ॥ अच्युतपतियें हुकम कीनो, सांजलो देवा ! सवे ॥ खीरजलधि गंगानीर लावो, झटति जिन महोत्सवें ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ विवाहलानी देशी ॥

॥ सुर सांजलीने संचरीया ॥ मागध वरदामें चलिया ॥ पद्मद्रह गंगा आवे ॥ निर्मल जल कलश जरावे ॥ १ ॥ तीरथ फल उषधि लेतां ॥ वलि खीरसमुद्रें जातां ॥ जल कलशा बहुल जरावे ॥ फूल चंगेरी थाला लावे ॥ २ ॥ सिंहासन चामर धारी ॥ धूप धाणा रकेबी सारी ॥ सिद्धांतें जांष्या जेह ॥ उपगरण मिलावे तेह ॥ ३ ॥ ते देवा सुरगिरि आवे ॥ प्रजु देखी आनंद पावे ॥ कलशादिक सहु तिहां गावे ॥ जक्तियें प्रजुना गुण गावे ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ रागधन्याश्री ॥

॥ आतिम जक्ति मल्या केइ देवा ॥ केतां मित्तनु जाई ॥ नारी प्रेर्या वलि निज कुलवट ॥ धर्मी धर्मस

खाई॥ जोइस वंतर भुवन पतिना ॥ वैमानिक सुरआ वे ॥ अच्युतपति हुकमें धरी कलशा ॥ अरिहानें नव रावे ॥ आ० ॥ १ ॥ अडजाति कलसा प्रत्येकें ॥ आठ आठ सहस प्रमाणो ॥ चउसठ सहस हुआ अ भिषेकें ॥ अढीसें गुणा करी जाणो ॥ साठ लाख उ पर एक कोडि ॥ कलशाना अधिकार ॥ बासठ इंइत णा तिहां बासठ॥ लोकपालना चार ॥ आ० ॥ २ ॥ चंइनी पंक्ति बासठ बासठ ॥ रविसेणी नरलोको ॥ गुरुस्थानक सुरकेरो एकज ॥ सामानिकनो एको ॥ सोहमपति ईशानपतिनी॥ इंइाणीना सोल ॥ असु रनी दशइंइाणी नागनी ॥ बार करे कल्लोल ॥आ०॥ ॥ ३ ॥ ज्योतिष व्यंतर इंइनी चउ चउ ॥ परषदा त्रणनो एको ॥ कटकपति अंगरक्षक केरो॥ एक एक सुविवेक ॥ परचूरण सुरनो एक ठेलो ॥ ए अढीसें अभिषेको ॥ ईशानइंइ कहे मुऊ आपो ॥ प्रभुने खिण अतिरेको ॥ आ० ॥ ४ ॥ तव तस खोले ठवि अरि हाने ॥ सोहमपति मनरंगे ॥ वृषभरूप करि शृंग जलें नरी ॥ न्हवण करे प्रभु अंगे ॥ पुष्पादिक पूजी ने ठांटे ॥ करि केसर रंग रोले ॥ मंगल दीवो आरती करतां ॥ सुरवर जयजय बोले ॥ आ० ॥ ५ ॥ नेरी

न करी, पश्यति दर्शनं, पुण्यगेहं ॥ सिंधुगंगादिभि, स्तीर्थगंधोदकै, भरितमणिकनकमय, कलशआली ॥ भविकश्रावक मली, नाहवो परिमली, संशय मन त णा वेग टाली ॥ १ ॥

॥ रागनट्ट मल्हार ॥

॥ जिनकी इणिविधि पूजा कीजें ॥ सुंदर धर्म लही भविका जन ॥ मणुअ जनम फल लीजें ॥ मेरे जिन की इणिविधि पूजा कीजें ॥१॥ निर्मल अंग करी अति उज्ज्वल ॥ अंबर ते पहेरीजें ॥ अतिहि सुगंध सुरभि द्रव्यवासित ॥ कंचन कलश भरीजें ॥ मेरे जिनकी० ॥ २ ॥ करी मुख कोश मोरपीछ पूंजी ॥ पहेली पूजा रचीजें ॥ कहे घन वचन ललित मनोहर ॥ ना भि मल्हार नवीजे ॥ मेरे० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ शचीपतिः सप्तदशप्रकारै, र्नृत्यामरैस्संघटितोपहा रैः ॥ स्वर्गांगनासु क्रमगायिनीषु, पूजां प्रभोः पार्श्व जिनस्य चक्रे ॥१॥ पुरंदरः पूरितहेमकुंभै, रदंभमंभोभिर लं सुगंधैः ॥ साकं सुरौघैर्मघवांश्च सम्यक्पूजां जिनेंदोः प्रथमां चकार ॥२॥ इति श्री न्हवणपूजा प्रथमा ॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ केसर चंदन घसि घणां, मेलवी मांहें बरास ॥
नव अंगें जिन पूजतां, नव निधि आतम पास॥१॥
जिन प्रतिमाने विलेपतां, शीतल थाए आप॥
क्रोध दावानल उपशमे, जाए भव संताप ॥ २ ॥

॥ राग रामग्री ॥ तथा आशावरी ॥

॥ कुंकुमसंयुतं, घसीय वरचंदनं, सरसघनसारशुं, मां हें मेली ॥ कंचन मणितणां, भरीअ, बहु भाजना, अगर रस कुमकुमा, तेह भेली॥ पूजीएं नव अंगें, चरण जानू करें, अंस हृदि बाहु,बेहू अपार ॥ कंठ लिलाट शिर, विलेपतां रंग भर,पामीयें भव तणो,एम पार॥१॥

॥ गीत ॥ राग देशाख ॥

॥ करुं हुं पूजा जिनवर केरी, आगमवचन सुण्यां में ताथें, प्रगट भई मति मेरी॥ करुं हुं पूजा०॥१॥ केसर चंदन भरीय कचोली, अरचूं युक्ति घणेरी ॥ मणुअजन्मको लाहो लीजें, भक्ति करुं अधिकेरी ॥ करुं हुं पूजा० ॥२॥ अंजलि जोरी मोरि तनु अपनो, वात कहुं ज्यु भलेरी ॥ देइ शाख शासय सुख केरी, मुक्ति मंदिरकी शेरी ॥ करु हुं पूजा० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

अंगं प्रमृज्यांगसुगंधगंध, कापायिकेनैषपटेन चेंद्रः॥
विलेपनैश्चंदनकेसराद्यैः पूजां जिनेंदोरकरोद्द्वितीयां॥
॥ १ ॥ इति वेलपनपूजा द्वितीया ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजी पूजा जिन तणी, वस्त्र युगलनी होय ॥
दृष्टियुगल पण को कहे, परमार्थें एक जोय ॥१॥
अंशुयुग्म अंसें ठवी, नावो नावन एम ॥
निश्चय धर्मव्यवहार वृष, आदरशुं बहु प्रेम ॥२॥
अथवा ज्ञानक्रिया करी, अंगीकरशुं धर्म ॥
असंख्य प्रदेशी आतमा, निर्मल करवा मर्म ॥३॥
स्वपर विवेचन दृष्टिवर, प्रगटे एथी नित्त ॥
अथवा क्षायिक क्षयोपशम,सम्यक् दृष्टि होए मित्त॥४
वस्त्रयुगलनी पूजना, सूरियान सुरवरें कीध ॥
त्रीजी पूजा करीयने, रत्नत्रय वर लीध ॥ ५ ॥

॥ राग देशाख ॥

॥ सुरनिंदव्यवासितं, वस्त्रयुगमुज्वलं, प्रभुतणे मस्त कें मूकीयें ए ॥ नक्ति एणि परें करुं, शुद्धसमकित धरुं, पूजतां ध्यान नवी चूकीयें ए ॥ नव तणी श्रेणिनां, कर्मपातिक घणां, देखतां पाप सवी त्रूटीयें ए ॥ दर्शण

जिनरस, नयणनालिं करी,अमृतसम रस घूंटीयें ए॥१॥

॥ राग भैरव ॥

पूजाकरणं भव्याभरणं, स्यादपि भवभयहरणं ॥ पूजा० ॥ कनकतंतुविराजितममलं, सौरभिगंधमुदारं ॥ भैरवकर्मविदारणशीलं, सुरनरजगदाधारं ॥ पूजा० ॥ १ ॥ अंबरयुगलं मस्तकधरितं, हे जिन ! शोभितदेहं ॥ भासि यथा त्रिदशाधिपधनुपं, राजति तव तनुगेहं ॥ पूजा० ॥ २ ॥ निजचेतसि यदि वांछसि सौख्यं, भवमकराकरपारं ॥ वंदति मेघमुनिर्जिनपूजां, तृतीयां कुरु भवसारं ॥ पूजा०॥३॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ च्युतं शशांकस्य मरीचिभिः किं, दिव्यांशुकद्वंद्वमतीव चारु ॥ युक्त्या निवेश्योभयपार्श्वमिंद्रः, पूजां जिनेंद्रोर करोत्तृतीयां ॥१॥ इति वस्त्रयुगलपूजा तृतीया ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सम्यक् ज्ञानादिक गुणें, वासित थाए आप ॥
करतां पूजा वासनी, जाए सर्व संताप ॥ १ ॥
कुमति जवासा शोषवे, टाले मिथ्या पाप ॥
शिवपुरमां वासो वसे, जो जिन पूजे वास ॥ २ ॥

शुद्धातमनी वासना, भासन भास्कर ज्योत ॥
अरिहंत वास उपासना, भवजल तारण पोत॥३॥
आराधे अनुशासना, वाधे जग यशवास ॥
साधे मारग मोक्षनो, वासें अर्चें पास ॥ ४ ॥

॥ राग केदारो ॥

॥ सुरभि वस्तु सवि मेली, कुंकुम केसर भेली, कुसुमें वासित ए; रंगें राजित ए, वासें पूजो अंग, पामो शिव सुख रंग; जिनवरने नमो ए, जिम जग न वि नमो ए ॥ १ ॥

॥ राग मालवी गोड ॥

॥ वीतराग भावें करी पूजीला, आपणी आपे पदवी ॥ सेवियें कहा होतहे तिनकुं,निज सरखे न करे? पुहवी॥ वीत० ॥ १ ॥ नौतन चारु फूल बहुवासित, पूजो जिनवर वासें ॥ चंदन पन्नग पास नील कंठ, बोलत हि त्युं कर्म नासे ॥ वीत०॥ २ ॥ चोथी पूजा तारक केरी, कीजें मालवी रागें ॥ भवनां अनेक कर्म भूरि संचित, टलत वार न लागे ॥ वीत० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ कर्पूरसौरभ्यविलासिवासैः, श्रीखंमवासैः किल वास

वोऽथ ॥ विभासुरश्रीजितभास्करेंदोः, पूजां जिनेंदो रकरोच्चतुर्थीं ॥ १ ॥ इति वासपूजा चतुर्थी ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचमी पूजा फूलनी, बूटां कुसुम समूंह ॥
पूजो श्री अरिहंतजी, प्रगटे चित्त गुणव्यूह ॥१॥
पंचबाण पीडे नही, जे करे पंचमी पूज ॥
रत्नत्रयनें ते वरे, मोह विछूटे धूज ॥ २ ॥
काल अनादि जीवने, लागी जड दुर्गंधि ॥
ते टाले ए पूजना, धारे ज्ञान सुगंधि ॥ ३ ॥
वारे मिथ्या वासना, चूरे पुग्गल व्याधि ॥
पूरे वांछित कामना, थाए पूर्ण समाधि ॥ ४ ॥
चेतनता निर्मल हुए, पामे केवल ज्ञान ॥
यश सुवास जग विस्तरे, लहे निर्वाण सुथान ॥५॥

॥ काव्यं ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥

॥ गंधाढ्यैः कुसुमैर्नवैस्सुविरलैः, पूजां करोति प्रभोः,
भक्त्या योऽपि हरिप्रियामिहभवे, तस्य प्रसन्नोभवेत् ॥
सौख्यं सर्वभवांतरेषु लभते, सांनिध्यमास्थीयते ; कुत्रा
न्यत्र सुधां विहाय गरलं पातुं कश्चेन्नरः ॥ १ ॥

॥ राग वेलावल ॥

॥ मोकले कुसुमें करी, अरचा स्वामिनी ॥ मिथ्यात्व शिरसि, दुस्सह दामिनी ॥ मोकले० ॥ १ ॥ जगगुरु तव पूजा भविकने, मोहन! कामिनी ॥ अभिनवा कुमतिने, चकवाकुल यामिनी ॥ मोकले० ॥ २ ॥ नरक दरद प्राचीन बहु, आवत थांभिनी ॥ पूजा पंचमी भविकने, वेलावल दायिनी ॥ मोकले० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ मंदारकल्पद्रुमपारिजात, जातैरलिव्रातकृतानुयातैः पुष्पैः प्रभोरग्रथितैर्नवांगं, पूजां वितेने किल पंचमीं सः ॥ १ ॥ इति बूटां फूलनी पूजा पंचमी ॥

॥ दोहा ॥

॥ छठी पूजा स्वामिनी, पुष्पमालनी होय ॥
शिव वधू वरमाला ठवे, जेह करे भवि लोय ॥१॥
सुरभियुक्त वर कुसुम लइ, करे मनोहर माल ॥
प्रभुकंठे ठवि भावियें, ज्ञानादिक गुणमाल ॥ २ ॥

॥ राग देशाख ॥

॥ चंपक केतकी, नागवर मालती, मोगरा शोक पुन्नाग जाती ॥ कुंद पाडल ग्रही, जाइ जूई सही, गुंथि

यें सुंदर भक्तिराति ॥ सकलमनरंजती, भ्रमरगुणगुंज
ती, वासती दहदिशि अति रसाली ॥ सौरभरसभरी,
विविध कुसुमें करी; मस्तक पगलगें अति विशाली ॥१॥

॥ गीत, राग गुंम ॥

॥ सेवंत्री वरजूई विउल सिरि, मालती सरस गुलाल
रे ॥ केतकी चंपक पाडल दमणो, गूंथी तिनकी माल रे
॥१॥ दाम करीने कंठें ठवियें, करीयें मन आणंद रे ॥
परिमल केसर भ्रमर गुंजत हे, मोहे सुरनरवृंद रे ॥
दाम०॥२॥ छही पूजा तारक केरी, कीजें रागें गुंम रे॥
शुद्धभाव धरी पूजत जिनवर, तूटत कर्म प्रचंम रे॥३॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ तैरेवपुष्पैर्विरचय्य मालां, सौरभ्यलोभभ्रमिभृंग
मालां ॥ आरोपयन्नाकपतिर्जिनांगे, पूजां पटिष्टी कुरु
तेस्म षष्टीं ॥ १ ॥ इति पुष्पमालपूजा षष्ठी ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचवर्णना फूलनी, पूजा सातमी एह ॥
पंचम ज्ञान प्रकाशपर, करे प्रमादनो छेह ॥ १ ॥
ए पूजा करतां थकां, भावो भावना एम ॥
वर्णादिक गुण रहित तुं,अलख अवर्णी खेम॥ २ ॥

वर्णादिक पुद्गलदशा, ते शुं तुज नहिं मेल ॥
तुं रत्नत्रयमयि सदा, जिन्न यथा जल तेल ॥३॥
चिदानंद घन आतमा, पूर्णानंद अरूप ॥
शुद्धातमसत्तारसी, दर्शन ज्ञान स्वरूप ॥ ४ ॥

॥ राग सामेरी ॥

॥ करुं पूजा करुं पूजा नमो जिनराय, पंच वर्ण आं गी रचो, विविध रंग रंगेहिं नेलो, अतिअनुपम चित्राम करी, उदय सूरसम कांती मेलो, एणिपरें जिनवर पूजतां, आपे शिवपदराज, सातमी पूजा कीजीयें, सीजे सघलां काज ॥ १ ॥

॥ गीत, राग कल्याण ॥

॥ पूजो मनरंगे पूजो मनरंगे, पंच वर्ण केरी आंगी रचावो, नांषीयें अंगे ॥ पूजो मनरंगे, पूजो मनरंगे ॥१॥ नव नव नांति अतिहे मनोहर, रंगे रंगनले; पद्मरागसम, कांती धरत तुं, जीवन आज मिले ॥ पूजो०॥२॥ लाल गुलाल फूल बिच शोने, केतकी कुसुम धरे, सातमी पूजा करीने मागुं, जिन कल्याण करे ॥पूजो०३॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ मंदाकिनींदीवरपीवरश्री, रक्तोत्पलैश्चंपकपाटलाद्यैः ॥

कुर्वन् विभोर्वैणकवर्णशोभां, पूजां प्रतेने किल सप्तमीं सः ॥ १ ॥ इति पंचवर्ण फूलनी पूजा सप्तमी ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टमी पूजा कीजीयें, लेइ सुगंध बरास;
ए चूरणनी पूजना, करतां पूगे आस ॥ १ ॥
ए पूजामां भावियें, आतम भावन एम ;
चूरुं कर्माष्टक प्रतें, धरि शुद्धातम प्रेम ॥ २ ॥
अष्ट महा मद गालवा, टालवा आठे भीति;
अष्ट प्रवचन मातनें, पालवा अधिकी प्रीति ॥३ ॥
अडदिठि अनुक्रमें वधे, लहे क्षायिक समकित;
आठमी पूजा जे करे, भाव धरी भवि नित ॥ ४ ॥
श्रद्धा भासन रमणता, पामे सहजानंद ;
तत्व रमणतादिक बहु, प्रगटे निजगुण वृंद ॥ ५ ॥
भावघटा मेरी उन्हई, वरषे जिनपद शृंग ;
घनसारह धारा करी, पूजो अरिहंत अंग ॥ ६ ॥

॥ गीत, राग सारंग ॥

॥ वरषेजी मेरी भाव घटा,जिनके चरण कमल गिरि उपर ; चूर्ण सुगंध छटा ॥ वरषेजी० ॥ घनसारादिक सरस मनोहर, कर ग्रही सुगंध पुटा; दीनदयाल कृपालकुं पूजित ; पुलकति अलक लटा ॥ वरषेजी०॥

॥१॥मांगत हुं हवे अष्टमी पूजा,तोरो मेरी कर्म जटा;
मनसारंगें सेवक जंपे,अङ्कुर ए प्रगटा ॥वरषेजी०॥२॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ दंभोलिपाणिः परिमर्द्य सद्यः, कर्पूरकालीर्बहुभक्ति शाली ॥ चूर्णं मुखे न्यस्य जिनस्य तूर्णं, चक्रेऽष्टमं पूजनमिष्टहेतुं ॥ १ ॥ इति चूर्णपूजाऽष्टमी ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

नवमी पूजा ध्वज तणी, करतां शिवसुख होय ;
जिनचैत्योपरि बांधियें, महाध्वजा भवि लोय॥ १ ॥

॥ राग वेलावल परदो ॥

॥ धर्म ध्वजा लहेके गगन, दंम सहित उत्तंग ;
पवन ऊकोरी घूघरी, वाजे जिणहर शृंग ॥ १ ॥

॥ गीत ॥

॥ हे मम ईश! तेरो ध्यान धरियें, हे जगदीश! पूजा नवमी करियें ॥हे मम०॥हां०॥ एकसहस जोयण दंम उंचो, देव! मोहियें ॥ ध्वजा गगन लेहेके रंग, नानावर्ण सोहियें ॥हे मम इश०॥हांरे जगदीश० ॥१॥ घूघरीना घमकार, सुणियें पवनप्रेरी ॥ पंचरंग लागुं हीर, घंटा कनक केरी ॥ हे मम० ॥ हांरे जग०॥२॥ हम

तुम बिच जिणंद, अंतर कर्म परदो ॥ तुं करि कृपा जिनराज, वेगें तेह मर्दो ॥ हे मम० ॥हांरे जग० ॥३॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ पुलोमजामौलिनिवेशनेन, प्रदक्षिणीकृत्य जिनालयं तं ॥ महाध्वजं कीर्तिमिव प्रतत्य, पूजामकार्षीन्नवमीं बिडौजाः ॥ १ ॥ इति ध्वजपूजा नवमी ॥ ए ॥

॥ राग नट्ट नारायण ॥

॥ हमे प्रभु ! दीजें हो वरदान, याचक भविक कहे तहें तुमसूं ॥ जिम पामो जगमान ॥ हमे० ॥ १ ॥ पूजत जिनवर दानज देतां, जोवत हो क्युं पूंठि ॥ नव धनंद कनक गिरि संचित,ते न गए नर मूंठी ॥हमे०॥ ॥२॥ रूप सुवर्ण नाण वर वासण,वांछित फल दिउ स्वामी ॥ एहि अवसर मत होय अदाता, सेवक कहे शिर नामी ॥ हमे० ॥ ३ ॥ इति दानं ॥

॥ दोहा ॥

॥ दशमी पूजा देवनी, बहु आभरणनी होय ;
अलंकार पहेरावीयें, भावन भावो सोय ॥ १ ॥
अनलंकारें सुभग ए, आत्मभाव अलंकार ;
तोपण भक्तिउल्लासने, कारणे एह विचार ॥ २ ॥

नूषणे नूषित स्वामिने, देखी हर्षो नव्य ;
जिनमुद्रा शुद्ध तत्वमयि, वीतराग गुण सव्य ॥३॥
वीतरागना गुण वधे, देखी श्री जिनबिंब ;
निज स्वरूप निज नावमां, वली होए प्रतिबिंब ॥४॥
पुज्जलनां नूषण तजे, जे परिचित बहु काल ;
ज्ञानादिक गुणरत्नना ; पहेरे ते अलंकार ॥ ५ ॥

॥ आर्या गीति ॥

॥ नूदेवग्रहइंद्रा,आनरणैर्नूषिताविहरयंते ॥ हे जिन! प्रनातसमये, उडुपतिबिंबं यथा नवति ॥ १ ॥

॥ गीत, राग केदारो ॥

॥ सबकुं सोहायो हो, मस्तकें मुकुट नस्यो ॥ जाकी ज्योति छिप गए ग्रहगण, उर विचें हो रयण नस्यो ॥ सबकुं० ॥ १ ॥ तिलक लिलाट श्रवण दोय कुंमल, सुघस्यो घाट घस्यो ॥ मोतिनको हार बांहिं दोय अंगद, सब नूषण हो तार कस्यो ॥ सबकुं० ॥ २ ॥ दशमी पूजा करी केदारे, तिनको काज सस्यो ॥ बहु आनरण करी जिन दीपे, सेवकको हो डुरित हस्यो ॥ सबकुं० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंजवज्रावृत्तम् ॥

॥ मुक्तावलीकुंमलबाहुरक्ष,कोटीरमुख्यानरणावली

नां ॥ प्रभोर्यथास्थाननिवेशनेन, पूजामकार्षीद्दशमीं बिडौजाः ॥ १ ॥ इति आभरणपूजा दशमी ॥१०॥

॥ दोहा ॥

फूल गेहनी पूजना, एकादशमी होय ;
कुसुमघरें प्रभु थापिने, हर्षे भवियण लोय ॥ १ ॥
फूलह केरे घर बिचें, सोहे श्री जिनराय ;
जिम तारामां चंदलो, जोतां हर्ष न माय ॥ २ ॥

॥ गीत ॥

॥ फूलघर बेठे जगत दयाल, जल थल कुसुम तणिरी परिमल, गुंजे मधुकर माल ॥ फूलघर बेठे जगत दयाल ॥ १ आछे कुसुम बनाए तोरण, तामे भांति घणी ॥ किनही सुजाण निपायो मंमप, जिनवर भक्ति भणी ॥ फूल०॥ २॥ कायकुं जात केदारो गोडी, सुरनर भक्ति भरी ॥ असंख्य गुणो फल अग्यारमी पूजा, करतां एक घरी ॥ फूलघर० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ पुंष्पावलीभिः परितो वितत्य, पुरंदरः पुष्पगृहं मनोज्ञं ॥ पुष्पायुधा जेयजयेति जल्पन्नेकादशीमातनुते स्म पूजां ॥ १ ॥ इति पुष्पगृहपूजा एकादशी ॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ बारमी पूजा प्रनु तणी, फूल पगरनी जाण ॥
फूल वृष्टि जिन आगलें, विरचे नव्य सुजाण ॥१॥

॥ राग ॥

॥ अहो पंचरंगें नवि कुसुमनुं पगर नरीयें, रचि देवता अविरल तेम करीयें ॥ तिहां अलि तणी श्रेणी गुंजे रमती, मधुरध्वनि रणफणे जेसी वेणुतंती ॥ एणि विधि जिन तणी नक्ति कीजें, अचरिज देखि पुष्प पगर नरीयें ॥ १ ॥

॥ गीत, राग पूर्वी ॥

॥ सखी! तुम देखन आउ री, मेरे प्रनुकी सकलाइ ॥
सन्मुख पतंति कुसुम, मिलत नहीं कुमलाई ॥ सखी! तुम० ॥ नाहिंनाहिं ए अचरिज, जे सनमुख थाइ ॥ तब तव गोचर नक्त जनोंके, बंधन अध जाई ॥ सखी० ॥ १ ॥
तव मुख शशी विरह नावे, मिले तन दिलसाई ॥ दूर थी चंद कुमुद विकसित, नेरेकी अधिकाई ॥ सखी० ॥ २ ॥ सरसवदनवारि सींचे, ते क्युं करमाई ॥ पूजा द्वादशमी कही एही, कीजें चित्तलाई ॥ सखी० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ कराग्रमुक्तैः किल पंचवर्णैरग्रंथपुष्पैः प्रकरं पुरो

ऽस्य ॥ प्रपंचयन् वंचितकामवीरः, स द्वादशीमातनुते
स्म पूजां ॥ १॥ इति पुष्पपगरपूजा द्वादशी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेरमी पूजा स्वामीनी; रचवा मंगल आठ;
अक्षतना आलेखवा, जिन सन्मुख शुभ गाठ ॥१॥
स्वस्तिक श्रीवत्स कुंभ वली, भद्रासन शुभ जाण;
नंदावर्त्तने मीनयुग, दर्पणने वर्द्धमान ॥ २ ॥
मंगल विरची भावियें, शुद्धातम मंगलीक ;
अष्टसिद्धगुणनें वरूं, सासयसुख निरभीक ॥ ३ ॥
अक्षय सुखनें कारणे, अक्षतना करी थाप;
अष्ट कर्मने क्षय करे, गाले सकल संताप ॥४॥

॥ गाथा ॥

अठ्य मंगल पूआ, किज्जे भावेण जिणवराणं ;
निय गेहे होई सोहं, जह काले मेहवुठिय ॥ १ ॥

॥ गीत, राग गुर्जरी ॥

॥ बनी पूजा तेरसमी नीकी, मंगल आठ छबील सो
हाए, ज्युं नयनोमें कीकी ॥ बनी पूजा० ॥ १ ॥ स्व
स्तिक श्रीवत्स कुंभ भद्रासन, नंदावर्त्त बनाए ॥ वर्द्ध
मान मकरयुग दर्प्पण; कीनहीं भक्ति भराए ॥ बनी०
॥ २॥ जे जिन आगल मंगल विरचे, मंगल तस घर

होई ॥ पूजत जिनवर आशा पुरे; नवियण जन रहे जोई ॥ बनी० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंडवज्रावृत्तम् ॥

॥ आदर्शनड्डासनवर्द्धमान, मुख्याष्टसन्मांगलिकैर्जिनाग्रे ॥ सराजतप्रोज्वलतंडुलौघै, स्त्रयोदशीमातनुते स्म पूजां ॥ १ ॥ इति अष्ट मंगलपूजा त्रयोदशी॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चौदमी पूजा धूपनी, कीजें अधिके नाव ;
ए सेवा नवि जीवनें, नव जल तारण नाव ॥ १ ॥
कृष्णागरु उखेवतां, उखेवो डुष्कर्म ;
नमतां नूरि नवांतरें, लाधो हवे में मर्म ॥ २ ॥

॥ गीत, राग कनडो ॥

॥ जिनकी पूजा अमृत वेली, जिनवर धर्म बहुत नवि पायो ; रंगे नविजन खेली ॥ जिनकी० ॥ १ ॥ कृष्णागरु लेई मलय मनोहर, मृगमद मांहें नेली; धूप उखेवी माग तुं जिनपें, नर्क तणी गति ठेली० ॥ जिनकी० ॥ २ ॥ नविक नरें जिनवर इम पूज्या, सवी सामग्री मेली ; चौदमी पूजा इणि परें करतां, आपे शिवपद केली ॥ जिनकी० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ कर्पूरकालागरुगंधधूप,मुत्क्षिप्य धूमव्रजदूरितैनाः ॥ घंटानिनादेन समं सुरेंद्र,श्चतुर्दशीमातनुतेस्म पूजां ॥ १ ॥ इति धूपपूजा चतुर्दशी ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पन्नरमी पूजा गीतनी, तास कथा पभणेस ;
भाव पूजानो भाव ए, टाले सकल कलेस ॥ १ ॥
तान मान लय ध्यानथी, आलापे सविराग ;
अति अद्भुतगुण कीर्तना, करियें धरि बहुराग ॥२॥

॥ राग देशाख ॥

॥कमलदललोचनी, विरहदुःख मोचनी; सुंदरी जिन त णां गीत गावे ॥ निज मुखें गुण ग्रहे, कोकिलास्वर क हे ; श्रवण रस भणी तव ईंद्र आवे ॥ राग सवि आ लवी, जिनगुण बहु स्तवी; पालवी प्रभु तुम्हें एकवा चा ॥ परभवें दरिशण, देयवुं जिन तुमे ; जिनभ्र गो कलियुगें देव साचा ॥ १ ॥

॥ गीतं, श्री रागेण गीयते ॥

॥ जिनगुण गावत सुरसुंदरी, चंपकवर्ण कमलदललो चन, शशिवदनी शृंगार भरी ॥ जिन० ॥ १ ॥ वेणु उ

पांग वंश सिरिमंमल, ताल मृदंग सुबंद करी; सवि श्रीराग आलापति रंगे, सुरति धरी सखि अति मधुरी॥ ॥ जिन० ॥ २ ॥ आगें एणीपेरें सुरनरें कीधी, ते प होता संसार तरी; पन्नरमी पूजा एणीपेरें करतां, सु णि रावण जिन पदवी वरी ॥ जिन० ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ अष्टोत्तरं स्तोत्रशतं पवित्वा, जानुस्थितः प्रष्टधरः सुरेशः ॥ शक्रस्तवं प्रोच्चशिरस्थपाणिर्नत्वा जिनं संसदमालुलोक ॥१॥ इति गीतपूजा पंचदशी ॥१५॥

॥ दोहा ॥

सोलमी पूजा नृत्यनी, नाटिक बत्रीश बद्ध;
सूरियाभसुरनी पेरें, करीयें भाव समृद्धि ॥ १ ॥
भव नाटक एहथी टले, फले मनोरथ सर्व;
सम्यक्दर्शण नाण सुख, पामे समावे गर्व ॥ २ ॥

॥ राग नट्ट ॥ दोहरो ॥

॥ देव कुमर कुमरी मली, नाचे एकशत आठ; संगीतादिक परे करे, आलापे शुद्धनाट ॥ १ ॥

॥ गीत ॥

॥ इंद्रादिक एम करे, पूजा जिन तेरी; गिडिगिडि डु

मकी मुरज घूंमे, नक्ति करे अधिकेरी ॥ इंडादिक०॥
॥ १ ॥ नख शिख लगे वेष सजी, बहु हस्त करती;
कुचघन वचें करयुग धरी, शोनती अति फीरति ॥ इं
द्रा० ॥ २ ॥ वेणुवंश उपांगरव, ताल वाजति बंदे ;
कुमर कुमरी एकशत आठ,नृत्यति जिन वंदे॥इंड्रा०॥
॥ ३ ॥ गगनें जलद नाद सुणी, नाचत सु कलापी ;
कीजें इम सोलमी पूजा,राग नट्ट आलापी॥इंड्रा०॥४॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥आलोकनाकूतविदस्ततोऽस्य, गंधर्वनाट्याधिपती अ
मर्त्यौ ॥ तूर्यत्रिकं सज्जयतः स्म तत्र, प्रनोर्निषसे
पुरतः सुरेंडे ॥ १ ॥ इति नृत्यपूजा षोडशी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इंदही वजे मद्दुरसुर, त्रिजग सुणावे नाद ;
वीतराग पूजा करो, अंग तजीने प्रमाद ॥१॥

॥ गीत, ॥ राग नट्ट ॥

॥ सुर पंचशब्दें करी विश्व जणावती, मुक्ति तणां सु
ख आपती यां ॥ नो नविका ! तुमें जिनवर पूजो,
आलस तजी उछंगती यां ॥ सुर० ॥१॥ अनंत ज्ञान
जाणी वाजिंत्र वहु आणी, मधुरध्वनि अरचे जिनु आ॥

मनवांछित फल ततक्षण आपे, स्थिर राखे जो ए म
नुआ ॥ सुर० ॥ २ ॥ मेघराज मुनि वंदित रंगभर,
सत्तरमी पूजाए चित्त धरुआ ॥ नाम गाम ड्रव्य ना
वधी ए जिन, सकल संघनें सुख करु आ॥सुर०॥३॥

॥ काव्यं ॥ उपेंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥मृदंगभेरीवरवेणुवीणा,षड्भ्रामरीझल्लरिकिंकिणीनां॥
भंभादिकानां च तदा निनादैः, क्षणं जगन्नादमयं ब
भूव ॥ १ ॥ मुदा ततस्तुंबरुनारदाद्याः, प्रभोर्गुणाली
रुपवीणयंतः ॥ सुधाशनादप्यधिकं वितेरुः, सुधाशना
नां हृदये प्रमोदं ॥ २ ॥ ततश्चलत्कुंडलतारहार, शृं
गारभारस्फुरदंगयष्टिः ॥ रंभा चिरं भावयतिस्म लास्य,
लीलां विलीलांगजिनादविद्युत् ॥३॥ साची कृताक्षीच
ततोघृताची, तिलोत्तमा चोत्तमनाट्यशक्तिः ॥ मेने म
नोज्ञा किल मेनकापि,कलाकलापस्य फले गृहीत्वा॥४॥

॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥

॥ इत्येवंविधगीतवाद्यनटनैः, पूजां विधाय त्रिधा ॥
तां भूत्वाद्विरचय्य सप्तदशधा, प्रीतिस्तदाऽऽखंमलः ॥
अर्च्यैर्यंधनदत्तवज्वलसस्त्रिरैः पटीरैः पटुः, कर्पू

रैः सच मेरुनंदनवनीकल्पद्रुपुष्पैश्चिरं ॥ ५ ॥ इति वाजिंत्रपूजा सप्तदशी ॥ १७ ॥

॥ गीत, राग धन्याश्री ॥

॥ बोली बोलीरे बोली पूजानी विध नीकी, सत्तर भेद आगम जिन भांपी, शिवरमणी शिर टीकी रे ॥ बोली० ॥ १ ॥ जीवाभिगममें ज्ञाताधर्मे, रायपश्नेणी प्रसीद्धि ॥ विजयदेव डौपदियें पूज्या, सूरियाभें पण कीधी रे ॥ बोली० ॥ २ ॥ अचल गछें दिनदिन दीपे, श्री धर्ममूर्त्ति सूरिराया॥तास तणे पख महीयल विचरे, भानुलब्धि उवझाया रे ॥ बोली०॥ ३ ॥ तास शिष्य मेघराज पयंपे, चिरनंदोजा चंदा ॥ ए पूजा जे भणशे गणशे, तस घर होय आणंदारे ॥ बोली० ॥ ४ ॥

॥ इति श्री मेघमुनिकृत सत्तरभेदी

पूजा समाप्ता ॥

॥ श्री वर्द्धमानाय नमः ॥

अथ

॥ श्री नंदीश्वरद्वीपपूजाप्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमूं शांति जिणंदने, चउद रयण पति जेह;
कंचनवर्णें सोहता, लक्षणलक्षित देह ॥१॥
सुरगिरि अष्टापद गिरि, गिरनार आबू तेम;
समेत शिखर ए पांचमो, वंदूं बहु धरी प्रेम ॥२॥
समरी शारद मातनें, रचुं पूजा हुं रसाल;
जिम सुणतां भवि प्राणिनें, हर्ष वधे तत्काल॥३॥
विस्तीरण जिन भुवनमां, रचि नंदीश्वर द्वीप;
तदनंतर प्रभु थापिने, करो अभिषेक प्रदीप ॥४॥
एकादश अभिषेक इहां, सामान्यें धरो चित्त;
आठ अधिक शत तो करो, होइ विशेषें प्रीत ॥५॥
सकल सामग्री मेलवी, श्रद्धावंत नरनार;
जल कलशा निज कर धरो, पामवा भव जल पार॥६॥
रहि समश्रेणी बिहुं दिशें, वाजशे मंगल तूर;
पूजा प्रभुनी भणावियें, करवा अघ चक चूर ॥७॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ अनें हांरे वालो वसे विमलाचलें रे ॥ ए देशी ॥
॥ अने हांरे शासन नायक जग विभु रे ॥ स्याद्वादना
जाषण हार, ज्ञान वडो गुण प्रज्ञु कहे रे ॥ श्री तिशला
नंदन वीर ॥ ज्ञा० ॥ अ०॥ पांच प्रकारें ते ज्ञानठे रें
॥ मति श्रुत अवधि श्रीकार ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ अ० ॥
मन पर्यव केवल जलो रे ॥ जे प्रगटे डुःख नहीं को
य ॥ज्ञा०॥अ०॥ ऊर्ध्व अधो तिर्ही लोकनुं रे ॥ जे निश्चें
ज्ञानथी होय ॥ज्ञा०॥२॥अ०॥ सुरलोक गेविज्जणुत्तरें
रे ॥ जिनप्रतिमा पूजे जे देव ॥ ज्ञा०॥अ०॥ जाणे तें
केवल ज्ञानथी रे ॥ ऊर्ध्व लोकें रह्या सिद्धदेव ॥ ज्ञा०
॥३॥अ०॥जुवनपति अधो लोकमां रे॥प्रज्ञुनी करे जक्ति
रसाल ॥ज्ञा०॥अ०॥ तिर्ही लोकें व्यंतर ज्योतिषी रे ॥
जिन पूजा करे त्रण काल ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ अ० ॥ जं
बू धातकी खंममां रे ॥ पुष्करार्द्ध द्वीप मोऊार ॥ ज्ञा०
अ०॥करी न करी प्रतिमा तणी रे॥करे पूजा सुरनरनार
॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ अ० ॥ दश क्षेत्रें दश चोवीशी रे ॥ पांच
विदेहें वीश वेरमान ॥ ज्ञा० ॥ अ० ॥ तेह प्रज्ञुनी
वाणी सुणे रे ॥ जवि पामवा निश्चय ज्ञान ॥ ज्ञा०

॥ ६ ॥ भ० ॥ ते माटें श्रावक! नावजुं रे ॥ प्रभु पूजो थइ उजमाल ॥ ज्ञा० ॥ भ० ॥ कहे धर्मचंद्र जिनध्यानथी रे ॥ लहे केवल ज्ञान विशाल ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ इति श्री प्रथम ढाल समाप्त ॥

॥ स्तुतिः ॥ काव्यं ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥

॥ स्नातस्याऽप्रतिमस्य मेरुशिखरे,शच्या विभोः शैशवे; रूपालोकनविस्म याहृतरस,भ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं,क्षीरोदकाशंकया,वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्री वर्द्धमानोजिनः ॥१॥ ए काव्य, प्रत्येक पूजा दीठ कहेवुं. अने त्यार पछी कलश ढोलवा.

॥ दोहा ॥

सद्गुप्रभुनें कल्याणकें, चलितासन हरि होय;
आवी जे उत्सव करि, जाय नंदीसर सोय ॥ १ ॥
एक गिरिनिश्रायें कह्या, गिरि दधिमुख जे चार;
गिरि रतिकर अड जाणवा, चैत्य तेर विचार ॥ २॥
इम चउदिसना मेलव्यां, बावन चैत्य ते होय;
बिंब ठ सहस्स चारसें, अडतालीशनें जोय ॥ ३॥
हरिआदें सुर बहु मली, मुक्ताफल लेइ हाथ;
हर्षे वधावे नाथनें, जाचे अनंती आथ ॥ ४ ॥

पूर्वदिशें अंजनगिरें, सोहमइंद मनरंग;
आवी तिहां उच्छव करे, तजवा चउ गति संग ॥५॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ भरतनें पाटें भूपति रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे नंदीसरद्वीपनी रे, देखी रचना सार ॥ सलू
णा ॥ सुरमनमधुकर जई वश्या रे, प्रभुपद कम
लें अपार ॥ स० ॥ ह० ॥ १ ॥ शो कोडिनें त्रेशठ
वली रे, जोयण चोराशी लाख ॥ स० ॥ पोलपणें
द्वीप आवमो रे, सूत्रमां जेहनी साख ॥स०॥ह०॥२
पूर्वदिशें मध्यभागमां रे, गिरि अंजन देव रमण ॥
स० ॥ चोराशी सहस्स ते जोयण रे, ठे ऊंचो कहे
श्रमण ॥ स० ॥ ह० ॥ ३ ॥ हजार दश नीचें ऊपरें
रे, जाभंपणुं एक सहस्स ॥ स० ॥ सहस्स जोयण
कंदले रे, लहियें गुरुथी रहस्य ॥ स० ॥ ह० ॥
४ ॥ ठर्शो एकतीश सहस्सठे रे, ऊपर त्रेवीश जाण
॥ स० ॥ अधो परिधिना ए जोयण रे, अंजनगिरि
ना प्रमाण ॥ स० ॥ ह० ॥ ५ ॥ त्रण सहस्स एक
शो बाशठ रे, जे ऊर्ध्व परिधिना होय ॥ स० ॥ जग

तारक अरिहा विना रे, कही न शके ते कोय ॥ स० ॥ ह० ॥ ६ ॥ जे देवरमणें चैत्यछे रे, ऊंचो बहोंत्तेर जोयण ॥ स० ॥ शो जोयण लांबो पहोलो रे, पच्चाश ए प्रज्जुवयण ॥ स० ॥ ह० ॥ ७ ॥ चउ बारो मणि रत्तनो रे,सूत्रमां कहे नगवंत ॥स०॥ देव नामें पूर्व द्वारछे रे, तिहां देव गुणवंत ॥ स० ॥ ह० ॥ ८ ॥ दक्षिणें असुर देवता रे, पश्चिम उत्तर जाण ॥ स० ॥ नागनें स्वर्ण सोहता रे, ए ना में द्वार वखाण ॥ स० ॥ ह० ॥ए॥ चैत्यमध्ये मणि पीठिकारे, लांबीनें पहोली शोल ॥ स० ॥ जोयण आठ ऊंची कही रे, लोक प्रकाशें ए बोल ॥ स० ॥ ह० ॥ १० ॥ लांबो पहोलो पीठिका समो रे, देव छंदो अन्निराम ॥ स० ॥ जोयण शोल अधिक ऊंचो रे, सोहे पीठिका ठाम ॥ स० ॥ ह० ॥ ११ ॥ ते मध्ये सिंहासनें रे, जिनप्रतिमा जयकार ॥ स० ॥ सगवीश सगवीश चिहूं दिशें रे, शाश्वतिनामें चार ॥ स०॥ ह० ॥ १२ ॥ ते जिनप्रतिमा वंदीनें रे, छांमी प्रमादनें छेक ॥ स० ॥ तीर्थजलें कलशा न्नरी रे, देव करे अन्निषेक ॥ स० ॥ ह० ॥ १३ ॥ केसरें पूजी गुण स्तवे रे, देव देवी धरी नेह ॥ स० ॥ धर्मचंद्र जि

न पूजतां रे, वर्षे मोतीना मेह ॥ स० ॥ह०॥ १४ ॥
काव्यं ॥स्नात०॥ इति प्रथमाभिषेके प्रथमपूजा स० ॥

॥ दोहा ॥

॥ करुं वर्णन बहु भावथी, शेष रह्यो अधिकार ;
सुणो भविजन! एक चित्तथी, न रहे पाप लगार॥ १ ॥
दक्षिणें अंजन गिरि तिहां, चमर नामें सुरनाथ ;
करे मोछव अठाइनो, करवा शिववधू हाथ ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे ॥ ए देशी ॥
॥दक्षिणदिशें अंजन गिरि जे, नामें ते नित्योद्योत ॥ भ्र मर सम जे श्यामरत्न, तेहनीछे बहुज्योत॥ मेरे प्यारे, वंदो बे कर जोडी ॥ १ ॥ श्री नंदीसर चैत्यनें पूज्यां, नाखे कर्मने त्रोडी ॥ मेरे० ॥ ए आंकणीछे ॥ तिहां प्रासाद द्वार चार जे, ते ऊंचा जोयण शोल ॥ आठ जोयण विस्तारें तेम, प्रवेश जोयण आठ बोल ॥ मेरे ० ॥ २ ॥ द्वार दीठ एक एक मुखमंडप, ते वली पडसाल सरखा ॥ ते आगल प्रेक्षामंडप जे, घर सम ज्ञानीयें निरख्या ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ ए मंडप जोय ण शो लांबा, पहोला जोयण पचाश ॥ शोल जोय

ए ऊंचा नाष्या, सुणतां होय उल्लास ॥ मेरे० ॥
॥४॥ बेहु मंमपें त्रण त्रण द्वार, ते वली कह्या चार
चार ॥ हवे प्रेक्षामंमपमध्ये, वज्र अक्षाटक सार
॥ मेरे० ॥ ५ ॥ ते मध्ये मणिपीठिका एक, पोली
लांबी जोयण आठ ॥ चार जोयण ऊंची जाणो, जी
वाभिगमें ए पाठ ॥ मेरे० ॥ ६ ॥ ते ऊपर हरियो
ग्य सिंहासन, चंद्रुवे काक ऊमाल ॥ वच्चें वज्रने आं
कडे वलगी, मुक्ताफलनी जे माल ॥ मेरे० ॥ ७ ॥
ते प्रेक्षामंमपनी आगल, मणिपीठिका एक सो
हे ॥ शोल जोयण लांबीनें पोहोली, देखतां सुरमन
मोहे ॥ मेरे० ॥ ८ ॥ आठ जोयण ऊंची ते ऊपर,
चैत्य थुन कहे नाणी ॥ ते शोल जोयण लांबी पहो
ली, शोल अधिक ऊंची जाणी ॥ मेरे० ॥ ए ॥ ते
ऊपर आठ मंगल दीपे, तेथी चार दिशें चार ॥ छे
मणिपीठिका लांबी पहोली, आठ जोयण चित्त
धार ॥ मेरे० ॥ १० ॥ चार जोयणनीछे ते ऊंची,
ते पीठ ऊपर गुणधाम ॥ थुन सन्मुख अरिहंत प्रति
मा, बेठी तस कीजें प्रणाम ॥ मेरे० ॥ ११ ॥ देव
देवी ते अरिहा पूजे, मनमां आणी विवेक ॥ कहे
धर्मचंद भविजन ! प्रेमें, करो जिननें अभिषेक ॥ मे

रे० ॥ १२ ॥ काव्यं॥स्नात०॥ इति द्वितीयाभिषेके द्वितीयपूजा समाप्ता ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली इंद्र उछव करे, पश्चिम गिरियें सार;
तेहनुं वर्णन हवे करुं, बुद्धितणे अनुसार ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ सांजल रे तुं सजनी मोरी ॥ ए देशी ॥

॥ पश्चिमदिशें अंजन गिरि जे, चैत्य एक तिहां ल हियें जीरे ॥ ते चैत्यनां द्वार चारथी, मुखमंमप प्रेक्षा कहीयें ॥ जिनवर नमियें जीरे ॥ जिनवर नमियें नावें नविजन! जिनठे जगत आधार ॥ जि०॥१॥ ए आंकणीठे ॥ ते आगल चैत्य थुन धारो, वारो मनथी अज्ञान जीरे ॥ मणिपीठ ते आगल सोहे, ते थुनपीठिका समान ॥ जि० ॥ २॥ चैत्यतरु ते कपर दीपे, ते चैत्य वृक्षनें आगें जीरे ॥ एक म णिपीठिका लांबी पहोली, चंद्रकलानें अर्द्धनागें ॥ जि० ॥३॥ चार जोयण कंची ते कपर, महेंद्रध्व ज जे रूडो जीरे ॥ साठ जोयण ते कंचो सोहे, जो यण एक पहोलो कंमो ॥ जि० ॥ ४ ॥ नंदा पुष्कर

णी ते आगें, जोयण शोने पच्चाश जीरें ॥ जांबी पहोली ऊंची दश जे, देखतां होए उद्ल्लास ॥ जि० ॥ ५ ॥ तिहांथी चार दिशें वन चार, वलि ते नंदीसर द्वीपें जीरे ॥ रुषजानन चंडानन स्वामी, वारिषेण वर्द्धमान दीपे ॥ जि० ॥ ६ ॥ ते प्रजुनी पूजा सुर सारे, करवा जवजय दूर जीरे ॥ कहे धर्मचंड जिन अजिषेक, जवि! करो वाजते तूर ॥जि०॥७॥ काव्यं॥स्नात०॥इति तृतीयाजिषेके तृतीयपूजा समाप्ता॥

॥ दोहा ॥

॥ ईशानवज्री उत्तर दिशें, अंजन गिरियें आय;
करे उज्ञव अठाइना, जिनगुण रंगें गाय ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ महारी सहिरे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ उत्तरदिशें अंजन गिरि नाम; कह्यो रमणीक अजिराम रे ॥ धन धन जिनवाणी, जेमां सर्वनी संख्या वखाणी रे ॥ धन०॥ ए आंकणीठे ॥ तिहां चैत्यें एक शोने थाठ; पडिमा ए सूत्रमां पाठ रे॥ धन० ॥ ॥१॥ नाग जूत यक्षनें आशाधर; ए दोदो प्रजुदीठ अमर रे॥धन०॥प्रतिमा आठ ए विनय करंती; प्रतिमा दोय चमर विकंती रे ॥धन०॥ २॥प्रजु पूठें एक छत्रधर

जाणो; ए सासयनावें वखाणो रे ॥धन०॥ हवे पूजा
उपगरण कहियें; आठें अधिक शो लहियें रे ॥धन०
॥३॥ जे अष्ट मंगल फूलनी दाम; कुंन ध्वज दर्प्पण
अनिराम रे ॥ ध० ॥ पुष्फ चंगेरी छत्र नृंगार; घंट
धूप घटी श्रीकार रे ॥ धन० ॥ ४ ॥ ए आदि उपग
रण घणेरां; रजत मणिनां नलेरां रे ॥ ध० ॥ प्रा
साद नूमियें वेलने बूटा; गाम गाम सोनाना लूटा
रे ॥ धन० ॥ ५ ॥ मूल प्रासादमध्ये शत आठ; शो
ल जिननो द्वारें गाठ रे॥धन०॥सर्व ए पडिमा एकशो
चोवीश; सुर प्रणमे नमावी शीशरे ॥ धन० ॥ ६ ॥
कर धरी कलशा रजत मणिना; सुर गुण गाये जगत
धणीना रे ॥ धन० ॥ वीणा मृदंग ताल अमरी;
वजावे जे रागने समरी रे ॥ धन० ॥ ७ ॥ करे जि
नस्नात्र विधियें एम; चंदनें पूजे धरी प्रेम रे ॥ ध
न० ॥ प्रजुगुण गावानी नित्यमेव; धर्मचंद्र मुनिनें
ए टेव रे ॥ धन० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ स्नात० ॥ इति
चतुर्थाजिपेके चतुर्थपूजा समाप्ता ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोकपालनो दधिमुखें, उद्यवनो अधिकार ;
कहिशुं नविजन! सांनलो,जेम सुख लहो अपार॥१॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ रंगरसीया रंगरस बन्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभु शिव रसिया वसिया दिखें ॥ मन मोहनजी ॥ विधि विष्णु शंकर न सोहाय ॥ मनडूं मोह्युंरे मन मोहनजी ॥ पूजतां पडिमा जिनराजनी ॥ मन० ॥ नवनवनां डुरित पलाय ॥ मन० ॥ १ ॥ अंजनगिरि ए चारथी ॥ मन० ॥ चार दिशायें लाख लाख ॥ मन० ॥ जोयण गये जे वाव्यछे ॥ मन०॥ लाख जोयणनी ते लाख्य मन० ॥२॥ जोयण दश ऊंमी कही॥ मन० ॥ मच्छ विनानो जल सोय ॥ मन० ॥ वाव्य एकनें चारे दिशें ॥ मन० ॥ त्रण त्रण सोपान ते होय ॥ मन० ॥ ३ ॥ रत्नतोरण चारे दिशें ॥ मन० ॥ ते जलके तेजें अपार ॥ मन० ॥ पणसे जोयण दूर वाव्यथी ॥ मन० ॥ चउ दिशायें वन चार ॥ मन० ॥ ४ ॥ पहोल पणे शत पांचना ॥ मन० ॥ लांबा पुष्करणी प्रमाण ॥ मन० ॥ वाव्यमध्ये एक दधिमुख ॥ मन० ॥ स्फाटिक रत्ननो जाण ॥ मन० ॥ ॥ ५ ॥ चोशठ सहस्स जोयण ऊंचो ॥ मन०॥ नीचे ऊपर दश हजार ॥ मन० ॥ जाफपणे ते जाणवो ॥

मन०॥सहस्स जोयण कंद विचार॥मन०॥६॥इम शोले दधिमुख जाणजो ॥मन०॥ सर्व प्यालानें आकार॥मन० ॥ शोल उपर शोल चैत्यछे ॥ मन० ॥ अंजनगिरि सरखा धार ॥ मन० ॥ ७ ॥ एकशो चोवीश चैत्य दीठ ॥ मन० ॥ अरिहंतनी प्रतिमा सार ॥मन०॥ लोकपाल सघला तिहां मली ॥ मन० ॥ करे अभिषेक कहे तास ॥ मन० ॥ ८ ॥ तेम श्रावक ! मनरंगशुं ॥ मन० ॥ जिनवरनें करो अभिषेक ॥ मन० ॥ कहे धर्मचंद्र जिन पूजतां ॥ मन० ॥ पामियें शिवगतिनें एक ॥ मन० ॥९॥ काव्यं॥स्नात०॥ ॥ इति श्री पंचमाभिषेके पंचमपूजा समाप्ता ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंद्रकला बमणी कह्यां, होय रतीकर मान ;
तिहां जिनचैत्यें मूरति, पांचशें धनुष प्रमाण ॥१॥
भुवनपति व्यंतर तणा, ज्योतिषीना वली देव ;
वैमानिक सुरवर इहां, करे जिनवरनी सेव ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सातमी, रागसारंग ॥

जिनराज पूजी लाहो लीजीयें ॥ ए आंकणी. ॥
॥ शिवसुखनो अभिलाष करो तो, जिन आणा सिर

वहीजीयें ॥ जिन० ॥ वाव्य वाव्यना अंतर वच्चें, रतिकर दोदो लहीजीयें ॥ जिन० ॥ १ ॥ दश सहस्स जोयण लांबा पहोला, एक सहस्स ऊंचा कही जीयें ॥ जिन० ॥ पद्मराग मणिना जे दीपे, झल्लरीसंठाण सुणीजीयें ॥ जिन० ॥२॥ बत्रीश रतिकरें बत्रीश चैत्यें, प्रभु वंदी सुर हर्षीजीयें ॥ जिन० ॥ तीर्थोदकना कलश भरीनें, जिनअभिषेक करीजीयें ॥ जिन० ॥ ३ ॥ केसर चंदनें अरिहा पूजी, फूल टोडर कंठें ठवीजीयें ॥जिन०॥ कनकपत्र कोरणी करीनें, वच्चें वच्चें रत्न जडीजीयें ॥ जिन० ॥ ४ ॥ सुरपरें भविजन! पूजा रचावी, लखमीनो लाहो लीजीयें ॥ जिन० ॥ कहे धर्मचंद जिनेश्वर साहिब, हवे शिव सुख मुज दीजीयें ॥ जिन० ॥५॥ काव्यं ॥ स्नात० ॥ इति षष्ठाभिषेके षष्ठपूजा समाप्ता ॥

॥ दोहा ॥

सोहमईशानेंद्रनी, अग्र महिषी (आठ) आठ;
तेहना भद्र जे शोलमां, प्रभुचैत्यनो ठाठ ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ आठमी ॥ जुमखडानी देशी ॥

॥ ए द्वीपना मध्यभागमां रे, जे चार विदिशें चार ॥

प्रनु उपदेशिया ॥ रतिकर सर्व रतनमई रे, सहस्सना ऊंचा धार ॥ प्रनु० ॥ १ ॥ दश सहस्स लांबा पहो ला रे, अढीशें जोयण कंद ॥ प्रनु० ॥ एकत्रीश सहस्स ऊपर उशें रे ॥ त्रेवीश कहे जिनचंद॥प्रनु०॥२॥ परिधिना जोयण धारियें रे, नाखीयें अज्ञान चूर ॥ प्रनु०॥ रतिकरथी चारे दिशें रे, लाख जोयण जइयें दूर ॥ प्रनु० ॥३॥ राजधानी चार तिहां रे, गिरि चार मलीनें शोल ॥प्रनु०॥ अग्नि नैरतना गिरि पूठें रे, धुं रहरिलजनानी बोल ॥प्रनु०॥४॥ वाय्य ईशाननां गि रि पूठें रे, ईशान इंडनी आठ ॥ प्रनु० ॥ राजधानी अग्रमहिषीनी रे, बे सिद्धांतें ए पाठ ॥प्रनु०॥५॥ जो यण लाख लाखनी रे, नगरी सोहे ए शोल ॥ प्रनु० ए प्रनुवाणी ते सद्दहे रे, जेनें धर्मशुं रंगचोल ॥ प्रनु० ॥ ६॥ जिहां शोल चैत्य दीठे रे, प्रतिमा ए कशो वीश ॥ प्रनु० ॥ तिहां अग्रमहिषी आवीनें रे, स्नात्र करे वासा वीश ॥७॥प्रनु०॥ तिम तुमें नविजन! नावशुं रे, पूजो श्री अरिहंत ॥ प्रनु०॥ धर्म कहे जिन सेवतां रे, पामियें सुख अनंत ॥ प्रनु० ॥ ८ ॥ काव्यं॥स्नात०॥इति सप्तमाजिषेके सप्तमपूजा समाप्ता॥

॥ दोहा ॥

॥ तिर्ह्नीलोकें देहरां, बत्रीशशें मन आण;
उंगणशाठ ऊपर कह्यां,हवे करुं बिंब वखाण ॥१॥
त्रण लाख एकाणुं सहस्स, त्रणशेनें वली वीश;
शाश्वति पडिमा एटली,हुं प्रणमुं निशि दिश ॥२॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ मनमोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥कुंमल द्वीप सोहामणो ॥ मनमोहन मेरे॥चार तिहां जिनगेह ॥म०॥ जिनपडिमा चारशें वन्नु ॥ मन० ॥ वंडुं हुं धरी नेह ॥म०॥१॥ रुचकें चार चैत्य छे॥म०॥ चारशें वन्नु जिनराज ॥ म०॥ मेरुवनें एंशी देहरां ॥ म० ॥ वन्नुशें जिन वंडुं आज ॥म० ॥ २ ॥ पांच मेरु चूलिकायें ॥ म० ॥ प्रासादें छशें जिनराय ॥म०॥ गजदंतें वीश देहरां॥म०॥ बिंब चोवीशशें समुदाय॥ म०॥३॥ देवउत्तर कुरुखेत्रमां ॥म०॥जिनघर दश विशाल ॥ म० ॥ बारशें बिंबनें पूजतां ॥ म० ॥ पाप जाए पायाल ॥ म० ॥ ४ ॥ एंशी वखारा गिरियें ॥ ॥ म० ॥ प्रासाद एंशी धार ॥म० ॥ छशें अधिक जिन शाश्वता ॥म०॥ पूजीयें नव हजार ॥ म० ॥ ५॥

कुलगिरियें त्रीश देहरां ॥ म० ॥ छत्रीशशें जिनवर जा
ण ॥ म० ॥ चैत्य चालीश दिग्गजें ॥ म० ॥ अडता
ली शत जिन जाण ॥ म० ॥ ६ ॥ दीर्घवैताढ्यें दे
हरां ॥ म० ॥ एकशो शीत्तेर प्रमाण ॥ म० ॥ वीश
हजार बिंब चारशें ॥म० ॥ नविजन ! पूजो सुजाण
॥ म० ॥ ७ ॥ जंबू प्रमुख तरुयें वली ॥ म० ॥ चै
त्य अग्यारशें शीत्तेर ॥ म० ॥ चालीश हजारनें चार
शें ॥ म० ॥ लाख पूजीनें ल्यो शिवसहेर ॥ म०॥८॥
चैत्य हजार कंचनगिरियें ॥म० ॥ बिंब लाखनें वीश
हजार ॥ म० ॥ एंशी इहें एंशी देहरां ॥ म०॥छन्नुशें
बिंब जुहार ॥ म० ॥ ए ॥ चैत्य कूटें त्रणशें एं
शी ॥ म० ॥ बिंब पिस्तालीश हजार ॥ म० ॥ उपरें
छशें जिनवरा ॥म०॥ समरो ऊठीसवार ॥म०॥१०॥
महानदियें शीत्तेर कह्या ॥ म० ॥ चोराशीशें अरिहं
त ॥ म० ॥ वीश प्रासाद यमकगिरें ॥ म० ॥ चोवी
शशें नगवंत ॥ म० ॥ ११ ॥ वृत्तवैताढ्यें वीश छे ॥
म० ॥ शाश्वता जिनगेह ॥ म० ॥ बिंब चोवीशशें
पूजतां ॥ म० ॥ थाए निर्मल देह ॥ म० ॥ १२ ॥
इख्कुकारें चार देहरां ॥ म० ॥ चारशें एंशी जिनबिंब
॥ म० ॥ ते जिनवरनें पूजतां ॥म० ॥ पाप जाए अ

विलंब ॥ म० ॥१३॥ मानुषोत्तरें चार देहरां ॥ म०॥ चारशें एंशी जगवान ॥ म० ॥ व्यंतरमांहे असंख्यछे॥ म० ॥ जिनघर बिंबनुं मान ॥ म० ॥ १४ ॥ असंख्य ज्योतिषीमां कह्यां ॥ म०॥ जिनघरनें जिनराय ॥ म०॥ धर्म कहे प्रजु पूजतां ॥म०॥ शिवसुख वहेलुं थाय ॥ म० ॥ १५ ॥ काव्यं ॥स्नात० ॥ इति अष्टमा जिषेके अष्टमपूजा समाप्ता ॥

॥ दोहा ॥

॥ सात कोडी बहोंत्तेर लाख, अधोलोकें जिनगेह;
तेरशें नव्याशी कोडी, शाठ लाख बिंब एह ॥१ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ काज सिधां सकल हवे सार ॥ ए देशी ॥

॥ हवे असुरकुमारें देहरां,कह्यां चोशठ लाख नलेरां॥ एकशो पन्नर कोडी जाणुं, पडिमा वीश लाख वखाणुं ॥१॥ सासय जिनवरनें पूजीजें,नरजवनो लाहो लीजें॥ वली नागकुमारें कहियें, चैत्य लाख चोराशी लहियें ॥ एक शोनें एकावन कोडी,वीश लाख नमुं कर जोडी॥ सा०॥२॥चैत्य बहोंत्तेर लाख विचार, सुवर्णकुमारें श्रीकार॥एकशोने उगणत्रीश कोड,शाठ लाख ऊपर जिन

जोड ॥ सा० ॥ ३॥ विद्युत्अग्नि द्वीप कुमार, उदधि दिग स्तनित सार ॥ चैत्य पट्निकायें वखाणो, लाख ठोंतेर ठोंतेर जाणो ॥ सा० ॥ ४ ॥ कोड एकशोनें ठ त्रीश, लाख एंशी नमो निश दिश ॥ एक निकायें एटला होय, तिम पांच निकायें जोय ॥सा०॥५॥ जिन प्रासाद ठन्नुं लाख, वायुकुमार मांहे नाख ॥ कोड एकशो वहोंतेर जिनराय, एंशी लाख पूजे दुःख जाय॥सा०॥ ६ ॥ अधोलोकना जिनवर गाया, जग सुजश पडह वजाया ॥ कहे धर्म, नवि! उजमाल, थई पूजो जगत दयाल ॥सा०॥७॥ काव्यं ॥स्नात०॥ इति नवमनिपेके नवमपूजा संपूर्णा ॥

॥ दोहा ॥

॥ ऊर्ध्वलोकें जिनवर घर, लाख चोराशी जाण;
सहस सत्ताणुं ऊपरें, त्रेवीशनुं परमाण ॥ १ ॥
एक शो बावन कोडि जिन, लख चोराणुं सार;
सहस चुमालीश वंदियें, सातशेंनें शाठ धार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ अगीयारमी ॥

॥ सिद्धाचल शिखरें दीवो रे ॥ आदे० ॥ ए देशी ॥
॥ सौधर्मे चैत्य कह्नियें रे ॥ अरिहा पूजा अलवेला॥

लाख बत्रीश संख्या लहियें रे ॥ अ० ॥ लाख शाठ सत्तावन कोड रे ॥अ०॥ पडिमा वंदो कर जोड रे ॥ अ० ॥ १ ॥ चैत्य अडवीश लाख जाणो रे ॥ अ० ॥ ईशान स्वर्गें वखाणो रे ॥ अ० ॥ कोडि पच्चाशनें लाख चाली रे ॥अ०॥ वंदो प्रतिमा रढियाली रे ॥अ० ॥ २ ॥ जिनवरनां बार लाख देरां रे ॥ अ० ॥ सनत्कुमारें नलेरां रे ॥अ०॥ शाठ लाखनें कोड एकवीश रे ॥ अ० ॥ पडिमा कहे त्रिजग ईश रे ॥ अ० ॥ ॥ ३ ॥ माहेंद्र चोथुं चित्त धारो रे ॥ अ० ॥ प्रासाद आठ लाख संभारो रे ॥ अ० ॥ कोडि चउदनें लाख चाली रे ॥अ०॥ प्रभुध्यानें सदा दीवाली रे ॥ अ० ॥ ॥ ४ ॥ पांचमे प्रासाद लाख चार रे ॥ अ० ॥ सात कोड वीश लाख जिन धार रे ॥अ०॥ लांतके सहस्स पच्चाश रे ॥अ० ॥ नेवुं लाख जिन नमियें उल्लास रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ सातमे शुक्रदेव लोकें रे ॥अ० ॥ प्रासाद चालिश सहस्स थोकें रे ॥ अ० ॥ पडिमा बहोंतेर लाख मान रे ॥ अ०॥ सदा धरियें एहनुं ध्यान रे ॥अ०॥६॥ आठमुं सहसार ते कहियें रे ॥अ०॥ जिनघर हजार छ लहियें रे ॥ अ०॥ दश लाखनें एंशी हजार रे॥अ०॥ हुं प्रणमुं त्रणि सवार रे ॥अ०॥

॥ ७ ॥ आनंत प्राणंतें जिन गेह रे ॥ अ० ॥ भांखे चारशें अरिहा तेह रे ॥अ०॥ बहोंतेर हजार जिनरा य रे ॥ अ० ॥ जस प्रणम्यां पातिक जाय रे ॥अ०॥ ॥ ८ ॥ आरण अच्चूतें वंदो रे ॥ अ० ॥ चैत्य त्रण शें शुणि आणंदो रे ॥ अ० ॥ चोपन सहस देवावि देव रे ॥अ०॥ जस सारे सुरपति सेव रे ॥अ०॥९॥ ए कशो अग्यार धुर त्रिकें रे ॥अ०॥ जिन चैत्य धारो वि वेके रे ॥ अ० ॥ त्रणशें वीश तेर हजार रे ॥अ० ॥ पूजतां पामे जवपार रे ॥ अ० ॥ १० ॥ त्रिक बीजी यें एकशो सात रे ॥ अ०॥ पडिमा बार सहस विख्या त रे ॥अ०॥ आवशें अधिक नमो चाली रे ॥अ० ॥ सुर पूजे जावें निहाली रे ॥अ०॥११॥ त्रिक त्रीजीयें एकशो सार रे ॥अ०॥ प्रणमो बिन्न बार हजार रे ॥ अ०॥ अनुत्तरे पांच चैत्य विशाल रे ॥अ०॥ वगें जि न नमो थई उजमाल रे॥अ०॥१२॥ इम कल्प कल्पा तित देवा रे ॥ अ० ॥ इव्यजावें करे जिनसेवा रे ॥ अ०॥ कहे धर्म, जवि! नित्य पूजो रे॥ अ० ॥ जग तारक देव न दूजो रे ॥अ०॥१३॥ काव्यं ॥स्नात०॥ इति दशमाजिषेके दशमपूजा संपूर्णा ॥

॥ दोहा ॥

॥ पन्नर क्षेत्रें प्रभु तणी, पडिमा असासय जेह;
॥ तेना पदपंकज नमुं, करवा पापनो छेह ॥ १ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ चोवीश चोकनी देशीछे ॥

॥हे साहेबजी! नेक नजर करी नाथ! सेवकनें तारो॥ हे साहेबजी! मेहेर करी पूजानुं फल मुज आलो॥ए आंकणीछे॥ प्रभु तुज मूरति मोहन वेली, पूजे सुर अपछरा अल बेली; वर घनसार केसरशुं भेली ॥ हे सा०॥१॥सिद्धाचल तीर्थ भवि! सेवो, चउद क्षेत्रें तीर्थ नहीं एवो; एम बोले देवाधिदेवो॥हे सा०॥२॥ गिरनारें जईयें नेम पासें, इहां भावि जिन सिद्धि जाशे; जस ध्यानें पातिकडां नासे ॥ हे सा० ॥ ३ ॥ आबूगढें आदि जिनराया, नेमनाथ शिवादेवी जाया; जस चोशठ ईंद्रें गुण गाया ॥ हे सा०॥ ४ ॥ वली समेतशिखरें जगना ईश,गया मोक्षें जिनराज वीश; ध्येय ध्यावो भविजन ! निश दिश ॥ हे सा०॥५॥ अष्टापदें सकल कर्म टाली, प्रभु वरिया शिववधू लटकाली; आदीसर पूजतां दीवाली ॥ हे सा०॥ ६ ॥ ए आदें तीर्थ प्रण

मो रंगे, वली पूजो प्रभुनें नव अंगे; कहे धर्मचंद्र, अति कमंगे ॥ हे सा० ॥ ७ ॥

॥कलश, राग धन्याश्री॥

॥ गायो गायो रे नंदीसर तीर्थ में गायो, जंघा ॥ विद्या चारण मुनिवर, जिहां सुरनो समुदायो; किंन्नर किंन्नरी खेचर आवे, तिम चोशठ सुररायो रे॥ नंदी० ॥ १ ॥ अपछरा इंद्राणी मनरंगे, स्नात्र करे सुखदायो; करे नृत्य सुकंठें गावे, जिन पूजि मोह घटायो रे ॥नंदी०॥ २॥तपगछपति श्रीदयासूरिना, खुशालविजय उवझायो; तास बंधव सुगुण गीतारथ, कल्याणचंद्र सवायो रे ॥ नंदी० ॥ ३॥ विजयदेवेंद्र सूरीश्वर राज्यें, ए अधिकार रचायो; दमणबंदरें रही चोमासुं, रूपचंद सुपसायो रे ॥ नंदी० ॥ ४ ॥ अढारशें छत्रुं नाद्रव मासें, संवछरिदिन गायो; प्रभु समुदाय कवि धर्मचंद्र, संघ सकल हरखायो रे ॥नंदी०॥५॥ इति एकादशा निपेके एकादशपूजा संपूर्ण ॥

॥ इति कविधर्मचंद्रजीकृत श्री नंदीश्वर द्वीपपूजा संपूर्ण ॥

॥ श्री सकलचंदजी उपाध्यायकृत-
सत्तरभेदी पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहंत मुखकज वासिनी, भगवति भारति देवी;
समरिय पूजा विधि भणूं, तुं मुज मुखपद सेवि॥ १॥

॥ आर्या, गाथा ॥

॥ एहवण विलेवण अंगे, चक्खु जुअलं च वास पूआ ए; पुप्फारोहणं माला, रोहणं तह वन्नयारोहणं ॥ १ ॥ चुन्नारोहणं जिणपुंगवाण (झयारोहणं) आहरणरोहणं चेव; पुप्फगिह पुप्फपगरं, आरत्ती मंगल पईवो॥ २ ॥ दीवो धूवक्खेवो, नेवज्जं सुहफलाण ढोवणयं; गीयं नट्टं वज्जं, पूया भेया इमे सत्तर ॥ ३ ॥

॥ प्रथमन्हवणपूजाप्रारंभः ॥

॥ ढाल रत्नमालानी, देशाखरागेण गीयते ॥

॥ प्रथम पूरवदिशें, कृत शुचि स्नानको, दंत मुख शुद्धको, धोति राजी ॥ कनकमणि मंडित, विशद गंधोदकें, भरीय मणि कनकनी, कलशराजी॥ १ ॥

जिनभवनं गतो,भगवदालोकिनें, नमति तं प्रथमतो, मार्जतीशं ॥ दिवि यथेंद्रादिक,स्तीर्थगंधोदकें, स्नापय ति श्रावको, तिम जिनेशं ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग अमाणो, मल्लार, केदारमिश्रित ॥

॥ भवि ! तुम देखो, अब तुम देखो, सतरभेद जिन भक्ति ॥ अंग उपंग कही जिन गणधर, कुगति हरि दे मुक्ति ॥ भवि! तुम० ॥ १ ॥ शुचितनु धोति ध री गंधोदिक, भरि मणि (कनक) नी कलशालि ॥ जिन दीठे नमी पूंजी परवाली, दे निज पातिक गा ली ॥ भवि! तुम० ॥२॥ समकित शुद्ध करी दुःखहर णी, विरताविरति करणी ॥ योगीसर पण ध्यानें सम री, भवसमुद्दकी तरणी ॥ भवि ! तुम० ॥३॥ देखा वती नहीं कबहुं वैतरणी, कुमतीकुं रविभरणी ॥ स कल मुनीसरकुं शुभ लहरी, शिवमंदिर नीसरणी ॥ भवि ! तुम० ॥ ४ ॥ इति प्रथमन्हवणपूजा समाप्ता ॥

॥ द्वितीयचंदनविलेपनपूजाप्रारंभः ॥

॥ ढाल जयमालानी, रामग्रीरागेण गीयते ॥

॥ बावना चंदना, सरस गोसीसमां, घसीय घनसार शुं, कुंकुमा ए ॥ कनकमणि भाजनां, सुरभिरस पूरि

यां, तिलक नव प्रभु करो, अंगमां ए ॥ १ ॥ चरण जानू करें, अंस सिर भाल गलें, कंठ हृदि उदर जि न, दीजीयें ए ॥ देवना देवनुं, गात्र विलेपतां, हर प्र भु! डुरित, कहि लीजीयें ए ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग टोडी, अथवा वैराडी ॥

॥ तिलक करो प्रभु नव अगें, कुंकुम चंदन घसी शुचि घनसार ॥ प्रभुपगें जानु कर अंस शिर भाल, गल कंठ हदि उदरें चार ॥ अहो भाल गल कंठ हदि, उ दरें चार स्वयं पूजाकार ॥ तिल०॥ १ ॥ करिय यक्ष कर्दम अगरचुत मर्दन, लेपो मेरे जगगुरु गात ॥ ह रि जिम मेरुपर रिषभकी पूजा, करी देखावति कौतुक जंत जंत भाति ॥ तिल० ॥ २ ॥ हमे तुम तन भी प्यो तोभी भाव नांही ढीप्यो, देखो प्रभुविलेपनकी वात ॥ हरियो हम ताप ए दूजी पूजा विलेपनकी, उं र हरो रे डुरितकुं शुचि कीनो गात ॥तिल० ॥ ३ ॥ इति द्वितीयचंदनविलेपनपूजा समाप्ता ॥

॥ तृतीयचक्षुयुगलपूजाप्रारंभः ॥

॥ रामग्रीरागेण गीयते ॥

॥ तिमिर संकोचनां, रयणनां लोचनां, इम कही जिन

मुखें,नविक! थापो ॥ केवल ज्ञाननें,केवलदर्शन,लोचन दोय, हम देव ! आपो॥१॥अहव पावंतरें, त्रीजीय पूजमां,नुवन वैरोचन,जिनप आगें॥देव चीवर समुं,वस्त्र युग पूजतां, सकल सुख स्वामिनी,लील मागे ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग अधरस ॥

॥ रयण नयणकरी दोय ले कें, मेरे प्रनुमुख दीजें ॥ केवल ज्ञाननें केवल दर्शन, हमपर कृपा कर प्रसाद कीजें ॥ रयण० ॥ देवडुष्यसम वस्त्र जोड, अहवा त्रीजी पूजा कीजें ॥ उपशम रस नरी नयण कटोरडे, देखी देखी प्रनुमुख दीजें ॥ रयण० ॥ २ ॥ इति तृतीयचक्षुयुगलपूजा, तथा वस्त्रयुगल देवडुष्य वस्त्र, ते अंगलूणा वेनी पूजा समाप्ता ॥

॥ चतुर्थवासपूजाप्रारंनः ॥

॥ रामग्रीरागेण गीयते ॥

॥ नंदन वनतणां, बावना चंदनां, वासविधि चूरण,विरचियां ए ॥ जाई मंदारछुं, शुद्ध घनसारछुं, सुरनिसम कुसुमशुं,चरचिया ए ॥१॥ चउथीय पूजमां, सुगंध वास करी,जे जिन सुरपतें,अरचिया ए॥ प्रनुतणे अंग, मनरंग नरि पूजतां,आज उच्चाट सवि,खरचिया ए॥२॥

॥ गीत ॥ राग रामग्री ॥

॥सुनो जिनराज! तव मह्नं ॥ एआकणीॆ ॥ इंड्रादिक परें किम ह्मह्ोवत, तोनी तुम सब सह्नं ॥ सुनो० ॥ १ ॥ सत्तरनेदें डुपदरायकी, कुमरी पूजति अंगें ॥ जिम सूरियान्नसुरादिक प्रनुनें,पूजति नवि मन रंगे ॥ सुनो० ॥२॥ विविध सुगंधित चूरणवासं, मुंचति अ ग ठवंगे ॥ चजथीय पूज करत मन जानत,मिलाव तिया सुखसंगे ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ इति चतुर्थ सुगंधवासपूजा समाप्ता ॥

॥ पंचमपुष्पपूजाप्रारंन्नः ॥

॥ आशावरीरागेण गीयते ॥

॥ मोगर लाल गुलाल मालती, चंपक केतकी वेली॥ कुंद प्रीयंगु नागवर जाति,बोलसिरी शुचि मेली ॥मो० ॥ १ ॥ नूमंझल जल मोकल फूलें, ते पण शुद्ध अखंमें ॥ जिनपद पंकज जिम हरि पूजे, तेणीपेरें नवि ! तुं मंमे ॥ मो० ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग नृत्यकी, आसावरी, नट्ट,तथा श्रीराग॥ ॥ पारग ! तेरे पदपंकज पर,विविध कुसुम सोहे, हां

रे विविध कुसुम सोहे॥अवरनकुं आक धतूरे, तुज समो नहिं कोहे ॥ पारग ! ॥ १ ॥ विविध कुसुमजातिशुं जब, पंचमी पूजा पूजे ॥ तब भवि जन रोग शोग, सवि उप द्रव धूजे ॥ पारग ! ॥ २॥ इति पंचमपुष्पपूजा समाप्ता

॥ षष्ठपुष्पमालपूजाप्रारंभः ॥

॥ देशाखरागेण गीयते ॥

॥ चंपकाशोग, पुन्नाग वर मोगरा, केतकी मालती, महमहंती ॥ नाग प्रियंगु शुचि, कमल सुबोलसिरी, वेलि वासंतिका, दमन जाति ॥ १ ॥ कुंद मचकुंद नवमालिका वालको, पाडल कोमल, कुसुम गुंथी ॥ सुरभिवर दाम, जिनकंठें वेगी वदे, भ्रमरमुख हुं तुम्हे, सुखीय मूंथी ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग सवाब ॥

॥कंठपीठे दाम ठीठे. प्रभु मेरे पाप नीठे ॥ ज्युं शशी देखत जाय तन ताप ॥ पंचवर्णी सब कुसुमकी कंठ ठवी, गगनें सोहती जेसें सुरपतिचाप ॥कंठ०॥ ॥ १ ॥ लाल चंप गुलालवेली, जाई मोगर द मन भेली ॥ गुंथी विविध कुसुम सब जाति, ठही

माल चडे दिश वासती ॥ तव सुरवधूपरें नरवधू गाती ॥ कं०व० ॥ २ ॥ इति षष्ठपुष्पमालपूजा समाप्ता ॥

॥ सप्तमकुसुमञ्यांगीरचनारूप पूजाप्रारंन्नः ॥

॥ गोडीरागेण गीयते ॥

॥ सातमी पूजमां वरणक फूलशुं चितरे ए ॥ चंपक दमणलो मरुउ जासुलशुं नवि करे ए ॥ ञ्यांगीय केतकी विचविच शोन्नती देखीयें ए ॥ ञ्यांगीय मिश शिवनारीनें कागल लेखीयें ए ॥ १ ॥

॥ गीत ॥ राग मालवी,गोडी ॥

॥ कुसुम जाति ञ्यांगी मनखंतें,पंचवर्णनी जाति रे ॥ मांहे विविध कथीपा जातिरें; सूरियान्नादि करे जिन पूजा, सकल सुरासुर गातें रे ॥ कुसु० ॥ १ ॥ चंपकशुं दमणो मनरमणो, संजराग ज्युं श्यामा रे ॥ पंच वर्ण ञ्यांगी प्रन्नु ञ्यंगे, रचयति ज्युं सुररामा रे ॥ ऋषन्न कूट चक्कि नामा रे ॥ कुसु०॥ २ ॥ इति पंच वर्ण कुसुमजाति ञ्यांगीरचनारूप सप्तमपूजा समाप्ता ॥ हमणां पण ते संप्रदायें विविध जातिना फूलनी ञ्यांगी करता देखायठे ॥

॥ अष्टमचूर्णपूजाप्रारंजः ॥

॥केदार,कमोद,कल्याणरागेण गीयते॥

॥ दोहा ॥

॥ घनसारादिक चूरणं, मनहर पावन गंध;
जिनपति अंग सुपूजतां,जिनपद नवि करे बंध॥१॥
अगर चूर्ण अति मरदिउं, हिमवालुका समेत;
दश दिशि गंधे वासता, पूजो जिनपद हेत ॥२ ॥

॥गीत॥ राग कनडो ॥

॥चूरोरी माई, जिनवर अंग सारकपूरें ॥ सब सुख पूरण चूरण चार्चित, तनु नरो आणंद पूरे ॥ चूरोरी० ॥१॥ पावन गंधित चूरण नरशुं, मुंचति अंग उवंगे, आठमी पूज करत तिम नवि जन,मिलावतीया सुख संगें ॥ चूरोरी०॥२॥इति अष्टमचूर्णपूजा समाप्ता ॥ यद्यपि वासपूजा पहेली पणछे, परंतु ते वास चंदन नोज जाणवो,अनें आ चूर्णपूजा ते वासविना बीजा सुगंधद्रव्य कर्पूरादिकनीछे ॥

॥ नवमध्वजपूजाप्रारंजः ॥

॥ गोडी राग, वस्तु छंद, जाफरतालेन गीयते ॥

॥देवनिर्मित, देवनिर्मित, गगनें अति तुंग ॥ धर्मध्वजा जन मनहरण, कनक दंमगत सहस्स जोयण, रणझुणंत किंकिणीनिकर ॥ लघुपताकयुत, नयनभूषण, जिम जिन आगल सुर वहे ॥ तिम निजधन अनुसार, नवमी पूजा ध्वज तणी, कहेप्रभु! तुं हम तार ॥ १ ॥

॥गीत॥ राग गोडी नट्ट ॥

॥ माई सहस्स जोयण दंम ऊंचो, जिनको ध्वज राजे ॥ लघुपताक किंकिणीझुत, पवन प्रेरित वाजे ॥ माई० ॥ १ ॥ सुरनरमन मोहन सोहन, जिम सुरध्वज कीनो, तिम भवि! ध्वजपूज करतां, नरभवफल लीनो ॥ माई० ॥ २ ॥ इति नवमध्वजपूजा समाप्ता ॥

॥ दशमआभूषणपूजाप्रारंभः ॥

॥ गोडी धवलरागेण गीयते ॥

॥लालवर हीरडा, पांच पीरोजडा, विधिजडया ए ॥ मोतीय नीलुया, लसणिया भूषणा, तिहां चडया ए ॥ कानें रविमंमलसम, जिन कुंमल दीजीयें ए ॥ अंगद रयणनो, मुकुट कंठावलि, कीजीयें ए ॥ १ ॥

॥ गीत ॥ राग गोडी त्रिताल ॥

॥ मुकुट दीठ कनकघडयो, रयणजडयो, जिनवर

शीश ॥ उरवर हार रचित कहे भूषण,दूषण हर ज गदीश ! ॥ मुकुट० ॥१॥ लालडे खरे हीरे, पांच मो तीन रयण जडे दो कुंमल ॥ अंगद जडित सिंहासन चामर, दिउ पद लियो आखंमल ॥ मुकुट०॥ २ ॥ इति दशमआभूषणपूजा समाप्ता ॥

॥ एकादशकुसुमग्रहपूजाप्रारंभः ॥

॥ केदारगोडीरागेण गीयते ॥

॥विविधकुसुमें रच्युं, विश्वकम्मसिच्युं, कुसुमगेहं ॥ रुचि रसमनागशुं, सुरविमाना जिग्युं,रयणरेहं ॥ १ ॥ तोर णजालशुं, कुसुमनी मालशुं, शोभतुं ए ॥ गुच्छ चंद्रो दय, जूमखा वृंद जे थोभतूं ए ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग केदारो, अनें बिहाग ॥

॥ मेरो मन रम्यो जिनवर कुसुमघरें, हांरे कुसुमघरें॥ मेरो०॥ विविध जुगति वर कुसुमकी जाति,भाति जेसी अमरधरें ॥मेरो०॥१॥ कुसुम जूमख, चंद्रोदय तोरण, जालिक मंमप भाग॥ एकादशमी पूज करंता, अविच ल पद भवि! माग ॥ मेरो० ॥ २ ॥ इति एकादश कुसुमगृहपूजा समाप्ता ॥

॥ गीत ॥ राग कल्याण ॥

॥ धूपी धूमावली, जिनमुख दाहिणवर्त्त करंती, देवगति सूचती चाली ॥ धूपी० ॥ कृष्णागरु अंबरमृगमदशुं, नेली तिम घन सारो ॥ धूप प्रदीप दशांग करंतां, चौदमी पूजा नवि तारो ॥ धूपी० ॥ १ ॥ इति चतुर्दशधूपदीपपूजा समाप्ता ॥

॥ पंचदशगीतपूजाप्रारंभः ॥

॥ त्रिवेणी, गोडी राग, गाथाबंधेन गीयते ॥

॥ गगननुं नहिं जिम मानं, तिम अनंतफल जिनगुण गानं ॥ तान मान लयशुं करी गीतं, सुख दीये जिम अमृतपीतं ॥ १॥ वीण वंश तल ताल उवंगे, सुरति राखी वर तंति मृदंगें ॥ जयत मान पडताल्लिक ताल्लो, आयत धरीनें पातिक घाल्लो ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ श्रीराग ॥

॥तुं गुण पार नहीं सुयणो,मानातीत यथा गयणो॥तुं० तान मान लयशुं जिनगीतं, डुरित्त हरे जिम रज पवणो ॥ तुं० ॥ १ ॥ वंश उपंग ताल सिरिमंमल, चंग मृदंग तंति वीणो ॥ वाजत्ति तान मान करि गीतं, पीतामृत परि कर लीनो ॥ तुं०॥ २ ॥ गावति

सुरगायन जिम मधुरं, तिम जिनगुणगणमणिरय
णो ॥ सकलसुरासुर मोहन तूं जिन! गीत कह्यो
हम तुम नयणो ॥ तुं० ॥ ३ ॥ इति पंचदशगीत
पूजा समाप्ता ॥

॥ षोडशनृत्यपूजाप्रारंन्नः ॥

॥ सोरठ मधुमादन रागेण गीयते ॥

॥ सरस वय वेष मुख रूप कुच शोन्नती, विविध नू
षांगिनी सुरकुमारी ॥ एकशत आठ सुरकुमर कुमरी
तिहां, विविध वीणादि वाजित्र धारी ॥ सरस० ॥१॥
अन्निनव हस्तकी हावन्नावें करी, विविध जुगतें बहु
नाच कारी ॥ देवना देवनें देवराजी यथा, करति नृ
त्यं तथा नूमिचारी ॥ सरस० ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग शुद्धनट्ट ॥

॥ एकशत आठ नाचे, देव कुमर कुमरी, दाँदाँदाँ
मुरज गुजती, नाचति दई न्नमरी ॥ एक० ॥ १ ॥ घ
नकुचयुग हारराजि, कशि- कंचूकीबंधी ॥ सोलस सिं
गार सोन्नित, वेणी कुसुमगंधी ॥ एक० ॥२॥ नट्ट क
टकटि ठहू ठहू, विच पट्ट ताल वाजे ॥ देखावति
जिन हस्तकी, नृत्यकी नवि लाजे ॥ एक० ॥ ३ ॥

तिनतिनाति तंति वाजे, रणझुणंति वीणा ॥ तांभव जिम सुर करंत, तिम करो भवि! लीणा ॥ एक० ॥४॥

इति षोडशनृत्यपूजा समाप्ता ॥

॥ सप्तदशासर्ववाद्यपूजाप्रारंभः ॥

॥ सामेरीरागेण गीयते ॥

॥ समवसरण जिम वाजां वाजें, देव डुंडुभि अंबर गाजे, ढोल निशान विशाल ॥ भूंगल झल्लरि पण वन फेरी, कंसाला पुडबडी वर भेरी, सरणाई रण कार ॥ १ ॥ मुरज वंश सुरती नवि मूके, सत्तरमी भ वि पूज न चूके, वीणा वंश कहे जिन जीवो, आर ति तिम मंगल पईवो ॥ २ ॥

॥ गीत ॥ राग गुर्जरी ॥

॥ घणूं जीव तूं जीव जिनराज! जीवो ॥ शंख सरणाई बोले ॥ मद्दुवरी परी परी देवकी डुंडुभी, हे नहीं जि न तणे कोइ तोले ॥घणूं०॥१॥ ढोल निशान कंसाल तल तालशुं, जल्लरी पणव भेरी नफेरी ॥ वाजतां दे व वाजित्र जाणे कहे, सकल भविकों प्रभो ! भव भ फेरी ॥घणूं०॥२॥ एणीपरें भविक वाजित्र पूजा करी, कहे मुखें तुं प्रभु ! त्रिजग दीवो ॥ डंडपरि किम अमे

जिनपपूजा करुं, आरती साखि मंगल पईवो ॥ घणुं० ॥ ३ ॥ इति सप्तदशसर्ववाद्यविशेषपूजा समाप्ता ॥

॥ कलश ॥

॥ धन्याश्रीरागेण गीयते ॥

॥ थुणीउ थुणीउ रे प्रभु ! तुं सुरपति जिम थुणीउ ॥ तिन भुवन मन मोहन लोचन, परम हर्ष तव जणीउ रे ॥ प्रभु०॥ १ ॥ एक शत आठ कवित नित्य अनोपम, गुण मणि गूंथी गुणीउ ॥ भविक जीव तुम थय थुई करतां, डुरित मिथ्यामति खणिउ रे ॥प्रभु० ॥ २ ॥ तप गछ अंबर दिनकर सरिखो, विजयदान गुरु मुणिउ ॥ जिन गुण संघ भगति करि पसरी, कुमति तिमिर सब हणिउरे॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ इणीपरें सत्तरभेद पूजा विधि,श्रावककुं जिन भणिउ ॥ सकल मुनीसर काउसग्ग ध्यानें, चिंतवित तस फल चुणिउ रे ॥ प्रभु०॥ ४ ॥ इति कलश ॥

॥ इति श्री सकलचंदजी उपाध्यायकृत सत्तरभेदी पूजा समाप्ता ॥

॥ अथ श्री विजयलक्ष्मीसूरीकृत विंशा-ति स्थानक तपपूजा प्रारंभः ॥



॥ श्री अरिहंतपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री शंखेश्वर पासजी, सकलजंतु हितकार ;
प्रणमी पदयुग तेहनां, स्तवनपूजा रचुं सार ॥१॥
बहु विधि तप जप दाखिया, लोक लोकोत्तर सब्ब ;
वीश स्थानक सम को नहीं, सद्गुरु वदे पसब्ब॥२॥
अरिहंतादिक पद तणुं, कारण ए तप सत्य ;
त्रिकयोगें प्रभु पूजियें, भावशुं जेवी शक्त ॥ ३ ॥
निर्मल पीठ त्रिकोपरि, स्थापी जिनवर वीश ;
पूजो पगरण मेलवी, पूजियें विश्वावीश ॥ ४ ॥
एक एक पद वर्णव करी, पूजा पंच प्रकार ;
अडविध एकविश जाणियें, सेवो सतर उदार ॥५॥
सजल कलश अड जातिना, जिनआणा शिरधार;
पूजे स्थानक वीशनें, तस नहिं डुरित प्रचार ॥६॥

परम पंच परमेष्टिमां, परमेश्वर जगवान् ;
चार निखेपें ध्याईयें, नमो नमो जिनजाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ आदिजिणंद! मया करो ॥ ए देशी ॥

॥ श्री अरिहंत पद ध्याईयें, चोत्रीश अतिशय वंता रे ॥ पांत्रीश वाणी गुणें जस्या, बार गुणें गुणवंता रे ॥ श्री०॥ १ ॥ अडहिय सहस लक्षण देहें, इंद असंख्य करे सेवा रे ॥ त्रिहुं कालना जिन वांदवा, देव पंचम महादेवा रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ पंच कल्याणक वासरे, त्रिजुवन थाय उद्योत रे ॥ दोष अढार रहित प्रजु, तरण तारण जग पोत रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ षट्काय गोकुल पालवा, महा गोप कहेवाय रे ॥ दया पडह वजडाववा, महा माहण जगताय रे ॥ श्री० ॥४॥ जवोदधि पार पमाडता, चोथो वर्ग देखावे रे ॥ जाव निर्यामिक जाविउ, महासत्रवाह सोहावे रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ असंख्य प्रदेश निर्मल थया, उत्ति पर्याय अनंता रे ॥ नवनवा ज्ञेयनी वर्त्तना, अनंत अनंती जाणंता रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पिंम पदस्थ रूपस्थमां, ड्व्य गुण पर्यायें ध्याया रे ॥ देवपालादि सुखी थया, सौजाग्यलक्ष्मीपद पाया रे ॥ श्री० ॥७॥ इति श्री अरिहंतपद पूजा प्रथमा ॥

मर नरिंद शुभगाय ॥ मेंं०॥ ४ ॥ यथोचित चऊविह संघनी रे,भरतादिक परें भक्ति॥ द्रव्यभावथी आदरो रे, योग अवंचक शक्ति ॥ मेंं० ॥ ५ ॥ पदस्थध्यानें करि आतमनें रे, तन्मय करण प्रकार ॥ सहजानंद विला सता रे, सौभाग्यलक्ष्मी पद धार ॥ मे० ॥ ६ ॥ इति प्रवचनपद पूजा तृतीया ॥

॥ आचार्यपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ छत्रीश छत्रीशी गुणें, युगप्रधान मुणिंद ;
॥ जिनमत परमत जाणता, नमो तेह सूरिंद ॥१॥

॥ ढाल ॥ आवो आवो रें सयण ! भगवति सूत्रनें सुणि यें ॥ ए देशी ॥

॥ सरसती त्रिभुवनस्वामिनी देवी, सिरिदेवी यक्षराया॥ मंत्रराज ए पंच प्रस्थानें, सेवे नित्य सुखदाया ॥ भवि! तुमे वंदो रे, सुरीश्वर गछराया ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ त्रण कालना जिन वंदन होये, मंत्रराज समरणथी ॥ युगप्र धान समभावाचारज, पंचाचार चरणथी ॥भ०॥ २ ॥ पडिरूवादिक चौद गुण धारी, क्षांति प्रमुख दश धर्म ॥ बार भावनाभावित निज आतम, ए छत्रीश गुण वर्म

॥ ज० ॥ ३ ॥ आठ प्रमाद तजी उपदेशे, विकथा सात निवारे ॥ चार शिक्षा करि जिन पडिबोहे, चउ अनुयोग संजारे ॥ ज० ॥ ४ ॥ बारशें छत्तु गुणें गुणवंता, सोहम जंबु महंता ॥ आयरीया दीठे ते दीठा, स्वरूपसमाधि उल्लसंता ॥ ज० ॥ ५ ॥ युगप्रधान सूरि त्रेवीश उदये, दोय हजारनें चार ॥ समयागम अनुजव अभ्यासी, थाशे जग जन मनोहार ॥ज०॥ ॥६॥ ए पद सेवतो पुरुषोत्तम नृप, जिनवर पदवी लहिया ॥ सौजाग्यलक्ष्मी सूरी जावें जजतां, जविक जीव गह गहिया ॥ज०॥७॥ इति आचार्यपदपूजा चतुर्थी॥

॥ थविरपदपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ तजि परपरिणति रमणता, लहे निजजाव स्वरूप; थिरकरता जवि लोकनें, जय जय थविर अनूप ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ तपशुं रंग लाग्यो ॥ए देशी॥

॥पंचम पदनें गाइएं रे, जाव थविर अधिकार रे ॥ लौकिक मात पिता कह्यां रे, लोकोत्तर व्रत धार; गुणि जन! वंदो रे ॥ वंदो वंदो रे थविर महाराज, डुरित्त निकंदो रे ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ संयमयोगें सीदता रे, बाल गिलानादि

साधु रे ॥ यथोचित सहाय देवेकरी रे,टाळे सर्व उपाधि ॥गु०॥२॥ वीश वर्ष पर्यायथी रे, शाठ वर्ष वय हुंत रे॥ चोथा अंग उपर नण्या रे, श्रुत थविरा ए नणंत॥ गु० ॥३॥ मेघ अप्रमत्ता थिर कस्या रे,त्रिशलानंदन देव रे॥ पचाश सहस साधु साधवी रे, संबंध कहि काम देव ॥गु०॥४॥ ठाणंगें दश थविरा कह्या रे, रत्नत्रयना नि धान रे ॥ ते इहां प्रशस्तनावें ग्रह्या रे, इव्यादिक अनु मान ॥ गु० ॥ ५ ॥ तप श्रुतधीरज ध्यानथी रे, इव्य गुणपर्याय ज्ञाता रे ॥ स्वरूपरमण थविरा नला रे,न हिं पलितांकुर त्राता ॥ गु० ॥ ६ ॥ ए पद साधतो नावथी रे, पद्मोत्तर महाराय रे ॥ तीर्थंकर पदवी ल ही रे, सौनाग्यलक्ष्मी सुखदाय ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति थविरपदपूजा पंचमी ॥

॥ उपाध्यायपदपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बोध सूक्ष्मविणु जीवनें, न होए तत्वप्रतीत ;
नणे नणावे सूत्रनें, जयजय पाठकगीत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ रसीयानी देशी ॥

॥ श्री उवज्झाय बहुश्रुत नमो नावशुं, अंग उपांगना

जाण; मुणिंदा ॥ नणे नणावे शिष्यनें हित करी, करे नवपल्लव पहाण; विनीता ॥ श्री० ॥ १ ॥ अर्थसूत्र कहे वाना विनागथी, सूरिश्वर पाठक सार; सोहंता ॥ नव त्रीजे अविनाशी सुख लहे,युवराजपरें अणगार; महंता ॥श्री०॥२॥ चौद दोष नख्यो अविनीत शिष्यनें,करे पन्नर गुणवंत; विदिता ॥ ग्रहण आसेवन शिक्षादानथी, स मय जाणे अनेकांत; सुझानी ॥श्री०॥३॥ आवश्यक पचवीश शीखवे वांदणे, पचवीश क्रियानो त्याग; वि चारी ॥ पचवीश नावना नावे महाव्रती, ब्रुंन पच वीशी गुण राग; सुधारी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पयनख्यो द क्षिणावर्त्त शंख शोनियें, तिम नय नाव प्रमाण; प्रवी णा ॥ हय गय वृषन पंचानन सारिखा, टाले परवादी अनिमान, अदीना ॥श्री०॥५॥ वासुदेव नरदेव सुरप ति उपमा,रवि शशी नंनारी रूप; दीपंता ॥ जंबूसीता नदी मेरु महीधरो, स्वयंनू उदधि रयण नूप; नणंता ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ए शोल उपमा बहुश्रुतनें कही, उत्तरा ध्ययनें रसाल; जिणंदा ॥ महींडपाल वाचक पद सेव तो, सौनाग्यलक्ष्मी सुविशाल; सुरिंदा ॥ श्री० ॥७॥ इति उपाध्यायपदपूजा षष्ठी ॥

॥ साधुपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्यादवाद गुण परिणम्यो, रमता समता संग;
साधे शुद्धानंदता, नमो साधु शुभरंग ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ कर्मपरीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ए देशी॥

॥ मुनिवर तपसी रिषि अणगारजी रे, वाचंयम व्रती साध ॥ गुण सत्ताविशें जेह अलंकस्या रे, विरमी सकल उपाध ॥ भवियण ! वंदो रे, सातमुं पद भलुं रे ॥१॥ ए आंकणी ॥ नवविध भावलोच करे संयमी रे, दशमो केशनो लोच ॥ ठंगणत्रीश पासथ्था भेदछे रे, वारे तस नहिं जग शोच ॥ भ० ॥ २ ॥ दोष सडतालीश आहार ना वारता रे, अतिक्रम न करे चार ॥ मुनिनें अर्थें स मारे मंदिरां रें, परिहरे एह आचार ॥ भ० ॥ ३ ॥ नरना दोष अढार निवारिनें रे, दीक्षा शिक्षा दिये सार ॥ पुण्य पाप पुजल हेयरूपता रे, समजावें सुगति संसार ॥ भ० ॥ ४ ॥ सत्यहेतु भव अटवी मूकवा रे, फरश्युं ठकुं गुणगण ॥ योग अध्यातम ग्रंथनी चिंतना रे, किरिया नाण पहाण ॥भ०॥५॥ पूरवव्रत विराधक योगथी रे, कूटलिंगी पणुं थाय ॥ दंभजाल

जंजाल सवि परिहरे रे, चरण रसिक कहेवाय ॥न० ॥ ६ ॥ कोडि सहस नव साधु संयमी रे, स्तवियें गीतारथ जेह ॥ वीरभद्र परें तीर्थपति हुवे रे, सौभाग्यलक्ष्मी गुणगेह ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति साधु पदपूजा सप्तमी ॥

॥ ज्ञानपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अध्यातम ज्ञानें करी, विघटे भव भ्रमभीत ;
सत्य धर्म ते ज्ञानछे, नमो ज्ञाननी रीत ॥ १ ॥

॥ढाल॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

ज्ञानपद भजियें रे जगत सुहंकरु, पांच एकावनभेदें रे॥ सम्यक्ज्ञान जे जिनवर भासियो, जडता जननी छेदे रे ॥ज्ञा०॥१॥ ए आंकणी॥ भक्षाभक्ष विवेचन परगडो, खीर नीर जिम हंसो रे ॥ भाग अनंतमो रे अक्षरनो सदा, अप्रतिपाति प्रकाश्यो रे ॥ ज्ञा०॥२॥ मनथी न जाणे रे कुंभकरण विधि, तेहथी कुंभ किम थाशे रे॥ ज्ञानदयाथी रे प्रथमछे नियमा, सदसद्भाव विकासे रे ॥ज्ञा०॥३॥ कंचनभाणुं रे लोचनवंत लहे,अंधो अंध पलाय रे ॥ एकांतवादी रे तत्व पामे

नहीं, स्याद्वाद रस समुदाय रे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ज्ञान भख्या भरतादिक भव तख्या, ज्ञान सकल गुण मूल रे॥ ज्ञानी ज्ञान तणी परिणति थकी, पामे भवजल कूल रे ॥ ज्ञा०॥५॥ अल्पागम जइ उग्र विहार करे, विचरे उद्यम वंत रे ॥ उपदेशमालामां किरिया तेहनी, काय कलेश तस हुंत रे॥ज्ञा०॥६॥ जयंत भूपो रे ज्ञान आराधतो, तीर्थंकर पद पामे रे॥ रवि शशी मेह परें ज्ञान अनंतगुणी, सौभाग्य लक्ष्मी हित कामे रे ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ इति ज्ञानपद पूजाऽष्टमी ॥

॥ सम्यक्त्वदर्शनपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोकालोकना भावजे, केवलिभाषित जेह ;
॥ सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ॥ १ ॥

॥ ढाल॥ नमो रे नमो श्री शत्रुंजय गिरिवर ॥ए देशी॥ ॥ श्रीदर्शन पद पामे प्राणी, दर्शनमोहनी दूर रे ॥ केवली दीठुं ते मीठुं माने, श्रद्धा सकल गुण भूर रे॥ प्रभूजी सुखकर समकित दीजें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ विघटे मिथ्या पुद्गल आतमथी, तेहज समकित वस्त रे ॥ जिनप्रतिमादर्शन तस होवे, पामीनें समकित

दस्त रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ दोविध दर्शन शास्त्रें नांख्युं, द्रव्य नाव अनुसार रे ॥ जे निज नयणे धर्मनें जोवे, ते द्रव्य दर्शन धार रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ जिनवंदन पूजन नमनादिक, धर्मवीज निरधार रें ॥ योगदृष्टि समुच्चय मांहे, एह कह्यो अधिकार रें ॥ प्र०॥ ४ ॥ यद्यपि अबल अडे तोहि पण, आयति हितकर सो य रे ॥ सिध्यंजनवपरें एहथी पामे, नाव दर्शन पण को य रे॥प्र०॥५॥समकित सकल धर्मनो आश्रय, एहनां खट उपमान रे ॥ चारित्र नाण नहीं विण समकित, उत्तराध्ययन वखाण रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ दर्शन विण कि रिया नवि लेखे,बिंडु यथा विण अंक रे॥दशमांहे न व अंक अनेदडे, तिम कुसंगे निकलंक रे ॥प्र०॥७॥ अंतरमुहूर्त पण जे जीवें, पाम्युं दर्शन सार रे ॥ अ र्धपुजल परियट मांहे, निश्चय तस संसार रें ॥ प्र० ॥ ८ ॥ गतसमकित पूरव वद्धायुप, दोविनु समकित वंत रे ॥ विण वैमानिक आयु न बांधे, विशेषावश्य क कहंत रे ॥प्र०॥ए॥ नेद अनेकडे दर्शन केरा, सड सठ नेद उदार रे ॥ सेवतो हरि विक्रम जिन थाए, सौनाग्यलक्ष्मी विस्तार रे ॥ प्र० ॥ १० ॥ इति स म्यक्त्वदर्शनपदपूजा नवमी ॥

॥ विनयपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शौचमूलथी महा गुणी, सर्वधर्मनो सार ;
गुणअनंतनो कंद ए, नमो विनय आचार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ माला किहांछे रे ॥ ए देशी ॥

॥ विनयपद दशमुं परकाश्युं, पंच भेद सामन्य रे॥दश विह तेर प्रकारें जाणो,बावन भेद विधान रे॥ विनयपद सेवो रे॥अरिहंता जिहां मुख्य,वि०॥१॥ ए आंकणी॥ छासठ भेद सिद्धांतें गाया, सघला गुणनो आधार रे॥ शमदमादिक गुण सवि साचा, राच्या जे विनय विचार रे ॥ वि० ॥ २ ॥ अरिहादिकनो भाव प्रशस्तें, विधियें विनय करंतो रे॥आहारी पण उपवास तणुं फल, निरंतर अनुसरतो रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ दोय हजारने बोल चिहुंत्तर, देववंदनविधि धारो रे ॥ चारशें बाणूं बोल विचारी, गुरुवंदन अवधारो रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ गुरुविनयें रत्नत्रय पामे, संवर तप निर्झरणा रें ॥ क र्मक्षयें केवल गुण तेहथी,मोक्ष अनंत सुख वर्णा रे॥ वि० ॥ ५ ॥ पांच वंदनमां भाववंदन तें, उपयोगें शु भ लहियें रे ॥ अरिहादिकनो विनय भावतो, चेतन

तद्रूप कहियें रे ॥ वि०॥ ६ ॥ इण भाव दोयनय विशुद्धो, धन्नो ए पद सेवंतो रे ॥ श्रद्धा भासन तत्व रमण लहि, सौभाग्यलक्ष्मी दीपंतो रे ॥ वि०॥ ७ ॥ इति विनयपदपूजा दशमी ॥

॥ चारित्रपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नत्रय विणु साधना, निष्फल कही सदीव ॥
भावरयणनुं निधानछे, जय जय संयम जीव ॥१॥

॥ ढाल ॥ अजित जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ चारित्र पद शुन चित वस्युं, जेह सघला हो नयनो उद्धार॥आठ करम चय रिक्त करे; निरुत्ति हो चारित्र उदार ॥ चा०॥१॥ ए आंकणी॥ चारित्रमोह अनावथी, देश संयम हो सर्व संयम थाय ॥ आठ कषाय मिटा वीनें, देशविरति हो मनमां ठहेराय ॥ चा० ॥२॥ बार कषाय मनथी मटे, सर्वविरति हो प्रगटे गुणरास॥ देशथी सर्वसंयम विषे, अनंतगुणी हो विशुद्धिसमास ॥ चा० ॥ ३ ॥ संयमगुणठाण फरश्या विना, तत्वरमणता हो किम नाम कहेवाय ॥ गजपाखर खर नवि वहे, एहनी गुरुता हो, आतममां समाय ॥ चा०॥४॥

वर्ष संयमना पर्यायमां,अनुत्तरना हो सुख अतिक्रम होय ॥ शुक्ल शुक्ल परिणामथी, संयमथी हो क्षण मां सिद्धि जोय ॥ चा० ॥ ५ ॥ सर्व संवर चारित्र ल ही,पामे अरिहा हो सहि मुक्तिनुं राज ॥ अनंतर का रण चरणछे, शिवपदनुं हो निश्चय मुनिराज ! ॥ चा० ॥ ६ ॥ सत्तर भेद संयम तणा, चरणसित्तरी हो कही आगम मांहि ॥ वरुणदेव जिनवर थयो, विजयल क्ष्मी हो प्रगटे उछांहि ॥ चा० ॥ ७ ॥ इति चारित्र पदपूजा एकादशी ॥

॥ ब्रह्मचर्यपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनप्रतिमा जिनमंदिरां, कंचननां करे जेह ;
ब्रह्मव्रतथी बहु फल लहे, नमो नमो शीअल सुदेह ॥१

॥ ढाल ॥ क्यूं जाणुं क्यूं बनि आवही ॥ ए देशी ॥

॥ब्रह्मचर्य पद पूजियें,व्रतमां मुगटसमान हो विनीत॥ शीअल सुरतरु राखवा, कही नव वाड भगवान हो विनीत ॥ नमो नमो बंभवयधारिणं॥१॥ ए आंकणी ॥ कृतकारित अनुमति तजे, दिव्य उदारिक काम हो त्रि

नीत,त्रिकरण योगें ए परिहरे,भेद अढार गुणधाम हो विनीत ॥न०॥२॥ दश अवस्था कामनी, त्रेवीश विषय हरंत हो विनीत॥ अढार सहस शीलांगरथें, वेग मुनि विचरंत हो विनीत॥ न० ॥ ३ ॥ इव्यथी चार दारा तजे,भावे परपरणति त्याग हो विनीत ॥दश समाहि गण सेवतां, त्रीश अविंनाना मयाग हो विनीत ॥ न०॥ ४ ॥ दिए दान सोवन कोडिनुं, कंचनचैत्य क राय हो विनीत॥ तेहथी ब्रह्मव्रत धारतां, अगणित पुंण्य समुदाय हो विनीत ॥ नमो० ॥५॥ चौराशी स हस मुनिदाननुं, गृहस्थभक्ति फल जोय हो विनीत ॥ क्रियागुणगणे मुनिवडा, भावतुल्य नहिं कोय हो वि नीत ॥ न० ॥ ६ ॥ दशमे अंगे वखाणिउं, चंड्वर्मा नरिंद हो विनीत ॥ तिम आराधी प्रभुता वयो, सौ भाग्यलक्ष्मी सुरिंद हो विनीत ॥ न०॥ ७ ॥ इति ब्र ह्मचर्यपदपूजा द्वादशी ॥

॥ क्रियापदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ आत्मबोध विण जे क्रिया, तेतो बालकचाल;
तत्वारथथी धारियें, नमो क्रिया सुविशाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सुण बहेनी ! पिउडो परदेशी ॥ ए देशी ॥

॥ध्यानक्रिया मनमां आणीजें, धर्मशुकल ध्याइजें रे ॥ आर्त्तरौद्रनां कारण किरिया, पंचवीशनें वारीजें रे ॥ ध्यान क्रिया जजो निशदिन प्राणी ! ॥१॥ ए आंकणी॥ कंचनकांति परमेष्ठिरूपें, लोकालोक प्रमाण रे ॥ सर्व शांति कर जाल ठेकाणे, ध्यावो प्रणव गुणखाण रे ॥ ध्या० ॥२॥ तेर क्रियागण तेर काठिया तजी, करण सित्तरी जजीयें रे ॥ योग अड दिठि सम्मत किरिया, आतम सुखकर जजीयें रे ॥ ध्या०॥ ३ ॥ पहिली चउ दिठी ज्ञानाधारें, रत्नत्रयाधारें चार रे ॥ अड कर्मक्षयें उपशमें विचित्रा, उघदृष्टि बहु प्रकार रे ॥ ध्या० ॥४॥ विष गरल हीनादिक वारो, तद्धेतु अमृत धारो रे ॥ प्रीति जक्ति वचन असंगे, शुज परिणति सुधारो रे ॥ ध्या०॥ ५ ॥ अंतरतत्व विषय प्रतीतें, ए ज्ञानकिरिया साची रे ॥ अक्रियावादी कृष्णपक्षियो, शुक्लपक्षियो किरिया वाची रे ॥ ध्या० ॥६॥ अशुज ध्यानगण त्रेशठ वारी, ध्यानशतक मन धारी रे ॥ हरिवाहन तीर्थंकर हूउ, सौजाग्यलक्ष्मी दिल धारी रे ॥ध्या०॥७॥ इति क्रियापदपूजा त्रयोदशी ॥

॥ तपपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्म तपावे चीकणां, भाव मंगल तप जाण;
पच्चाश लब्धि उपजे,जय जय तप गुणखाण ॥१॥

॥ढाल॥ अलगी रहेने, रहेने, अलगी रहेने ॥ ए देशी॥

॥ तपपदनें पूजीजें हो प्राणी! तपपदनें पूजीजें ॥
॥ ए आंकणी ॥ सर्वमंगलमां पहेलुं मंगल, कर्मनि
काचित टाले ॥ क्षमासहित जे आहार निरिहता,
आतमरिद्धि निहाले हो प्राणी! ॥ तप० ॥ १ ॥
ते नवमुक्ति लाणे जिनवर, त्रण चउ ज्ञानें नियमा॥
तोहे तप आचरण न मूके, अनंत गुणो तपमहि
मा हो प्राणी! ॥ तप० ॥ २ ॥ पीठ अनें महापीठ
मुनीसर, पूरवभव महि जिननो ॥ साधवि लखमणा
तप नवि फलियुं, दंभ गयो नहिं मननो हो प्रा
णी! ॥ तप० ॥ ३ ॥ अग्यार लाखनें एंशी हजार,
पांचशें पांच दिन कणा ॥ नंदन रिषियें मास खम
ण करि, कीधां काम संपुन्ना हो प्राणि ! ॥ तप० ॥
॥ ४ ॥ तप तपिया गुणरत्न संवत्सर,खंदक क्षमाना

दरिया ॥ चौद हजार साधुमां अधिका, धना तपगुण नरिया हो प्राणी! ॥ तप० ॥ ५ ॥ षट् नेद बाहेर तपना प्रकाश्या, अभ्यंतर षट नेद ॥ बार नेदें तप तपतां निर्मल, सफल अनेक उमेद हो प्राणी! ॥ ॥ तप० ॥ ६ ॥ कनककेतु एह पदनें आराधि, साधि आतम काज ॥ तीर्थंकर पद अनुनव उत्तम, सौनाग्यलक्ष्मी महाराज हो प्राणी! ॥ तप० ॥ ७ ॥ इति तपपदपूजा चतुर्दशी ॥

॥ गोयमपदपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बठ बठ तप करे पारणुं, चउ नाणी गुणधाम;
ए सम शुन पात्र को नहिं, नमोनमो गोयम स्वाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ दादाजी! मोहे दर्शन दीजें हो ॥ ए देशी ॥

॥ दान सुपात्रें दीजें हो नविया! दान सुपात्रें दीजें ॥ ए आंकणी ॥ लब्धि अगवीश ज्ञानी गोयम, उत्तमपात्र कहिजें हो ॥ न० ॥ १ ॥ मुहूर्तमां चौद पूर्व रचियां, त्रिपदी वीरथी पामी ॥ चौदशें बावन गणधर वांद्या, ए पद अंतरजामी हो ॥ न० ॥ २ ॥ गणेश गणपति महामं

गल पद,गोयम विण नवि दूजो ॥ सहस कमलदल सोवन पंकज, वेग सुरनर पूजो हो ॥ न० ॥ ३ ॥ क्षीणमोही मुनि रत्नपात्र सम, बीजा कंचन सम पात्र ॥ रजतनां श्रावक समकीत त्रंबा, अविरति लोह मटी पत्ता हो॥न० ॥ ४ ॥ मिथ्यात्वी सहसथी एक अणुव्रती, अणुव्रतीसहसथी साधु ॥ साधुसहसथी, गणधर जिनवर, अधिका टाले उपाधि हो ॥ न० ॥ ॥ ५ ॥ पांच दान दश दानमां मोटां, अनय सुपात्र विदीता ॥ एहथी हरिवाहन हूउ जिनवर, सौना ग्यलब्धी गुणगीता हो ॥ न० ॥ ६ ॥ इति गोयमपदपूजा पंचदशी ॥

॥ जिनपदपूजा प्रारंभ :

॥ दोहा ॥

॥ दोष अढारे क्षय गया, उपना गुण जस अंग ;
वैयावच करियें मुदा, नमो नमो जिनपद संग ॥१॥

॥ ढाल ॥ चौद लोकके पार कहावे ॥ ए देशी ॥

॥जिनपद जगमां जाचो जाणो,स्वरुपरमण सुविलासी॥
शोल कषाय जीते ते जिन जी,गुणगण अनंत उलासी॥

जिनपद जपियें, जिनपद भजियें, जिनपद अति सुख दाई ॥१॥ ए आंकणी ॥ श्रुत उहि मनपर्यव जिनजी, छउमछा वितरागी ॥ केवलिजिननें वचन अगोचर, महिमा जिन वडभागी ॥ जि०॥२॥ जिनवर सूरि वाचकसाधु, बाल थविर गिलाणी ॥ तपशी चैत्यश्रमण संग केरी,वैयावच गुणखाणी ॥ जि० ॥ ३ ॥ गुणिजन दशनो वैयावच कीजें, सहुमां जिनवर मुख्य ॥ वैयावच गुण अप्पडिवाई, जिनआगम हित शिख्य ॥ जि० ॥ ४ ॥ नीच गोत्र बांधे नहि कबहुं, करें उंच गोत्रनो बंध ॥ गाढ कर्मबंध शिथिल होवे, उत्तराध्ययनें प्रबंध ॥ जि० ॥ ५ ॥ मनशुद्धें ए पदनें आराधि, जिमूतकेतु जिन होवे ॥ विजय सौभाग्यलक्ष्मीसूरि संपद, परमानंद पद जोवे ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति जिनपदपूजा षोडशी ॥

॥ संयमपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुद्धातमगुणमें रमे, तजि इंद्रिय आसंस
थिर समाधिसंतोषमां,जय जय संयमवंस ॥

॥ ढाल ॥ कुंवर गंभारो नजरें देखतां जी ॥ ए देशी ॥

॥समाधिगुणमय चारित्र पद नमुं जी,सत्तरमुं सुखकार रे ॥ वीश असमाधि दोष निवारिनें जी,उपनो गुणसंतोष श्रीकार रे॥ नमो नमो संयमपदनें मुनिवरा जी॥१॥ ए आंकणी ॥ अनुकंपा दीनादिकनी जे करे जी, ते कहियें द्रव्यसमाधि रे॥ सारणादिक कहि धर्ममां थिर करे जी,ते लहियें भाव समाधि रे ॥नमो०॥२॥ व्रत श्रावकनां बार भेदें कह्यां जी,मुनिनां महाव्रत पंच रे ॥ सत्तर ए द्रव्यभावथी जाणीनें जी,यथोचित करे संयम संच रे ॥नमो०॥३॥ चार निखेपें सात नये करी जी, कारण पांच संभार रे ॥ त्रिपदी सात भांगें करि धारियें जी, ज्ञेयादिक त्रिक अवधार रे ॥ नमो०॥४॥ चार प्रमाणें षट् द्रव्यें करी जी,नव तत्वें दिल लाव रे॥ सामायक नव द्वारें विचारियें जी, इम षट आवश्यक भाव रे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ चार सामायक आगममां कह्या जी, सर्व विरति अविरुद्ध रे ॥ पांच भेदछे संयम धर्मना जी,निर्मल परिणामें सवि शुद्ध रे ॥नमो०॥६॥ समाधिवर गणधरजी जाचिउं जी,चोवीश जिननें करी प्रणाम रे ॥ पुरंदर तीर्थंकर थयो एहथी जी, सौभा

ग्यलक्ष्मी गुणधाम रे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ इति संयम पदपूजा सप्तदशी ॥

॥ अभिनवज्ञानपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, ! चारित्रसमकित मूल ;
अजर अगम पद फल लहो, जिनवर पदवी फूल॥ १॥

॥ ढाल ॥ कोईलो पर्वत धुंधलो रे लाल ॥ ए देशी॥

॥अभिनव ज्ञान भणो मुदा रे लाल, मूकी प्रमाद वि भाव रे हुं वारि लाल॥बुद्धिना आठ गुण धारियें रे लाल, आठ दोषनो अभाव रे हुं वारि लाल॥प्रणमो पद अढारमुं रे लाल॥ १ ॥ए आंकणी ॥देशाराधक किरिया कहि रे लाल, सर्वाराधक ज्ञान रे ॥हुं०॥ मुहूर्तादिक किरिया करे रे लाल, निरंतर अनुभव ज्ञान रे॥ हुं०॥ प्र० ॥ २ ॥ ज्ञानरहित किरिया करे रे लाल, किरिया रहित जे ज्ञान रे ॥ हुं०॥ अंतर खजुआ रविजि श्यो रे लाल, षोडशकनी ए वाण रे ॥ हुं०॥प्र०॥ ३॥ छठअठमादि तपें करी रे लाल, अज्ञानी जे शुद्ध रे ॥ हुं०॥तेहथी अनंतगुणी शुद्धता रे लाल,ज्ञानी प्रगट

पणे लद्द रे ॥ हुं० ॥प्र०॥४॥ राचे न जूठ किरिया करी रे लाल, ज्ञानवंत ! जुवो युक्ति रे ॥ हुं० ॥ जूठ साच आतम ज्ञानथी रे लाल,परखे निज निज व्यक्ति रे ॥ हुं०॥ प्र० ॥ ५ ॥ पांच भेदछे ज्ञानना रे लाल, तेह आराधे जेह रे ॥ हुं०॥ सागर चंद्रपरें प्रभु हुवे रे लाल, सौभाग्यलक्ष्मी गुणगेह रे ॥ हुं०॥ प्र०॥६॥ इति अभिनवज्ञानपदपूजाऽष्टादशी ॥

॥ श्रुतपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वक्ता श्रोतायोग्यथी, श्रुतअनुभवरसपीन ;
ध्याता ध्येयनी एकता,जय जय श्रुतसुख लीन ॥१॥

॥ ढाल ॥ अविनाशीनी, सेजडीयें रंग लागो मोरी ॥ सजनी जीरे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रुतपदनमियें भावें भविया ! श्रुतछे जगत आधार जी ॥ दुःसमरजनी समयें साचो, श्रुतदीपक व्यवहार ॥ श्रुतपद नमियें जी ॥१॥ए आंकणी॥ बत्रीश दोष रहित प्रभु आगम,आठ गुणें करि भरियुं जी॥अर्थथी अरिहंतजीयें प्रकाश्युं, सूत्रथी गणधर रचियुं ॥श्रु०॥

॥२॥गणधर प्रत्येक बुद्धें गूंथ्युं, श्रुतकेवली दशपूर्वी जी॥ सूत्र राजासम अर्थ प्रधानछे,अनुयोगचारनी कर्वी ॥ श्रु० ॥ ३ ॥ जेटला अक्षर श्रुतना जणावे, तेटला वर्ष हजार जी ॥ स्वर्गनां सुख अनंतां विलसे, पामे जवजल पार ॥ श्रु० ॥ ४ ॥ केवलथी वाचकता माटें, छे सुअनाण समद्ध जी॥श्रुतज्ञानी श्रुतज्ञानें जाणे, केवली जेम पसद्ध ॥ श्रु० ॥ ५ ॥ कालविनय प्रमु खछे अडविध,सूत्रें ज्ञानाचार जी॥ श्रुतज्ञानीनो विनय न सेवे, तो थाए अतिचार ॥ श्रु०॥ ६ ॥ चउद जेदें श्रुत वीश जेदें छे, सूत्र पिस्तालीश जेदें जी ॥ रत्नचूड आराधतो अरिहा, सौजाग्यलक्ष्मीसुख वेदे ॥ श्रु० ॥ ७ ॥ इति श्रुतपदपूजा एकोनविंशतिः ॥

॥ तीर्थपदपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ तीरथयात्र प्रजावछे, शासनउन्नति काज ;
॥ परमानंद विलासतां, जय जय तीर्थजिहाज॥१॥

॥ ढाल ॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥श्री तीरथपद पूजो गुणीजन, जेहथी तरियें ! ते ती

रथ रे ॥ अरिहंत गणधर नियमा तीरथ, चउविह संघ महातीरथ रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ लौकिक अडसठ तीर्थनें तजियें, लोकोत्तरनें भजियें रे ॥ लोकोत्तर द्रव्यभाव बे भेदें,थावर जंगम जजियें रे॥श्री०॥२॥ पुंमरीकादिक पांचे तीरथ, चैत्यना पांच प्रकार रे ॥ थावर तीरथ एह भणीजें, तीर्थे यात्रा मनोहर रे ॥श्री० ॥३॥ विहरमान वीश जंगमतीरथ, वे कोडी केवली साथ रे॥ विचरंता दुःख दोहग टाले, जंगमतीरथनाथ रे ॥श्री०॥४॥ संघ चतुर्विध जंगम तीरथ, शासननें शोजावे रे॥ अडतालीश गुणें गुणवंता, तीर्थपति नमे जावें रे श्री० ॥ ५ ॥ तीरथपद ध्यावो गुण गावो, पंचरंगी रयणने लावो रे॥थाल जरी जरी तीर्थे वधावो, गुण अनंत दिल लावो रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ मेरुप्रज परमेश्वर हूउं, एह तीरथनें प्रजावें रे ॥ विजयसौजाग्यलक्ष्मीसूरिसंपद, परम महोदय पावे रे ॥श्री०॥७॥ इति तीर्थपदपूजा विंशति. ॥

॥ ढाल ॥

॥ घणुं जीव तुं जीव जिनराज! जीवो घणुं ॥ ए देशी॥ घणुं पूज तुं पूज थानकपद पूज तुं, सम्यक् जाव गु

या चित्त आणि ॥ जिनवर पद तणुं हेतु छे ए लतुं, को नहीं एह सम समयवाणी॥घणुं०॥१॥ए आंकणी॥ वीशवीश वस्तु मेलवी करी उजवो, नरजव पामियो लाहो लीजें ॥ तपफल वाधशे उजमणाथकी, जिन वर गणधर एम वदीजें ॥ घणुं०॥२॥ खंजायत बंदिरें सुंदर जाविया,श्रावक श्राविका पुण्यवंता॥वीश थानक तणी जक्ति करे जावथी,शासन उन्नति अति करंता ॥ घणुं० ॥ ३ ॥ तास तणे आग्रहें स्तवन पूजा रची, शुद्ध करो श्रुतधरा ! पुण्य जाणी ॥ विजयआनंद ग णि विजयसौजाग्यसूरि, विजयलक्ष्मीसूरि जैनवाणी॥ घणुं० ॥ ४ ॥ इति ढाल समाप्त ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीश थानक तवन कुसुमें, पूजियो शंखेश्वरो॥ ॥ संवंत समिति वेद वसु शशी (१८४५) विजयदश मी मन धरो ॥ तपगछ विजयानंद पटधर, श्री विजय सौजाग्य सुरिश्वरो ॥ श्री विजयलक्ष्मीसूरिपजणें श यलसंघ मंगल करो ॥ १ ॥

इति श्री विजयलक्ष्मीसूरिकृत विंशतिस्थानक पदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीसकलचंदजी उपाध्यायकृत-एकवीशप्रकारी पूजा प्रारंभः ॥



तत्र

॥ प्रथमजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमु प्रथम जिणंदनें, भगवति करी सुपसाय ;
पूजा एकवीश द्रव्यशुं, भावमंगल उपाय ॥ १ ॥
न्हवण वस्त्र चंदन करी, कुसुम वास चूनार ;
माला अष्टमंगल भणी, दीप धूपाक्षत धार ॥ २ ॥
धर्मध्वज चामर सही, छत्रें मुकुट विशेष ;
दर्प्पण दर्शण दाखवे, नैवद्य फल सुप्रदेश ॥ ३ ॥
गीत नट्ट वाजित्रशुं, जन पूजे जिनइंद ;
काउसग्गध्यानें जिणे करी, पूजा सकल मुनिचंद॥४॥

॥ प्रथम पूरवदिशें ॥ ए देशी ॥ राग देशाख ॥

॥ प्रथम जिननायकं, पूजी सुखदायकं, खीरसमुद्र जल,शुं भरी ए ॥ १ ॥ कनककलशा धरी, गंधोद

कें तेह भरी, जिन चरणे नमण करे ए ॥ २ ॥ इंद्र इंद्राणी करे, हर्ष उलट धरे, धन्य कृतारथ, भव करे ए ॥ ३ ॥ प्रथम जिन पूजना, इणीविधें भविजना, सकलमुनि काउसग्गें, एम भणे ए ॥ ४ ॥ इति प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥

॥ द्वितीयवस्त्रपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ निर्मल एह जिनगात्रशुं, निर्मल जेहनी कांति;
अंगलुहणा अंगें करी, टालो मननी भ्रांति ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं, आशावरी, तथा गोडीरागेण गीयते ॥

॥ उज्ज्वल वस्त्रादिक भणी, उज्ज्वल चित्त आणी ॥ वस्त्रश्वेत जिन पूजतां, परमानंद निशाणी ॥ १ ॥ इंद्रादिक प्रभु पूजीयो, तेपरि केम होय प्राणी ॥ तो पण मुज तुज रीझशुं, पूजा अधिक में जाणी ॥ इंद्रा० ॥ २ ॥ देवडुष्यवस्त्र लायकें, अंगलुहणा करियें॥ इंद्र भक्ति करे भावशुं, चपल चित्त हरियें ॥ इंद्रा० ॥ ३ ॥ उज्ज्वल चित्त लगायकें, प्रभुपूजा कीजें ॥ उपशम रस भरी ते पीयें, परम महा रस लीजें॥ ॥ इंद्रा० ॥ ४ ॥ इतिद्वितीयवस्त्रपूजा समाप्ता ॥

॥ तृतीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीतल गुण जामें रह्यो, शीतल जिन सुखसंग ;
चंदनघन घनसारशुं, पूजीजें मनरंग ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं, आशावरीरागेण गीयते ॥

॥ बावना चंदन, घसी घनसारशुं, कनककचोली लेईयें ए ॥ वास सुवास, बरास भेलीने, सुरनिवर कस्तुरी, देईयें ए ॥ बावना०॥१॥ ए आंकणी ॥ प्रथम चरणमे पूजि जानू करें, अंस शिर भालमां, सोहियें ए ॥ कंठ हृदि उदर नव दीजीयें एणी, विधें प्रभुपूजा, मोहीयें ए ॥ बावना० ॥ २ ॥ इंद्रादिक परें किम हम होवत, तोभी हम तुम, संगियें ए ॥ देवि देवादिक, गात्रविलेपिनें, सकलदुरित भय, भंगियें ए ॥ बावना० ॥३॥ इति तृतीयचंदनपूजा समाप्ता ॥

॥ चतुर्थकुसुमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाई जुई सेवंतरी, प्रफुल्लित वेली विशाल ;
जिनचरणें चढावतां, दुरित हरे तत्काल ॥ १ ॥

॥ आशावरीरागेण गीयते ॥

॥ कमल कुसुमवर विविध जातिशुं, वेली वालो वि शाल रे ॥ चंपक केतकी कुंद जासुलवर, पाडल लाल गुलाल रे ॥ कमल० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मोगरो मालती दमणजातिशुं, बोलसिरी नागप्रीयंगो रे ॥ कुंद मचकुंद विमालया जातिशुं, दाउदीसंग अभंगो रे ॥ कमल० ॥ २ ॥ इंद इंद्रादिक भक्ति करे भली, हर्ष धरी मन रंगें रे ॥ विविधजाति वर कुसुम ग्रहीनें, प्रभु पूजें चि त्तमंगे रे ॥ कमल० ॥ ३ ॥ सूर्यांभनावें करी जिनपू जा, शुभ शुभ फल तिम लीजें रे ॥ तस फल भा व शुणी जिन आगम, चोथी पूजा कीजें रे ॥ कम ल० ॥ ४ ॥ इति चतुर्थकुसुमपूजा समाप्ता ॥

॥ पंचमवासपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ नंदनवन सुरपतिरमण, अभिनंदन मुज स्वाम ;
॥ वाससुगंधमां मेलवी, पूजीजें जिनधाम ॥ १ ॥

॥ सारंग,तथा आशावरीरागेण गीयते ॥

॥ नंदना वनतणुं, बावना चंदन, भविजन! आणो, शु

द्ध करी ए ॥ वास सुवास, बरास भेलीनें, शुद्ध घन सार, तेहमां धरीए ॥ १ ॥ जाइ मंदारशुं, वासित ते सही, अगर चंदनशुं, विरचिया ए ॥ विविध सुगंध, इव्यादिक भेलिनें, तिहां जिम सुरपति अरचिया ए ॥ २ ॥ तिम प्रजुसंगें करी मनरंगे, आज उलट धरी, हर्ष भरीए ॥ कुमर कुमरी पूजे, मनने आणंदे, संसार सायर, जिम तरीए ॥ ३ ॥ पंचमी पूजना, पंचम गति कारण, वासविलास दे, सरसीया ए ॥ प्रजु तणे अगें, हर्षभरी पूजतां, तेणे सवि डुरित भय, खरचिया ए ॥ ४ ॥ इति पंचमवासपूजा समाप्ता ॥

॥ षष्ठचूआचूर्णपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अगरचुर्ण चंदनमई, घनसारादिक सार ;
प्रजुचरणे पूजा करे, तस होय भवनो पार ॥१॥

॥ ध्रुवपदं, काफीरागेण गीयते ॥

॥ घनसारादिक चूर्ण मेली, चूआ चंदन मांहे भेली ॥ पूजो प्रजु मनरंगे रे ॥ १ ॥ शिवसुख लेवा जो मन धरियें तो, चूरण पूजा प्रजु करियें ॥ आतम

आनंदमय गुण नरियें ॥ २ ॥ चूरण गंधवासित ब हु सार, सुरपति पूजा करे निरधार ॥ जन्म कृतार्थ तेह निस्तार ॥ ३ ॥ अमर अमरी करे पूजा गुण पामी, चित्त धरे शिवपुर आरामी ॥ परपरिणति करिय निष्कामी ॥४॥ इति षष्ठचूआचूर्णपूजा समाप्ता ॥

॥ सप्तमपुष्पमालपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नमाल सुरपति करे, कुसुम सहित सुगंध ;
प्रजु कंठें आरोपीने, प्रफुलित होय सुरवृंद ॥ १ ॥

॥ सारंगरागेण गीयते ॥

॥ मनमोहन माला कीजीयें, विविध जाति सुर कुसुम ग्रहीने, गुंथी जिनकंठें दीजीयें ॥ मन० ॥ १ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ चंपक केतकी कुंद जासुलवर, लाल गुलाल मांहे लीजीयें ॥ मन० ॥ मोगरो मालती दमणो पुन्नागशुं, गुंथी सुरपति रीजीयें ॥ मन० ॥ ॥ २ ॥ सप्तमी पूज करत इम सुरपति, अनुनवरस शुं नींजीयें ॥ मन० ॥ सूर्याज नावें करी जिन पूजा, उपशम नरी पीजीयें ॥ मन० ॥ ३ ॥ इति सप्तमपुष्पमालपूजा समाप्ता ॥

॥ अष्टमाष्टमांगलिकपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुरपति अष्ट मंगल रची, मणितंडुल विस्तार;
रत्न विविध मणि तेहशुं, पूरे अखंमित धार ॥१॥

॥ नट्टरागेण गीयते ॥

॥ मंगल मोहे घर कीजें जिणंदराय ! ॥ मंगल०॥ ॥ ए आंकणी ॥ सवि साधन एक सिद्धि कीजें, मंगल आठ रचीजें ॥ जिणंद०॥ मंगल० ॥१॥ स्वस्तिक श्रीवछ कुंज जद्रासन, चारगतिकुं जीजें ॥ तंडुल वासित अष्ट मंगल धरी, अक्षयपद ए लीजें ॥ जिणंद० ॥ मंगल० ॥ २ ॥ नंदावर्त्त करी जिणंद सुख, वर्द्धमान तिहां सार ॥ मत्स्ययुगल तेहमां रचीजें, दर्प्पण अष्ट प्रकार ॥ जिणंद० ॥ मंगल०॥३॥ एह विध मंगल आठ लखीनें, सुरनर जिन पूजीजें ॥ अष्टमी पूज करो तुमें जविजन ! अष्ट कर्म दूर कीजें ॥ जिणंद० ॥ मंगल० ॥ ४ ॥ इति अष्टमाष्टमांगलिक पूजा समाप्ता ॥

॥ नवमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्रव्यदीप पूजा करी, भावदीप शुभवास;
अज्ञानता दूरें करी, ज्ञानदीप परकाश ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं, काफीरागेण गीयते ॥

॥ दीप प्रगट कर लीजें जिणंदमुख, दीप प्रगट करली जें ॥ए आंकणी॥ जिनपति सन्मुख दीप ग्रहीनें, आतम प्रकाशक कीजें ॥जि०॥दी०॥ १ ॥ मिथ्या तिमिर रह्यो घटअंतर, ताकूं ज्योति धरीजें ॥ ज्ञानदशा प्रगटे चित्तअंतर, चिदानंदघन रीजें ॥जि०॥दी०॥२॥ द्रव्य दीप दया करी फानस, अनुकंपा करि लीजें, जीवदया कारण करी करुणा, एहविध भक्ति करीजें ॥जि०॥दी० ॥३॥ एहविध दीपकपूजा कीजें, तत्व ते नव ग्रहीजें ॥ नव ग्रैवेयकें आतम प्रकाशें, काल अनादि छीजें ॥ जि० ॥ दि० ॥ ४ ॥ इति नवमदीपकपूजा समाप्ता ॥

॥ दशमधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्मदहननें कारणे, ध्यानानल करि जेह ;
॥ द्रव्यधूप पूजा करो, निर्मल करि निज देह ॥१॥

॥ ध्रुवपदं, पूर्वीरागेण गीयते ॥

॥ धूप प्रगट करि लीजें, नविकजन! धूप प्रगट करि लीजें ॥ सुरपति धूप ग्रही जिन आगल, कृष्णागरु मांहे दीजें ॥ न० ॥ धू० ॥१॥ ए आंकणी ॥ कुंदरु कस्तुरी अंबर नेली, वली घन सार मेलावो ॥ शुद्ध बरास अगर तगरशुं, दिशोदिश धूप करावो ॥ न० ॥ धू० ॥ २ ॥ चंदनचूरण करी मांहे वली, शर्करादिक मेलावो ॥ जिम सुरपति जिनन्नक्ति करत शुन, तिम तुमे करी नवि! नावो ॥ न० ॥ धू० ॥ ३ ॥ जिनमुख आगल धूप करीनें, निर्धूम आत्म करीजें ॥ ते कारण धूप पूजा करतां, नवसायर तरीजें ॥ न० ॥ धू० ॥ ४ ॥ इति दशमधूपपूजा समाप्ता॥

॥ एकादश अक्षतपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्षयपद देवा नणी, अक्षत पूजा सार ;
॥ अखंमाक्षत जिन पूजीयें,तो लहियें जय कार ॥१॥

॥ ध्रुवपदं, काफीरागेण गीयते ॥

॥ चित्त तमे करो नविकजन! मणि तंडुल उदार॥ चि

॥ ध्रूपद, काफीरागेण गीयते ॥

॥ शुद्ध देवगुरुधर्म धरो रे, तब दर्शन तमे आत्मक रो रे ॥ शु० ॥ दर्प्पणपूजा दर्शन कारण, जिन पूजी तमें आप तरो रे ॥ शु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शुद्ध देव मनमांहिं धरीनें, चित्तदर्प्पणशुं आप जूओ रे ॥ गुरु उपदेश धर्म चित्त धारी, परपरिणति तुमे आप खुउ रे ॥शु० ॥२॥ चेतन ऋद्धि अनंति धरावे, दर्शन विण ऋद्धि आप खुए रे ॥ दर्प्पणपूजा करत जिनवरकी, तब निज ऋद्धि आप जूए रे ॥ शु० ॥३॥ एहविध पूजा करत जिनवरकी, चेतन आवर्ण सर्व मिटे रे ॥ शुद्ध दशा दर्प्पणपूजाथी, अशुभदशा तस सर्व कटे रे ॥ शुद्ध० ॥ ४ ॥ इति षोडशदर्प्पणपूजा समाप्ता॥

॥ सप्तदशनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ विविध युक्ति पकवानशुं, लेई चित्त उदार ;
अणाहारिपद पामवा, वीनवुं वारं वार ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं, पूर्वी सोरठीरागेण गीयते ॥

॥ जिणंदराय ! नैवेद्यथाल भरी री॥ जिणंद० ॥ नै०॥

हेमपात्र नरी विविधशुं रे, कंसार शींगधरी री ॥ जि० ॥ नै० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ घेबर फीणी पिंमा पतासां, साकरपाक करी री ॥ खाजां खुरमां खांतशुं लावो, खीर खांम घृतशुं पूरी री ॥ जि० ॥ नै० ॥२॥ शाल दाल शुनसालणां रे, शाक पाक करि जेह ॥ एहविध नैवेद्य थाल नरीनें, अणाहारिपद लिये तेह ॥ जि०॥ ३ ॥ इति सप्तदशनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥

॥ अष्टादशफलपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूजा करतां नीपजे, तरुवर सींचे जेम;
तरुवर फल जिम आपशे, पूजाफल होय तेम ॥१॥

॥ ध्रुवपदं, सोरठी, तथा आशावरीरागेण गीयते ॥

॥ नवि! नावें श्रीफलपूजा करो ॥नवि०॥ जेम होए फल अनंत रे॥नवि०॥ विविधजाति फल ग्रही जिन आगें, कीजें निर्मलचित्त रे ॥ नवि० ॥ १ ॥ ए आंकणी. ॥ दाडिम द्राख खारेक अखोड, पुंगीफल मनरंगें रे ॥ कदली बदाम मिष्टांग लींबु, पूजीजें जिनसंगें रे ॥ नवि० ॥ २ ॥ इंद्रादिक वली पूजाकारण, फल लावे

धरी रागें रे ॥ फलपूजा करतां मनशुद्धें, शिवफल प्रभु पें मागे रे ॥जवि०॥३॥इति अष्टादशफलपूजा समाप्ता॥

॥ एकोनविंशतिगीतपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ इंद्रइंद्राणी ते मली, गावे गीत रसाल;
ताल मृदंग वाजित्रशुं, प्रभु गुंथी गुणमाल ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपदं, सोरठीरागेण गीयते ॥

॥ प्रभुगुणध्यान करे जे सुरपति, गावे धरि आणंदो रे॥ धन्य जाग्य धन्य आज हमारो, दूरित सकल निकं दो रें ॥प्रभु०॥१॥ गाजति वाजति इंद्र दद्दामां, श्रीमं मल घनघोर रे ॥ सात स्वर तिन ग्राम मूर्छना, गीत गाए रंगरोल रे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ इंद्रइंद्राणी गाय स्वर मधुरे, प्रभुगुण चित्तमें धरता रे ॥ तिम जविकजन प्र जुगुण गातां, डुरित तिमिर सवि हरता रे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ इति एकोनविंशतिगीतपूजा समाप्ता ॥

॥ विंशतिनाटिकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सूरियाजादिक जिम करे, नाटिकपूजा जेह ॥
नाटिक प्रभु आगल करी, कर्म खपावे तेह ॥ १ ॥

॥ सोरठरागेण गीयते ॥

॥ सरस नाटिक करी, शुद्ध नावज धरी, करी निज आतम, मतिभ्र सारी ॥ एकशत आठ कुमर, कुमरी करथी करे, विविध संगीत,वाजित्र धारी॥सर०॥१॥शो ज शृंगार करी, कुमरी नाचति वलि, थैयां थैयां थेई, यां करंती ॥ देखावति हस्तगत, घूघरीनादशुं, घूंटण देई, जमरीय फरंती ॥सर०॥२॥ विविध प्रकार इम, ना टिक करती,लाज मर्याद,मनमां धरंती ॥ एहविध ज विकजन; नाटिक करतां, संसारसमुद्र, वहेलां तरंती ॥ ॥ सर० ॥ ३ ॥ इति विंशतिनाटिकपूजा समाप्ता ॥

॥ एकविंशतिवाजित्रपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ समोसरण देवें रच्यो, थापि श्रीजिनराज ;
वाजित्रनी पूजा करी, साधे वंछित काज ॥ १ ॥

॥ धन्याश्रीरागेण गीयते ॥

॥ समवसरण सुररचित सिंहासन, वाजित्रपूजा सार रे ॥ देवडुंडुनि मद्दुवर जेरी, वीणा वसी जयकार रे॥ स० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ढोल निशान कंसाल ताल शुं, सरणाई रणकारो रे ॥ जुंगल जेरी अंबर गा

व महापाडिहारें समेता, सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ४ ॥ कस्यां घातियां कर्म चारे अलग्गां, नवो पग्रही चार जे छे विलग्गां ॥ जगत् पंच कल्याणकें सौख्य पामें, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामे ॥ ५ ॥

॥ ढाल, उलालानी देशी ॥

॥ तीर्थपति अरिहा नमुं, धर्म धुरंधर धीरो जी ॥ देशना अमृत वरसता, निजवीरज वड वीरो जी ॥१॥ उलालो ॥ वरअखय निर्मल ज्ञानभासन, सर्वभाव प्रकाशता ॥ निजशुद्ध श्रद्धा आतम भावें, चरणथिरता वासता ॥ जिननाम कर्मप्रभाव अतिशय, प्रातिहार ज शोभता ॥ जगजंतु करुणावंत भगवंत, भविक जननें थोभता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल, श्रीपालना रासनी देशी ॥

॥ त्रीजे भव वरथानक तप करी, जेणे बांध्युं जिन नाम ॥ चोसठ इंद्रें पूजित जे जिन, कीजें तास प्रणाम रे ॥ भविका ! सिद्धचक्रपद वंदो, जिम चिरकालें नंदो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेहनें होय कल्याणक दिवसें, नरकेंपण अजवालुं ॥ सक

त्न अधिकगुण अतिशय धारी,ते जिन नमी अघ टालुं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २ ॥ जे तिहुं नाण समग्ग उपन्ना, जोगकरम क्षीण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा दिए जनने,ते नमियें जिननाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३॥ महागोप महामाहण कहियें,निर्यामक सञ्चवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमियें उच्छाह रे ॥ ज० ॥ सि०॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जस छाजे, पांत्रीश गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिवोध करे जगजनने,ते जिन नमियें प्राणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे ॥ जेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थाय रे॥१॥ वीर जिनेसर उपदिशे, सांजलजो चित्त लाइ रे ॥ आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मले सवि आइ रे ॥वी०॥ २ ॥ इति अरिहंतपदपूजा समाप्ता ॥

॥ द्वितीय सिद्धपदपूजा प्रारंजः॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

सिद्धाणमाणंदरमालयाणं ॥
नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेंद्रागमे प्रौढ साम्राज्यभाजा ॥ षट्वर्गवर्गित गुणें शोभमाना, पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ १ ॥ भविप्राणीने देशना देश कालें, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधारदिग्दंतिकल्पा, जगें ते चिरं जीवजो शुद्धजल्पा ॥ २ ॥

॥ ढाल, उलालानी देशी ॥

॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणछत्रीसि धामो जी॥ चिदानंदरस स्वादता, परभावें निःकामो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्धचिद्घन, साध्यनिज निरधारथी ॥ निजज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधनाव्यापारथी ॥ भविजीव बोधक तत्वशोधक, सयलगुणसंपति धरा ॥ संवरसमाधि गतउपाधि, दुविध तपगुण आगरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल, श्रीपालना रासनी देशी ॥

॥ पंच आचार जे सुधा पाले, मारग भाखे साचो ॥ ते आचारज नमियें तेहशुं, प्रेम करीनें जाचो रे ॥ भ० ॥ सि०॥ ११ ॥ वर छत्रीश गुणें करी सोहे, यु

गप्रधान जन मोहे ॥ जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित्य अप्रमत्त धर्म उवएसें, नहीं विकथा न कषाय-॥ जेहनें ते आचारज नमियें, अकलुष अमल अमाय रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दीये सारण वारण चोयण, पडि चोयण वली जनने ॥ पट धारी गछ थंभ आचारज, तें मान्या मुनि मनने रें ॥ भ० ॥ सि० ॥ १४ ॥ अछमियें जिन सूरज केवल, वंदीजें जगदीवो ॥ जुवन पदारथ प्रगटन पटु ते, आचारज चिरं जीवो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे॥ पंच प्रस्थानें आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ इति आचार्यपदपूजा समाप्ता ॥

॥ चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

सुतत्तविचारणतप्पराणं ॥
नमोनमो वायगकुंजराणं ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ करे सेवना सूरिवायग गणीनी, करुं वर्णना तेह नी सी मुणिनी ॥समेता सदा पंचसमिति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्तें नहीं काम जोगेषु लिप्ता ॥ १ ॥ वलि बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाली, होये मुक्तिनें योग्य चारित्र पाली ॥ शुभाष्टांग योगें रमे चित्त वाली, नमु साधुने तेह नज पाप टाली ॥ २ ॥

॥ ढाल, उलालानी देशी ॥

॥ सकल विषय विष वारीनें, निःकामी निःसंगी जी ॥ जवदवताप समावता, आतमसाधन रंगी जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें, देहनिर्मम निर्मदा ॥ काउसग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपे कर्म जीपे, नैव छीपे परजणी ॥ मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन, बंधु प्रणमुं हित जणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल, श्रीपालना रासनी देशी ॥

॥ जिम तरुफूलें जमरो बेसे, पीडा तस न उपावे ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जावे रें ॥ ज० ॥ सि० ॥ २१ ॥ पंच इंद्रिनें जे नित जीपे, षट्

कायक प्रतिपाल ॥ संयम सतर प्रकारें आराधे, वंडु तेह दयाल रे ॥ न०॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार सहस्स शीलांगना धोरी, अचलआचार चरित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजें जनम पवित्र रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले, बारसविह त प सूरा ॥ एहवा मुनि नमियें जो प्रगटे, पूरवपुण्य अंकूरा रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २४ ॥ सोना तणी परें परीक्षा दीसे, दिनदिन चढते वाने ॥ संजमखप करता मुनि नमियें, देश काल अनुमाने रे ॥ न० ॥ सि० ॥ २५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ अप्रमत्त जे नित रहे, नवि हरखे नवि सोचे रे ॥ साधु सुधा ते आतमां, शुं मूंडे शुं लोचे रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ इति मुनिपदपूजा समाप्ता ॥

॥ षष्ठ सम्यक्त्वदर्शनपदपूजा प्रारंभ ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स ॥
नमोनमो निम्मलदंसणस्स ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधें, यथावर्णनासे विचित्रावबोधें ॥ तेणे जाणियें वस्तु षट द्रव्यभावा, न हुये वितथा (वाद) निजेछा स्वभावा ॥ १ ॥ होय पंच मत्यादि सुज्ञानभेदें, गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदें ॥ वली ज्ञेय हेय उपादेय रूपें, लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपें ॥ २ ॥

॥ ढाल, उल्लालानी देशी ॥

॥ भव्य ! नमो गुणज्ञाननें, स्वपरप्रकाशक भावें जी ॥ परजय धर्म अनंतता, भेदाभेदस्वभावें जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ जे मुख्यपरणति सकलज्ञायक, बोध भावविलछना ॥ मतिआदि पंच प्रकार निरमल, सिद्ध साधन लछना ॥ स्याद्वादसंगी तत्वरंगी, प्रथमभेदाभेदता ॥ सविकल्पने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल, श्रीपालना रासनी देशी ॥

॥ भक्षाभक्ष न जे विण लहियें, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विण लहियें, ज्ञान ते

सकल आधार रे ॥न०॥सि०॥३१॥ प्रथम ज्ञाननें पछें अहिंसा, श्रीसिद्धांतें भांख्युं ॥ ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीयें शिवसुख चाख्युं रे ॥ न०॥सि० ॥३२॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रद्धा,तेहनुं मूल जे कहियें॥ तेह ज्ञान नित नित वंदीजें, ते विण कहो किम रहि ये रे ॥ न०॥सि०॥३३॥ पंच ज्ञान मांहि जेह सदाग म,स्वपर प्रकाशक जेह ॥ दीपक परें त्रिभुवन उपगारी, वली जिम रवि शशी मेह रे ॥ न०॥ सि० ॥ ३४ ॥ लोक ऊर्ध्व अध तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिकनें सिद्ध ॥ लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, तेह ज्ञानें मुज शु द्ध रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ज्ञानावर्णी जे कर्मछे, क्षयउपशम तस थाय रे ॥ तो हुए एहिज आतमा,ज्ञानअबोधता जाय रे ॥ वी०॥ ॥ ८ ॥ इति सप्तम सम्यक्ज्ञानपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अष्टम चारित्रपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

आराहिअखंडीअसक्किअस्स ॥
नमो नमो संजमवीरिअस्स ॥

॥ नुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ वली ज्ञानफल चरण धरियें सुरंगे, निराशंसता द्वारोधप्रसंगे ॥ नवांनोधिसंतारणे यानतुल्यं, धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमुल्यं ॥१॥ होय जास महिमायकी रंक राजा, वली द्वादशांगी नणी होय ताजा ॥ वली पाप रूपोपि निःपाप थाय, थई सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥२॥

॥ ढाल, उलालानी देशी ॥

॥ चारित्रगुण वली वली नमो, तत्वरमण जसु मूलो जी ॥ पररमणीय पणुं टले, सकलसिद्ध अनुकूलो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम, तत्वथिरता दममई ॥ शुचि परम खंति मुत्ति दश पद, पंच संवर उपचई ॥ सामायिकादिक नेद धर्मे, यथाख्यातें पूर्णता ॥ अकषाय अकलुष अमल उज्ज्वल, कामकश्मल चूर्णता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल, श्रीपालना रासनी देशी ॥

॥ देशविरतिनें सरव विरति जे, गृही यतिने अनिराम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतुं, कीजें तास प्रणाम रे ॥न०॥सि०॥२६॥ तृणपरें जे षट खंडसुख छंडी,

चक्रवर्त्ति पण वरीउ ॥ ते चारित्र अक्षय सुख कारण, ते में मनमांहे धरीउ रे ॥ज०॥ सि०॥३७॥ हुआ रांक पणे जे आदरी, पूजित इंद नरिंदें ॥ अशरण शरण चरण ते वंदूं, पूर्युं ज्ञान आनंदें रे ॥ज०॥सि०॥३८॥ बार मास पर्यायें जेहनें,अनुत्तर सुख अतिक्रमियें ॥ शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते उपरें, ते चारित्रनें नमियें रे ॥ज०॥सि० ॥३९॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुत्तें भाख्युं, ते वंदूं गुणगेह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४० ॥

॥ ढाल ॥

॥ जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे॥ लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवनें नवि भमतो रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ इत्यष्टम चारित्रपदपूजा समाप्ता ॥

॥ नवम तपपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स ॥
नमोनमो तिव्वतवोभरस्स ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

॥ इयनवपयसिद्धं, लद्धिविज्जासमिद्धं ॥ पयडियसुर वग्गं, र्‍हींतिरेहासमग्गं ॥ दिसवइसुरसारं, खोणिपीढा वयारं ॥ तिजयविजयचक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ त्रिकालिक पणे कर्म कषाय टाले, निकाचित पणे बांधियां तेह बाले ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अंतर दुभे दें, क्षमायुक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ २ ॥ होए जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछक पणे कर्म आ वर्णशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होए सि द्धि सीमंतनी जिम संकेतें ॥ ३ ॥ इश्या नवपद ध्या नने जेह ध्यावे, सदानंद चिद्रूपता तेह पावे ॥ वली ज्ञान विमलादि गुणरत्नधामा, नमुं ते सदा सिद्धचक्र प्रधाना ॥ ४ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

॥ इम नवपद ध्यावे, पर्म आनंद पावे, नवभव शिव जावे, देव नरभव पावे ॥ ज्ञान विमल गुणगावे, सिद्धच क्रप्रभावे, सवि दुरित समावे, विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥

॥ ढाल, उलालानी ॥ देशी ॥

॥ इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभिंतर भेदें जी ॥ आतम सत्ता एकता, परपरणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ उच्छेदकर्म अनादिसंतति, जेह सिद्धपणुं व रे ॥ योगसंगें आहार टाली, भाव अक्रियता करे ॥ अंतर मुहूरत तत्व साधे, सर्व संवरता करी ॥ निज आत्मसत्ता प्रगटभावें, करो तप गुण आदरी ॥२॥

॥ ढाल ॥

॥ इम नवपद गुणमंमलं, चउ निखेप प्रमाणे जी ॥ सात नयें जे आदरे, सम्यगज्ञानें जाणे जी ॥ ३ ॥ उलालो ॥ निर्धारसें ती गुणी गुणनो, करे जे बहु मान ए ॥ तसु करण ईहा तत्व रमणों, थाय निर्मल ध्यान ए ॥ इम शुद्धसत्ता भल्यो चेतन, सकल सिद्धि अनुसरे ॥ अक्षय अनंत महंत चिद्रूघन, परम आनंदता वरे ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

॥ इय सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्धचक्र पदावली ॥ सवि लब्धिविद्या सिद्धिमंदर, भविक ! पूजो मन रुली ॥ उवझायवर श्रीराजसागर, ज्ञानधर्म सुरा

जता ॥ गुरु दीपचंद सुचरण सेवक, देवचंद सुशोन ता ॥ १ ॥ इति कलश ॥

॥ पूजा ॥ ढाल, श्रीपालना रासनी देशी ॥

॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते नवमुक्ति जिणंद ॥ जे ह आदरे कर्म खपेवा, ते तपशिवतरु कंद रे ॥ ॥ न०॥ सि०॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पण क्षय जाय, क्षमा सहित जे करतां ॥ ते तप नमियें जेह दीपा वे, जिनशासन उजमंता रे ॥ न०॥ सि०॥४२॥ आ मोसही पमुहा बहु लब्धी, होवे जास प्रनावें ॥ अ ष्ट महा सिद्धि नवनिधि प्रगटे, नमियें ते तप नावें रे ॥ न०॥ सि०॥४३॥ फल शिवसुख मोटुं सुर नरव र, संपति जेहनुं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो वंदूं, सम मकरंद अमूल रे ॥ न०॥ सि०॥४४॥ सर्वमंगल मांहि पहेलुं मंगल, वरणवीयें जे ग्रंथें ॥ ते तप पद त्रिहुं काल नमीजें, वर सहाय शिवपंथें रे ॥ न० ॥ सि० ॥४५॥ इम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुउ त न्मय श्रीपाल ॥ सुजशविलासें चोथे खंडें, एह अ ग्यारमी ढाल रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ इच्छारोधें संवरी,परिणति समता योगें रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वर्ते निजगुण जोगें रे ॥ वी०॥ ॥ १०॥ आगम नोआगम तणो, भाव ते जाणो सा चो रे ॥ आतमभावें थिर होजो, परभावें मत राचो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घटमांहे रिद्धि दाखी रे ॥ तिम नवपद ऋद्धि जाणजो, आत मराम छे साखी रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नव पद मुख्य ते जाणो रे ॥ एह तणे अवलंबनें, आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खंडें पूरी रे ॥ वाणी वाचक जस तणी, कोइ नयें न अधूरी रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ इति नवम तपपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ काव्यम् ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

॥ विमलकेवलभासनभास्करं, जगतजंतुमहो दयकारणं ॥ जिनवरं बहुमानजलौघनं, शुचि मनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥ इति काव्यम् ॥ आ काव्य, प्रत्येक पूजादीठ कहेवुं. ॥

॥ स्नात्र करतां जगतगुरु शरीरें, सकलदेवें विमल कलश नीरें ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रंथें प्रसिद्धा ॥ २॥ हर्ष धरी अपछरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशीष पावे ॥ जिहां लगे सुरगिरि जंबुदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय
कृत नवपद पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ नवपदकाव्य प्रारंभः ॥

तत्र.

॥ प्रथमं अरिहंतपदकाव्यम् ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ निर्यंतरंगारि गणेसुनाणे, सप्पाडिहेराइसयप्पहाणे ॥ संदेहसंदोहरयं हरंतो, झाएह निच्चंपि जिणेरहंतो ॥ १ ॥

॥ श्रीसिद्धपदकाव्यम् ॥

॥ उद्दधकम्मावरणं पमुक्के, अनंतनाणाइ सीरि चउक्के ॥ समग्गलोगग्गपयद्धसिद्धे, ऊाएद्द निच्चंपि समग्गसिद्धे ॥ २ ॥

॥ श्रीआचार्यपदकाव्यम् ॥

॥ सुतद्धसंवेगमयं सुएणं, संनीरखीरामयविसुएणं ॥ पीनंति जेते उवझायराए, ऊाएद्द निच्चंपि कयप्पसाए ॥ ३ ॥

॥ श्रीउपाध्यायपदकाव्यम् ॥

॥ ननंसुहं दहि पीया न माया, जेदंति जिवान्हि सूरीसपायां ॥ तम्हाहु ते चेव सया नजेह, जं मुरक सुरकाइं लहु लदेद ॥ ४ ॥

॥ श्रीसाधुपदकाव्यम् ॥

॥ खंतेय दंतेय सुगुत्तिगुत्तो, मुत्तेय संते गुणजोगजुत्तो ॥ गयप्पमाहे मयमोयमाए, ऊाएद्द निच्चं मुणिरायपाए ॥ ५ ॥

॥ श्रीसम्यग्दर्शनपदकाव्यम् ॥

॥ जं दवहि कायसु सद्दहाणं, तं दंसणं सवगुण प्पहाणं ॥ कुग्गहि वाहीउवयंति जेणं, जहा विधेण रसायणेणं ॥ ६ ॥

॥ श्रीसम्यक्ज्ञानपदकाव्यम् ॥

॥ नाणं पहाणं नयचक्कसिद्धं, तत ववोहीकमयं पसिद्धं ॥ धरेह चित्तावसए फुरंतं, माणिक्कदिउव तमो हरंतं ॥ ७ ॥

॥ श्रीचारित्रपदकाव्यम् ॥

॥ सुसंवरं मोहनिरोधसारं, पंचप्पयारं विगमाइयारं ॥ मुलोत्तराणेगगुणं पवित्तं, पालेह निच्चंपिहुस चरित्तं ॥ ८ ॥

॥ श्रीतपपदकाव्यम् ॥

॥ बझं तहा भिंतरझेयमेयं, कयाय डुझेयकुकम्म झेयं ॥ डुक्करवयुह्रे कयपावनासं, तवेण हहागमयं निरासं ॥ ए ॥ इति नवपदकाव्यानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ ॥

॥ पंम्डित श्रीवीरविजयजीकृत श्रीशत्रुंजय महिमागर्भित नवाणुंप्रकारी पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर पासजी, प्रणमी शुभगुरु पाय;
विमलाचल गुण गाईशुं, समरी शारद माय ॥१॥
प्रायें ए गिरि शाश्वतो, महिमानो नही पार ;
प्रथम जिणंद समोसखा, पूर्व नवाणुं वार ॥२॥
अढीय द्वीपमां ए समुं, तीर्थ नही फलदाय ;
कलियुगकल्पतरु लही, मुक्ताफलशुं वधाय ॥ ३ ॥
यात्रा नवाणुं जे करे, उत्कृष्टें परिणाम ;
पूजा नवाणुं प्रकारनी, रचतां अविचल धाम ॥४॥
नव कलशें अभिषेक नव, इम एकादश वार ;
पूजादीक श्रीफल प्रमुख, इम नवाणुं प्रकार ॥५॥

॥ पूजा ॥ ढाल, झुंबखडानी देशी ॥

॥ यात्रा नवाणुं करियें सलूणा, करियें पंच सनात ॥ सुनंदाको कंत नमो ॥ गुणणुं लख नवकार गणीजें, दोय अठम छठ सात ॥ सु० ॥ १ ॥ रथयात्रा

परदक्षिणा दीजें, पूजा नवाणुं प्रकार ॥ सु० ॥ धूप दी
प फल नैवेद्य मूकी, नमियें नाम हजार ॥ सु० ॥
॥ २ ॥ आठ अधिक शत टुंक भलेरी, महोटी तिहां ए
कवीश ॥सु०॥ शत्रुंजयगिरि (१) टुंक ए पहेली, नाम न
मो निशदीश ॥ सु० ॥ ३ ॥ सहस अधिक आठ मुनि
वर साथें, बाहुबली शिवठाम ॥ सु०॥ बाहुबली टुंक
नाम ए बीजुं (२), त्रीजुं (३) मरुदेवी नाम ॥ सु०॥
॥ ४ ॥ पुंमरीकगिरि नाम ए चोथुं (४), पांच कोडी मु
नि सिद्ध ॥ सु०॥पांचमी टुंक रेवत गिरि(५)कहियें, ति
ण ए नाम प्रसिद्ध ॥ सु०॥५॥ विमलाचल(६)सिद्धरा
ज(७) भगीरथ,(८) प्रणमीजें सिद्ध खेत्र (९)॥ सु०॥
ठहरी पाली इणे गिरि आवी, करियें जन्म पवित्र ॥
सु० ॥ ६ ॥ पूजायें प्रभु रीजवुं रे, साधुंकार्य अनेक ॥
चौपहुस चरित्त श्रीशुभवीर हृदयमां वसो जो, अलबेला
॥ ७ ॥
॥ श्र व्यं, द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥
॥ बष्नं तदा नित्तर नामकं, ऋषभमुख्यजिनांघ्रिप
म्म नेयं ॥ डुस्करवु नलैर्जिनपूजनं, विमलमाप्य
दहागमयं निरासं ॥ ९ ॥ ५ ए काव्य, प्रत्येक पू
नि संपूर्णानि ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरा मृत्युनिवारणाय, श्रीमते जिनेंद्राय, जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ए मंत्र पण,प्रत्येक पूजा दीठ कहेवो॥ इति प्रथमपूजाभिषेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥गा०॥१४ ॥

॥ अथ द्वितीयपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ एकेकुं डगलुं भरे, गिरिसनमुख उजमाल ;
कोडि सहस भवनां कर्यां, पाप खपे तत्काल ॥१॥

॥ ढाल, राग पूर्वी ॥ घडी घडी सांभरो ॥

॥ शांति सलूणा ॥ ए देशी ॥

॥ गिरिवर दरिसण विरला पावे, पूरवसंचित कर्म खपावे ॥ गिरि० ॥ ऋषभ जिनेश्वरपूजा रचावे, नव नवें नामें गिरिगुण गावे ॥ गिरि०॥ १ ॥ ए आंकणी॥ सहस्र कमल(१०)नें मुक्तिनिलय गिरि(११), सिद्धाचल(१२)शतकूट(१३)कहावे ॥ गिरि० ॥ टंक(१४) कदंब(१५)ने कोडि निवासो,(१६)लोहित्य(१७)ताल्ध्वज(१८)सुर गावे ॥ गिरि० ॥ २ ॥ टंकादिक पंच कूट सजीवन, सुर नर मुनि मली नाम थपावे ॥

॥ ७ ॥ अन्वयव्यतिरेकें करी ॥ म० ॥ जिनमुख दर सनरंग ॥ म० ॥ श्रीशुभवीर सुखी सदा ॥ म०॥ सा धक किरिया असंग ॥ म० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ गिरिव रं० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ इति तृतीयाभि षेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥ सर्व गाथा ॥ ३१ ॥

॥ अथ चतुर्थपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शेत्रूंजी नदी न्हाइनें, मुख बांधी मुखकोश ;
देवयुगादि पूजीयें, आणी मन संतोष ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ अनि हांरे वाहालोजी वाए छे ॥

॥ वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ अने हांरें वाहालो वसे विमलाचलें रे, जिहां हु आ उद्धार अनंत ॥ वा० ॥ अ० ॥ वाहालाथी नहिं वेगला रे, मुने वाहालो सुनंदानो कंत ॥ वा०॥ ॥ १ ॥ अ०॥ आ अवसरपिणी कालमां रे, करे न रत प्रथम उद्धार ॥ वा० ॥ अ० ॥ बीजो उद्धार पाट आठमे रे, करे दंड वीरज नृपाल ॥ वा० ॥ ॥ २ ॥ अ० ॥ सीमंधर वयणां सुणी रे, त्रीजो करे

ईशानेंद ॥ वा० ॥ अ० ॥ सागर एक कोडी अंतरें रे, चोथो उद्धार माहेंद ॥ वा० ॥ ३ ॥ अ० ॥ दश कोडी वली सागरें रे, करे पंचम पंचम इंद ॥वा०॥ अ० ॥ एक लाख कोडी सागरें रे, उद्धार करे चम रेंद ॥ वा० ॥ ४ ॥ अ० ॥ चक्रीसगर उद्धार ते सातमो रे, आठमो व्यंतरेंदनो सार ॥ वा० ॥ अ० ॥ ते अभिनंदन चंदप्रभुसमे रें, करे चंद जसा उद्धार ॥ वा० ॥ ५ ॥ अ० ॥ नंदनशांति जिणंदना रे, चक्रायुध दशम उद्धार ॥ वा० ॥ अ० ॥ अगीयार मो रामचंदनो रे, बारमो पांडवनो उद्धार ॥ वा० ॥ ॥ ६ ॥ अ० ॥ वीश कोडि मुनिसाथें पांडवा रे, इहां वरिया पद महानंद ॥ वा० ॥ अ० ॥ महानंद (२८) कर्म सूदण (२९) कैलास (३०)जे रे, पुष्पदंत(३१) जयंत(३२)आनंद (३३) ॥ वा० ॥ ७ ॥ अ० ॥ श्रीप द(३४)हस्तगिरि(३५)शाश्वतो रे.(३६) ए नाम ते प रम निधान ॥ वा० ॥ अ० ॥ श्रीशुभवीरनी वाणीयें रे, धरी कान करो बहुमान ॥ वा० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम०॥ इति चतु र्थाभिषेके चतुरपूजा समाप्ता ॥ सर्व गाथा ॥ ४१ ॥

॥ अथ पंचमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथे आरे ए थया, सवि महोटा उद्धार ;
सूक्ष्म उद्धार वच्चें थया, कहेतां नावे पार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ तेजें तरणीथी वडो रे ॥ ए देशी ॥

॥ संवत एक अछ्यंतरें रे, जावडशानो उद्धार ॥ उद्धरजो मुज साहिबा रे, नावे फरी संसार हो जिनजी! भक्ति हृदयमां धारजो रे, अंतर वैरी वारजो रे, तारजो दीन दयाल! ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बाहडमंत्रीयें चौदमो रे, तीरथें कर्यो उद्धार ॥ बार तेरोत्तर वर्षमां रे, वंश श्रीमाली सार हो जिनजी! ॥ भक्ति० ॥ २ ॥ संवत तेर ईकोत्तरें रे, समरो शा उसवाल ॥ न्यायद्रव्यविधि शुद्धता रे, पन्नरमो उद्धार हो जिनजी! ॥ भक्ति० ॥ ३ ॥ पन्नरशें सत्याशीयें रे, शोलमो ए उद्धार ॥ करमाशायें कराविया रे, वरते छे जयकार हो जिनजी! ॥ भक्ति० ॥ ४ ॥ सूरि दुप्पसह उपदेशथी रे, विमलवाहन भूपाल ॥ छेलो उद्धार करावशे रे, सासयगिरि उजमाल हो जिनजी! ॥ भक्ति० ॥ ५ ॥ भव्यगिरि (२७) सिद्धशेखरो रे, (२८)

महाजस (३९) ने मालवंत ॥ (४०)पृथवीपीठ (४१) दुःखहर गिरि रे, (४२) मुक्तिराज (४३) मणिकंत (४४) हो जिनजी ! ॥ जक्ति०॥ ६ ॥ मेरु महीधर (४५)ए गिरि रे, नामें सदा सुख थाय ॥ श्रीशुनवीरनें चित्तथी रे,घडिय न मेलण जाय हो जिनजी! ॥ जक्ति० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्री परम० ॥ इति पंचमाभिषेके छत्तरपूजा समाप्ता ॥ सर्व गाथा ॥ ४ए ॥

॥ अथ षष्ठपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्धाचल सिद्धि वर्या, गृहि मुनिलिंगें अनंत;
आगें अनंता सिऊशे, पूजो जवि! जगवंत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ चतुरेमें चतुरी कोण ? जगतकी ॥
॥ मोहनी ॥ ए देशी ॥

॥ सखरेमें सखरी कोण,? जगतकी मोहनी॥ रूपज जिनंदकी पडिमा, जगतकी मोहनी ॥ रयणमें मूर्त्ति जराई, जगतकी मोहनी ॥ हांहांरे जगतकी मोहनी ॥ प्यारे लाल, जगतकी मोहनी ॥ ए आंकणी ॥ जरतें जराई सोय, प्रमाना ले करी ॥ कंचनगिरियें वे

वाई, देखत डुनियां वरी ॥ हांहांरे देखत० ॥ प्या०॥ देख० ॥ १ ॥ सखरे० ॥ सातमोद्धारमें चक्रीसगर सुर चिंतवी ॥ डुःखम कालविचार, गुफामें जा ठवी ॥ हांहांरे गुफा० ॥ प्या० ॥ गु०॥ देव देवी हर रोज, पूजनकुं आवते ॥ पूजाको ठाठ बनाय, सांयुं गुण गावते ॥ हांहांरे सांयुं० ॥ प्या० ॥ सांयु० ॥ २ ॥ सखरे० ॥ अपछरा घूंघट खोलकें, आगें नाचते ॥ गीत गान उर तान, खडा हरि देखते ॥ हांहांरे खडा० ॥ प्या० ॥ ख० ॥ जिनगुण अमृतपानसें, मगन नई घडी ॥ ठम ठम ठमके पाउं, बलैयां ले खडी ॥ हांहांरे बलै० ॥ प्या० ॥ ब० ॥ ३ ॥ सखरे० ॥ या रीत नक्तिमगन्नसें, सुर सेवा करे ॥ सुरसांनिध नर दर्शन, नव त्रीजे तरे ॥ हांहांरे नव० ॥ प्या० ॥ न० ॥ पच्छिम दिश सोवन्न, गुफामें माल्हते ॥ तिनें कंचनगिरि (४६) नाम के, डुनियां बोलते ॥ हांहांरे डुनि० ॥ प्या० ॥ डु० ॥ ४ ॥ सखरे० ॥ आनंद घर (४७)पुण्य कंद,(४८)जयानंद (४९) जानीयें ॥ पाताजमूल (५०) विनास,(५१) विशाल(५२) वखानीयें ॥ हांहांरे विशा०॥ प्यारे०॥ वि०॥ जगतारण(५३) अकलंक, (५४) ए तीरथ मानीयें ॥ श्रीशुनवीर

विवेकें, प्रभुकुं पीछानीयें ॥ हांहांरे प्रभु० ॥ प्या० ॥ प्रभु० ॥५॥ सखरे० ॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥ मंत्रः ॥ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ इति षष्ठाभिषेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥ सर्व गाथा ॥ ५५ ॥

॥ अथ सप्तमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ नमि विनमि विद्याधरा, दोय कोड मुनिराय;
साथें सिद्धिवधू वर्या, शत्रुंजय सुपसाय ॥ १ ॥

॥ ढाल, सातमी ॥ सहसावनमां एक ॥
॥ दिन स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ आव्या छुं आशभर्यां रे, वालाजी! अमें आव्यां रे आशभर्यां ॥ ए आंकणी ॥ नमि पुत्री चोशठ मली ने, रूपभ पाउं पर्यां ॥ करजोडी विनयें प्रभु आगें, इम वयणा उचर्यां रे ॥ वा०॥ १ ॥ नमि विनमी जे पुत्र तुमारा, राज्यभाग विसर्यां ॥ दीनदयालें दीधो पामी, आजलगें विचर्यां रे ॥ वा० ॥ २ ॥ बाहुरा ज्य भगी प्रभु पासें, आवे काज सर्यां ॥ अमे पण तातजी! कारज साधुं, सानिध्य आप कर्यां रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ इम वदंती पागें चढंती, अणसण ध्यान धर्यां ॥ केवल पामी कर्मने वामी, ज्योतसें ज्योत

मल्यां रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ एक अवगाहनें सिद्ध अनंता, छुग उपयोग वस्यां ॥ फरसित देश प्रदेश असंखित, गुणाकार कस्यां रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ अकरमक(५५) महातीरथ (५६) हेमगिरि, (५७) अनंतशक्ति(५८) नस्यां ॥ पुरुषोत्तम(५९) ने पर्वत राजा,(६०) ज्योतिरूप(६१) धस्यां रे ॥ वा०॥ ६ ॥ विलासन्नद्र (६२) सुजद्र (६३)ए नामें, सुणतां चित्त ठस्यां ॥ श्रीशुनवीर प्रनुअनिषेकें, पातिक दूर हस्यां रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥

इति सप्तमाभिषेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥सर्व गा०॥६३॥

॥ अथाष्टमपूजा प्रारन्नः ॥

॥ दोहा ॥

॥ डाविडनें वालिखिल्यजी, दश कोडी अणगार ;
॥ साथें सिद्धिवधू वस्या, वंदूं वारं वार ॥ १ ॥

॥ ढाल, आठमी ॥ तोरण आई क्यूं ? चले रे ॥ ए देशी ॥

॥ नरतने पाटे नूपति रे, सिद्धि वस्या इणे ठाय ॥ सलूणा ॥ असंख्याता तिहां लगें रे, हुआ अजित जिनराय ॥ सलूणा ॥ १ ॥ जिम जिम ए गिरि नें

टियें रे, तिम तिम पाप पलाय ॥ स० ॥ अजित जिनेश्वर साहिबो रे, चोमासुं रहि जाय ॥ स० ॥ ॥ जि० ॥ २ ॥ सागरमुनि एक कोडिशुं रे, तोडया कर्मना पास ॥ स० ॥ पांच कोडि मुनि राजशुं रे, भरत लह्या शिववास ॥ स० ॥ जि० ॥ ३ ॥ आदिशर उपगारथी रे, सत्तर कोडी साथ ॥स०॥ अजितसेन सिद्धाचलें रे, झाल्यो शिववधू हाथ ॥ स० ॥ जि० ॥ ४ ॥ अजितनाथ मुनि चैत्रनी रे, पुनिमें दश हजार ॥ स० ॥ आदित्ययशा मुक्ति वर्या रे, एक लाख अणगार ॥ स० ॥ जि० ॥ ५ ॥ अजरामर(६४)खेमंकरु रे, (६५) अमरकेतु (६६) गुणकंद (६७) ॥स०॥ सहस्रपत्र(६८)शिवंकरु रे,(६९) कर्मक्षय (७०)तमोकंद(७१) ॥ स० ॥ जि० ॥ ६ ॥ राज राजेश्वर (७२) ए गिरि रे, नाम छे मंगलरूप ॥ स० ॥ गिरिवर रज तरुमंजरी रे, शीश चढावे भूप ॥ स० ॥ जि० ॥ ७ ॥ देवयुगादि पूजतां रे, कर्म होवे चकचूर ॥ स० ॥ श्री शुभवीरने साहिबा रे, रहेजो हइडा हजूर ॥ स० ॥ जि० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ इति षष्ठमाभिषेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

॥ अथ नवमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ रामभरत त्रण कोडिशुं, कोडि मुनि श्रीसार;
कोडि साढि अठ शिव वस्या, सांब प्रद्युम्न कुमार ॥ १ ॥

॥ ढाल, नवमी ॥ उंचोने अलबेलो रे, कामण ॥
॥ गारो कांनुडो ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धाचलशिखरें दीवो रे ॥ आदिशर अलबेलो छे ॥ जाणे दर्शन अमृत पीवो रे ॥ आ० ॥ शिव सोम जसानी लारें रे ॥ आ० ॥ तेर कोडी मुनि परिवारें रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ १ ॥ करे शिवसुंदरीनुं आणुं रे ॥ आ० ॥ नारदजी लाख एकाणुं रे ॥ आ० ॥ वसुदेवनी नारी प्रसिद्धि रे ॥ आ० ॥ पांत्रीश हजार ते सिद्धि रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ २ ॥ लख बावननें एक कोडी रे ॥ आ० ॥ पंचावन सहसने जोडी रे ॥ आ० ॥ सातशें सत्त्योतेर साधु रे ॥ आ० ॥ प्रभु शांति चोमासुं कीधुं रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ३ ॥ तव ए वरिया शिवनारी रे ॥ आ०॥ चौद सहस मुनि दमि तारि रे ॥ आ० ॥ प्रद्युम्नप्रिया अचंभी रे ॥ आ०॥ चौआलीशशें वैदर्भी रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ४ ॥ था

वच्चापुत्र हजारें रे ॥ आ०॥ शुक परिव्राजक ए धारें रे ॥ आ० ॥ सेलग पणसय विख्यातें रे ॥ आ० ॥ सुनइमुनि सयसातें रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ५ ॥ न व तरिया तेणे नवतारण रे (७३)॥ आ०॥गजचंद (७४) महोदय (७५) कारण रे ॥ आ० ॥ सुरकांत (७६) अचल (७७) अजिनंदो रे (७८) ॥ आ० ॥ सुमति (७ए) श्रेष्ठा (८०) नयकंदो रे (८१) ॥ आ० ॥ सि० ॥ ६ ॥ इहां मोक्ष गया केई कोटी रे ॥ आ० ॥ अमने पण आशा मोटी रे ॥ आ० ॥ श्रद्धासंवेगें नरियो रे ॥ आ० ॥ में मोटो दरियो त रियो रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ७ ॥ श्रद्धाविण कुण इ हां आवे रे ॥ आ० ॥ लघु जलमां किम ते नावे रे ॥ आ० ॥ तिणे हाथ हवे प्रभु कालो रे ॥ आ० ॥ शुनवीरनें हइडे वाहालो रे ॥ आ० ॥ सि० ॥ ८ ॥ ॥ काव्यं ॥ गिरिवरं०॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥

इति नवमाजिपेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥सर्व गाथा॥८१॥

॥ अथ दशमपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कदंब गणधर कोडिशुं, वलि संप्रति जिनराज ;

॥ थावच्चा तस गणधरु, सहसशुं सिद्धां काज॥१॥
॥ ढाल, दशमी ॥ धन्य धन्य जिनवाणी ॥ ए देशी ॥
॥ इम केई सिद्धि वस्या मुनिराया, नामथी निर्मलकाया रे ॥ ए तीरथ तारु ॥ जाली मयालीने उवयाली, सिद्धा अनशन पाली रे ॥ ए० ॥ १ ॥ देवकी षट नंदन इहां सिद्धा, आतम उज्ज्वल कीधा रे ॥ ए० ॥ उज्ज्वलगिरि (७२) महापद्म(७३)प्रमाणो, विश्वानंद (७४)वखाणो रे ॥ ए०॥ २ ॥ विजयभद्र (७५)ने इंद्र(७६)प्रकाशो, कहियें कपर्दी(७७)वासो रे ॥ ए०॥ मुक्ति निकेतन(७८)केवल दायक,(७९) चर्चगिरि(८०) गुणनायक रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ ए नामें जय सघला नासे, जयकमला घरवासें रे ॥ ए०॥ शुकराजा निज राज्यविलासी, ध्यान धरे षट मासी रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ द्रव्यसेवनथी साजा ताजा, जिम कुकडो चंद राजा रे ॥ ए० ॥ ध्याता ध्येय ध्यानपद एकें, जावथी शिवफल टेकें रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ फालने बंधी ब्रह्मनें वलगो, जाए न थाए अलगो रे ॥ ए०॥ मूल ऊर्ध्व अध शाखा चारे, छंदपुराणें विचारें रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ इंद्रिय फालां विशय प्रवालां, जाणंता पण बाला रे ॥ ए० ॥ अनुजव अमृत ज्ञाननी धारा, जिनशासन ज

थकारा रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ चार दोष किरिया छंमाणी, योगावंचक प्राणी रे ॥ ए० ॥ गिरिवरदर्शन फरशन योगें, संवेदनने वियोगें रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ निर्जरतो गुण श्रेणें चढतो, ध्यानांतर जइ अडतो रे ॥ ए० ॥ श्रीशुनवीर वसे सुखमोजें, शिवसुंदरीनी सेजें रे ॥ए० ॥ए॥काव्यं॥ गिरिवरं०॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ इति दशमाभिषेके उत्तरपूजा समाप्ता॥सर्व गाथा॥ए१॥

॥ अथ एकादशपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ शत्रुंजय गिरिमंमणो, मरुदेवानो नंद ;
॥ युगला धर्म निवारको, नमो युगादि जिणंद॥१॥

॥ ढाल, अगीयारमी ॥ वीरकुंवरनी वातडी केनें ॥
॥ कहियें ॥ ए देशी ॥

॥ तीरथनी आशातना, नवि करियें ॥ नवि करियें रे नवि करियें, धूप ध्यान घटा अनुसरियें, तरियें संसार॥ तीरथ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आशातना करतां थकां, धनहाणी ॥ भूख्यां न मले अन्न-पांणी, काया वली रोगें भरांणी, आ भवमां एम ॥ ती० ॥ २ ॥ परभव परमाधामीनें, वश पडशे ॥ वैतरणी नदीमां

जलशे, अगनीनें कुंमें बलशे, नहीं सरणुं कोय ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूरव नवाणुं नाथजी, इहां आव्या ॥ साधु केइ मोक्ष सधाव्या, श्रावक पण सिद्धि सुहाव्या, जपतां गिरिनाम ॥ ती०॥४॥ अष्टोत्तर शत कूट(ए१) ए, गिरिठामें ॥ सौंदर्य(ए२)यशोधर (ए३) नामें, प्रीति मंमण(ए४)कामुक(ए५)कामें, वली सहजानंद(ए६) ॥ ती०॥५॥ महेंद्रध्वज(ए७)सरवारथ, सिद्ध(ए८)कहियें ॥ प्रीयंकर(एए)नाम ए लहियें, गिरि शीतल गंहे र हियें, नित्य करीयें ध्यान॥ती० ॥६॥ पूजा नवाणुं प्रकारनी, एम कीजें ॥ नरभवनो लाहो लीजें, वली दान सुपात्रें दीजें, चढते परिणाम ॥ ती० ॥ ७ ॥ सेवन फल संसारमां, करें लीला ॥ रमणीधन सुंदर बाला, शुभवीर विनोद विशाला, मंगल शिवमाल ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति एकादशाभिषेके उत्तरपूजा समाप्ता ॥ सर्व गाथा ॥ १०० ॥

॥ अथ कलश ॥ धन्याश्रीरागेण गीयते ॥

॥ गायो गायो रे विमलाचल तीरथ गायो, पर्वतमां जिम मेरु महीधर, मुनिमंमल जिनरायो ॥ तरुगणमां जिम कल्पतरुवर, तिम ए तीर्थ सवायो रे ॥ वि०॥१॥ यात्रा नवाणुं अमें इहां कीधी, रंग तरंग भरायो ॥

तीरथगुण मुक्ताफल माला, संघने कंठें ठवायो रे ॥ वि० ॥२ ॥ शेठ हेमा नाई हुकम लहीनें, पालीताणा शिर गायो ॥ मोतीचंद मलुक चंदराज्यें, संघ सकल हरखायो रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ तपगछ सिंह सूरिसर केरा, सत्यविजय सत्य पायो ॥ कपूरविजयगुरु खिमाविजय तस, जसविजयो मुनिरायो रे ॥ वि०॥ ४ ॥ श्रीशुनविजय सुगुरु सुपसाये, श्रुतचिंतामणि पायो ॥ विजयदेवेंद्र सूरिसरराज्यें, पूजा अधिकार रचायो रे ॥ वि० ॥ ५ ॥पूजा नवाणुं प्रकारी रचावो, गावो ए गिरिरायो ॥ विधियोगें फल पूरण प्रगटे, नव हववाद हगायो रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ वेद ४ वसु ८ गज ८ चंद्र १ संवत्सर, (१८८४) चैत्री पूनिम दिन ध्यायो ॥ पंमित वीरविजय प्रनुध्यानें, आतम आप ठरायो रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति कलश ॥ काव्यं ॥ गिरिवरं० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥

॥ इति पंमित श्रीवीरविजयजीकृत श्री शत्रुंजयमहिमागर्नित नवाणुंप्रकारी पूजा संपूर्णा ॥ सर्व गाथा ॥ १०७॥

आरिसा बिंब रे, सखि ! मुने देखण दीजें ॥ उप्पन्न दिग् कुंमरी कहे, सखि० ॥ विकसित मेघकदंब रे ॥ सखि० ॥१॥ नवमंगलमें न देखिउं, सखि० ॥ प्रजु जीनो देदार रे, सखि० ॥ कृत्य करी घर जावती, सखि० ॥ खेलत बाल कुमार रे ॥ सखि० ॥ २ ॥ यौवनवय सुख नोगवे, सखि० ॥ श्रीमहावीर कुमार रें, सखि० ॥ ज्ञानथी काल गवेषिउं, सखि० ॥ आप हुआ अणगार रे ॥ सखि० ॥ ३ ॥ गुणठाणुं लही बारमुं, सखि० ॥ज्ञानावरणी हणुं जेम रे,सखि०॥ केवल लही मुगतें गया, सखि० ॥ अमे पण करशुं तेम रे ॥ सखि० ॥ ४ ॥ स्वामी सेवाथी लहे, सखि० ॥ सेवक स्वामिनाव रे, सखि० ॥ सालंबन निरालंबनें, सखि० ॥ करशुं एहवो बनाव ॥सखि०॥५॥ तीस कोडा कोडी सागरू, सखि०॥ थिति अंतर मुहूर्त्त लघीस रे, सखि० ॥ बंध चतुर्विध चेतशुं, सखि०॥ पगई ठिई रस देस रे ॥ सखि०॥६॥ सूक्ष्म बंध उदय वली, सखि० ॥ उदीरण सत्ता खीण रे, सखि० ॥ स्नातक स्नानमिशे हुवे, सखि० ॥ ज्ञान पमल मलहीण रे ॥ सखि० ॥ ७ ॥ सरवांगें स्नातक थई, सखि०॥ करशुं साहेली रंग रे, सखि०॥ सहजानंद

घरे रमो, सखि० ॥ श्रीशुभवीरनें संग रे॥सखि०॥८॥

॥ काव्यं ॥ उपजातिवृत्तम् ॥

॥ तीर्थोदकैर्मिश्रितचंदनौघैः, संसारतापाहतये सुशी तैः ॥ जराजनिप्रांतरजोनिशांत्यै, तत्कर्मदाहार्थम जं यजेह ॥ १ ॥

॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ सुरनदीजलपूर्णघटैर्घनै,र्घुसृणमिश्रितवारिभृतैः प रैः ॥ स्नपय तीर्थकृतं गुणवारिधिं, विमलता क्रिय तां च निजात्मनः ॥ २ ॥ जनमनोमणिभाजनभा रया, शमरसैकसुधारसधारया ॥ सकलबोधकलार मणीयकं, सहजसिद्धमहं परिपूजयेत् ॥ ३ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरा मृत्युनिवारणाय, अज्ञानोच्छेदकाय, श्रीमते, वीरजिनें द्राय, जलं यजामहे स्वाहा ॥ इति अज्ञानोच्छे दकार्थं प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ मूलप्रकृतियें एक ए, उत्तरप्रकृति पांच ;

॥मोह समे पण नवि समे, विण खायकनी आंच॥ १॥
॥ तिणे तेहिज विधि साधवा, पूजो अरिहाअंग;
॥ सिद्धस्वरूप हृदय धरी, घोळी केसररंग ॥ २ ॥

॥ ढाल, बीजी ॥ जुंबखडानी देशी ॥

॥ बीजी चंदनपूजना रे, केसरनो करी घोळ ॥ प्रभुप द पूजीयें ॥ बाहिर रंग गवेषीनें रे, रंग अभ्यंतर चोळ ॥ प्र० ॥ पूजीयें जिन पूजीयें रे, आनंदरस कल्लोल ॥ प्र० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ धुर पगई धुर कर्मनी रे,बंध त्रिभंग प्रकार ॥ प्र० ॥ खय उपशम गुण नीपजे रे, अडवीश उपर चार ॥ प्र० ॥ २ ॥ त्रण्यशें चाळीस उत्तरू रे, बहुवादिक पद बार ॥ प्र० ॥ पूज्य विशेषावश्यकें रे, नंदीसूत्र मोझार॥ प्र० ॥ ३ ॥ बंध हेतु उते पामीयें रे, मतिआवर्ण वळेण ॥ प्र० ॥ ध्रुवबंधि प्रकृति टळे रे, जब लहे खायकश्रेण ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जिम रोहें नृप रीजव्यो रे, रीजववो एक सांइ ॥ प्र० ॥ श्रीशुभवीरनें आशरे रे, नासे कर्म बलाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ जिनपतेर्वरगंधसुपूजनं, जनिजरामरणोद्भवभीतिह

त् ॥ सकलरोगवियोगविपध्दरं, कुरु करेण सदा निजपावनम् ॥१॥ सहजकर्मकलंकविनाशनै, रमलभाव सुवासनचंदनै ॥ रनुपमानगुणावलिदायकं, सहजसिध्दमहं परिपूजयेत् ॥ २ ॥

॥ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ मतिज्ञानावरणनिवारणाय, श्रीमते,वीरजिनेंद्राय,चंदनं य०॥स्वा० ॥ इति मतिज्ञानावरणनिवारणार्थं द्वितीयचदनपूजा समाप्ता ॥२॥

॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रुतज्ञानावरणी तणो, तुं प्रभु ! टालण हार;
खिणमें श्रुतकेवली कस्या, देई त्रिपदी गणधार॥१॥
सुमनस वृष्टि तिणे समे, समवसरण मोझार;
करता सुमनस सुमनसा, प्रभु पूजा दिल धार ॥ २ ॥

॥ ढाल, त्रीजी ॥ द्वेप न धरिये लालन द्वेप न धरीयें॥

॥ ए देशी ॥

॥ समवसरणें श्रुतज्ञान प्रकाशें, पूजे सुरवर फूलनि राशें ॥ स्वामी फूलनी राशें ॥ केतकी जायनां फूल मंगावो, भेदत्रिकें करी पूजा रचावो ॥ स्वा० ॥ १ ॥

प्रज्ञुपद प्रणमी श्री श्रुत मागो, श्रुतज्ञानावरण तें जेम जाय नागो ॥ स्वा० ॥ खयउपशमगुण जिम जिम थावे, तिम तिम आतम गुण प्रगटावे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ मति विण श्रुत न लहे कोइ प्राणी, समकेत वंतनी एह निशानी ॥ स्वा० ॥ कृत्यादिक श्रुत नाण जणावे, खीर नीर जिम हंस बतावे ॥ स्वा० ॥ ॥ ३ ॥ गीतारथ विण उग्रविहारी, तपिया पण मुनि बहुल संसारी ॥ स्वा० ॥ अल्पागम तप क्लेश ते जाणो, धर्मदासगणी वचन प्रमाणो ॥ स्वा० ॥ ॥४॥ नेद चतुर्दश वीश वखाणो, ऊर रीत मति ज्ञान समाणो ॥ स्वा० ॥ मतिश्रुतनाणें चउ शिव जावे, श्रुत केवली शुज वीर वधावे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ डुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ सुमनसां गतिदायि विधायिनां, सुमनसां निकरैः प्रज्ञुपूजनं ॥ सुमनसा सुमनो गुणसंगिना, जन विधेहि निधेहि मनोर्च्चने ॥ १ ॥ समयसारसुपुष्पसुमालया, सहजकर्मकरेण विशोधया ॥ परमयोगबलेन वशीकृतं, सहजसिद्धमहं परिपूजयेत् ॥ २ ॥

॥ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ श्रुतज्ञानावरणनिवारणाय

॥ कुसुमानि य० ॥ स्वा० ॥ इति श्रुतज्ञानावरणनिवारणार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवधिज्ञानावरणना, क्षयथी हुआ चिद्रूप ;
ते आवर्ण दहन भणी, ऊर्ध्वगतिरूप धूप ॥ १ ॥

॥ ढाल, चोथी ॥ रागजाति फाग ॥ सबावरागिणी ॥

॥ जिनवर जगतदयाल भवियां ! जिनवर ॥

॥ जगतदयाल ॥ ए देशी ॥

॥ ए गुण ज्ञान रसाल, भवियां ! ए गुण ज्ञान रसाल ॥ धूपघटा करी ज्ञान ठटा वरी, अवधिआवर्ण प्रजाल ॥ भ० ॥ षट भेदांतर वृद्धिनी रचना, जाणे खेत्रने काल ॥भ०॥ए०॥१॥ अगुल आवलि संखम संखें,पूरणे किंचुण काल ॥ भ० ॥ पूर्णावलि अंगुल पुहुत्तें, हस्तें मुहूर्त्त विचाल ॥भ०॥ए० २॥ कोश दिनांतर योजन दिन नव, द्रव्यपर्याय विशाल ॥ भ० ॥ पणवीश योजन पक्ख अधूरे, पक्खें भरत निहाल ॥भ०॥ए०॥३॥ जंबूद्वीप ते मास अधिकें, वरसें अढीद्वीप भाल ॥ भ० ॥ रुचकद्वीप ते वर्ष पुहुत्तें, सं

ख्याते संख्यातो काल ॥ न० ॥ ए० ॥ ४ ॥ काल असंख द्वीपसंखमसंखा, ज्ञानप्रत्यक्ष त्रिकाल ॥ न० ॥ एकसमे अडअधिक शत सीझे, टाली नवजं जाल ॥ न० ॥ ए० ॥ ५ ॥ शिवराज ऋषि विभंग नें टाली, वरिया शिव वरमाल ॥ न० ॥ सायरद्वीप असंख्य दिखावे, श्रीशुभवीर दयाल ॥ न०॥ ए०॥६॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ अगरमुख्यमनोहरवस्तुनः, स्वनिरुपाधिगुणौघविधायिनः ॥ प्रभुशरीरसुगंधसुहेतुना, रचय धूपनपूजनमर्हतः ॥ १ ॥ निजगुणाक्षयरूपसुधूपनं, स्वगुणघातमलं प्रविकर्षणं ॥ विशदबोधमनंतसुखात्मकं, सहजसिद्धमहं परिपूजयेत् ॥ २ ॥

॥ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ अवधिआवरणनिवारणाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति अवधिआवरणनिवारणार्थं चतुर्थ धूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ मनपज्जव आवर्णतम, हरवा दीपक माल

ज्योतसें ज्योत मिलाईयें, ज्ञान विशेष विशाल॥१॥

॥ ढाल, पांचमी ॥ गोपी वीनवे रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्योति जगमगे रे, अढीद्वीप प्रमाण ॥ दो भेदें करी रे, अढी अंगुलनो तरतम जाण ॥ जेह विपुलमति रे, तेहनें ते नव पद निरवाण ॥ मुनिवेषज विना रे, नवि उपजे दो भेदें नाण ॥ ज्योति० ॥ १ ॥ विमलातम दशा रे, जाणे ज्योतिष व्यंतर ठाण ॥ तीर्छी लोकमां रें, भांख्युं एह प्रमाण ॥ अधोलोकमां रे, योजन शो अधिकेरा जाण ॥ संज्ञी जीवना रे, जाणे मनचिंतन संधाण ॥ ज्यो० ॥ २ ॥ रूजुमति द्रव्यथी रे, अनंत अनंत प्रदेश विचार ॥ असंखित भव कहे रे, पलिय असंखम भाग त्रिकाल ॥ सवि परजायनो रे, भाग अनंतो मनथी सार ॥ चारें भावथी रे, अधिका विपुलमति अणगार ॥ ज्यो० ॥३॥ मतिश्रुत नाणशुं रे, मनपज्जव पाम्या मुनिराय ॥ खायकभावथी रे, एक समय दश मुगति जाय ॥ खयउपशमपदें रे, मुनिवर ते साते गुणठाण ॥ श्रीशुभवीरथी रे, जंबूस्वामी लगें ए नाण ॥ ज्यो० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्त द्वयम् ॥

॥ भवति दीपशिखापरिमोचनं, त्रिभुवनेश्वरसद्मनि शोभनं ॥ स्वतनुकांतिकरं तिमिरं हरं, जगति मंगल कारणमातरं ॥ १ ॥ शुचिमनात्मचिदुज्ज्वलदीपकै, र्ज्वलितपापपतंगसमूलकैः ॥ स्वकपदं विमलं परिलेभिरे, सहजसिद्धमहं परिपूजयेत् ॥ २ ॥

॥ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम०॥ मनपर्यवावर्णोछेदकाय दीपं य०॥ स्वा०॥ इति मनपर्यवावर्णोछेदकार्थं पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ घनघाती घातें करी, जेह थया मुनिभूप;
बहिरातम उछेदिनें, अंतर आतमरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल, छठी ॥ साहेलडीयां ॥ ए देशी ॥

॥ अक्षतपद वरवा भणी, सुणो संता जी ॥ अक्षत पूजा सार ॥ गुणवंता जी ॥ अक्षत उज्ज्वल तंडुला, सु० ॥ उज्ज्वल ज्ञान उदार ॥ गु० ॥ १ ॥ पं

त्रम पगई टालवा, सु० ॥ वरवा पंचम ज्ञान ॥गु०॥ त्रिशलानंद निहालियें, सु० ॥ बार वरश एक ध्यान ॥ गु० ॥ २ ॥ निंद शयन जागरदिशा, सु० ॥ ते सवि दूरें होय ॥ गु० ॥ देखे उजागर दिशा, सु० ॥ उज्ज्व लपाया दोय ॥ गु० ॥ ३ ॥ लही गुणगणुं तेरमुं, सु० ॥ धुरसमयें साकार ॥ गु० ॥ नावजिनेश्वर वंदि यें, सु०॥ नाठा दोष अढार ॥ गु०॥ ४ ॥ ठति पर्यायें ज्ञानथी, सु०॥ जाणे ज्ञेय अनंत ॥ गु०॥ श्री शुनवी रनी सेवना, सु० ॥ आपे पद अरिहंत ॥ गु० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तद्वयम् ॥

॥ क्षितितलेकृतशर्मनिदानकं, गणिवरस्य पुरोऽकृत मंगलं ॥ कृतविनिर्मितदेहनिवारणं, नवपयोधिस मुद्भरणोयतं ॥ १ ॥ सहजनावसुनिर्मलतांडुलै, विं पुलदोषविशोधकमंगलैः ॥ अनुपरोधसुबोधविधान कं, सहजसिद्धमहं परिपूजयेत् ॥ २ ॥

॥ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ केवलज्ञानावर्णनिवारणा य अक्षतं य०॥ स्वा० ॥ इति केवलज्ञानावरणनिवार णार्थं षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

॥ अथ ॥

॥ द्वितीयदिवसेऽध्यापनीयदर्शना-
वरणिकर्मसूदनार्थं द्वितीयपूजाष्टकप्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दर्शनावरण ते वरणवुं, नव पगई छुरदंत ;
दरिसण(४)निद्रा(५)भेदथी,चउ पण कहे अरिहंत १
बंधोदयसत्ताध्रुवा, पयडीनव तिम पंच ;
निद्रा अध्रुवोदय कही, सर्वघाति पण पंच ॥ २ ॥
दंशणतिग देशघातियां, केवल दंशण एक ;
सर्वघातिमें दाखिउं, वादलमेघ विवेक ॥ ३ ॥
विकट निकट घट पट लहे, जिम आवरणवियोग ;
ज्ञानांतरक्षणथी सहु, सामान्यें उपयोग ॥ ४ ॥
ए आवरण बलें करी, न लह्युं दरशन नाथ ;
नैगमदर्शन भटकियो, पाणी वलोव्युं हाथ ॥ ५ ॥
पूरण दरसन पामवा, भजियें भवि भगवंत ;
दूर करे आवरणने, जिम जलथी जलकांत ॥ ६ ॥

॥ ढाल, पहेली ॥ राग आशावरी ॥

॥ नमोरे नमो श्रीशत्रुंजा गिरिवर ॥ ए देशी ॥

॥ मागधनें वरदाम प्रनासह, गंगानीर विवेक रे ॥ दर्शनावरण निवारण कारण, अरिहानें अनिषेक रे ॥ नमो रे नमो दरशनदायकने ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दर्शन दायक श्रीजिनवर तुं, लायकताने लाग रे ॥ प्रीत पटंतर दोय न ठाजे, जो होए साचो राग रे ॥ न० ॥ २ ॥ राग विना नवि रीजे सांई, नीरागी वीतराग रे ॥ ज्ञाननयन करी दर्शन देखे, ते प्राणी वडनाग रे ॥ न० ॥ ३ ॥ चउ दंसण प्रति सूक्ष्म बंधे, उद यादिक खिणअंत रे ॥ ते आवर्ण कठिन मल खा ली, स्नातक संत प्रसंत रे ॥ न० ॥ ४ ॥ ग्रंथि विक ट जे पोल पोलीठ, रोके दर्शनचूप रे ॥ श्रीशुनवीर जो नयन निहाले, सेवक साधनरूप रे ॥ न० ॥ ५ ॥ ॥ काव्यं ॥ तीर्थोदकै० ॥ १ ॥ सुरनदी० ॥ २ ॥ जनमनो० ॥ ३ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ बंधोदयनि वारणाय जलं य० ॥ स्वा० ॥ इति बंधोदयनिवारणार्थं प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ ए ॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ उपदेशक नव तत्वना, प्रभु नव अंग उदार ;
नव तिलकें उत्तर नव, पगई टालणहार ॥ १ ॥

॥ ढाल, बीजी ॥ राग काफी, नायकी ॥

॥ वसिया दिल दीवडी ज्योति फगारी ॥ ए देशी ॥

॥ तुज मूरति मोहनगारी,रसिया तुज मूरति मोहन गारी ॥ द्रव्यहगुणपरजायनें मुद्रा, चउगुण पडिमा प्यारी ॥ र० ॥ तु० ॥ नयगम भंग प्रमाणें न निरखी, कुमति कदाग्रह धारी ॥ र०॥ तु०॥१॥ जिनघर तीरथ सुविहित आगम, दरशने नयण निवारी ॥ र० ॥ तु० ॥ चक्षुदर्शनावरण कर्म ते, बांधे मूढ गमारी ॥ र० ॥ तु० ॥ २ ॥ कांणो निशिदिन जात्यंधा पणुं, दुःखिया दीन अवतारी ॥ र० ॥ तु० ॥ दर्शनावरण प्रथमउदयेंथी, परभव एह विचारी ॥ र० ॥ तु० ॥ ३ ॥ अल्पतेज नयना तप देखी, जूए आडो कर धारी, ॥ र० ॥ तु० ॥ जाणुं पूरवभव कुमतिनी, हजीय न टेव विसारी ॥ र० ॥ तु०॥ ४ ॥ जयणायुत गुरु आगम पूजो, जिनपडिमा जयकारी

॥ र० ॥ तु० ॥ श्रीजिनवीरनुं शासन वरते, एकवीश वरस हजारी ॥ र० ॥ तु० ॥ ५ ॥ ॥ काव्यं ॥ जिनपतेः० ॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ चक्षुदर्शनावरणनिवारणाय चंदनं य०॥ स्वा०॥ इति चक्षुदर्शनावरणनिवारणार्थं द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ १० ॥

॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ फूल अमूलक पूजना, त्रिशलानंदन पाय ;
सुरभि डुरभि नासाप्रमुख,अचक्षु आवरण हठाय॥१॥

॥ ढाल, त्रीजी ॥ राज ! पधारो मेरे मंदिर ॥ ए देशी॥

॥ ममणो मरुउ केतकी फूलें, पूजाफल परकाशां जी ॥ नोगिनिवासा संयुतआशा, लक्षणवंती ना शा ॥ नव नव रचियें जी, जिनगुण माल रसाल कंठें धरियें जी ॥१॥ ए आंकणी ॥ गुण बहुमान जिनाग मवाणी, कानें धरी बहुमानें जी ॥ इव्य नाव बहिरा तम टाली, परनव समजे शानें ॥ न० ॥ २ ॥ प्र जुगुण गावे ध्यान मल्हावे, आगमशुद्ध परूपे जी ॥ मूरख मूंगा न लहे परनव, न पडे वली नवकूपें

॥ भ० ॥ ३ ॥ परमेष्टीने शीस नमावे, फरसे तीरथ भावें जी ॥ विनय वैयावच्चादिक करतां, भरतेशर सुख पावे ॥ भ० ॥ ४ ॥ जिम जिम क्षयउपशम आवरणा, तिम गुण आविरभावे जी ॥ श्रीशुभवीर वचन रसलब्धि, संभिन्न श्रोत जणावे ॥ भ०॥ ५ ॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समयसार० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ अचक्षुदर्शनावरणनिवारणाय पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति अचक्षुदर्शनावरणनिवारणार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ११ ॥

॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥अवधिदर्शनावरण क्षय, उपशम चउगति माहिं;
खायकभावें केवली, नमो नमो सिद्ध उछाहिं॥१॥

॥ ढाल, चोथी ॥ चंद्रशेखर राजा थयो ॥ ए देशी ॥ ॥ अवधिरूपी ग्राहको, खटभेद विशेषें ॥ अवधिदर्शन तेहनुं, सामान्यें देखे ॥ १ ॥ ए गुण जेह उपन्या, परभवथी स्वामी ॥ आ भवमां सुखीया अमें, तुम दरशन पामी ॥ ए आंकणी ॥ देव निरय गतिथी लहे, गुणथी नर तिरिया ॥ काउसग्गमां मुनि हास्यथी,

देग उतरीया ॥ ए गु० ॥ २ ॥ परिणामें चढती दशा, रुपिद्रव्य अनंता ॥ जघन्यथी उतकष्टथी, सवि द्रव्य मुणंता ॥ ए गु० ॥ ३ ॥ खेत्र असंख अंगुल लघु, गुरुलोक असंखा ॥ नाग असंख लघु आवलि, उ सप्पिणी असंखा ॥ ए गु० ॥ ४ ॥ चार नाव द्रव्य एकमां, लघुनाव विशेषें ॥ असंख पर्यव द्रव्यप्रतें, गुरुदर्शन देखे ॥ ए गु० ॥ ५ ॥ नंदीसूत्रें इणी परें, कह्युं अवधिनाण ॥ अनाकार उपयोगथी, दर्शन प रिमाण ॥ ए गु० ॥ ६ ॥ विनंगेंपण दाखियुं, दर्शन सिद्धांतें ॥ तत्वारथ टीका कहे, समकित एकांतें ॥ ए गु० ॥ ७ ॥ तस आवरण दहन नणी, धूप पूजा करीयें ॥ श्री शुनवीर शरण लही, नवसायर तरीयें ॥ ए गु० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निज गुणाक्षय० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अवधिआवरणनिवारणाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति अ वधिआवरणनिवारणार्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ १२ ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ केवल दर्शनावरणनो, तुं प्रनु टालणहार ;

ज्ञानदीपकथी देखियें, मोटो तुज आधार ॥ १ ॥

॥ढाल, पांचमी॥ रागिणी आशावरी, गरबानी देशी ॥

॥ दीपक दीपतो रे, लोकालोक प्रमाण ॥ दर्शन दीवडो रे, हणी आवरण लहे निरवाण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ खायकभावें अनादि चेतन, आठ प्रदेश उघाडा रे ॥ अवरनुं दर्शन देखण भमित्त, पण आवरण ते आडां ॥ दी० ॥ २ ॥ तुम सेवे ते तुम सम होवे, शक्ति अपूरवयोगें रे ॥ खपकश्रेण आरोही अरिहा, ध्यान शुकल संयोगें ॥ दी० ॥ ३ ॥ घनघातीनो घात करीनें, प्रथम समय साकारें रे ॥ समयांतर दर्शन उपयोगें, दर्शनावरण विदारे ॥ दी०॥४॥ मूलएक बंध चार सत्तोदय, उत्तरपण एक बांधे रे ॥ बेहेंतालीश उदयें पंचाशी, सत्ता हणी शिव साधे ॥ दी० ॥ ५ ॥ झगमग जाजा दीपक पूजा, करतां कोडि दीवाजा रे ॥ श्रीशुभवीर जिनेश्वर राजा, राज्यें रहियत ताजा ॥ दी० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ भवति दीप० ॥ १ ॥ शुचिमनात्म० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ केवलदर्शनावरणनिवारणाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति केवलदर्शनावरणनिवारणार्थे पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ १३ ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ निद्रा दुगदल छेदवा, करवा निरमल जाति ;
॥ अक्षत निरमल पूजना, पूजो श्री जगतात ॥१॥

॥ ढाल, छठी ॥ थूलिभद्र कहे सुण बाला रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे निद्रा पांचनी फेटी रे, मोहराय तणी ए चेटी रें ॥ सर्वघाती पयडी मोटी रे, निद्रा दुग बेन्हो छोटी रें ॥१॥ ए बेन्हो जगत पितराणी रे, नाना मोटा मुंझा व्या प्राणी रे ॥ नानुदत्त पूरवधर पडिया रे, दीप ज्योतें जोया नवि जडिया रे ॥ ए आंकणी ॥ सुखें जागे आलस मेटी रे, ते निद्रा बालवधूटी रे ॥ उन्नां बेठां नयणां घूंटी रे, जब लागे वयणनी सोटी रे ॥ ए० ॥ २ ॥ तव नयणथी निंद वछूटी रे, प्रचला ल क्षण गति खोटी रे ॥ द्वादशांगी गणीरूप पेटी रे, मु निनयणें निद्रा पलेटी रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ पूरवधरपण श्रुतमेटी रे, रह्या निगोदमां दुःखवेंटी रे ॥ अपूर्व बं धेथी त्रूटी रे, सत्ताउदयें बारमे खूटी रे ॥ ए०॥ ४॥ मुनिराज मलीनें लूंटी रे, अप्रमत्तने दंडें कूटी रे ॥ छलजोतीने रोती वछूटी रे, ध्यानजहेर वगाडे त्रूटी

रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ ज्ञुनवीर समा नहीं मांटी रे, नि द्रानी वनकटी काटी रे ॥ थइ सादि अनंतनी ठेटी रे, शिवसुंदरी सहेजें नेटी रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ क्षितितले० ॥ १ ॥ सहजनाव० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ निद्राप्रचलाविछेदनाय अक्ष तं य० ॥ स्वा० ॥ इति निद्राप्रचलाविछेदनार्थं षष्टा क्षतपूजा समाप्ता ॥ १४ ॥

॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ आहारें कंध वधे घणी, निद्रा डुःख नंमार;
नैवेद्य धरी प्रन्नु आगलें, वरियें पद अणहार ॥१॥

॥ ढाल, सातमी ॥ राग गोडी ॥ तोरण आई क्युं? ॥
॥ चले रे ॥ ए देशी ॥

॥ थीणद्धी त्रिक सांनलो रे, निद्रा जे डुःखदाय ॥ स लूणा ॥ बंध बीजा गुणगणसें रे, ठठे उदय मुनिराय ॥ सलूणा ॥ जिम जिम जिनवर पूजीयें रे, तिम तिम धूजे कर्म ॥ स० ॥ १ ॥ संप करी सत्ता रहे रे, नव माने एकनागें ॥ स० ॥ निद्रा निद्रा तेहमां रे, कष्टें करी जे जागे ॥स०॥जिम०॥२॥ प्रचला प्रचला चाल

तां रे, नयणे निंद तुखार ॥ स०॥ जागे रणसंग्राममां रे, विजली ज्युं झबकार ॥ स० ॥ जिम० ॥ ३ ॥ दिन चिंता रात्रें करे रे, करणी जे नर नार ॥ स० ॥ बलदेवनुं वन ते समे रे, नरकगति अवतार ॥ स० ॥ जिम० ॥ ४ ॥ इम विशेषावश्यकें रे, वरणवियो अधिकार ॥ स० ॥ साधुमंमलिमां रहे रे, एक लघु अणगार ॥ स० ॥ जिम० ॥ ५ ॥ थीणद्धी निद्राव शें रे, हणियो हस्ती महंत ॥ स०॥ सूतो नरनिद्रा वशें रे, नूत लिए दोय दंत ॥ स० ॥ जिम०॥ ६॥ अंग अशुचि शिष्यनुं रे, संशयनरिया साध ॥ स० ॥ ज्ञानी वयणें काढीयो रे, हंसवनेंथी व्याध ॥ स० ॥ जिम० ॥ ७ ॥ षटमासें निद्रा लहे रे, शेठवधूदृष्टांत ॥ स० ॥ निद्राविर्योगें केवली रे, श्रीशुननवीर नदंत ॥ स० ॥ जिम०॥ ८ ॥ काव्यं ॥ अनशनं०॥ १ ॥ कुमतबाध० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ थीणद्धीत्रिकदहनाय नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥ इति थीणद्धीत्रिकदहनार्थं सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ १५ ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ विविधफलें प्रनु पूजतां, फल प्रगटे निरवाण ॥

दर्शनावरण विलय हुवे, विघटे बंधनां ताण ॥१॥

॥ ढाल, आठमी ॥ राग फाग, दीपचंदनी चाल ॥
होरी खेलावत कान्हइया, नेमीसर संगे ले जइया ॥
॥ ए देशी ॥

॥ होरी खेलुं मेरे साहिबिया, संगे रंगें सुण हो जइया ॥ होरी० ॥ अबिर गुलाल सुगंध विखरिया, कनककचोली केसरिया ॥ होरी० ॥ १ ॥ खारेक बीजोरां फल टेटी, पूजे फल थालें जरीयां ॥ फाग गान गुण तान बजैया, दर्शनावरण जए झरियां ॥ होरी० ॥ २ ॥ ए प्रभुदर्शन विण जव फरिया, कुदेव कुतीर्थे वरणविया ॥ कुगुरु कुशास्त्र प्रशंसा करिया, मिथ्यात्वधर्म हइये धरिया ॥ होरी० ॥ ३ ॥ बहोत डुःखें बहु शोकें जरिया, समकित दूषण आचरिया ॥ कुव्रत पाले नें चाले अनईया, परमेष्ठी गुरु उलविया ॥ होरी० ॥ ४ ॥ पडणिया गुरु अच्चासणिया, जगवइ जांखें गणधरिया ॥ दर्शनावरणीकरम घेरैया, तीस कोडा कोडि सागरिया ॥ होरी० ॥ ५ ॥ एसे बंधको धंध घटैया, सांइकी आणा शिर धरिया ॥ शृंगी लवण मधुरी लहेरियां, श्रीशुजवीर प्रभु मलिया ॥

होरी० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ शिवतरो० ॥ १ ॥ शम रसै० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ द्वितीयकर्मदहनाय फलं य० ॥ स्वा० ॥ कलश ॥ गायो गायो० ॥ इति द्वितीयकर्मदहनार्थमष्टमफलपूजा समाप्ता ॥ १६ ॥

॥ इतिद्वितीयदिवसेऽध्यापनीयदर्शनावरणीकर्मसूदनार्थं द्वितीयपूजाष्टकं संपूर्णम् ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ६२ ॥

॥ अथ ॥

॥ तृतीयदिवसेऽध्यापनीयवेदनीकर्मनिवारणार्थं तृतीयपूजाष्टकप्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथमजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजुं अघाती वेदनी, जाव लहे शिवशर्म ;
संसारें सवि जीवनें, तवलगें एहिज कर्म ॥ १ ॥

॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ उत्तराध्ययनें थिति लघु, अंतरमुहूर्त कहाय ;
पन्नवणामां बार ते, शाताबंध संपराय ॥ १ ॥
शातावेदनी बंधनुं, गणप्रभुपुर धूप ;
मिछत डुगंध दूरें टले, प्रगटे आतमस्वरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल, चोथी ॥ विमलाचल वेगें वधावो ॥ ए देशी॥

॥ चउमासी पारणुं आवे, करी विनति निज घर जावे ॥ प्रिया पुत्रनें वात जणावे, पटकूल जरी पथरावे रे ॥ महावीर प्रभु घर आवे ॥ जीरण शेठ भावना भावे रे ॥ महा०॥ १ ॥ उभि शेरियें जल छटकावे, जाय केतकी फूल बिछावे ॥ निजघर तोरण बंधावे, मेवा मिठाई थाल भरावे रे॥ महा०॥ २ ॥ अरिहानें दानज दीजें, देतां देखीजे रीजे ॥ षटमासी रोग हरीजें, सीझे दायक भव त्रीजे रे ॥ महा०॥ ३ ॥ ते जिनवर सनमुख जावुं, मुजमंदिरिये पधरावुं ॥ पारणुं भलि भक्ति करावुं, युगतें जिनपूजा रचावुं रे॥ ॥महा०॥ ४ ॥ पछी प्रभुनें वोलावा जईशुं, करजोडि सामा रहीशुं ॥ नमी वंदी पावन थईशुं, विरति अ

तिरंगें वहीशुं रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ दया दान क्षमा शील धरशुं, उपदेश सज्जननें करशुं ॥ सत्य ज्ञानदिशा अनुसरशुं, अनुकंपालक्षण वरशुं रे ॥ महा० ॥ ६ ॥ इम जीरण शेठ वदंता, परिणामनी धारें चढंता ॥ श्रावकनी सीमें ठरंता, देवदुंदुभिनिनाद सुणंता रे ॥ महा० ॥ ७ ॥ करि आयु पूरण शुभभावें, सुरलोक अच्युतें जावे ॥ शातावेदनी सुख पावे, शुभवीरवचन रस गावे रे ॥ महा० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाक्षय० ॥२॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्री परम० ॥ शातावंधापहाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति शातावंधापहार्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ २० ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शातावंधक प्राणिया, दीपे इणे संसार ;
तिणे दीपक पूजा करी, हरियें दुःख अंधार ॥ १ ॥

॥ ढाल, पांचमी ॥ चतुरो चेतो चेतवनाली ॥ए देशी॥

॥ सांभलजो मुनि संयमरागें, उपशमश्रेणें चडिया रे ॥ शातावेदनी बंध करीनें, श्रेणथकी ते पडिया रे ॥ सां० ॥ १ ॥ भांखे भगवई ठछतप बाकी, सात

जवायु उंठे रे ॥ सर्वारथसिद्धें मुनि पोह्ता, पूरण
सु नवि छोठे रे ॥ सां० ॥ २ ॥ शय्यामां पोढ्या नि
त रेह्वे, शिवमारग विशामो रे ॥ निरमल अवधि ना
णे जाणे, केवली मनपरिणामो रे ॥ सां० ॥ ३ ॥
ते शय्याऊपर चंदरुयें, झुंबखडे ठे मोती रे ॥ विच
लुं मोती चोशठ मणनुं, जगमग जालिमज्योति रे ॥
सां० ॥ ४ ॥ बत्रीश मणना चउ पाखलियें, शोलम
णां अड सुणियां रे ॥ आठ मणां शोलश मुगताफ
ल, तिम बत्रीश चउ मणियां रे ॥ सां०॥ ५ ॥ दो
मण केरां चोशठ मोती, इगसय अडवीश मणियां
रे ॥ दोसयने वली त्रेपन मोती, सर्व थइनें मलियां
रें ॥ सां० ॥ ६ ॥ ए सघलां विचलां मोतीशुं, आफ
ले वायुयोगें रे ॥ राग रागिणी नाटक प्रगटे, लवस
त्तमसुर भोगें रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ भूख तरस छीपे रस
लीना, सुरसागर तेत्रीश रे, शातालहेरमां खिण खि
ण समरे, वीरविजय जगदीश रे ॥ सां० ॥ ८ ॥
॥ काव्यं ॥ भवति दीप०॥ १ ॥ शुचिमनात्म० ॥२॥
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ शातोत्तरसुखप्राप
णाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति शातोत्तरसुखप्राप
णार्थं पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ २१ ॥

॥ अथ पष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्षतपूजायें करी, पूजो जगतदयाल ;
हवे अशातावेदनी, बंधनां गण निहाल ॥ १ ॥

॥ ढाल, छठी ॥ बटाउनी देशी ॥

प्रभु ! तुज शासन मीठडुं रे, समतासाधन सार ॥ योगनालीका रूअडी, तेतो ज्ञानीने घरबार रे, हुं रोल्यो इणे संसार रे, गुण अवगुण सरिखा धार रे, हीरो हाथ खोल्यो अंधार रे, न करी ज्ञानीशुं गो ठडी मेरे लाल ॥ १ ॥ शोक कर्यो संसारमां रे, पर ने पीडा दीध ॥ त्रास पडाव्या जीवनें, जीव बंधीखा णें लीध रे, मुनिराजनी निंदा कीध रे, मुनि संता प्या बहुविध रे, राजा देवसेनानिध रे, एकसरिय श तक परसिद्ध रे ॥ न० ॥ २ ॥ माणसना वध आच र्या रे, छेदन भेदन तास ॥ थापण राखी ओलवी, करी चाडी पडाव्या त्रास रे, दमियापर क्रोधनिवास रे, केइ जुफविया रहि पास रे, केइ जीवनी भांगी आस रे, थयो करपी कपीला दास रे ॥ न०॥ ३ ॥ इम अशातावेदनी रे, बांधे प्राणी अनंत ॥ सूत्रविपा

कें सांनलो, मृगापुत्र तणो दृष्टांत रे, सुणि कंपे समकितवंत रे, सुख अक्षय पामे एकांत रे, करो अक्षत पूजा संत रे, शुनवीर नजो नगवंत रे ॥ न०॥ ४ ॥
॥ काव्यं ॥ क्षितितलेऽक्षत० ॥१॥ सहजनाव० ॥२॥
मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अशातावंधस्थाननिवारणाय अक्षतं य०॥ स्वा० ॥ इति अशातावंधस्थाननिवारणार्थं षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ४२ ॥

॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ न करी नैवेद्य पूजना, न धरी गुरुनी शीख ;
लहे अशाता परनवें, घरघर मागे नीख ॥ १ ॥

॥ ढाल, सातमी ॥ इमन रागिणी ॥ महारी सहि रे ॥
॥ समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ तुज शासनरस अमृत मीठुं, संसारमां नवि दीठुं रे ॥ मनमोहन स्वामी ॥ दीठुं पण नवि लागुं मीठुं, नारकडुःख तिणें दीठुं रे ॥ म०॥ १॥ दशविध वेदन अतुल ते पावे, डुःखमां काल गमावे रे ॥ म० ॥ परमाधामी डुःख उपजावे, नवनावनायें नावे रे ॥ म० ॥ २ ॥ जिम विषनुक्ति तलार अवाजा, एक नगरें ए

क राजा रे ॥ म० ॥ शत्रुसैन्य समागम पेहेलुं, गाम गाम विष भेल्युं रे ॥ म०॥ ३ ॥ धान्य मिठाई मीठा जलमां, गोल खांम तरु फलमां रे ॥ म०॥ पडहो व जावी इम उपदेशो, जे मीठां जलपीशे रे ॥ म० ॥४॥ भक्ष भोज्य रस लीना खाशे, ते यममंदिर जाशे रे ॥ म० ॥ दूरदेशागत भोजन करशे, खारां पाणी पीशे रे ॥ म० ॥५॥ ते चिरंजीवी लहे सुखशाता, कदीय न होय अशाता रे ॥ म० ॥ नृपआणा करी ते रह्या सुखिया, बीजा मरण लहे दुःखिया रे ॥म०॥ ६ ॥ विषमिश्रित विषयारस जुत्ता, ब्रह्मदत्त नरग पहुत्ता रे ॥ म० ॥ मेघकुंमर धन्नो सुखभाजा, श्रीशुभवीर ते राजा रे ॥ म० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अनशनं०॥ १ ॥ कुमतबोध० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अशातोदयनिवारणाय नैवेद्यं य०॥ स्वा०॥ इति अशातोदयनिवारणार्थं सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ २३ ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ आत्मिक फल प्रगटाविवुं, टाली शात अशात ;
त्रिशलानंदन आगलें, फलपूजा परभात ॥ १ ॥

॥ ढाल, आठमी ॥ राग वसंत धुमार, नंदकुंमर ॥
॥ केडें पड्यो, किम जरियें ॥ ए देशी ॥

॥ वीरकुंमरनी वातडी केने कहियें ॥ केने कहियें रे केने कहियें ॥ नवि मंदिर बेशी रहियें ॥ सुकुमाल शरीर ॥ वी० ॥ ए आंकणी ॥ बालपणाथी लाडको नृप जाव्यो, मलि चोशठइंद्रें मल्हाव्यो ॥ इंद्राणी मली हुलराव्यो,गयो रमवा काज ॥ वी०॥ १ ॥ छोरु जबांछलां लोकनां किम रहियें, एनी मावडीनें शुं कहियें ॥ कहियें तो अदेखां थइयें, नाशि आव्यां बाल ॥ वी० ॥ २ ॥ आमलकी क्रीडावशें वींटाणो, मोटो जोरिंग रोष जराणो ॥ हाथे झाली वीरें ताण्यो, काढी नाख्यो दूर ॥ वी०॥३॥ रूप पिशाचनुं देवता करि चलियो, मुज पुत्रने लेई ऊछलियो ॥ वीरमुष्टिप्रहारें वलियो, सांजलियें एम ॥ वी० ॥ ४ ॥ त्रिशला माता मोजमां एम कहेती, सखिउने उलंना देती ॥ खिण खिण प्रजुनामज लेती, तेडावे बाल ॥ वी० ॥ ॥ ५ ॥ वाटजोवंतां वीरजी घर आव्या, खोले बेसारी हुलराव्या ॥ माता त्रिशलायें नवराव्या, आलिंगन देत ॥ वी० ॥ ६ ॥ यौवनवय प्रजु पामतां परणावे, पछी संयमशुं दिल लावे ॥ उपसर्गनी फोज ह

ठावे, लीधुं केवल नाण ॥ वी० ॥ ७ ॥ कर्मसूदन तप भांखियो जिनराजें,त्रण लोकनी ठकुराइ छाजे॥ फल पूजा कही शिवकाजें, भविने उपगार ॥ वी० ॥ ॥ ८ ॥ शाता अशाता वेदनी क्षय कीधुं, आपें अक्षयपद लीधुं॥ शुभवीरनुं कारज सीधुं,भांगे सादि अनंत ॥ वी०॥ ए ॥ काव्यं ॥ शिवतरोः० ॥ १ ॥ शमरसैक० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ वेदनीकर्मदहनाय फलं य० ॥ स्वा० ॥ कलश ॥ गायो गायो० ॥ इति वेदनीकर्मदहनार्थमष्टमफलपूजा समाप्ता ॥ २४ ॥

॥ इति तृतीयदिवसेऽध्यापनीयवेदनीकर्मनिवारणार्थं तृतीयपूजाष्टकं संपूर्णम् ॥३॥ सर्व गाथा (६६)

॥ अथ ॥

॥ चतुर्थदिवसेऽध्यापनीयमोहनीकर्मसूदनार्थं ॥

॥ चतुर्थपूजाष्टक प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथमजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशुभविजय सुगुरु नमी, मातपिता सम जेह;
बालपणे बतलावियो, आगमनिधि गुणगेह ॥१॥
गुरु दीवो गुरु देवता, गुरुथी लहियें नाण;
नाणथकी जग जाणियें, मोहनीनां अहिनाण ॥२॥
कष्ट ते करवुं सोहिलुं, अज्ञानी पशुखेल;
जाणपणुं जग दोहिलुं, ज्ञानी मोहनवेल ॥ ३ ॥
अज्ञानी अवधि करे, तप जप किरिया जेह;
विराधक षटकायनो, आवश्यकमां तेह ॥ ४ ॥
मूरखमुख आगम सुणी, पडिया मोहनी पास;
आगमलोपें बिहुं जणा, नरयनिगोदें वास ॥ ५ ॥
मूरखसंग अति मले, तो वसियें वनवास;
पंमितशुं वासो वसी, बेदो मोहनो पास ॥ ६ ॥

कुब्बा मिछ कषाय सवि, नय ध्रुवबंधि एह ;
शेष अध्रुवबंधि कही, मिछ ध्रुवोदय गेह ॥ ७ ॥
सगवीस अध्रुवोदय कही, हवे अध्रुव सममीस ;
सत्ताथी दूरें करो, ध्रुवसत्ता ठवीस ॥ ८ ॥
मोहनी दूर थइ थके, नासे कर्म संजार ;
कारणथी कारज सधे, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ए ॥

॥ ढाल, पहेली ॥ उधव ! माधवने केजो ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूजा युगतें करीयें, मोहनीबंधठाण हरियें, विनतडी प्रजुने करीयें रे ॥ चेतन चतुर थई चूक्यो ॥ निजगुण मोहवशें मूक्यो रे ॥ चे० ॥ जीव हत्या त्रस जल नेटी, देइ फांसो मोगर कूटी, मुख दाबी वाधर वेंटी रे ॥ चे० ॥१॥ क्लेश शम्या उदेरणीया, अरिहाअवगुण मुख जणिया, बहुप्रतिपालकने हणिया रे ॥ चे० ॥ २ ॥ धर्मी धर्मथी चूकविया, सूरिपाठक अवगुण लविया, श्रुतदायक गुरु हेलविया रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ निमित्त वशीकरणें जरियो, तपसी नाम वृथा धरियो, पंमित विनय नवी करियो रे ॥ चे० ॥ ४ ॥ गाम देश घर परजाळ्यां, पाप करी अन्य शिरढाळ्यां, कपट करी बहुजन वाळ्यां रे

॥ चे० ॥ ५ ॥ ब्रह्मचारी थइ गवराणो, परदाराशुं मूंझाणो, परधन देखी डुहवाणो रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ परद्रोही मिथ्याभाषी, विश्वासघाती कुडशाखी, मुनि ठंग्री सेव्या खाखी रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ मोहनीबंध करी फरियो, सित्तेरकोडा कोडि सागरियो,हवे तुम शासन अवतरियो रे॥चे० ॥८॥ श्रीशुभवीर मया कीजें, जिम सेवक कारज सीझे, वांक गुनो बकसी दीजें रे ॥ चे० ॥ ए ॥ काव्यं ॥ तीर्थोदकैः० ॥१॥ सुरनदी० ॥२॥ जनमनो०॥३॥मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ मोहनीबंधस्थाननिवारणाय जलं य० ॥ स्वा० ॥ इति मोहनीबंधस्थाननिवारणार्थे प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ २५ ॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥

॥ बीजी चंदनपूजना, पूजो भेळी कपूर;
अडवीस पयडीमांहिथी, चारित्रमोहनी दूर ॥१॥

॥ ढाल, बीजी ॥ राग बिहाग, बिलावर ॥
॥ घडि घडि सांभरो सांइ सलूणा ॥ ए देशी ॥

॥ चंदनपूजा चतुर रचावे, मोह महीपति मेहेल ख

णावे ॥ चं० ॥ चारित्रमोहनी मूल जलावे, जिनगु
ण ध्यान अनल सलगावे ॥ चं० ॥ १ ॥ चार अनं
तानुबंधि विषधर, सुरवसुदत्त मुनिरूप धरावे ॥चं०॥
त्रण्य नाग एक नागणी महोटी, पडिबोहण नाग
दत्त फसावे ॥ चं० ॥ २ ॥ जाव जीव चारनुं विष
रेहेवे, सज्ञनने इणीपरें समजावे ॥ चं० ॥ नरक
लहे समकित गुणघातें, अंतें समाधिपणुं नवि पावे
॥ चं० ॥ ३ ॥ चालीससागर कोडाकोडी, बंध उद
य सास्वादन जावे ॥ चं० ॥ आठमे गुणठाणे विषस
त्ता, पर्वतरेखा क्रोध कहावे ॥ चं० ॥ ४ ॥ आठ फ
णालो मान मणिधर,पत्थरथंनने कोण नमावे ॥चं०॥
घनवंशी मूल माया नागणी, लोन करमजिरंग कोण
हठावे ॥ चं०॥ ५ ॥ में वश कीधा मुनिकिरियाथी,
मंत्रमणि मोहरें वश नावे ॥ चं० ॥ जांगुली वादीने
पाणी नरावे, नागदत्त वसुदत्त जगावे ॥ चं० ॥६ ॥
सामायक कंदक उचरावे, ए समो मंत्र न को जग
आवे ॥ चं० ॥ श्री शुनवीरना शासनमांहे, नागदत्त
अक्षयपद पावे ॥ चं० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ जिनपते० ॥
॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥२॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥
परम०॥ अनंतानुबंधिदहनाय चंदनं य०॥ स्वा०॥ इति

अनंतानुबंधिदहनार्थं द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता॥ २६॥

॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा॥

॥ अपच्चखाणी चोकडी, टाली अनादिनी जूल;
परमातम पद पूजीयें, केतकी जायने फूल ॥ १ ॥

॥ ढाल, त्रीजी ॥ राणीयो रुए रंग मेल्हमें रे ॥ ए देशी ॥

॥ फूलपूजा जिनराजनी रे, विरतिने घरबार रे ॥ सनेहा ॥ ते गुणलोपक अपचरकाणी, जे क्रोधादिक चार रे ॥ सनेहा ॥ चार चतुर चित चोरटा रे, मोह महीपति घेर रे ॥ स० ॥ १ ॥ चालीश सागर कोडा कोडी, बंधथिति अनुसार रे ॥ स० ॥ उदय विपाक अबाधाकालें, वर्ष ते चार हजार रे ॥ स० ॥ चार० ॥ २ ॥ बंध उदय चोथे गुणे रे, नवमे सत्ता टाल रे ॥ स० ॥ वर्ष लगें ते पाप करी रे, न खमावे गुरु बाल रे ॥ स० ॥ चार० ॥ ३ ॥ तिरियंचनी गति एहथी रे, पुढवीरेखा क्रोध रे ॥ स० ॥ अस्थि नमाव्युं वरषें नमे रे, बाहुबली नरयोध रे ॥ स० ॥ चार० ॥ ४ ॥ मायामिंढा सिंग सरीशी, लोभडे कर्दमरंग रे ॥ स०॥ अनितिपुरें व्यवहारियो

रे, रणघंटाने संग रे ॥ स० ॥ चार० ॥ ५ ॥ चार धूतारा वाणिया रे, पासेंथी वाल्युं वित्त रे ॥ स० ॥ रत्नचूड परें शुनविरतिशुं, लागे चतुरनुं चित्त रे ॥ स० ॥ चार० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समयसार० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अप्रत्याख्यानीनिवारणाय पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति अप्रत्याख्यानीनिवारणार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ २७ ॥

॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रत्याख्यानी चोकडी, दहन करेवा धूप;
पूजक ऊर्ध्वगति लहे, वलि न पडे नवकूप ॥१॥

॥ ढाल, चोथी ॥ अनि हांरे वाल्होजी वायेढे वां ॥
॥ सखी रे ॥ ए देशी ॥

॥ अनि हांरे धूप धरो जिन आगलें रे, कृष्णागरु धूप दशांग, श्रेणी नली शुणगणनी रे ॥ अनि हांरे धूप धाणुं रयणे जडयुं रे, घडयुं जात्यमई कनकांग ॥ श्रेणी० ॥ अनि हांरे धू० ॥ १ ॥ अ० ॥ मुनिवररूप

न दाखवे रे, थितिबंध पूरवनी रीत ॥ श्रेणी० ॥ श्र० ॥ बंधोदय गुणठाणे पांचमें रे, हवे क्षायक श्रेणी वदीत्त ॥ श्रेणी० ॥ श्र० ॥ धू० ॥ २ ॥ श्र०॥ शोल सामंतने जोलवी रे, वचें घेरी हण्या लइ लाग ॥ श्रेणी० ॥ श्र० ॥ नाठा आठे सेनापति रे, नव माने बीजे लाग ॥ श्रेणी० ॥ श्र० ॥ धू० ॥ ३ ॥ श्र०॥ चउमासालगें ए रहे रे, मरणे नरनी गति जाण ॥ श्रेणी०॥ श्र० ॥ रजरेखासम क्रोधछे रे, कठथंज समाणो मान ॥ श्रेणी० ॥ श्र०॥ धू०॥ ४ ॥ श्र०॥ माया गोमूत्र सारखी रे, छे लोज ते खंजनरंग ॥ श्रेणी० ॥ श्र० ॥ मुनिवर मोहने नासवे रे, रही श्री शुजवीरने संग ॥ श्रेणी० ॥ श्र० ॥ धू० ॥ ५ ॥ ॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥१॥ निजगुणाश्रय० ॥२॥ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ प्रत्याख्यानीदहनाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति प्रत्याख्यानीदहनार्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ २७ ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ संजलनानी चोकडी, जब जाये तब गेह;

ज्ञानदीवो प्रगट हुवे, दीपकपूजा तेह ॥ १ ॥

॥ ढाल, पांचमी ॥ चंद्रप्रभु जिनचंद्रमा रे ॥ए देशी॥

॥ जगदीपकनी आगलें रे, दीपकनो उद्योत ॥ संज्वलनोज्वल ते थकें रे, जाव दीपकनी ज्योत ॥ हो जिनजी ॥ १ ॥ तेजें तरणिथी वडो रे, दोय शिखानो दीवडो रे, जलके केवल ज्योत ॥ ए आंकणी ॥ बंध थिति पूरवपरें रे, संजलनोतिग जाण ॥ बंध उदय सत्ता रहे रे, अनियट्टी गुणठाण ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ २ ॥ लोज दिशा अति आकरी रे, न वमे बंध पलाय ॥ उदयने सत्ता जाणियें रे, जे सूक्ष्म संपराय ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ ३ ॥ साहिब श्रेणें संचस्या रे, लोजनो खंम प्रचंम ॥ गुणठाणा सरिखो करी रे, खेरव्यो खंमो खंम ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ ४ ॥ पङ्कजगें गति देवनी रे, जलरेखासम क्रोध ॥ नेत्रलता सममानथी रे, चरम चरणनो रोध ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ ५ ॥ माया अवलेहीसमी रे, लोज हरिद्रारंग ॥ खायकनावें केवली रे, श्री शुजवीर प्रसंग ॥ हो जि० ॥ ते० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ जवति दीप० ॥ १ ॥ शुचिमना० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ संज्व

लनज्वलनाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति संज्वलनज्व लनार्थं पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ २ए ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ नवनो कषाय ते चरणमां, रागद्वेष परिणाम;
कारण जेह कषायनां, तिण नोकषाय ते नाम॥१

॥ ढाल, छठी ॥ सहसावन जई वसियें चालोने ॥
॥ सखि! सहसावन जइ वसियें ॥ ए देशी ॥

॥ वीरकने जइ वसियें, चालोने सखि ! वीरकने जइ वसियें ॥ अक्षतपूजा जिननी करतां, अक्षय मंदिर वसियें ॥ हास्यादिक षट खटपट कारी, तास वदन नवि पसियें ॥ चा० ॥ १ ॥ हास्यरति दश कोडाकोडी, सागर बंधन कसियें ॥ अरतिने भय शोक डुगंछा, वीश कोडाकोडी खसियें ॥ चा० ॥ २ ॥ भय रति हास्य डुगंछा अपूरव, शेष प्रमत्त बंध धसियें ॥ उदय अपूरव सत्ता नवमे, पंचम भागें नसियें ॥ चा० ॥ ३ ॥ काउस्सग्ग करतां मुनि देखे, सोहमपति मोहवसियें ॥ मोहें नडिया नाणथी पडिया, काउसग्गमां मुनि हसियें ॥ चा० ॥ ४ ॥ मो

हनी हास्यविनोदें वसतां, जिम तिम सुखथी न सियें ॥ कोइ दिन रति, कोइ दिन अरतिमां, शोकमसि लेइ घसियें ॥ चा० ॥ ५ ॥ संसारें सुख लेश न दीठुं, नयमोहनी चिहुं दिशियें ॥ चरण दुगंछा फल चंमालें, जन्म मेतारज रुषियें ॥ चा० ॥ ६ ॥ मोहमहीपति महा तोफाने, मुंफाणा अहनिशियें ॥ श्रीशुभवीर हजूरें रहेतां, आनंदलहेर विलसियें ॥ चा० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ क्षितितले० ॥१॥ सहजभाव० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ हास्यषट्कनिवारणाय अक्षतं य० ॥स्वा०॥ इति हास्यषट्कनिवारणार्थं षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ३० ॥

॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ आहारें वेदउदय वधे, जेहथी बहु जंजाल ;
निर्वेदी आगल ठवो, नरी नैवेद्यनो थाल ॥ १ ॥

॥ ढाल, सातमी ॥ राग मारु ॥ परजियानी चाल ॥
॥ अमे जाणी तुमारी वात रे ॥ ए देशी ॥

॥ मलीने विछडशो नहीं कोय रे, मनमान्या मोहन

बंध उदयथी अनुभवे, सुखदुःखकेरा भोग ॥ ३ ॥
चरमशरीरी विणजिके, जीव इणे संसार ;
समय समय बांधे सही, कर्म ते सात प्रकार ॥४॥
अंतर मुहूरतें आयुखुं, भवमां एकज वार ;
बांधी अबाधा अनुभवी, संचरिया गतिचार ॥५॥
इम पुग्गलपरावर्त्तना, करि संसार अनंत ;
निर्भयदायक नाथजी, मलियो तुं भगवंत ॥ ६ ॥
जलपूजा युगतें करी, धरी प्रभुचरणें शीस ;
चार पयडीमां सुरगति, दायकवाण कहीस ॥ ७ ॥

॥ ढाल, पहेली ॥ शीतलजिन सहजानंदी ॥ ए देशी ॥

॥ तीर्थोदक कलशा भरियें, अभिषेक प्रभुनें करियें, प्रातिहारज शोभा धरियें, लघु गुरु आशातन हरियें ॥ सलूणा संत ए रीत कीजें, देवआयु लहे भव बीजे ॥ स० ॥ १ ॥ परमातमपूजा रचावे, समता रसध्यान धरावे, शोक संताप अल्प करावे, साधु साथ वीने विहरावे ॥ स०॥ २ ॥ गुणी राग धरे व्रतपाले, समकित गुणने अजुवाले, जयणा अनुकंपा ढालें, करे गुरुवंदन त्रण्य कालें ॥ स०॥ ३ ॥ पंचाग्निताप सहंता, ब्रह्मचारी वनमां वसंता, कष्टें करी देह दमंता, बाल तपसी नाम धरंता ॥ स० ॥ ४ ॥ बंध करतो

सातमे जाणो, उदयें चोथो गुणगणो, उवें सुरआ
यु प्रमाणो, सत्ता उपशम गुणगणो ॥ स० ॥ ५ ॥
लोक लोकोत्तर गुण धारी, अंतें परिणाम समारी,
देवलोकमांहे अवतारी, शुन वीरवचन बलिहारी ॥
स० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ तीर्थोदकै० ॥ १ ॥ सुरनदी० ॥
॥ २ ॥ जनमनो०॥ ३ ॥ मंत्रः ॐ ह्रीं श्रीं परम०॥
देवायुर्बंधस्थाननिवारणाय जलं य०॥स्वा०॥ इति देवा
युर्बंधस्थाननिवारणार्थं प्रथमजलपूजा समाप्ता॥३३॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पर्याप्ति पूरी करी, समकित दृष्टिदेव ;
न्हवण विलेपन केसरें, पूजे जिन ततखेव ॥ १ ॥

॥ ढाल, बीजी ॥ कोशा वेश्या कहे रागीजी ॥
॥ मनोहर मनगमता ॥ ए देशी ॥

॥ डुनियांमां देव न दूजाजी, जिनवर जयकारी ॥ क
रुं अंग विलेपन पूजाजी ॥ जि० ॥ तिम समकिती
सुर पूजेजी ॥ जि० ॥ मिथ्यात्वीपण केई बूझेजी ॥
जि० ॥ १ ॥ तिहां पहेली नवणनिकायजी ॥

जि० ॥ एक सागर अधिकुं आयजी ॥ जि० ॥ उत्त रथी दक्षिण हीणाजी ॥ जि० ॥ नवमां दोयपलि य ते ऊंणाजी ॥ जि० ॥ २ ॥ व्यंतर एक पलियनुं आयजी ॥ जि० ॥ सुण साहिब त्रीजी निकायजी ॥ जि० ॥ सहस लक्ष वरस अधिकेरेंजी ॥ जि० ॥ रविचंद पल्योपम पूरेंजी ॥ जि० ॥ ३ ॥ गह रि ख तारक जोडायजी ॥ जि० ॥ पल्यअरधने चोथे पायजी ॥ जि० ॥ सौधरमें सागर दोयजी ॥ जि० ॥ बीजे अधिकेरां होयजी ॥ जि० ॥ ४ ॥ दोय कल्पें सगहिय जाणोजी ॥ जि० ॥ ए परमायु परिमाणो जी ॥ जि० ॥ दश चउदश सत्तर दीजेंजी ॥ जि० ॥ महाशुक्र लगें ते लीजेंजी ॥ जि० ॥ ५ ॥ हवे की जें अधिक एक एकेंजी ॥ जि० ॥ एकत्रीश नवमें ग्रैवेकेंजी ॥ जि० ॥ तेत्रीश ते पंच विमानेजी ॥ जि० ॥ समकित दृष्टि तिहां मानेजी ॥ जि० ॥ ॥ ६ ॥ शिवसाधन बाधक टाणेजी ॥ जि० ॥ सुर सुख ते दुःख करी जाणेजी ॥ जि० ॥ कल्याणक रं गें भीनाजी ॥ जि० ॥ शुभवीर वचनरस लीनाजी ॥ जि० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ जिनपते० ॥ १ ॥ सहज कर्म०॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ सुरा

सुनिगडनंजनाय चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति सुरासु निगडनंजनार्थं द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ ३४ ॥

॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजी कुसुमनी पूजना, पूजे नित्य जिनराय ;
पंमितसंग करे सदा, शास्त्र नणे धरे न्याय ॥१॥
न्यायें उपराजण करे, जयणायुत मुनिदान ;
नइकनावें नवि करे, आरंन निंदा गाण ॥ २ ॥
परउपगारादिक गुणें, वाधे मणुअनुं आय ;
तुज शासन रसिया थई, शिवमारग केई जाय ॥३॥

॥ ढाल, त्रीजी ॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥

॥ कुसुमनी पूजा कर्म नसावे, नागकेतुपरें नावे रे ॥ सुणजो जगस्वामी ॥ आयुनिकाचित ठे पण तद्भवी, कर्मनुं जोर हगावे रे ॥ सु० ॥ १ ॥ श्रेणीक सरिखा तुज गुणरागी, कर्मनी बेडी न नांगी रे ॥ सु० ॥ सु कमालिका उपनय इहां नावो, सारथवा घरलागी रे ॥ सु० ॥ २ ॥ च्याशी लाख पूरव घरवासें, जिन वर विरति न आवे रे ॥ सु०॥ बंध तुरिय सत्ता उदयें

थी, केवली अंतें खपावे रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ त्रण्य पल्योपम युगलिक आयु, कल्प तरुफललीना रे ॥ सु०॥ संखायु नर शिवअधिकारी, जाय ते नवव्रतहीना रे ॥ सु० ॥४॥ पूरव कोडि चरण फलहारे, मुनि अधिकेरें आय रे ॥ सु० ॥ श्रीशुभवीर अचलसुख पावे, चरम चोमासुं जाय रे ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ सुमनसां०॥ १ ॥ समयसार०॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ नरायुर्निवारणाय पुष्पाणि य०॥स्वा०॥ इति नरायुर्निवारणार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३५ ॥

॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्म समिध दाहन भणी, धूपघटा जिनगेह ;
कनक हुताशन योगथी, जात्यमयी निज देह ॥ १ ॥
जिनगुणरंग सुगंगमें, ढलकत झलकत हंस ;
आयुकलंक उतारतां, शोभे निर्मल वंश ॥ २ ॥
निर्मल वंश निहालीनें, कुलवंती घरनार ;
परघर रमतो देखीनें, समजावे भरतार ॥ ३ ॥

॥ ढाल, चोथी ॥ राग योग्य आशावरी ॥

॥ उड भमरा कंकणीपर बेठा, नयणीसें ललकारुंगी ॥

॥ उड्जारे नमरा तुज मारुंगी ॥ ए देशी ॥
॥ जिनगुण धूपघटा वासंती, कुलवंती परदारुंगी ॥ मत जा रे पिया तुज वारुंगी ॥ बालखेलमें नवि बत लायो, अब नयनें ललकारुंगी ॥ म० ॥ १ ॥ मात पिता सयणा लज्जवाते, लाजत दृश दोप दारुंगी ॥ म० ॥ ए तुज ख्याल बुरो डुनियामें, क्या में सुख देखारुंगी ॥ म० ॥ २ ॥ रयणीघोरमें चोर फीरत हे, पीयु हररोज पोकारुंगी ॥ म० ॥ इतने दिन उजल में रहेती, सहेती डुनीयां गारुंगी ॥ म० ॥ ३ ॥ तीनलोक साहिबकी आना. में तेरे शिर धारुंगी ॥ म० ॥ दीपकी ज्योतसें मंदिर रहेनां, परघर चार विसारुंगी ॥ म० ॥ ४ ॥ चारसज्जायें फूल बिछाउं, बत्ति यांसेंबि लगारुंगी ॥ म० ॥ रंगमहेलमें सहेल करंतां, गोदमें पुत्त रमारुंगी ॥ म० ॥ ५ ॥ गंगानीरसें अंग पखारुं, नाथ सगांसें तारुंगी ॥ म०॥ नवल वधूसें पुत्तसगाई, मंगलतूर बजारुंगी॥म०॥६॥ नाथसें होती पुत्तपनोती, सखियां गीत उचारुंगी ॥ म० ॥ श्रीशुभवीर चतुर चोरीमें, शिरपर लूण उतारुंगी ॥म०॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥१॥ निजगुणाक्षय० ॥२॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्री परम०॥नरायुर्विगमा

दंतरंगकुटुंबप्राप्तये धूपं य० ॥स्वा०॥ इति नरायुर्विंगमादंतरंगकुटुंबप्राप्त्यर्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥२६॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ मनमंदिर दीपक जिश्यो, दीपे जास विवेक;
तस तिरिआयु नहीं कदा, थानकबंध अनेक ॥१॥

॥ ढाल, पांचमी ॥ चोरी व्यसन निवारियें ॥ ए देशी ॥

॥ दीपकपूजा जिनतणी, नित करतां हो अविवेक ते जाय के॥ अविवेकें करी आतमा, बंध पाडे हो तिरयंचनुं आय के ॥ अज्ञानी पशु आतमा ॥ १ ॥ शीलरहित परवंचका,उपदेशों हो पोषे मिथ्यात के ॥ वणिज करे कुड तोलशुं, मुख नांखे रे कुकर्मनी वात के ॥ अ० ॥ २ ॥ वस्तु उत्तम हीण जातिशुं, ने लवीने हो वेचे नादानके ॥ माया कपट कुड शाखिउं, करे चोरी हो नित आरत ध्यान के॥ अ०॥ ३ ॥ थई घीरोली साधवी, शेठ सुंदर हो नंदन मणियार के ॥ अविवेकें परभव लहे, गोहजाति हो मंमक अवतार के ॥ अ० ॥ ४ ॥ कूडकलंक चढावतां, नील

कापोत हो लेश्या परिणाम के ॥ श्रीशुभवीरना निंद की, तिरिआयु रे बांधे इण गाम के ॥ अ० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ नवति दीप०॥ १ ॥ शुचिमना०॥२॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ तिर्यगायुर्बंधस्थाननिवारणाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति तिर्यगायुर्बंधस्थाननिवारणार्थं पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ३७ ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्षत पूजा पूजीयें, अक्षय पद दातार;
पशुआं रूप निवारीनें, निजरूपें करनार ॥ १ ॥

॥ ढाल, छठी ॥ मनमोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ तुम अम मेलें एकठा ॥ मनमोहन मेरे ॥ मलिया वार अनंत ॥ म० ॥ शीघ्रपणे केम साहिबा ॥म०॥ आप हुआ भगवंत ॥ म० ॥ १ ॥ आलसु मंद पराधीने ॥ म० ॥ अंतर पडिउं जाय ॥ म० ॥ एक लडामें आचर्यां ॥ म० ॥ तिरिय गतिनां आय ॥ म० ॥ २ ॥ एकेंडिमांहे रह्यो ॥ म० ॥ बावीश वरष हजार ॥ म० ॥ क्षुल्लकभव सत्तर करे ॥ म० ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बंधनी बेडी भंजवा, जिनगुणध्यान कुठार ;
फलपूजाथी ते हुवे, फलथी फल निरधार ॥ १ ॥

॥ ढाल, आठमी ॥ परिग्रह ममता परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ फलपूजा वीतरागनी, करतां दुःख पलाय ॥ सलूणे ॥ अरिहापूज अरोचका, जीव ते नरकें जाय ॥ सलूणे ॥ १ ॥ बंध समय चित चेतियें, श्यो उदये संताप ॥ स० ॥ शोक वधे संतापथी, शोक नरकनी छाप ॥ स० ॥ बं० ॥ २ ॥ इग तिग सग दश सत्त रू, बावीशने तेत्रीश ॥ स० ॥ सागर साते नरकमां, नारकी पाडे चीश ॥ स० ॥ बं० ॥३ ॥ दशविध दाहक वेदना, वैतरणीना दुःख ॥ स० ॥ परमाधामी वश पड्या, घडीय न पामे सुख ॥ स० ॥ बं० ॥४॥ जाति समरणें जाणता, अनुभवीया अवदात ॥ स० ॥ तोपण रावण झूझतो, लक्ष्मणशुं करी घात ॥ स० ॥ बं० ॥ ५ ॥ परमाधामी देखीने, नाखे अगनि मझार ॥ स० ॥ चोथी नरकें बुझव्या, सीतेंद्रे

तिणिवार ॥ स० ॥ बं० ॥ ६ ॥ रायवसु नरकें प
ड्या, सुभूम सरिखा वीर ॥ स० ॥ सांभली दइडां
कम कमे, धूज वछूटे शरीर ॥ स० ॥ बं० ॥ ७ ॥
आदि तुरिय बंध उदयथी,सत्ता सातमें टाल ॥ स०
॥ कर्म सूदन तपफल दियो, श्रीशुभवीर दयाल ॥
स० ॥ बं०॥८॥ काव्यं ॥ शिवतरोः० ॥१॥ शमरसै०
॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ नरकायुर्निगड
विफलाय फलं य० ॥ स्वा० ॥ कलश ॥ गायो गा
यो० ॥ इति नरकायुर्निगडविफलार्थमष्टमफलपूजा
समाप्ता ॥ ४० ॥

इति पंचमदिवसेऽध्यापनीय आयुः
कर्मसूदनार्थं पंचमपूजाष्टकं संपू
र्णम् ॥५॥ सर्व गाथा ॥६४॥

॥ अथ ॥

॥ षष्ठदिवसेऽध्यापनीयनामकर्मसूदनार्थं ॥

॥ षष्ठपूजाष्टक प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथमजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमु श्रीशंखेश्वरो, साहिब सुगुण पवित्त ;
मुज गुरुउपगारें करी, खिणखिण आवे चित्त ॥१॥
नाम करम हवे दाखवुं, चित्रक सरिखुं जेह ;
नट जिम बहु रूपी करे, तिम शुभ अशुभें तेह॥२॥
ऊंच नीच देहाकृति, खंपणदेहें होय ;
रूक्ष नील जाडो घणुं, अशुभ नाम ते जोय ॥३॥
रूपें हरि बल सारिखा, ते शुभनाम वखाण ;
मध्य तनु पीत उज्जलो, सुंदर रातो वान ॥ ४ ॥
जैनधर्मे रातो रहे, गाय गुणी गुणग्राम ;
तिणे शुभनाम ते संपजे, इतर अशुभ ते नाम॥५॥
नामकर्म दूरें करी, पाम्या भवनो पार ;
सिद्ध अरूपी पद भणी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल, पहेली ॥ सुतारीना बेटा तुनें वीनवुं रे लो ॥
॥ मारे गरवे मांकवडी लाव जो, रमतां ॥
॥ अंगुठी वीसरी रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ पिंमपयडी चौद पखालवा रे लो, अभिषेक करुं अरिहंत जो ॥ जस ज्ञानदिशा रलियामणी रे लो, करे ज्ञानी करमनो अंत जो ॥ ज्ञानीनी गोठडी मीठ डी रे लो ॥ १ ॥ नरदेव निरय तिरिया गई रे लो, इग विगल पणिंदि जाति जो ॥ तरु काडो कीडी मां खी थयो रे लो, शुं वखाणुं आपणी कुनियात जो ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ तनु उरल विउव्वाहारगा रे लो, ते ज कर्म अनादिनां साथ जो ॥ त्रण आदि उ पांगने टालवा रे लो, तुज सरिखो न मलियो नाथ जो ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ इंणे नामें बधन संघातनां रे लो, पण बंधक ग्राहक पांच जो ॥ षट संघयण आदि केवली रे लो, जो वज्र रुषन्न नाराच जो ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ संसारें रुषन्न नाराचठे रे लो, नाराच अरध नाराच जो ॥ किलि ठेवतुं पंचम कालमां रे लो, ग यां रत्न रह्यां तनु काच जो ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ समच उरंस निगोह सादियें रे लो, कुबडुं वामण संठाण जो ॥ हुंमवालानुं एके न पांशरुं रे लो, हवे वर्णा

दि वीश प्रमाण जो ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ गंध वर्ण फर
स रस पुग्गला रे लो, वीश शोल बोलें ग्रहवाय जो ॥
जीव योग्य ग्रहण अड वर्गणा रे लो, राग दोषने रस
घोलाय जो ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ अनुपूर्वि कही गति चा
रनी रे लो, जाय ताण्यो रिषभ घरनाथ जो ॥ शुभ
अशुभ चाल ठंमी करी रे लो, शुभवीरनें वलगो हाथ
जो ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ काव्यं॥ तीर्थोदकै० ॥१॥ सुरनदी०
॥२॥ जनमनो० ॥ ३ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०
॥ पिंमप्रकृतिविछेदनाय जलं य० ॥ स्वा० ॥ इति पिं
मप्रकृतिविछेदनार्थं प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ ४१ ॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दश तिग जिनघर साचवी, पूजीशुं अरिहंत;
दश यतिधर्म आराधिनें, करुं थावर दश अंत ॥१॥

॥ ढाल, बीजी ॥ व्रजना वाल्हाने विनति रे ॥ ए देशी ॥
॥ साते शुद्धि समाचरी रे, पूजीशुं अमे रंगें लाल ॥
केसर कंचनशुं घसी रे, स्वामी विलेपन अंगें ला
ल ॥ लाल सुरंगी रे साहिबो रे ॥ १ ॥ भूजल जल
ण अनिल तरु रे, थावर पंच प्रकारो लाल ॥ सूक्ष्म

नाम करम थकी रे, नरिया लोक मोजारो लाल ॥ ला० ॥ २ ॥ निज पर्याप्ति पूरण विना रे, मरता ते अपजत्ता लाल ॥ साधारण तरुजातिमा रे, जीव शरीरें अनंता लाल ॥ ला० ॥ ३ ॥ अंग उपांग जे थिर नहीं रे, नाम अथिर ते हीणो लाल ॥ नाभी हेठे अशुभाकृति रे, दुर्भगलोक अनीठो लाल ॥ला० ॥ ४ ॥ न गमें जे स्वर लोकमां रे, दुःस्वर खेदनुं धामो लाल ॥ साचुं लोकने नवि गमे रे, वचन अनादेय नामो लाल ॥ ला० ॥ ५ ॥ अपजस नामथी नंदता रे, खेद विना लोक अनेको लाल ॥ श्री शुभवीरने नवी होवे रे, ए दश मांहेनी एको लाल ॥ला० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ जिनपते० ॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ स्थावरदशकनिवारणाय चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति स्थावरदशकनिवारणार्थं द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ ४२ ॥

॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए दश पयडी पापनी, पापें बंध करंत;
ऋण दश पामे जीवडो, जिम अंशें पुण्यवंत ॥१॥

॥ ढाल, त्रीजी ॥ रहो रहो रे जादव दो घडीयां ॥
॥ ए देशी ॥

॥ रहो रहो रे रसनर दो घडीयां, दो घडीयां दिलसें अडीयां ॥ रहो० ॥ ए आंकणी ॥ कुसुमनी पूजा करी फल मागुं, परमातम पाउं पडियां ॥ रहो० ॥ पुण्य उदय त्रस नाम धरायो, अब तुम वार नहीं घडीयां ॥ रहो० ॥ १ ॥ विगलेंद्रि पंचेंद्रि कहायो, प्रज्ञु उलखाण हवे पडीयां ॥ रहो० ॥ बादर नाम जे नजरें देखे, उवेखें किम नजरें चडीयां ॥ रहो०॥ २ ॥ थई पर्याप्तो लब्धि करणे, चरणें आयो न विछडीयां ॥ रहो० ॥ एक तनु एक जीव कहावे, प्रत्येकमां पण अमें वडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ दंतादिक तनु थिरथिर नामें, तहवी मन अमे थिर करियां ॥ रहो० ॥ नाभी उपर तनु शुज सहु देखे, तिणे तुम रिदयकमल धरियां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सरवने वाल्हो सुनगथी लागुं, जब अम घर तुम पावडीयां ॥ रहो० ॥ सुस्वर सुणतां लागे मीठो, तुज गुण अंबा मंजरियां ॥ रहो० ॥ ५ ॥ आदेय नाम वचन जग माने, श्रीशुजवीर मुखें चडीयां ॥ रहो० ॥ जस गुण गावे लोक बनावे, तेजस नाम ते तुम वडीयां

॥ श्लो० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समय सार० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ त्रसदशकनिवारणाय पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति त्रसदशकनिवारणार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ४३ ॥

॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ धूपे जिनवर पूजीयें, प्रत्येक दाहन हार;
पयडि न जाये मूलथी, जब लगें ए संसार ॥ १ ॥

॥ ढाल,चोथी ॥ वीर जिणंद जगत उपगारी ॥ए देशी॥

॥ आज गई मन केरी शंका, जब तुज दरशन दीठजी ॥ दूर गई लोकसन्ना ठारी, आगम अमिय ते मीठजी ॥ आज० ॥ १ ॥ गुरु लघु अंगें एक न होवे, अगुरु लघु ते जाणजी ॥ सास उसास लिये पज्जत्तो, सासोसास प्रमाणजी ॥ आज० ॥ २ ॥ लंबगात्र सुखमां पडजीनी, पयडी उदय उपघातजी ॥ बलियो पण नवि मुखपर आवे, नाम उदय पराघातजी ॥ आज० ॥ ३ ॥ ताप करे रविबिंब जे जीवा, आताप नाम कहायजी ॥ अंग उपांग सुतार पुतलियां, निरमाण घाट घडायजी ॥ आज० ॥ ४ ॥ वैक्रिय

सुर रवजुठ शशिबिंबें, ताप विना परकाशजी ॥ उद्यो तनाम करम में जाएयुं, आगम नयन उजाशजी ॥ आज० ॥ ५ ॥ केवल उपजे त्रिभुवन पूजे, वर अ तिशय गंनीरजी ॥ जिननाम उदयें समवसरणमां, बेठा श्री शुनवीरजी ॥ आज० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ अग रमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाश्रय० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ प्रत्येकाष्टप्रकृतिनिवारणाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति प्रत्येकाष्टप्रकृतिनिवारणार्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ४४ ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीश कोडा कोडी सागरु, मूलगुरु थिति बंधाय ;
उत्तरपयडि निहालवा, दीपकपूजा रचाय ॥ १ ॥

॥ ढाल,पांचमी ॥ साहिबा मोतीडो हमारो ॥ ए देशी ॥

॥ दीपकपूजा ज्योति जगावुं, उत्तर पयडी तिमिर हरावुं ॥ साहिब तें थितिबंध खपाव्यो, सेवकनो हवे लाग ते फाव्यो ॥ साहिबा संसार अटारो, मोहना मुज तारो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सुहुम विगल तिग बंध अढार, मणुअ डुगें पन्नर अवधार ॥ संघयणा

गिई जुगल करीस, दश उपर डुग वुद्धी वीश ॥ सा० ॥ २ ॥ सुरनी मधुर शित शुभ चउ फासा, थिरछ सुगइ सुरडुग दशखासा ॥ पीताम्लें वली रक्त कशायें, नील कटुक वली कृस्न तीखायें ॥ सा० ॥ ॥ ३ ॥ साढा बार पन्नर युग एकें, साढा सत्तर वीश छवियें विवेकें ॥ वैक्री निरय तिरि उरल डुगंका, तेअपण अथिर छ तस सास चकका ॥ सा०॥ ४ ॥ थावर कुख गई जाति पणिंदी, पाप फरस डुरगंध एगिंदी ॥ छत्तीस पयडीने वीशशुं जोडी, सघले सागर कोडाकोडी ॥ सा० ॥ ५ ॥ आहारकडुग जिननाम करंतो, सागर एक कोडाकोड अंतो ॥ जो जिन नाम निकाचित कीजें, तो शुनवीर हुआ नव त्रीजे ॥ सा० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ नवति दीप०॥ १ ॥ शुचिमना० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ स्थिति बंधनिवारणाय दीपं य० ॥स्वा०॥ इति स्थितिबंधनिवारणार्थं पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ४५ ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वन्नचउ तेअ कम्मण, अगुरु लघु निरमाण ;
उपघात नव धुवबंधि छे, अडवन्न अधुवा जाण॥ १ ॥

॥ढाल, ठ्ठी॥ त्रीजे नव वर थानक तप करी॥ए देशी॥

॥ अक्षतपूजा जिननी करतां, नाम करम क्षय जावे ॥ नामनी सरव अघाती पयडी, वरते निज निज ना वें रे ॥ प्राणी अरूपी गुण निपजावो, पूज्यनी पूजा रचावो रे ॥ प्राणी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ थावरच उ आताप ठेवठ्ठुं, हुंम निरयडुग जाणु ॥ इग दू ति चउजाति जीव बांधे, पामी प्रथम गुणगणु रे ॥ ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ मझागिई संघयण तिरि डुग, दो ह्ग तिग उद्योत ॥ अशुन्न विहायोगति सास्वादन, बं ध कहे नगवंत रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ मणुअ उरल डुग धुरसंघयण, चोथे बंध कहावे ॥ अजस अथिर डुग ठ्ठे बंधे, दशमे जस बंधावे रे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ अगुरुलघु चउ जिन निरमाण, सुरडुग सुह्गई कहि यें ॥ तस नव उरल विणु तणुवंगा, वरणादिक चउ लहियें रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ समचउरंस पणिंदी जा ति, बांधे अड गुण गणे॥ बंधहेतु शुन्नवीर खपावें, उज्ज्वलध्याननें टाणे रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ क्षितितले० ॥ १ ॥ सहजनाव० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ नामकर्मबंधनिवारणाय अ

कृतं य० ॥ स्वा० ॥ इति नामकर्मबंधनिवारणार्थं प
ष्ठाक्तपूजा समाप्ता ॥ ४६ ॥

॥ अथ सप्तमनैवद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चउवन्ना तेअ कम्मण, निमिण अथिर थिर दोय;
अगुरु लघु ध्रुव उदइनी, शेष अध्रुव ते जोय ॥१॥

॥ ढाल, सातमी ॥ देखो गतिदैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ नैवेद्यपूजा नाविये रे, पुजन आहार अर्हंत ॥ ना
गअसंखें आहारता रे, निर्जरे नाग अनंत ॥ जगतगु
रु आपजो रे, आपजो पद अणहार ॥ जग० ॥ १ ॥
ए आंकणी ॥ एह रीत दूरें हुवे रे, नामउदय जब
जाय ॥ सुहुम तिगायव धुरगुणे रे, उदय कहे जि
नराय ॥ जग० ॥ २ ॥ बीजें विगल ईग थावरु रे,
चोथे अणाईज्ज दोय ॥ पूर्वि डुहग वैक्रीडुगें रे, देव
निरयगति जोय ॥ जग० ॥ ३ ॥ तिरिगइ उद्योत पां
चमे रे, छठे आहारक दोय ॥ चरम संहन तिग सा
तमे रे, रिषभडुग उपशम होय ॥ जग० ॥ ४ ॥ उ
रला थिर खगई डुगारें, पत्तेय तिग छसंगण ॥ तेअ
कम्म धुर संघयणने रे, अगुरु लघु चउ जाए ॥जग०

॥ अथ ॥

॥ सप्तमदिवसेऽध्यापनीयगोत्रकर्मसूद ॥

॥ नार्थं सप्तमपूजाष्टक प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथमजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ गोत्रकरम हवे सातमुं, व्याप्युं इणे संसार ;
गोत्रकरम छेद्या विना, नवि पामे भवपार ॥ १ ॥
चक्रदंम संयोगथी, घडतो घट कुंभार ;
घी भरियो घट एकमें, बीजे मदिरा धार ॥ २ ॥
ऊंच नीच गोत्रें करी, भरियो आ संसार ;
कर्मदहन करवा भणी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल, पहेली ॥ राग अलैयो, बिलावर ॥ में कीनो ॥ नहीं प्रभुविना औरशुं राग ॥ ए देशी ॥

॥ केशरवासित कनककलशशुं, जलपूजा अभिषेक ॥ समकितरंगें सदगुरु संगें, धरतो विनय विवेक ॥ में कीनो सही, यारीत गोतको बंध ॥ या रीत गोतको बंध ॥ में की० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बहुश्रुत भक्ति करतां सघला, पूज्या युगपरधान ॥ गीतारथ एकाकी

रहेतां, पामे जग बहुमान ॥ में की० ॥ २ ॥ अज्ञानी टोले पण नोले, बोले पत्तर नाव ॥ आलोयण देतो नद्रकने, पामे विराधकजाव ॥ मे की० ॥ ३ ॥ बोधगुरुने बाणें हणतो, पग अणफरसी राय ॥ अज्ञानी मुनि उग्रविहारी, बाजीगरने न्याय ॥ में की० ॥ ४ ॥ मंगुआ श्रावकने कहे स्वामी, होये जिनधर्म आशात ॥ अणजाण्यो श्रुतअर्थ वदंतां, साची गुरुगम वात ॥ में की० ॥ ५ ॥ ज्ञानी गुरुनी सेवा करतां, आराधे जिनधर्म ॥ अणुव्रत धरतो तप अनुसरतो, निर्मदगुण ग्रहे पर्म ॥ में की० ॥ ६ ॥ नणे नणावे वलि जिनआगम, आशातन वरजंत ॥ श्रीशुनवीर जिनेश्वरनगति, उत्तमगोत्र बांधंत ॥ में की० ॥७॥ काव्यं ॥ तीर्थोदकै० ॥१॥ सुरनदी० ॥२॥ जनमनो० ॥ ३ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ गोत्रबंधनिवारणाय जलं य० ॥ स्वा० ॥ इति गोत्रबंधनिवारणार्थं प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ ४ए ॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानादिक गुण नवि हणे, बंध उदयमें कोय ;

तिणे अघाती ते कही, गोत्रनी पयडी दोय ॥ १ ॥

॥ ढाल, बीजी ॥ प्रतिमा लोपे पापीया, योगवहन ॥
॥ उपधान जिनजी ॥ ए देशी ॥

॥ जिनतनु चंदन पूजतां, उत्तम कुल अवतार ॥ जिनजी ॥ गोत्रवडे प्राणी वडो, मान लहे संसार ॥ जिनजी ॥ तुं सुखियो संसारमां ॥ १ ॥ उत्तमकुलना उपना, सूत्रें कह्या अणगार ॥ जि० ॥ वाचक सूरिपदवी लहे, उंचगोत्र अवतार ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ॥ २ ॥ उग्रजोग वली राजवी, हरिवंशें जिनदेव ॥ जि० ॥ वासवकल्पें आवता, चक्री हरि बलदेव ॥ ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ३ ॥ नीच गोत्र थावरसमा, मणि हीरो झलकंत ॥ जि० ॥ गंगा क्षीरसमुद्रना, यमुना जल वदंत ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ४ ॥ कल्पतरु सहकारनां, केतकीपत्रने फूल ॥ जि० ॥ मंगल कारण शिर धरे, मंदपवन अनुकूल ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ५ ॥ इंम संसारें प्राणिया, उत्तमगोत्र विशेष ॥ जि० ॥ मान लहे मघवा वली, बाहुबली नरतेस ॥ जि० ॥ तुं ॥ ६ ॥ धर्मरयणनी योग्यता, उंच गोत्र कहाय ॥ जि० ॥ श्रीशुभवीर जिनेश्वरु, सिद्धारथ कुल जाय

॥ जि० ॥ तुं० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ जिनपते० ॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ उंचगोत्रातीताय चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति उंच गोत्रातीतार्थं द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ ५० ॥

॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥

॥ जिनवर फूलें पूजतां, उंच गोत्र बंधाय;
उत्तम कुलमां अवतरी, कर्मरहित ते थाय ॥१॥

॥ ढाल, त्रीजी ॥ सुण गोवालणी गोरसडां० ॥
॥ ए देशी ॥

॥ सुण दयानिधि, उत्तम कुल अवतरतां पार न आव्यो ॥ सद्गुरु मले, तुज आगम अजुवालें मुज समजाव्यो ॥ ए आंकणी ॥ समकित संजुत व्रत आचरतां, जिनपूजा फूल पगर जरतां, श्रावक मुनि दशमुं गुण धरतां, उंचगोत्रतणो बंधज करतां ॥ सु० ॥ १ ॥ तुमें सत्ता उदयें अनुजवियो, शैलेशी करण करी खवियो,तेरस चरखवी मुज हेलवियो, एक खांमी जे नवि चेलवियो ॥ सु० ॥ २ ॥ एके समयें एक बंधा

ये, तिणे ए अध्रुव बंधी थाये, सत्तोदय अध्रुव कहे वाये, सुखिया थइयें जब ए जाये ॥ सु० ॥ ३ ॥ जघुबंधें अड मुहूरत करियो, उंच गोत्रें गुरुठिइ आचरियो, दश कोडाकोडि सागरियो, दशसें वरसें नोगवि फरियो ॥ सु० ॥ ४ ॥ हवे में तुज आणा शिर धरियो, थई अंत कोडाकोडि सागरियो, मोटो दरियो पण में तरियो, शुन्नवीर प्रनुसेवन फलियो ॥ सु० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समयसार० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ उंचगोत्रस्थितिविछेदनाय पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति उंचगोत्रस्थितिविछेदनार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥५१॥

॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पयडी दोय अघातिनी, गोत्र करमनी एह;
नीचगोत्र कारण कहुं, जे अनुनवियां तेह ॥ १ ॥

॥ ढाल, चोथी ॥ गायो गौतम गोत्र मुणिंद रस ॥
॥ वैराग्य घणो आयो ॥ ए देशी ॥

॥ जिनवरअंगें पूजाधूप, धूपगति उंचे नावी ॥ पामी पंचेंइिनां रूप, नीच गति मुज किम आवी ॥ १ ॥

कहियें कारण सुणजो देव, तुज आगमरस नवि चा
ख्यो ॥ न करी बहुश्रुत केरी सेव, अरुचिपणुं अंतर
लाव्यो ॥ २ ॥ जणे जणावे मुनिवर जेह, निंदा ते
ह तणी जांखी ॥ परगुण ढांकी अवगुण लेह, कूडी
वात तणो साखी ॥ ३ ॥ विण दीठी अण सांजली
वात, लोकवच्चे चलवे पापी ॥ चाडी करतां पाडी
जाति, वाडी गुण तणी कापी ॥ ४ ॥ गुण अवगुण
में सरिखा कीध, अरिहा जक्ति नवि कीधी ॥ उत्तम
कुल जाति परसिद्ध, वाह्यो मद गारव गिद्धि ॥ ५ ॥
नीचपणा सेवंतां नाथ, बंधे नीच गोत्र करियो ॥ श्री
शुजवीरनो काल्यो हाथ, सहेजे जवसायर तरियो ॥६॥
काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाश्रय० ॥२॥
॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ नीचैर्गोत्रबंधस्था
नोच्छेदनाय धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति नीचैर्गोत्रबंध
स्थानोच्छेदनार्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ५२ ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कागप्रसंगें हंस नृप, बाण प्राण परिहार ;
गंगाजल जलधि मले, नीच गण सुविचार ॥ १ ॥

क्षितितले० ॥ १ ॥ सहजनाव० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ नीचैर्गोत्रसत्तास्थितिबंधनिवारणाय अक्षतं य० ॥ स्वा० ॥ इति नीचैर्गोत्रसत्तास्थितिबंधनिवारणार्थं षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ५४ ॥

॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा॥

॥ नैवेद्यपूजा सातमी, सातगति अपमान ;
करवा वरवा शिवगति, विविध जाति पकवान ॥ १ ॥

॥ ढाल, सातमी ॥ राग सारंग, हम मगन ॥

॥ नए प्रभुज्ञानमां ॥ ए देशी ॥

॥ मीठाइ मेवा जिनपद धरतां, अणहारी पद लीजीयें ॥ जिनराजनी पूजा कीजीयें ॥ विग्रहगतिमां वार अनंति, पामे पण नवि रीजीयें ॥ जि० ॥ १ ॥ उंच नीच गोत्रें ते होवे, कारण दूर करीजीयें ॥ जि० ॥ अरिहा आगें रागें मागो, सेवकने शिव दीजीयें ॥ जि० ॥ २ ॥ अगुरु लघुपद गोत्रविनाशी, पाम्या बंधन बीजीयें ॥ जि० ॥ योगी वियोगी रहत अयोगी, चरमतिभाग घटीजीयें ॥जि० ॥ ३॥ आतमप्रदेश मई अवगाहन, शिवखेत्रें ते रहीजीयें ॥ जि० ॥ बत्रीश

अंगुल लघु अवगाहन, खेत्रसमी गुरु लीजीयें ॥ जि० ॥ ४ ॥ मस्तकसम सघली लोकांतें, गुरुगमभा व पतीजीयें ॥ जि० ॥ अगुरु लघु अवगाहना एकें, सिद्ध अनंत नमीजीयें ॥ जि० ॥ ५ ॥ फरसित देश प्रदेश असंखह ॥ गुण अनंत ठवीजीयें ॥ जि० ॥ श्रीशुनवीर जिनेश्वर आगम,अमृतनो रस पीजीयें ॥ जि० ॥६॥ काव्यं ॥ अनशनं०॥१॥ कुमतबोध०॥२॥ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ अगुरुलघुगुणप्राप णाय नैवेद्यं य० ॥स्वा०॥ इति अगुरुलघुगुणप्रापणा र्थं सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ५५ ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ गोत्रकरम नाशें करी, सिद्ध हुआ महाराज ;
फलपूजा तेहनी करी, मागो अविचल राज ॥ १ ॥

॥ ढाल, आठमी ॥ केरवानी देशी ॥

॥ मेंन्नी सेवक तोरा पायका, डुनियांके सांइ ॥ सेव क हम केई कालका, डुनियांके सांइ ॥ मेंन्नी से० ॥ ए आंकणी ॥ सुणियें देवाधिदेवा, फलपूजाकी से

वा, दीजीयें शिवफल राजियें ॥ ड० ॥ में० ॥ परि
शाटन थई, अकुसमाण गई, जीत्यो जगत केरी बा
जीयें ॥ ड० ॥ में० ॥ १ ॥ गोत्रकरम हरी, ज्योतसें
ज्योत मली, आप बीराजो रंग महेलमें ॥ ड०॥में०॥
सुख अनंत लहे,सेवक दूर रहे, लाजियें अमो सारा
सेहेरमें ॥ ड० ॥ में० ॥ २ ॥ संसारसुख लीयो, वग्ग
अनंत कीयो,तोली न एक परदेशमें ॥ ड० ॥ में० ॥
सिद्धको सुख लीनो, ताको एकांश कीनो,मावे न लो
काकाशमें ॥ ड० ॥ में० ॥ ३ ॥ ताको जो अंश देवे,
तामें क्या हानी होवे,साहिब गरीब नीवाजीयें ॥ड०॥
में० ॥ महेर नजर जोवे, सेवककाम होवे, लोकलो
कोत्तर गाजीयें ॥ ड० ॥ में० ॥ ४ ॥ कर्म कठिन
जड्यो, सांधुंके मुख चड्यो,बात करत हम लाजीयें
॥ ड० ॥ में० ॥ आपहितेजें गायो, कर्मफल ग
यो, एतनो अंतर भांजीयें ॥ ड० ॥ में० ॥ ५ ॥
श्रेणीकआदि नवा, उंची सांधुंकी दवा, जिनपद ले
त बिराजीयें ॥ ड० ॥ में० ॥ साची भगति कहि,
कारणयोग सही, कारज कोडी दीवाजीयें ॥ ड० ॥
में० ॥ ६ ॥ कर्मसूदण तपें, नाम प्रभुको जपे, जा
गीयें ज्ञान अवाजीयें ॥ ड० ॥ में० ॥ कोइ न नाम

लेवे, स्वामी आशिश देवे, श्री शुभवीरवले गाजीयें ॥ कु० ॥ मे० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ शिवतरोः०॥१॥ शमरसैक०॥२॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ गोत्रातीताय फलं य० ॥स्वा०॥ कलश ॥ गायो गायो० ॥ इति गोत्रातीतार्थमष्टमफलपूजा समाप्ता ॥ ५६ ॥

॥ इति सप्तमदिवसेऽध्यापनीयगोत्रकर्मसूदनार्थं सप्तमपूजाष्टकं संपूर्णम् ॥
॥ ७ ॥ सर्व गाथा ॥६०॥

॥ अथ ॥

॥ अष्टमदिवसेऽध्यापनीय अंतरायकर्मसूदनार्थं ॥ अष्टमपूजाष्टक प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथमजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर शिर धरी, प्रणमी श्रीगुरुपाय ;
वंछित पद वरवा भणी, टालीशुं अंतराय ॥ १ ॥

जिम राजा रीज्यो थको, देतां दान अपार ;
भंमारी खीज्यो थको, वारंतो तिणि वार ॥ २ ॥
तिम ए कर्म उदयथकी, संसारी कहेवाय ;
धर्म करम साधन भणी, विघन करे अंतराय ॥३॥
अरिहानें अवलंबनें, तरियें इणे संसार ;
अंतराय उछेदवा, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल, पहेली ॥ अंबाना वफला हेठ, नथारे सरोव ॥ र लहेस्यो लेठे रे ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूजा करी जिनराज, आगल वात वीती कहो रे ॥ कहेतां नवि आणो लाज, कर जोडीने आगल रहो रे ॥ जल० ॥ १ ॥ जिनपूजानो अंतराय, आगम लोपी निंदा भजी रे ॥ विपरीत परूपणा थाय, दीन तणी करुणा तजी रे ॥ जल० ॥ २ ॥ तपसी न नम्या अणगार, जीवतणी में हिंसा सजी रे ॥ नवि मलियो आ संसार, तुम सरिखो रे श्रीनाथजी रे ॥ जल० ॥ ३ ॥ रांक उपर कीधो कोप, माठां कर्म प्रकासियां रे ॥ धरमें मारगनो लोप, पर मारथ केता हांसिया रे ॥ जल० ॥ ४ ॥ भणतांने कस्यो अंतराय, दान दीयंता में वारिया रे ॥ गीतारथने

हेलाय, जूठ बोली धन चोरीयां रे ॥ जल० ॥ ५ ॥ नर पशुआं बालक दीन, भुख्यां राखी आपें जम्यो रे ॥ धर्मवेलायें बलहीन, परदाराशुं रंगें रम्यो रे ॥ जल० ॥ ६ ॥ कूडे कागलिये व्यापार, थापण राखी ने उलवी रे ॥ वेच्यां परदेश मोझार, बाल कुमारीका नोलवी रे ॥ जल० ॥ ७ ॥ पंजरीये पोपट दीध, केती वात कहुं घणी रे ॥ अंतराय करम इम कीध, ते सवि जाणोछो जगधणी रे ॥जल० ॥ ८ ॥ जल पूजंती द्विजनारी, सोमेश्वरि मुगति वरी रे ॥ शुभवीर जगत आधार, आणा में पण शिर धरी रे ॥ जल० ॥ ९ ॥ काव्यं ॥ तीर्थोदकै० ॥ १ ॥ सुरनदी० ॥ २ ॥ जनमनो० ॥ ३ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ विघ्नस्थानकोछेदनाय जलं य० ॥स्वा०॥ इति विघ्नस्थानकोछेदनार्थं प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥५७॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥

॥ शीतलगुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभुमुखरंग;
आत्मशीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग॥१॥
अंगविलेपन पूजना, पूजो धरि घनसार;

उत्तरपयडी पंचमां, दानविघन परिहार ॥ २ ॥

॥ ढाल, बीजी ॥ कामणगारो ए कूकडो रे ॥ ए देशी ॥

॥ करपी लुंभो संसारमां रे, जेम कपीला नार ॥ दान न दीधुं मुनिराजने रे, श्रेणीकनें दरबार ॥ क० ॥ १ ॥ करपी शास्त्र न सांजले रे, तिणे नवि पामे धर्म ॥ धर्म विना पशु प्राणीयो रे, बंधे नहीं कुकर्म ॥ क० ॥ २ ॥ दानतणा अंतरायथी रे, दान तणो परिणाम ॥ न वि पामे उपदेशथी रे, लोक न ले तस नाम ॥ क० ॥ ३ ॥ करपणाता अति सांजली रे, नावे घर अण गार ॥ विश्वासी घर आवता रे, कल्पे मुनि आचार ॥ क० ॥ ४ ॥ करपी लक्ष्मीवंतने रे, मित्र सज्जन रहे दूर ॥ अल्पधनी गुण दानथी रे, वंछे लोकपंडूर ॥ क० ॥ ५ ॥ कल्पतरु कनकाचलें रे, नवि करतां उ पगार ॥ तेथी मरुधर रूडो केरडो रे, पंथगछाय लगा र ॥ क० ॥ ६ ॥ चंदनपूजा धन वावरे रे, क्षय उ पशम अंतराय ॥ जिम जयसूरने शुजमति रे, खाय क गुण प्रगटाय ॥ क० ॥ ७ ॥ श्रावक दान गुणें करी रे, तुंगिया जंग डुवार ॥ श्रीशुजवीरें वखाणिया रे, पंचम अंग मोकार ॥ क० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ जिन

पते० ॥ १ ॥ सहजकर्म० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥ परम० ॥ दानांतरायनिवारणाय चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति दानांतरायनिवारणार्थ द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ ५७ ॥

॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे त्रीजी सुमनस तणी, सुमनस करण स्वभाव;
भावसुगंध करण भणी, द्रव्य कुसुम प्रस्ताव ॥ १ ॥
मालतीफूलें पूजती, लाभविघन करी हाण;
वणिगसुता लीलावती, पामी पद निरवाण ॥ २ ॥

॥ ढाल, त्रीजी ॥ उंरा उंराजी आवो रे, कहुं एक ॥
॥ वातडली ॥ ए देशी ॥

॥ मनमंदिर आवो रे, कहुं एक वातडली ॥ अज्ञानी संगें रे, रमियो रातडली ॥ मन० ॥ १ ॥ व्यापार करेवा रे, देशविदेश चले ॥ परसेवा हेवा रे, कोडी न एक मले ॥ मन० ॥ २ ॥ राजगृही नयरें रे, द्रुमक एक फरे ॥ भिक्षाचरवृत्त्यें रे, दुखें पेट भरे ॥ मन० ॥ ३ ॥ लाभा अंतराये रे, लोक न तास दीये ॥ शक्षा पाडंतो रे, पोहोतो सातमीयें ॥ म० ॥ ४ ॥ ढंढण

अणगारो रे, गोचरी नित्य फरे॥पशुआं अंतरायें रे, आहार विना विचरे ॥ म० ॥ ५ ॥ आदिशर साहिब रे, संयमभाव धरे ॥ वरसी तप पारणुं रे, श्रेयांस रायघरे ॥ म० ॥ ६ ॥ मिथ्यातें वाह्यो रे, आरति ध्यान करे ॥ तुज आगमवाणी रे, समकिती चित्त धरे ॥ म० ॥ ७ ॥ जिमपूणियो श्रावक रे, संतोष भाव धरी ॥ नित्य जिनवर पूजे रे,फूलपगर भरी॥म० ॥ ८ ॥ संसारें भमतां रे, हुं पण आवि भव्यो ॥ अंतराय निवारक रे, श्रीशुभवीर मल्यो ॥ म० ॥ ए ॥ ॥ काव्यं ॥ सुमनसां० ॥ १ ॥ समयसार० ॥ २ ॥ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥भोगांतरायोच्छेदनाय पुष्पाणि य० ॥ स्वा० ॥ इति भोगांतरायोच्छेदनार्थं तृतीयपुष्पपूजा समाप्ता ॥ ५ए ॥

॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्म कठिन कठ दाहवा, ध्यान हुताशन योग ;
धूपें जिन पूजी दहो, अंतराय जे भोग ॥ १ ॥
एकवार जे भोगमां, आवे वस्तु अनेक ;
अशन पान विलेपनें, भोग कहे जिनछेक ॥ २ ॥

॥ ढाल, चोथी ॥ राग आशावरी, ढेडो नांजी ॥
॥ ए देशी ॥

॥ वाजी वाजी वाजी नूल्यो वाजी, नोग विघनघन गाजी ॥ नूल्यो० ॥ आगम ज्योत न ताजी ॥ नूल्यो० ॥ कर्म कुटिलवश काजी ॥ नूल्यो० ॥ साहिब सुण थई राजी ॥ नूल्यो० ॥ ए आंकणी ॥ काल अनादि चेतन रजले, एके वात न साजी ॥ मयणा नईणी न रहे ठानी, मलियां मात पिताजी ॥ नूल्यो० ॥ १ ॥ अंतराय थानक सेवनथी, निर्धनगति उपराजी ॥ कूपनी ठाया कूप समावे, इज्ञा तिम सवि नांजी ॥ नूल्यो० ॥ २ ॥ नैगम एक नारी धूर्ती पण, घेबर नूख न नागी ॥ जमी जमाई पाछो वलियो, ज्ञानदिशा तव जागी ॥ नूल्यो० ॥ ३ ॥ कवल्ली कष्टे धनपति थावे, अंतराय फल आवे ॥ रोगी परवश अन्न अरुची, उत्तमधान न नावे ॥ नूल्यो० ॥ ४ ॥ खायकनावें नोगनी लब्धि, पूजा धूपविशाला ॥ वीर कहे नवसातमें सिद्धा, विनयंधर नूपाला ॥ नूल्यो० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ अगरमुख्य० ॥ १ ॥ निजगुणाश्रय० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ नोगांतरा

यदहनाय धूपं य० ॥स्वा०॥ इति नोगांतरायदहनार्थं चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ६० ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ उपनोग विघन पतंगियो, पडत जगत जीउज्योत;
त्रिशलानंदन आगलें, दीपकनो उद्योत ॥ १ ॥
नोगवी वस्तु नोगवे, ते कहियें उपनोग ;
नूषण चीवर वल्लना, गेहादिक संयोग ॥ २ ॥

॥ ढाल, पांचमी ॥ राग काफी, अरनाथकुं सदा ॥
॥ मेरी वंदना ॥ ए देशी ॥

॥ जिनराजकुं सदा मेरी वंदना, वंदना वंदना वंदना रे, जिनराजकुं० ॥ ए आंकणी ॥ उपनोगा अंतराय हवावी, नोगीपद महानंदना रे ॥ जि० ॥ अंतराय उदयें संसारी, निरधनने परछंदना रे ॥ जि० ॥ १ ॥ देश विदेशें घरघर सेवा, नीमसेन नरिंदना रे ॥ जि० ॥ सुणिय विपाक सुखी गिरनारें, हेलक तेह मुणिंदना रे ॥ जि० ॥ २ ॥ बावीश वरस वियोगें रहेति, पवन प्रिया सती अंजना रे ॥ जि० ॥ नल दमयंती सती सीताजी, षट मासी आक्रंदना रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मु

निवरनें मोदक पडिलाभी, पछें करी घणी निंदना रे ॥ जि० ॥ श्रेणीक देखे पाउस निशियें, मम्मण शे ठ विडंबना रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ इम संसार विटंबन देखी, चाहुं चरण जिनचंदना रे ॥ जि० ॥ चकवी चाहे चित्त तिमिरारि, भोगी भ्रमर अरविंदना रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ जिनमति धनसिरि दो साहेली, दीपक पूज अखंमना रे ॥ जि० ॥ शिव पामी तिम भवि पद पूजो, श्रीशुभवीर जिणंदना रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ ॥ काव्यं ॥ भवति दीप० ॥ १ ॥ शुचिमना० ॥ २ ॥ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्री श्रीं परम० ॥ तुर्यविघ्नोछेदनाय दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति तुर्यविघ्नोछेदनार्थे पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ६१ ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीर्य विघन घनपमलमें, अवराणुं रवितेज ;
कालग्रीषम समज्ञानथी, दीपे आत्मसतेज ॥ १ ॥
अक्षत शुद्ध अखंमशुं, नंदावर्त्त विशाल ;
पूरी प्रभु सनमुख रही, शुणीये जगतदयाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ठही ॥ राग बंगाली, केरबो ॥
॥ सफल नई मेरी आजुकी घरियां ॥ ए देशी ॥

॥ जिणंदा प्यारा मुणंदा प्यारा, देखोरी जिणंदा न गवान ॥ देखोरी जिणंदा प्यारा ॥ ए आंकणी ॥ चरम पयडीको मूल विखरियां, चरम तीरथ सुलतान ॥ दे० ॥ दरशन देखत मगन नए हें, मागत खायक दान ॥ दे० ॥ १ ॥ पंचमविघनको खय उपशमसें, होवत हम नहीं लीन ॥ दे० ॥ पांगल बलहीणा डुनियांमें, वीरो सालवीदीन ॥ दे० ॥ २ ॥ हरि बल चक्री शक्रज्युं बलिए, निर्बल कुल अवतार ॥ दे० ॥ बाहुबली बल अक्षय कीनो, धन धन वालीकुमार ॥ दे० ॥ ३ ॥ सफल नयो नर जन्म हमेरो, देखत जिनदेदार ॥ दे० ॥ लोहचमक ज्युं नगतिसें हलिए, पारसासांइ विचार ॥ दे० ॥ ४ ॥ कीरयुगल व्रीहि चंचुमें धरते, जिन पूजत नए देव ॥ दे० ॥ अक्षतसें अक्षतपद देवे, श्रीशुनवीरकी सेव ॥ ॥ दे० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ क्षितितले० ॥ १ ॥ सहजनाव० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ वीर्यांतरायदहनाय अक्षतं य० ॥ स्वा० ॥ इति वीर्यांतराजी, षष्टमाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ६२ ॥

॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ निर्वेदी आगल धरो, शुचि नैवेद्यनो थाल ;
विविधजाति पकवानशुं, शाली अमुलक दाल॥१॥
अणाहारी पद में कर्यां, विग्गह गईअ अणंत ;
दूर करो इंम किजीयें, दिउ अणाहारी जदंत ॥२॥

॥ ढाल, सातमी ॥ राग काफी ॥ अखियनमें गुलजार ॥
॥ ए देशी ॥

॥ अखियनमें अविकारा, जिणंदा तेरी अखियनमें अविकारा ॥ राग दोष परमाणु निपाया, संसारी स विकारा ॥ जि० ॥ शांतरुचि परमाणुं निपाया, तुज मुद्रा मनोहारा ॥ जि० ॥ १ ॥ द्रव्य गुण परजाय ने मुद्रा, चउगुण चैत्य उदारा ॥ जि० ॥ पंच विघ्न घन पमल पलाया, दीपत किरण हजारा ॥ जि० ॥ २ ॥ कर्म विनासी सिद्धस्वरूपी, इगतीस गुण उपचारा ॥ जि० ॥ वरणादिक वीश दूर पलाया, आगीई पंच निवारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ तीन वेदका छेदकराया, संगरहित संसारा ॥ जि० ॥ अशरीरी भववीज

दह्यो, अंग कहे आचारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ अरूपी पण रूपारोपणसें, ठवणा अणुउंगदारा ॥ जि० ॥ विषम काल जिनबिंब जिनागम, नवियणकुं आधारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ मेवा मीठाई थाल नरीने, षटरस नोजन सारा ॥ जि० ॥ मंगल तूर बजावत आवो, नर नारी कर थारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ नैवेद्य ठवी जिन आगें मागो, हलिनृप सुर अवतारा ॥ जि० ॥ टालि अनादि आहारविकारा, सातमे नव अणाहारा ॥ जि० ॥ ७ ॥ सगविह शुद्धि सातमी पूजा, सगगई सगनय हारा ॥ जि० ॥ श्रीशुनवीर विजय प्रनु प्यारा, जिनआगम जयकारा ॥ जि० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ अनशनं० ॥ १ ॥ कुमतबोध० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ सिद्धपदप्रापणाय नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥ इति सिद्धपदप्रापणार्थे सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ६३ ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्ट कर्मदल चूरवा, आठमी पूजा सार;

प्रभु आगल फलपूजतां,फलथी फल निरधार॥१॥
इंद्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग;
पुरुषोत्तम पूजी करी, मागे शिव फल त्याग ॥२॥

॥ ढाल, आठमी ॥ राग धन्याश्री ॥ गिरुआ रे गुण॥
॥ तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभु तुज शासन अतिभलुं, माने सुरनर राणो रे॥ मिथ्या अभव्य न उलखे, एक अंधो एक कांणो रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ आगमवयणें जाणियें, कर्मतणी गति खोटी रे ॥ तीस कोडा कोडि सागरु, अंतराय थिति मोटी रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ ध्रुवबंधी उदई तथा, ए पांचे ध्रुवसत्ता रे ॥ देशघातिनी ए सही, पांचे अप रिअत्ता रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ संपराय बंधे कही, सत्ता उदयें थाकी रे ॥ गुणठाणुं लही बारमुं, नाठी जीव विपाकी रे ॥ प्र० ॥४॥ ज्ञानमहोदय तें वस्यो, रिद्धि अनंत विलासी रे ॥ फलपूजा फल आपीयें, अमें पण तेहना आसी रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ कीरयुगलशुं ऊर गता, नारी जिम शिव पामी रे॥ अमें पण करशुं ते हवी, भक्ति न राखुं खामी रे ॥ प्र०॥ ६ ॥ साची भ क्ति रीझवी, साहिब दीलमां धरशुं रे ॥ उज्ज्वल रंग

वधामणां, मनवंछित सवि करशुं रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ कर्मसूदण तपतरुफलें, ज्ञानअमृत रस धारा रे ॥ श्रीशुभवीरने आशरे, जगमां जयजय कारा रे ॥प्र० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ शिवतरोः० ॥ १ ॥ शमरसै० ॥ २ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अष्टकर्मोछेदनाय फलं य० ॥ स्वा० ॥ इति अष्टकर्मोछेदनार्थं अष्टम फलपूजा समाप्ता ॥ ६४ ॥

॥ हवे प्रत्येक दिवसें आवमी पूजाने अंतें कलश जणीने पछी काव्य, अने मंत्र जणवो. ते कलश प्रारं जियें छेयें ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ तूठो तूठो रे ॥ ए देशी ॥

॥ गायो गायो रे महावीर जिनेश्वर गायो ॥ त्रिशला माता पुत्र नगीनो,जगनो तात कहायो ॥ तप तपतां केवल प्रगटायो, समवसरण विरचायो रे ॥ महा० ॥ १ ॥ रयण सिंहासण बेसी चउमुख, कर्म सूदण तप गायो ॥ आचार दिनकरें वर्द्धमान सूरि, जविउप गारें रचायो रे ॥ महा० ॥ २ ॥ प्रवचनसारउद्धार

कहावे, सिद्धसेन सूरिरायो॥ दिन चउसठि प्रमाणे ए तप, उजमणें निरमायो रे ॥ मह्रा० ॥ ३ ॥ उजम णाथी तपफल वाधे, इंम जांखे जिनरायो ॥ ज्ञान गुरु उपगरण करावो, गुरुगमविधि विरचायो रे ॥ मह्रा० ॥ ४ ॥ आठ दिवस-मलि चोसठ पूजा, नव नव जाव बनायो ॥ नरजव पामी लाहो लीजें, पुण्यें शासन पायो रे ॥ मह्रा० ॥ ५ ॥ विजयजिनेंद्र सूरिश्वरराज्यें, तपगछ केरो रायो ॥ खुशालविजे मानविजय विबुधना, आग्रहथी विरचायो रे ॥ मह्रा० ॥ ६ ॥ वड उंशवाल गुमानचंदसुत, शासनराग सवायो ॥ गुरुजक्ति शा जवानचंद नित, अनुमोदन फल पायो रे ॥ मह्रा० ॥ ७ ॥ मृग बलदेव मुनि रथकारक, त्रण्य हुआ एक गयो ॥ करण करावणने अनुमोदन, सरिखा फल निपजायो रे ॥ मह्रा० ॥ ८ ॥ श्रीविजयसिंह सूरिश्वर केरा,सत्यविजय बुध गायो ॥ कपूरविजय तस खिमाविजय जस,विजयप रंपर ध्यायो रे ॥ मह्रा० ॥९॥ पंमित श्री शुनविजय सुगुरु मुज, पामी तास पसायो ॥ तास शिष्य धीर विजय सलूणा, आगम राग सवायो रे ॥ मह्रा०

॥ १० ॥ तस लघु बांधव राजनगरमें, मिथ्यात्वपुंज जलायो ॥ पंमित वीरविजय कविरचना, संघ सकल सुख दायो रे ॥ महा० ॥ ११ ॥ पहेलो उत्सव रा जनगरमें, संघ मली समुदायो ॥ करता जिम नंदीस र देवा, पूरण हर्ष सवायो रे ॥ महा० ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ श्रुतज्ञान अनुजव तान मंदिर,बजावत घंटो क री ॥ तव मोहपुंज समूल जलते,नागतेसगरीकरी॥ हमराजते जग गाजते दिन, अखयतृतिया आजथें ॥ शुजवीर विक्रम वेद (४) मुनि (७) वसु, (८) चंद्र (१) वर्ष विराजते ॥ संवत् (१८७४) ॥ १ ॥

॥ इति अष्टमदिवसेऽध्यापनीयअंतरायकर्मसूद नार्थमष्टमपूजाष्टकं संपूर्णम् ॥ ८ ॥

अहीं आठे कर्मनुं मूल उछेदवाने अर्थें, प्रत्येक कर्म आश्री उपवास थकी मांमीने अष्ट कवलपर्यं तनुं तपदिन आठ सुधी करवुं. तेने कर्मसूदन तप कहेछे. ते तप आठे कर्मनुं मली चोशठ दिवसपर्यंत करवुं. तेनो यंत्र लखियें छैयें.

कर्मनी संख्या ना अंक	जे कर्मसूदन आश्री तप करवुं, ते कर्मना नामनुं कोष्टक.	उपवास	एकासणुं	एकसीथ	एकलठाणुं	एकदत्ती	नीवी	आंबील	आठकवल
१	ज्ञानावरणकर्म	१	१	१	१	१	१	१	८
२	दर्शनावरणक.	१	१	१	१	१	१	१	८
३	वेदनीकर्म	१	१	१	१	१	१	१	८
४	मोहनीकर्म	१	१	१	१	१	१	१	८
५	आयुकर्म	१	१	१	१	१	१	१	८
६	नामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	८
७	गोत्रकर्म	१	१	१	१	१	१	१	८
८	अंतरायकर्म	१	१	१	१	१	१	१	८

॥ इति कर्मसूदनतपोद्यापने दिनाष्टकमहोत्सवे पंमितश्रीवीरविजयजीकृत चतुःषष्टिमितार्हत्पूजाविधिः संपूर्णः ॥

॥ सर्व पूजा (६४) सर्व गाथा (५६३)

द्रव्यधूप करी आतमा, सहज सुगंधित थाय ॥ १ ॥

॥ ढाल, राग मालवी गुडो ॥

॥ नवनय चूरणो, कृष्णअगर तणो, चूरण करी सुरनिमने ए ॥ १ ॥ अंबर तगरनो, शुचितर अगरनो, वलि घनसार बरासने ए ॥ २ ॥ कुंदरु तुरकनो, कस्तुरी पुरकनो, नेलीयें मेलवी चंदनें ए ॥ ३ ॥ नव नव रंगनो, शुद्ध दशांगनो, धूपसुगंध जिणंदनें ए ॥ ४ ॥ धूपधाणुं नणुं, कंचन रयणनुं, पावकनिर्धूम परजले ए ॥ ५ ॥ जिनपमंदिर जतां, धूप उखेवतां, दश दिश महमहे परिमले ए ॥ ६ ॥ इति ढाल ॥

॥ दोहा ॥

॥ ध्यानघटा प्रगटावियें, वामनयन जिनधूप ;
मिछत्तडुगंध दूरें टले, प्रगटे आत्मस्वरूप ॥ १ ॥

॥ गीतं, सबावरागिणी फाग ॥

॥ जिनवर जगतदयाल नवियां, जिनवर जगतदयाल ॥ जिनपद सेवत धूप उखेवत, सुरवर नयनहजार ॥ नवियां ॥ जि० ॥ तिम नवि शुद्ध दशांग उखेवो, मांहि साकर घनसार ॥ नवि० ॥ जि० ॥ १ ॥ परिमल वदनें धूप कहत हे, सुणजो बुद्धिविशाल

॥ ज० ॥ जिनपद सेवत उर्ध्वगति हम, तिम ज वि शिवसुखमाल ॥ ज० ॥ जि० ॥ २ ॥ सिद्धसरू पी अरूपी विमलता, वेदी समय त्रिकाल ॥ ज० ॥ जि०॥ एह्वा प्रभु पडिमा वामांगें, धरियें धूप रसाल ॥ ज० ॥ जि० ॥ ३ ॥ चोथी पूजा चिहुं गतिहारी, वारी कर्मकी जाल ॥ ज० ॥ जि०॥ वीर कहे जव सा तमें सिद्धा, विनयंधर जूपाल ॥ ज० ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ धूपं य०॥स्वा०॥ इति चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचमिगति वरवा जणी, पंचमी पूजा रसाल ;
केवल रत्न गवेषवा, धरियें दीपक माल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग पूर्वी ॥

॥ दीपकी ज्योति बनी नवरंगा, दीनदयालकें दाहिण अंगा ॥ दीप० ॥ रयणजडित वर्तूल जाजनमें, धेनुहविष जरियें उछरंगा ॥दी०॥ १ ॥ प्राणी जगारण कारण फानस, करियें ज्युं नवि आय पतंगा ॥दी०॥ जगमग ज्योतिशुं दीपक धरियें, अनुजव दीपक सम

कितसंगा ॥ दी० ॥ २ ॥ जिनमंदिर जइ दीप प्रगट धरी, आशय शुद्ध विमल जलगंगा ॥ दी० ॥ ध्यान विमल करतां नवि नासे, दीपविराजथी मोहभुजंगा ॥ दी० ॥ ३ ॥ तिम मिथ्यात तिमिरकुं हरियें, शार्वर तमहर व्योमपतंगा ॥ दी० ॥ गोइन देखत नासत तस्कर, ज्युं जिनदर्शन जात अनंगा ॥ दी०॥४॥

॥ दोहा ॥

॥ द्रव्यदीप सुविवेकथी, करतां दुःख होय फोक;
भावप्रदीप प्रगट हुवे, भाषित लोकालोक ॥ १ ॥

॥ गीत ॥ राग आशावरी ॥ गरबानी देशी ॥

॥ दीपक दीपतो रे लोकालोक प्रमाण, एहवो दीवडो रे, प्रगटे पदनिरवाण ॥ दी० ॥ द्रव्यथकी दीपकनी पूजा, करतां दोगति रोको रे ॥ प्रभुपडिमा आदर्श करीने, आतमरूप विलोको ॥ दी० ॥ एहवो० ॥ १ ॥ शुद्धदशा चेतनकुं प्रगटे, विघटे भवभय कूपो रे ॥ चिदानंद झकझोल घटाशुं, केवलदीप अनूपो ॥ दी० ॥ एहवो० ॥ २ ॥ पडत पतंग न धूमकी रेखा, नहीं चंचल मारुतें रे ॥ घृत विणपूरे पात्र न तापे, वलि नवि मेल प्रसूते ॥ दी० ॥ एह

वो० ॥ ३ ॥ पापपतंग पडत तिम दीपक, करती दो साहेली रे॥ जिनमति धनसिरी वरी शिव सुखने, वीर कहे रंगरेली ॥ दी० ॥ एहवो० ॥ ४ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ दीपमालां य०॥ स्वा०॥ इति पंचमदीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्षयपद साधन तणी, अक्षतपूजा सार ;
जिनप्रतिमा आगल मुदा,धरियें भवि नर नार॥१॥

॥ ढाल॥ राग विलावल ॥

॥ जगतप्रभु आगल भवि, वर अक्षत धरियें ॥ मणि मुक्ताफल लेइनें, वलि स्वस्तिक करियें ॥ हांहारे वलि स्वस्तिक करियें ॥ हांहारे करि पातिक हरियें ॥ हांहां रे छठी पूजा समरियें ॥ हांहारे प्रवहण भरदरिये ॥ हांहारे भवसायर तरियें ॥ हांहारे पद अक्षर वरियें ॥ जगत० ॥ १ ॥ अथवा उज्ज्वल तंडुला, भ री थालनें लावो ॥ स्वस्तिक चिहुं गति चूरणो, वरें रत्नने गावो ॥ हांहारे वरें रत्नने गावो ॥ हांहारे धन

सार वसावो ॥ हांहांरे गोधूमादि अणावो ॥ हांहांरे तस पुंज बनावो ॥ हांहांरे अनुनवलय जावो ॥ हांहां रे होय शिवपुर जावो ॥ जगत०॥ २ ॥ इति ढाल ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुद्ध अखंम अक्षत ग्रही, नंदावर्त्त विशाल ;
पूरी प्रनुसनमुख रहो, टालि सकल जंजाल ॥१॥

॥ अथ गीतं ॥ राग बिहागडो ॥

॥ शिवनारी मुज प्यारी दिलनर, दिखाविहो शिवनारी ॥ हांरे प्रनु तुं तेहनो अधिकारी, दिलनर दिखाविहो शिवनारी ॥ ए टेक ॥ शालि व्रीहि गोधूमको ढगलो, प्रनुसनमुख नर नारी ॥ दिल० ॥ धरी अक्षत अक्षत पद वरियें,आधि व्याधि नवहारी ॥ दिल० ॥१॥ शंनु स्वयंनु जगतको त्रायक, नायक जगदाधारी ॥ दिल० ॥ तीर्थपति सुलतान जिनेसर, अविचल पद दातारी ॥ दिल० ॥ २ ॥ दव्वहगुणपज्जायने मुद्रा, चउगुण पडिमा प्यारी ॥ दिल० ॥ इव्याक्षत धरतां इह लोकें, राज ऋद्धि नंमारी ॥ दिल० ॥ ३ ॥ मरुदेवानंदन पद पूजत, इव्यनाव सुखकारी ॥ दिल०॥ अनुनवि अमरालय शुन सुखनें, कीरयुगल नवप्या

री ॥ दिल० ॥४॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ अक्षतं य०॥ स्वा०॥ इति षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥६॥

॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ निर्वेदी आगल ठवो, शुचि नैवेद्य रसाल ;
विविधजाति पकवानशुं, भरि अष्टापद थाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग काफी ॥

॥ पुरुषोत्तम गुण खाणी हो,पारग पुरुषोत्तम गुणखाणी ॥ ए टेक ॥ हवे नैवेद्य रसाल ठवीजें, प्रभु आगल भवि प्राणी ॥ मरकी अमृत पाक पतासां, फेणी सरस सोहांणी हो, पारग पुरु० ॥ १ ॥ लाकडसाई मगदल साटा, घेवरथाल भराणी ॥ सेव कंसारने सक्करपारा, पिस्ता बरफी आणी हो, पारग पुरु० ॥ २ ॥ खाजां खुरमां खीर खांड घृत, पापड पूरी वखाणी ॥ मोतीया कलिसारने दोठां, इम पकवान मिलाणी हो, पारग पुरु० ॥ ३ ॥ प्रभुपुर ढोइ करो दुःखहाणी, मागो जोडी पाणी ॥ पतितपावन जिन मुज दीजें, अणहारी शिवराणी हो, पारग पुरु०॥४॥

॥अथ गीतं ॥ ईमनरागिणी ॥ माहारी सहीरे समाणी ॥
॥ ए देशी ॥
॥ हरिपरें फल मागो नविलोका, फलथी शिवफल रोका रे ॥ धन धन जिनराया ॥ रायण बीजोरां फल टेटी, पूजत शिववहू नेटी रे ॥ धन० ॥ १ ॥ इत्यादिक शुचिफल नवि लावो, थाल विशाल नरावो रे ॥ धन० ॥ हर्षनरे जिनमंदिर आवो, जिनवर आगल गावो रे ॥ धन० ॥ २ ॥ ईम फलपूजा जे नवि करशो, ते शिवरमणी वरशो रे ॥ धन० ॥ पूजो नवियण निर्मलबुद्धि, पण करी सगविह शुद्धि रे ॥ धन० ॥ ३ ॥ कीरयुगलशुं डुर्गता नारी, पूज्या जिन जयकारी रे ॥ धन० ॥ कहे शुन्नवीर अचल सुख लीधो, अंत करमनो कीधो रे ॥ धन० ॥ ४ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ फलं य० ॥ स्वा० ॥ इति अष्टमफलपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥

॥ अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥ वामानंदनजग० ॥
॥ ए देशी ॥
॥ इणिविध अष्ट प्रकारी पूजा, करशो तस नित सुखशाता ॥ सिद्धि बुद्धि दिद्धि अड नविजन, पामी अड पवयण माता ॥ हरिपरें नक्ति करो प्रनु केरी ॥ १ ॥

रागद्वेष टाली जिनपूजत; अष्टमिगति अनुक्रमें ल
हे ॥ अष्ट कर्म समतायें वाली, नीजतरु वन हीम
दहे ॥ हरिपरें० ॥ २ ॥ तपगञ्च श्रीविजयसिंह सूरिस
र, सत्यविजय पन्यास वरो ॥ कपूरसमुज्जल खिमा
विजय जस, विजय सदा सौजाग्य करो ॥ हरि० ॥
॥ ३ ॥ तास शिष्य शुजविजय सोजागी, तस अनुम
ति जिनराज सही ॥ गावत हर्ष कल्लोल जराया, रा
जनगर चउमास रही ॥ हरि० ॥ ४ ॥ संवत अढार
अघावन वरपे, जाङपदें सीतपक्ष जलो ॥ द्वादशीदि
न गुरुवार मनोहर, ए अन्यास जयो सफलो ॥ ह
रि० ॥ ५ ॥ सुरगुरु पण न सके करी वर्णव, जिन
शुणिया में मंदमति ॥ जलधिमान कहे जिम बाल
क, निजशक्ते पंखी वदती ॥ हरि० ॥ ६ ॥ शक्ति वि
ना पण तिम प्रजु गाया, गुणमाला जवि कंव धरो
॥ वीरविजय कहे संघ सकल जवि, जई शिव मंदिर
लील करो ॥ हरि० ॥ ७ ॥ इति कलश ॥

॥ इति पंमितश्रीवीरविजयजी कृत-
अष्टप्रकारीपूजा संपूर्ण ॥

हुला नवि नव तरे ए ॥ ५ ॥ वारणने असी, दोय वचमां वसी, काशी वारणसी नयरीयें ए ॥ अश्वसेन नूपति, वामा राणी सती, जैनमति रति अनुसारियें ए ॥ ६ ॥ चार गति चोपडा, चवनना चूकवी, शिव गया तास घर नमन जावे ॥ बालरूपें सुर तिहां, जननीमुख जोवतां, श्रीशुनवीर आनंद पावे ॥ ७ ॥

॥ काव्यम् ॥ उपजातिवृत्तम् ॥

॥ नोगी यदालोकनतोऽपि योगी, बनूव पातलपदे नियोगी ॥ कल्याणकारी डुरितापहारी, दशावतारी वरदः सपार्श्वः ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमते जिनेंद्राय, पुष्पाणि यजामहेस्वाहा ॥ इति चवनकल्याणके प्रथमपुष्पपूजा संपूर्णा ॥ १ ॥

॥ अथ ॥

॥ चवनकल्याणके द्वितीयफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्णचतुर्थी चैत्रनी, पूर्णायु सुर तेह ;
वामामात उदर निशि, अवतरिया गुणगेह ॥ १ ॥

सुपन चतुर्दश मोटकां, देखे माता ताम ;
रयणिसमे निजमंदिरें, सुखसज्या विशराम ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ मिथ्यात वामीने कोउया, समकित पामी रे ॥
॥ ए देशी ॥

॥ रूडो मास वसंतफली वनराजी रे, रायणने सह कार वाल्हा ॥ केतकी जायने मालती रे, नमर करे फंकार वाल्हा ॥ कोयल मदन्नर टहूकती रे, वेठी आंबामाल वाल्हा ॥ हंसयुगल जल फीलतां रे, विमल सरोवर पाल वाल्हा ॥ मंदपवननी लहेरमां रे, माता सुपन निहाल वाल्हा ॥ ए आंकणी ॥ दीठो प्रथम गज उज्जलो रे, बीजे रूपन गुणवंत वाल्हा ॥ त्रीजे सिंहल केशरी रे, चोथे श्रीदेवी महंत वाल्हा ॥ माल युगल फूल पांचमे रे, छठे रोहिणीकंत वाल्हा ॥ उगतो सूरज सातमे रे, आठमे ध्वज लहकंत वाल्हा ॥ रूडो मास० ॥ १ ॥ नवमे कलश रूपा तणो रे, दशमे पदमसर जाण वाल्हा ॥ इग्यारमे रतनागरु रे, बारमे देवविमान वाल्हा ॥ गंज रतननो तेरमे रे, चउदमे वन्हिवखाण वाल्हा ॥ उतरतां आकाशथी रे, पेसतां वदन प्रमाण वाल्हा ॥ रूडो० ॥ २ ॥

माता सुपन लही जागीयां रे, अवधि जुवे सुरराज वाल्हा ॥ शक्रस्तवकरी वंदीयां रे, जननीउदर जिन राज वाल्हा ॥ इणे समे इंद्र ते आविया रे, मा आगल धरी लाज वाल्हा ॥ पुण्यवती तुमें पामियुं रे, त्रण्य भुवननुं राज वाल्हा ॥ रूडो० ॥ ३ ॥ चउद सुपनना अर्थ कहि रे, इंद्र गया निज ठाम वाल्हा ॥ चउसठ इंद्र मली गया रे, नंदिसर जिन धाम वाल्हा ॥ चवनकल्याणक उत्सवें रे, श्रीफलपूजा ठाम वाल्हा ॥ श्रीशुभवीर तिणे समे रे, जगत जीवविश राम वाल्हा ॥ रूडो० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥१॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ फलं य०॥ स्वा०॥

इति चवनकल्याणके द्वितीयफलपूजा संपूर्णा ॥ २ ॥

॥ अथ ॥

॥ जन्मकल्याणके तृतीयअक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥

॥ रविउदयें नृप तेडिया, सुपनपाठक निज गेह ;
चउद सुपनफल सांभली, वलीय विसर्ज्या तेह॥१॥
त्रण्य ज्ञानशुं ऊपना, त्रेवीशमा अरिहंत ;
वामाउर सर हंसलो, दिन दिन वृद्धि लहंत ॥२॥

मोहला पूरें नृपति, सखियो वृंद समेत ;
जिन पूजे अक्षत धरी, चामर पंखा लेत ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ चित्त चोखे चोरी नवि करियें ॥ ए देशी ॥

॥ रमती गमती हमुने सहेली, बिहू मली लिजीयें एक ताली ॥ सखि आज अनोपम दीवाली ॥ लील विलासें पूरणमासें, पोसदशम निशि रढीयाली ॥ सखी० ॥ १ ॥ पशुपंखी वसियां वनवासी, ते पण सुखियां समकाली ॥ सखि०॥ ईणि रातें घरघर उत्सव सें, सुखियां जगतमें नर नारी ॥ सखि० ॥ २ ॥ उत्तम ग्रह विशाखायोगें, जनम्या प्रभुजी जयकारी ॥ सखि० ॥ साते नरकें थया अजुवालां, थावरनें पण सुखकारी ॥ सखि० ॥ ३ ॥ मात नमी आवे दिग्कुमरी, अधोलोकनी वसनारी ॥ सखि०॥ सूतीघर ईशानें करती, योजन एक अशुचि टाली ॥ सखि०॥ ४ ॥ उर्द्धलोकनी आठ कुमारी, वरसावे जल कुसुमालि ॥सखि०॥ पूर्वरुचक अड दर्पण धरती, दक्षिणनी अड कलशालि ॥ सखि० ॥ ५ ॥ अड पश्चिमनी पंखा धरती, उत्तर अड चामर धारी ॥ सखि० ॥ विदिशिनी चउ दीप धरंती, रुचकद्वीपनी चउ वा

ली ॥ सखि०॥ ६ ॥ केल तणां घर त्रण्य करीने, मर्दन स्नान अलंकारी ॥ सखि० ॥ रक्षा पोटली बांधी बिहुने, मंदिर मेल्यां शिणगारी ॥ सखि० ॥ ७ ॥ प्रभुमुखकमलें अमरी जमरी, रास रमंती लटकाली ॥ सखि० ॥ प्रभुमाता तुं जगतनी माता, जगदीपकनी धरनारी ॥ सखि० ॥ ८ ॥ माजी तुज नंदन घणुं जीवो, उत्तम जीवने उपगारी ॥ सखि० ॥ उप्पन दिग्कुमरी गुण गाती, श्रीशुभवीर वचनशाली ॥ सखि० ॥ ए ॥ काव्यं ॥ जोगी यदा० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ अक्षतं य० ॥ स्वा० ॥ इति जन्मकल्याणके तृतीयअक्षतपूजा संपूर्णा ॥ ३ ॥

॥ अथ ॥

॥ जन्मकल्याणके चतुर्थजलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चलितासन सोहमपति, रची वैमान विशाल ;
प्रभुजनमोत्सव कारणें, आवंता ततकाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ काज सिध्धां सकल हवे सार ॥ ए देशी ॥

॥ हवे शक्र सुघोषा वजावे, देव देवी सर्वे मिलावे ॥

करे पालक सुर अनिधान, तिणे पालक नामे विमान ॥ १ ॥ प्रनु पासनुं मुखडुं जोवा, नवनवनां पातिक खोवां ॥ चाले सुर निजनिज टोले, मुखमंगलिक माला बोले ॥ प्रनु० ॥ २ ॥ सिंहासन वेग चलिया, हरि बहुदेवें परवरिया ॥ नारी मित्रना प्रेख्या आवे, केईक पोतानें नावे ॥ प्रनु० ॥ ३ ॥ हुकमें केई नक्ति नरेवा, वली केईक कौतुक जोवा ॥ हय कासर केशरी नाग, फणी गरुड चढ्या केइ ठाग ॥ प्रनु० ॥ ४ ॥ वाहन वैमान निवास, संकीर्ण थयुं आकाश ॥ केइ बोले करता ताडा, सांकडा नाइ पर्वना दाहाडा ॥ प्रनु० ॥ ५ ॥ इहां आव्या सवि आणंदें, जिनजननीनें हरि वंदे ॥ पांच रूपें हरि प्रनु हाथ, एक ठत्र धरे शिरनाथ ॥ प्रनु० ॥ ६ ॥ बे बाजु चामर ढाले, एक आगल वज्र ठलाले ॥ जई मेरु धरी उछंगें, इंइ चोसठ मलिया रंगें ॥ प्रनु० ॥ ७ ॥ खीरोदक गंगावाणी, मागध वर दामनां पाणी ॥ जाति आठना कलश नरीने, अढिशें अनिषेक करीने ॥ प्रनु० ॥ ८ ॥ दीवो मंगल आरति कीजें, चंदन कुसुमें करी पूजे ॥ गीत वाजित्रना बहु ठाठ, आलेखे मंगल आठ ॥ प्रनु० ॥ ए ॥ इत्यादिक उत्सव करता,

जई माता पासें धरता ॥ कुंमलयुग वस्त्र उशीके, दडो गेडी रतनमई मूके ॥ प्रनु० ॥ १० ॥ कोडि बत्रीश रत्न रूपैया, वरसावी इंड उचरिया ॥ जिनमाताशुं जे धरे खेद, तस मस्तक थाशे छेद ॥ प्रनु० ॥ ११ ॥ अंगुठे अमृत वाही, नंदीसर करे अठाई ॥ देइ राजा पुत्रवधाई, घर घर तोरण विरचाई ॥ प्रनु० ॥ १२ ॥ दश दिन उछव मंमावे, बारमे दिन नात जमावे ॥ नाम थापे पार्श्वकुमार, शुन वीरविजय जयकार ॥ प्रनु० ॥ १३ ॥ काव्यं ॥ नोगी यदा० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ जलं य० ॥ स्वा० ॥ इति जन्मकल्याणके चतुर्थजलपूजा संपूर्णा ॥ ४ ॥

॥ अथ ॥

॥ जन्मकल्याणके पंचमचंदनपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमृतपानें उछर्या, रमता पास कुमार ;
अहिलंछन नवकरतनु, वरते अतिशय चार ॥ १ ॥
यौवन वय प्रनु पामता, मात पितादिक जेह ;
परणावे नृप पुत्रिका, प्रनावती गुणगेह ॥ २ ॥

चंदन घसि घनसारचुं, निज घर चैत्य विशाल ;
पूजोपगरण मेलवी, पूजे जगत दयाल ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ बालपणे योगी हूआ, माई निद्दा ॥
॥ चोने ॥ ए देशी ॥

॥ सोना रूपाके सोगठे, सांयां खेलत बाजी ॥ इंद्राणी मुख देखतें, हरि होत हे राजी ॥ १ ॥ एक दिन गंगाके बिचें, सुर साथ वहोरा ॥ नारी चकोरा अपछरा, बहोत करत निहोरा ॥ २ ॥ गंगाके जल झीलते, छांही बादलीयां ॥ खावन खेल खेलायकें, सवि मंदिर वलियां ॥ ३ ॥ बेठे मंदिर मालिये, सारी आलम देखे ॥ हाथ पूजापा ले चले, खान पान विशेषे ॥ ४ ॥ पूछया पडुत्तर देत हे, सुनो मोहन मेरे ॥ तापसकुं वंदन चले, उठी लोक सवेरे ॥ ५ ॥ कमठयोगी तप करे, पंच अग्निकी ज्वाला ॥ हाथे लालक दामणी, गले मोहनमाला ॥ ६ ॥ पासकुंअर देखण चले, तपसीपें आया ॥ उहीनाणें देखके, पीछें योगी बोलाया ॥ ७ ॥ सुण तपसी सुख लेनकुं, जपे फोकट मालें ॥ अज्ञानसें अगनिबिचें, योगकुं परजाले ॥ ८ ॥ कमठ कहे सुण राजवी, तुमें अश्व खेलाउ ॥

योगीके घर हे बडे, मत को बतलाउ ॥ ९ ॥ तेरा गुरु कोन हे बडा, जिने योग धराया ॥ नहिं उलखाया धर्मकुं, तनुकष्ट बताया ॥ १० ॥ हम गुरु धर्म पीछानते, नहीं कवडी पासें ॥ नूल गए डुनीयां दिशा, रेहते वनवासें ॥ ११ ॥ वनवासी पशु पंखीयां, एसे तुम योगी ॥ योगी नहीं पण नोगीया, संसार के संगी ॥ १२ ॥ संसार बूरा छोरकें, सुण हो लघु राजा ॥ योगी जंगल सेवते, लेई धर्म अवाजा ॥ १३ ॥ दया धर्मको मूल हे, क्या कांन फूंकाया ॥ जीवदया न हू जानते, तप फोकट माया ॥ १४ ॥ बात दयाकी दाखियें, नूल चूक हमारा ॥ बेर बेर क्या बोलणा, एसा म्हाम म्हाला ॥ १५ ॥ सांइहुकमसें सेवकें, बडा काष्ट चिराया ॥ नाग निकाला एकिला, परजलती काया ॥ १६ ॥ सेवक मुख नवकारसें, धरणेंड्र बनाया ॥ नागकुमारें देवता, बहु रिद्धि पाया ॥ १७ ॥ राणीसाथ वसंतमें, वनन्नींतर पेठे ॥ प्रासाद सुंदर देखने, उहां जाकर बेठे ॥ १८ ॥ राजिमतीकुं छोडकें, नेम संजम लीना ॥ चित्रामण जिन जोवते, वैरागें नीना ॥ १९ ॥ लोकांतिक सुर ते समे, बोले कर जोरी ॥ अवसर संजम लेनका अब वेर हे थो

री ॥ २० ॥ निज घर आए नाथजी, पिया खिण खिण रोवे ॥ मात पिता समजायकें, दान वरसी देवे ॥ २१ ॥ दीन दुःखी सुखिया किया, दारिद्रकुं चूरे ॥ श्रीशुनवीर हरि तिहां, धन सघलो पूरे ॥२२॥ ॥ काव्यं ॥ नोगी यदा०॥१॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति जन्मकल्याणके पंचमचंदनपूजा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ अथ ॥

॥ दीक्षाकल्याणके षष्ठधूपपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ वरसीदाननें अवसरें, दान लिये नव्य तेह ;
रोग हरे षट् मासनो, पामे सुंदर देह ॥ १ ॥
धूपघटा धरि हाथमां, दीक्षाअवसर जाण ;
देव असंख्य मल्या तिहां, मानु संजमगण ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ तीस वरस घरमां वस्या रे, सुखन्नर वामानंद ॥ संजम रसीया जाणीनें रे, मनिया चोसठ इंद ॥ नमो नित नाथजी रे ॥ निरखत नयनानंद ॥ नमो नित० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तीर्थोदकवर ओषधि रे,

मेलवता बहु गाव ॥ आठ जाति कलशा भरी रे, ए
क सहसने आठ ॥ नमो० ॥ २ ॥ अश्वसेन राजा
धुरें रे, पाठल सुर अभिषेक ॥ सुरतरुपेरें अलंकस्या
रे, देव न भूले विवेक ॥ नमो० ॥ ३ ॥ विशाला भू
पशिबिका रे, बेठा सिंहासन नाथ ॥ बेठी वडेरी द
क्षिणे रे, पट शाटक लेइ हाथ ॥ नमो० ॥ ४ ॥ वा
म दिशें अंब धातरी रे, पाठल धरी शणगार ॥ छत्र
धरे एक यौवना रे, ईशान फल कर नारी ॥ नमो०
॥५॥ अग्निकुणे एक यौवना रे, रयणमें पंखो हाथ ॥
चलत शिबिका गावती रे, सर्व सहेली साथ ॥ नमो०
॥ ६ ॥ शक्र ईशान चामर धरे रे, वाजित्रनो नहिं पा
र ॥ आठ मंगल आगल चले रे, इंद्र ध्वजा फल
कार ॥ नमो०॥ ७ ॥ देव देवी नर नारीयो रे, जुइ क
रे परणाम ॥ कुलमां वडेरा सज्जना रे, बोले प्रभुने
नाम ॥ नमो० ॥ ८ ॥ जीतनिशान चडावजो रे, मो
हनी करि चकचूर ॥ जिम संवत्सर दानथी रे, दलिदर
काढ्युं दूर ॥ नमो० ॥ ९ ॥ वरघोडेथी उतस्या रे,
काशीनयरने बार ॥ आश्रमपद उद्यानमां रे, वृक्ष
अशोक रसाल ॥ नमो० ॥ १० ॥ अठम तप भूषण
तजी रे, उच्चरे महाव्रत चार ॥ पोस बहुल एकाद

शी रे, त्रण सयां परिवार ॥ नमो० ॥ ११ ॥ मन पर्यव तव ऊपनुं रे, खंध धरे जगदीश ॥ देव दुष्य इंद्रें दियूं रे, रहेशे वरसचततीस ॥ नमो० ॥ १२ ॥ काउसग्गमुद्रायें रह्या रे, सुरनंदिशर जात ॥ मातपिता वंदि वल्या रे, श्रीशुभवीर प्रजात ॥ नमो० ॥ १३ ॥ ॥ काव्यं ॥ जोगी यदा० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ दीक्षाकल्याणकमहोत्सवे धूपं य० ॥ स्वा० ॥ इति दीक्षाकल्याणके षष्ठधूपपूजा संपूर्णा ॥ ६ ॥

॥ अथ ॥

॥ केवलज्ञानकल्याणके सप्तमदी ॥

॥ पकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

सारथ धन्यघर पारणुं, प्रथम प्रभुयें कीध;
पंच दिव्य प्रगटावीने, तास मुगतिसुख दीध ॥ १ ॥
जगदीपक प्रगटाववा, तप तपता रहि राय;
तिणे दीपकनी पूजना, करता केवलनाण ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ महावीर प्रभु घरे आवे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुपारसनाथ सधाव्या, कादंबरी अटवी आव्या,

कुंम्नामें सरोवर तीरें, जखुं पंकज निरमल नीरें रे॥ मनमोहन सुंदर मेला ॥ धन्य लोक नगर धन्य वेला रे ॥ मन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ काउसग्ग मुद्रा प्रनु ठावे, वनहाथी तिंहा एक आवे, जलसूंढ नरी नवरावे, जिनअंगें कमल चढावे रे ॥ मन० ॥ २ ॥ कलीकुंम्नतीरथ तिहां थावे, हस्ती गति देवनी पावे, वलि कोष्ठुन वन आणंदे, धरणेंद्र विनय धरी वंदे रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ त्रण्य दिन फणी छत्र धरावे, अहिछत्रा नगरी वसावे, चलता तापसघर पूठें, निशि आवी वस्या वडहेठें रे ॥ मन० ॥ ४ ॥ थयो कमठ मरी मेघमाली, आव्यो विनंगें निहाली, उपसर्गे कस्या बहुजाति, निश्चल दीठी जिनठाती रे ॥ मन० ॥ ५ ॥ गगने जल नरी वादलियो, वरसे गाजे वीजलीयो, प्रनुनासा उपर जल जावे, धरणेंद्र प्रियासह आवे रे ॥ मन०॥ ६ ॥ उपसर्गे हरी प्रनु पूजी, मेघमाली पापथी धूजी, जिनजक्ति समकित पावे, बेहु जण सर्ग सधावे रे ॥ मन० ॥ ७ ॥ आव्या काशी उद्यानें, रह्या स्वामी काउसग्गध्याने, अपूरव वीर्य उल्लासें, घनघाती चार विनासें रे ॥ मन० ॥ ८ ॥ चोराशी गया दिन आखा, वदि चैतर चोथ विशाखा,

अष्टम तरुधातकी वासी, थया लोकालोक प्रकाशी रे ॥ मन० ॥ ए ॥ मले चोशठ इंद तेवार, रचे समवसरण मनोहार, सिंहासन स्वामी सुहावे, शिर चामर छत्र ढलावे रे ॥ मन० ॥ १० ॥ चोत्रीश अतिशय थावे, वनपाल वधामणि लावे, अश्वसेन वामा राणी, पभावती हर्षभराणी रे ॥ मन० ॥ ११ ॥ सामईयुं सजी सहु वंदे, जिनवाणी सुणी आणंदे, ससरो सासु वहू साथें, दीक्षा लीधी प्रभुहाथे रे ॥ मन० ॥ १२ ॥ संघसाथें गणी पद धरता, सुर ज्ञान महोत्सव करता, स्वामी देवछंदें सोहावे, शुभ वीरवचन रस गावे रे ॥ मन० ॥ १३ ॥ काव्यं ॥ नोगीयदा० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति केवलज्ञानकल्याणके सप्तम दीपकपूजा संपूर्णा ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टमनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुनआर्दें दश गणधरा, साधु शोल हजार ;
अडतीस सहस ते साधवी, चार महाव्रत धार ॥ १ ॥
एकलख चउसठ सहसछे, श्रावकनो परिवार ;

सगवीस सहस ते श्राविका, तिग लख उपर धार॥ २॥
देशविरतिधर ए सहु, पूजे जिन त्रण्य काल;
प्रभुपडिमा आगल धरे, नित्य नैवेद्यनो थाल ॥३॥

॥ ढाल ॥ एकसमे सामलियाजी, वृंदावनमां ॥ ए देशी॥

॥ रंगरसीया रंगरस बन्यो ॥ मनमोहनजी ॥ कोई आगल नवि कहेवाय ॥ मनडुं मोह्युं रे, मनमोहन जी ॥ वेधकता वेधक लहे ॥ मन० ॥ बीजा बेठा खाय ॥ मन० ॥ १ ॥ लोकोत्तर फल नीपजे ॥ मन० ॥ मोटो प्रभुनो उपगार ॥ मन० ॥ केवलना ण दीवाकरु ॥ मन०॥ विचरंता सुरपरिवार ॥ मन० ॥ २ ॥ कनक कमल पगलां ठवे ॥ मन० ॥ जल बुंद कुसुम वरसात ॥ मन० ॥ शिरछत्र वलि चामर ढले ॥ मन० ॥ तरुनमतां मारग जात ॥ मन० ॥ ॥ ३ ॥ उपदेशी केई तारिया ॥ मन० ॥ गुण पांत्री श वाणी रसाल ॥ मन० ॥ नर नारी सुर अप छरा ॥ मन० ॥ प्रभु आगल नाटकसाल ॥ मन० ॥ ॥ ४ ॥ अवनीतल पावन करी ॥ मन० ॥ अंतिम चोमासुं जाण ॥ मन० ॥ समेतशिखर गिरि आवि या ॥ मन० ॥ चढता शिवघर सोपान ॥ मन० ॥

॥ ५ ॥ श्रावणशुदि आठम दिने ॥ मन० ॥ विशाखा यें जगदीश ॥ मन० ॥ अणसण करी एक मासनुं ॥ मन० ॥ साथें मुनिवर तेत्रीश ॥ मन० ॥ ६ ॥ काउसग्गमां मुगति वऱ्या ॥ मन० ॥ सुख पाम्या सादि अनंत ॥ मन० ॥ एक समय समश्रेणिथी ॥ मन० ॥ निःकर्मी चउ दृष्टांत ॥ मन० ॥ ७ ॥ सुरपति सघला तिहां मळे ॥ मन० ॥ खीरोदधि आणे नीर ॥ मन० ॥ स्नान विलेपन नूषणें ॥ मन० ॥ देव डुष्यें स्वामिशरीर ॥ मन० ॥ ८ ॥ शोनावी धरी शिबिका ॥ मन० ॥ वाजित्रने नाटक गीत ॥ मन० ॥ चंदन चय परजालता ॥ मन० ॥ सुर नक्ति शोकसहित ॥ मन० ॥ ए ॥ थुंन करे ते उपरें ॥ मन० ॥ दाढादिक सर्गें सेव ॥ मन० ॥ नावउद्योत गये थके ॥ मन० ॥ दीवाली करता देव ॥ मन० ॥ १० ॥ नंदीसर उत्सव करें ॥ मन० ॥ कल्याणक मोक्षानंद ॥ मन० ॥ वर्ष अढीशें आंतरुं ॥ मन० ॥ शुन्नवीरने पास जिणंद ॥ मन० ॥ ११ ॥

॥ अथ गीतं ॥ घरे आवो ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ उत्सव रंग वधामणा, प्रन्नु पासने नामें ॥ कल्या

एक उच्छव कियो, चढते परिणामे ॥ उच्छव० ॥ १ ॥ शतवरसायु जीवीने, अक्षय सुख स्वामी ॥ तुम पद सेवा नक्तिमां, नवि राखुं खामी ॥ उ० ॥ २ ॥ साची नगतें साहिबा, रीझो एक वेला ॥ श्री शुनवीर हुये सदा, मनवंछित मेला ॥ उ० ॥ ३ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ गायो गायोरे, शंखेश्वर साहिब गायो ॥ यादव लोकनी जरा निवारी, जिनजी जगत गवायो ॥ पंच कल्याणक उच्छव करतां, अम घर रंग वधायो रे ॥ शंखे० ॥ १ ॥ तपागछ श्री सिंहसूरिना, सत्य विजय बुध गायो ॥ कपूर विजय गुरु खिमाविजय तस, जसविजयो मुनिरायो रे ॥ शंखे० ॥ २ ॥ तास शिष्य संवेगी गीतारथ, शांत सुधारस नाह्यो ॥ श्रीशुनविजय सुगुरुसुपसायें, जयकमला जग पायो रे ॥ शंखे० ॥ ३ ॥ राजनगरमें रही चोमासुं, कुमति कुतर्क हगायो ॥ विजयदेवेंद्र सूरिश्वर राजें, ए अधिकार बनायो रे ॥ शंखे० ॥ ४ ॥ अढारशें नव्याशी अखय तीज, अद्भुत पुण्य नपायो ॥ पंमित वीरविजय पदमावती, वंछित दाय सहायो रे ॥ शंखे० ॥ ५ ॥

काव्यं ॥ जोगी यदा० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ नैवेद्यं य० ॥ स्वा० ॥ इति अष्टमनैवेद्य पूजा संपूर्णा ॥ ८ ॥

॥ इति पंमितश्रीवीरविजयजीकृत पंचकल्याणकमहोत्सवेऽष्टप्रकारी पूजा संपूर्णा ॥ १ ॥

॥ अथ ॥

॥ पंमितश्रीवीरविजयजीकृत द्वादशव्रत-पूजा प्रारंभः ॥

तत्र

॥ श्रावकगुणवर्णनकाव्यम् ॥

॥ उच्चैर्गुणैर्यस्य निबद्धमूलं, सत्कीर्त्तिशाखाविनयादि पत्रम् ॥ दानं फलं मार्गणपक्षिभोजि, जीयाच्चिरं श्रावककल्पवृक्षः ॥ १ ॥

धर्म जयणायुत आदरो ए ॥ समकितसारने, टंकि अ
तिचारने, सिद्ध पडिमा नति नित्य करो ए ॥ ६ ॥
श्रेणिकरवायकें, खीरगंगोदकें, जिनअभिषेक नित्य ते
करे ए ॥ सिंची अनुकूलने, कल्पतरुमूलने, श्रीशुभ
वीरपद अनुसरे ए ॥ ७ ॥

॥ अथ काव्यम् ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥

॥ श्रद्धासंयुत द्वादशव्रतधराः श्राद्धाः श्रुते वर्णिताः, आ
नंदादयदिग्मिताः सुरभवं त्यक्त्वा गमिष्यंति वै ॥
मोक्षं तद्व्रतमाचरस्व सुमते चैत्याभिषेकं कुरु, येन
त्वं व्रतकल्पपादपफलास्वादं करोषि स्वयं ॥ १ ॥
ए काव्य, प्रत्येक पूजा दीठ कहेवुं ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरा
मृत्युनिवारणाय, श्रीमते, जिनेंद्राय, जलं यजामहे
स्वाहा ॥ ए मंत्रपण प्रत्येक पूजादीठ कहेवो. ॥ इति
समकितारोपणे प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ प्रथमव्रते द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दंसण नाण चरण तणा, आठ आठ अतिचार ;

अणसण वीर्याचारना, पण तिग तपना वार ॥१॥
सुंदर समकित उच्चरी, लहि चोथुं गुणगण ;
चढि पंचम पगथालियें, थूलथकी पच्चखाण ॥२॥

॥ ढाल ॥ वाल्हे अमृत पाई उठेखां, वाल्हेजीयें ॥
॥ अमनें रे ॥ ए देशी ॥

॥ आवो आवो जसोदाना कंत, अमघर आवो रे ॥ जगतिवछल जगवत, नाथ शें नावो रे ॥ ईम चंदनबालाबोलडे, प्रनु आवी रे ॥ मुगी बाकलामा टें पाठा, वलीने बोलावी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ संकेत करीने स्वामी, गया तुमे वनमां रे ॥ थई केवली केवली कीध, धरीजो मनमां रे ॥ असें केसर केरा कीच, करीने पूजूं रें ॥ तोहे पेहेले व्रत अतिचार, थकी हुं धूजूं रे ॥ आ० ॥ २ ॥ जीवहिंसानां पच्चखाण, थूलथी करियें रे ॥ डुविहं तिविहेणं पाठ, सदा अनुसरियें रे ॥ वासिबोलो विदल निशिजक्त. हिंसा टाळुं रे ॥ सवा विश्वा केरी जीव, दया नित्य पाळुं रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दश चंदरुआ दश ठाण, बांधिने रहियें रे ॥ जीव जाये एहवी वात, केने न कहियें रे ॥ वध बंधनने छविछेद, जार न जरियें रे ॥ जात

पाणीनो विछेद, पशुने न करियें रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ लौकिकदेव गुरु मिथ्यात, त्यासी नेवें रे ॥ तुज आगम सुणतां आज, होय विछेवें रे ॥ चोमासे पण बहु काज, जयणा पालुं रे ॥ पगले पगले महाराज, व्रत अजुवालुं रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ एक सासमांहे सो वार, समरु तुमने रे ॥ चंदनबालाज्युं सार, आपो अमने रे ॥ माठी हरिबल फलदाय, ए व्रत पाली रे ॥ शुभवीर चरण सुपसाय, नित्य दीवाली रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ चंदनं य० ॥ स्वा० ॥ इति प्रथमव्रते द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

॥ अथ द्वितीयव्रते तृतीयवासपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चूरण सरस कुसुमें करी, धरी केसर घनसार ;
बहुल सुगंधिवासथी, पूजो जगतदयाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ इंमनरागिणी ॥ यमुनामां जाई पड्यो ॥ ॥ रे बालक मेरो यमुनामां जाई पड्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुगतिसें जाई मल्यो रे, मोहन मेरो मुगतिसें जाई मल्यो ॥ मोहसें क्यूं न मर्यो रे ॥ मोहन० ॥ नाम क

रम निरजरणा हेतें, जगतको जाव जग्यो रे ॥ मो० ॥ उपदेशी शिव मंदिर पहोते, तोसें बनाव बन्यो रे ॥ मो० ॥ १ ॥ आणंदादिक दश युं बोली, तुम कनें व्रत उचरयो रे ॥ मो० ॥ पांच मोटका जूठ न बोले, मेंबी आश जग्यो रे ॥ मो० ॥ २ ॥ बीजुं व्रत धरी जूठ न बोलुं, पण अतिचार मग्यो रे ॥ मो० ॥ वसुराजा आसनसें पडियो, नरकावास जग्यो रे ॥ मो० ॥ ॥ ३ ॥ मंसाहारी मातंगी बोले, जानु प्रश्न धरयो रे ॥ मो० ॥ जूठानर पग जूमिशोधन, जल ठटकाव करयो रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ मंत्रनेद रह नारी न कीजें, अवती आल ह्यो रे ॥ मो० ॥ कूट लेख मिथ्या उपदेशों, व्रतको पाणी जग्यो रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ कमल शेठ ए व्रतसे सुखियो, जूठसें नंदकल्यो रे ॥ मो० ॥ श्रीशुनवीर वचन परतीतें, कल्पवृक्ष फल्यो रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ वासं य० ॥ स्वा० ॥ इति द्वितीयव्रते तृतीयवासपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

॥अथ तृतीयव्रते चतुर्थपुष्पमालपूजा प्रारंजः॥

॥ दोहा ॥

॥ सुरतरु जायने केतकी, गुंथी फूलनी माल ;

त्रिशलानंदन पूजीयें, वरियें शिव वरमाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ हुंने अमारो हरजीवनजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुकंठें ठवि फूलनी माला, मूलथकी व्रत उच्चरियें रे ॥ चित्त चोखें चोरी नवि करियें ॥ स्वामीअदत्त कदापि न लीजें, भेद अढार परिहरियें रे ॥ चित्त० ॥ १ ॥ नवि करियें तो भवजल तरियें रे ॥ चित्त० ॥ सातप्रकारें चोर कह्यो छे, तृण तुसमात्र न कर धरियें रे ॥ चित्त० ॥ न० ॥ २ ॥ राजदंम उपजे ते चोरी, नातुं पडयुं वलि विसरियें रे ॥ चित्त० ॥ आ भव परभव चोरी करतां, वध बंधन जीवित हरियें रे ॥ चित्त० ॥ न० ॥ ३ ॥ चोरीनुं धन न ठरे घरमां, चोर सदा भूखें मरियें रे ॥ चित्त० ॥ चोरनो कोइ धणी नवि होवे, पासें बेठां पण मरियें रे ॥ चित्त० ॥ न० ॥ ४ ॥ परधन लेतां प्राणज लीधां, पंचेंद्रिहत्या वरियें रे ॥ चित्त० ॥ व्रत धरतां जगमां जस उज्ज्वल, सुरलोकें जइ अवतरियें रे ॥ चित्त० ॥ न० ॥ ५ ॥ तिहां पण सासय पडिमा पूजी, पुण्य तणी पोठी भरियें रे ॥ चित्त० ॥ जलकलशा भरी जिनअभिषेकें, कल्पतरु रूडो फलियें रे ॥ चित्त० ॥

न० ॥ ६ ॥ धनदत्त शेठ गयो सुरलोकें, ए व्रतशाखा विस्तरियें रे ॥ चित्त० ॥ श्रीशुनवीर जिनेश्वर जगतें, सासयसुख शिवमंदिरियें रे ॥ चित्त० ॥ न० ॥ ७ ॥ ॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ पुष्पमालां य० ॥ स्वा० ॥ इति तृतीयव्रते चतुर्थपुष्पमालपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

॥ अथ चतुर्थव्रते पंचमदीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथुं व्रत हवे वरणवुं, दीपक सम जस ज्योत;
केवल दीपक कारणे, दीपकनो उद्योत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ वृंदावनना वासी रे, विठ्ला तें मुजने ॥ ॥ विसारी ॥ ए देशी ॥

॥ ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारें, ए व्रत जगमां दीवो ॥ परमातम पूजीने विधिशुं, गुरु आगल व्रत लीजें ॥ अतिचार पण दूर करीने, परदारा दूर कीजें ॥ मेरे० ॥ निजनारी संतोषी श्रावक, अणुव्रत चोथुं पाले ॥ देव तिरी नर नारी नजरें, रूप रंग नवि धारे ॥ मेरे० ॥ १ ॥ व्रतने पीडा कामनी क्री

डा, डुरगंधा जे बाली ॥ नाशाविण नारी पण रागें, पं
चासकमां टाली ॥ मेरे० ॥ विधवा नारी बाल कुमा
री, वेश्या पण परजाती ॥ रंगें राती डुरबल गाती,
नरमारण ए काती ॥ मेरे० ॥ २ ॥ परनारीहेतें श्रा
वकनें, नव वाड्यो निरधारी ॥ नारायण चेडा महा
राजें, कन्यादान निवारी ॥ मेरे० ॥ जरतरायने राज
जलावी, राम रह्या वनवासें ॥ खरदूषण नारी सत्रि
कारी, देखी न पड्या पासें ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ दश शि
र रावण रणमां रोल्यो, सीता सतीमां मोटी ॥ सर्व
थकी जो ब्रह्मव्रत पाले, नावे दान हेम कोटी ॥ मे
रे० ॥ वैतरणीनी वेदना मांहे, व्रत जांगे ते पेसे ॥
विरतिने परणाम करीने, इंद्रसजामां बेसे ॥ मेरे०
॥ ४ ॥ मदिरा मंसथी वेदपुराणें, पाप घणुं परदारा ॥
विषकन्या रंभा पण अंधा, व्रत जंजक अवतारा ॥
मेरे० ॥ व्रत संजाले पाप पखाले, सुर तस वंछित
साधे ॥ कल्पतरु फलदायक ए व्रत, जग जस कीर
ति वाधे ॥ मेरे० ॥ ५ ॥ दशमे अंगें बत्रीश उपम,
शीलवती व्रत पाली ॥ नाथ निहाली चरणे आयो,
नेह नजर तुम जाली ॥ मेरे० ॥ हाथी मुखसें दा
णो निकसे, कीडी कुटुंब सहु खावे ॥ श्रीशुजवीर जि

नेश्वर साहिब, शोजा अम शिर पावे ॥ मेरे० ॥ ६॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत०॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ दीपं य० ॥ स्वा० ॥ इति चतुर्थव्रते पंचम दीपकपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ अथ पंचमव्रते षष्ठधूपपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अणुव्रत पंचम आदरी, पांच तजी अतिचार;
जिनवर धूपें पूजीयें, त्रिशला मात मल्हार ॥१॥

॥ ढाल ॥ मारी अंबाना मांम्डवडा हेठ ॥ ए-देशी ॥

॥ मनमोहनजी-जगतात, वात सुणो जिनराजजी रे ॥ नवि मलियो आ संसार, तुम सरिखो रे श्रीनाथजी रे ॥ कृष्णागर धूप दशांग, उखेवी करुं वीनति रे ॥ तृष्णातरुणी रसलीन, हुं रझल्यो रे चारे गति रे॥ तिर्यंच तरुनां मूल, राखी रह्यो धन उपरें रे॥ पंचेंडि फणीधररूप, धन देखी ममता करे रे ॥ मन० ॥ १ ॥ सुर लोजीडे संसार, संसारी धन संहरे रे ॥ त्रीजे जव समरादित्य, साधु चरित्रने सांजले रे ॥ नरजव मांहे धनकाज, जाऊ चढयो रणमां रडयो रे ॥ नीचसेवा मूकी लाज, राज्यरसें रणमां पडयो

॥ अथ सप्तमव्रते अष्टमाष्टमांगलिकपू ॥
॥ जा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्ट मंगलनी पूजना, करियें करि परणाम ;
आठमी पूजायें नमो, भावमंगल जिननाम ॥ १ ॥
उपभोगें परिभोगथी, सप्तम व्रतउच्चार ;
बीजुं गुण व्रत एहना, वीश तजो अतिचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सुतारीना बेटा तुनें वीनवुं रेलो ॥
॥ ए देशी ॥

॥ व्रत सातमे विरति आदरुं रेलो, करो साहिब जो मुज मेहेरजो ॥ तुज आगम अरिसो जोवतां रे लो, दूर दीठुंछे शिवपुर सहेरजो ॥ मने संसा रशेरी वीसरी रेलो, जिहां बार पाडोसी चाड जो ॥ नित्य रेहेवुंने नित्य वढवाड जो ॥मने०॥१॥ फल तं बोल अन्न उपभोगमां रेलो, घर नारी चीवर परिभोग जो ॥ करी मान नमुं नित्य नाथने रेलो, जेथी जाए भवोभव शोगजो ॥ मने० ॥ २ ॥ प्रभुपूजा रचुं अष्ट मंगलें रेलो, परहासी तजी अति रोषजो ॥ अति उ द्भटवेश न पेहेरियें रेलो, नवि धरियें मलिनता वेश

जो ॥ मने० ॥ ३ ॥ चार मोटी विगय करी वेगली रे
जो, दश बार अनक्ष निवारजो ॥ तिहां रात्रीनोजन
करतां थकां रेलो, मंजार गुहड अवतारजो ॥ म
ने० ॥ ४ ॥ वले राक्षस व्यंतर नूतडां रेलो, केश
कंटक जूनो विकारजो ॥ त्रण मित्रचरित्रने सांनली
रेलो, करो रात्रीनोजन चोवीहारजो ॥ मने० ॥५॥
गाडां वहेल वेचे नाडां करे रेलो, अंगारकरम वनक
र्मजो ॥ सर कूप उपल खणतां थकां रेलो, नवि र
हे श्रावकनो धर्मजो ॥ मने० ॥ ६ ॥ विप शस्त्र वें
पार दांत लाखनो रेलो, रस केश निलंठन कर्मजो ॥
शुक मेनां न पालियें पांजरे रेलो, वनदाहें दहे शि
वशर्मजो ॥ मने० ॥ ७ ॥ यंत्रपीलण सर नवि शो
षीयें रेलो, तिणे करजो मया महाराजजो ॥ नहीं
खोट खजाने दिजीयें रेलो, शिवराज वधारी लाज
जो ॥ मने० ॥ ८ ॥ राजमंत्री सुताफल पामती रे
लो, व्रतसाधक बाधक टालजो ॥ शुनवीर प्रर्चना ना
मथी रेलो, नित पामियें मंगलमालजो ॥ मने० ॥
॥ ए ॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ अष्टमंगलं य०॥ स्वा०॥ इति
सप्तमव्रते अष्टमाष्टमांगलिकपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥

॥ अथाष्टमव्रते नवमाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दंमायें विणहेतुयें, वलगे पाप प्रचंम ;
प्रभु पूजी व्रतकारणें, ते कहुं अनरथ दंम ॥ १ ॥
स्वजन शरीरने कारणें, पापें पेट नराय ;
ते नवि अनरथ दंमछे, इम नांखे जिनराय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ वेगलो रहेने वरणागीया ॥ ए देशी ॥

॥ नेक नजर करो नाथजी, जिम जाये दालिदर आ जथी जीहो ॥ नेक० ॥ अमें अक्षत उज्ज्वल तंडुलें, करी पूजा कहुं जिनआगलें जीहो ॥ ने० ॥ आवी पोहोतो हुं पंचम कालमां, संसार दावानल जालमां जीहो ॥ ने० ॥ १ ॥ ध्यान आरति रौद्रें मंमियो, गाम गाम अनर्थें दंमियो जीहो ॥ ने० ॥ उपदेश में पापनो दाखियो, कुडीवातें थयो हुं साखियो जीहो ॥ ने० ॥ २ ॥ आरंभ कस्या घणी नातिना, में युद्ध कस्यां केइ जातिनां जीहो ॥ ने० ॥ रथ मु शल माग्यां आपियां, जातां पंथें तरुवर चांपि यां जीहो ॥ ने० ॥ ३ ॥ वलि वादें ते वृषभ दोडाविया, करी वातोने लोक लढाविया जीहो ॥

ने० ॥ चारविकथायें पुण्यधन हारियो, जिम अनिति पुरें व्यवहारियो जीहो ॥ ने० ॥ ४ ॥ तिहां चार धूं तारा वाणिया, नरे पेट ते पापें प्राणिया जीहो ॥ ने० ॥ रण घंटा वचन जो पालियुं, तो रत्न चूडे धन वालियुं जीहो ॥ ने० ॥ ५ ॥ तिम अरिहानी आणा पालशुं, व्रत लेइने पाप पखालशुं जीहो ॥ने०॥ अतिचार ते पांच निवारशुं, गुरुशिक्षा ते दिलमां धारशुं जीहो ॥ ने० ॥ ६ ॥ वीरसेन कुसुमसिरि दो जणां, व्रत पाली थयां सुखियां घणां जीहो ॥ ने०॥ अमे पामियें लीलविलासने, शुभवीर प्रभुने शासनें जीहो ॥ने०॥ ७ ॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत०॥ १॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ अक्षतं य० ॥ स्वा० ॥ इति अष्टमव्रते नवमाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ए ॥

॥ अथ नवमव्रते दशमदर्पणपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ दशमी दर्पणपूजना, धरी जिन आगल सार;
आतिमरूप निहालिने, कहुं शिक्षाव्रत चार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सुण गोवालणी ॥ ए देशी ॥

॥ हे सुखकारी ! आ संसारथकी जो मुजने उद्धरे ॥

हेउपगारी! ए उपगार तुमारो कदिय न वीसरे ॥ नव
में सामायक उच्चरियें, अमें दर्पणनी पूजा करियें,
निज आतमरूप अनुसरियें, समता सामायक संव
रियें ॥ हे सु० ॥ १ ॥ सामान्यें जिहां मुनिवर जा
ले, अतिचार पांच एहना टाले, साधुपरें जीवदया
पाले, निजघरचैत्यें पोषधशालें ॥ हे० ॥ २ ॥ राजा
मंत्रीने व्यवहारी, घोडा रथ हाथी शणगारी, वाजि
त्र गीत आगल पाला, परशंसे षटदरशनवाला ॥
हे० ॥ ३ ॥ इंणी रीतें गुरुपासें आवी, करे सामाय
क समता लावी, घडी बे सामायक उच्चरियें, वली ब
त्रीश दोषने परिहरियें ॥ हे० ॥ ४ ॥ लाख उगणशा
ठ बाणुं कोडी, पचवीश सहस नवशें जोडी, पचवी
श पल्योपम जाजेरो, ते बांधे आयु सुरकेरो ॥ हे०॥
॥ ५ ॥ सामायक व्रत पाली युगतें, ते जव धनमित्र
गयो मुगतें, आगमरीतें व्रत हुं पालुं, पंचमगुणगणुं
अजुवालुं ॥ हे० ॥६॥ तुमे ध्येयरूप ध्याने आवो, शु
जवीर प्रजु करुणा लावो, नहीं वार अचल सुख
साधंते, घडी दोय मलो जो एकांतें ॥ हे० ॥ ७ ॥
॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥१॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ

परम० ॥ दर्प्पणं य० ॥ स्वा० ॥ इति सामायक नवमव्रते दशमदर्प्पणपूजा समाप्ता ॥ १० ॥

॥ अथ दशमव्रते एकादशनैवेद्य ॥

॥ पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ विग्रहगति दूरें करी, आपो पद अणाहार;
एम कही जिनवर पूजीयें, ठवी नैवेद्य रसाल ॥१॥

॥ ढाल ॥ तेजें तरणीथी वडो रे ॥ ए देशी ॥

॥ दशमें देशावगासिकें रे, चउद नियम संखेप ॥ विस्तारें प्रभु पूजतां रे, न रहे कर्मनो लेपहो जिनजी ॥ भक्ति सुधारस घोलनो रे, रंग बन्यो हे चोलनो रे, पलक न छोडयो जाय ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एक मुहूरत दिनरातिनुं रे, पक्ष मास परिमाण ॥ संवछर इवा लगें रे, ते रीते पचखाणहो जिनजी ॥ भक्ति० ॥ २ ॥ बारे व्रतना नियमनो रे, संखेप एहमां थाय ॥ मंत्रबले जिम वीछिनुं रे, झेर ते डंकें जायहो जिनजी ॥ भक्ति० ॥ ३ ॥ गंठसी घरसी दीपसी रे, एहमां सर्व समाय ॥ दीपक ज्योतें देवता

रे, चंदवतंसगरायहो जीनजी ॥ नक्ति० ॥ ४ ॥ पण अतिचार निवारीने रे, धनद गयो शिवगेह ॥ श्रीशुनवीरशुं माहरे रे, साचो धर्मसनेहहो जिनजी ॥ नक्ति० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम०॥ नैवेद्यं य०॥ स्वा०॥ इति दशमदेशावगासिकव्रते एकादशनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ११॥

॥ अथ एकादशव्रते द्वादशध्वजपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पडह वजावि अमारनो, ध्वज बांधो शुनध्यान ;
पोसह व्रत अगियारमे, ध्वजपूजा सुविधान ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ वगडानो वासी रे मोर शिद मारियो ॥
॥ ए देशी ॥

॥ प्रनुपडिमा पूजाने पोसह करियें रे, वातने विसारी रे विकथाचारनी ॥ प्रायें सुरगति साधे पर्वने दिवसें रे, धर्मनी ठाया रे तरु सहकारनी ॥ शीतल नहीं ठाया रे आ संसारनी, कुडीठे माया रे आ संसारनी ॥ काचनी काया रे ठेवट ठारनी, साची एक माया रे जिनअणगारनी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अय

सी नांगें देशथकी जे पोसहरें, एकासण कह्युं रे श्रीसिद्धांतमें ॥ निजघर जइने जयणामंगल बोली रे, भाजनमुख पुंजी रे शब्दविना जमे ॥ शीतल० ॥ कु० ॥ का० ॥ साची० ॥ २ ॥ सर्वथी आठ पहोर नो चोवीहार रे, संथारो निशि रे कंबल मानो ॥ पांचे परवी गौतम गणधर बोल्या रे, पूरव आंक तीस गुणोठे लानो ॥ शी० ॥ कु० ॥ का० ॥ सा० ॥ ३ ॥ कार्तिकशेठें पाम्यो हरिअवतार रे, श्रावक दश वीश वरसें सरगें गया ॥ प्रेतकुमार विराधकना वने पाम्यो रे, देवकुमार व्रत रे आराधक थया ॥ शी० ॥ कु० ॥ का० ॥ सा० ॥ ४ ॥ पण अतिचार तजी जिनजी व्रतपालुं रे, तारक नाम साचुं रे जो मुज तारशो ॥ नाम धरावो निर्यामक जो नाथ रे, भवोदधिपार रे तो उतारशो ॥ शी० ॥ कु० ॥ का० ॥ सा० ॥ ५ ॥ सुलसादिक नवजणने जिनपद दीधां रे, करमें ते वेला रे वसियो वेगलो ॥ शासन दीठुं ने वलि लागुं मीठुं रे, आशाभर आव्यो रे स्वामी एकलो ॥ शी० ॥ कु० ॥ का० ॥ सा० ॥ ६ ॥ दायक नाम धरावो तो सुख आपो रे, सुरतरुनी आगें रे शी बहु मागणी ॥ श्रीशुभवीर प्रभुजी मुंघे कालें रे,

दियंतां दान रे शाबासी घणी ॥ शी० ॥ कु० ॥ का० ॥ सा० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥ मंत्रः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ ध्वजं य० ॥ स्वा० ॥ इति एकादशव्रते द्वादशध्वजपूजा समाप्ता ॥ १२ ॥

॥ अथ द्वादशव्रते त्रयोदशफलपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ अतिथि कह्या अणगारने, संविभाग व्रत तास;
फलपूजा करी तेरमी, मागो फल प्रभुपास ॥१॥

॥ ढाल ॥ भमरा भूधर थें नाव्यो ॥ ए देशी ॥

॥ उत्तम फल पूजा कीजें, मुनिने दान सदा दीजें, बारमे व्रत लाहो लीजें रे ॥ श्रावकव्रत सुरतरु फलियो ॥ मनमोहन मेलो मलियो रे ॥ श्रावक० ॥१॥ ए आंकणी ॥ देश काल सरधा क्रमियें, उत्तरपारणे दान दियें, तेहमां पण नवि अति चरियें रे ॥ श्रा० ॥ २ ॥ विनति करी मुनिने लावे, मुनिबेसण आसण ठावे, पडिलाभे पोतें भावें रे ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ दश मगलां पूठें जावे, मुनिदाने जे नवि आवे, व्रत धारी ते नवि खावे रे ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ मुनि अणते जमे

दिशि देखी, पोसह पारणविधि जांखी, धर्मदास गणी छे साखी रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ एकादश पडिमा वहिया, सुरउपसर्गे नवी पडिया, कामदेवप्रमुख चडिया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गुणकर शेठ गयो मुगतें, हुं पण पामुं ए युगतें, श्रीशुभवीर प्रभु जगतें रे ॥आ०॥७॥

॥ अथ सर्वोपरि गीतं ॥

॥ निशदिन जोउं वाटडी. घेर आवो ढोला ॥
॥ ए देशी ॥

॥ विरतिपणे हुं विनवुं, प्रभु अम घर आवो ॥ सेवक स्वामीभावथी, नथी कोइनो दावो ॥ वि० ॥ १ ॥ लीलविलासी मुक्तिना, मुज तेह देखावो ॥ मन मे लो मेली करी, फोकट ललचावो ॥ वि० ॥ २ ॥ रंग रसीला रीझीने, त्रिशलासुत आवो ॥ थाय सेव क तुम आवते, चउद राजमां चावो ॥ वि० ॥ ३ ॥ पंथवचें प्रभुजी मल्या, हजु अरधे जावो ॥ निर्भय निजपुर पामतां, प्रभु पाको वोलावो ॥ वि०॥ ४ ॥ श्रेणि चढी शैलेशियें, परिशाटन भावो ॥ एक सम य शिवमंदिरें, ज्योतें ज्योत मिलावो ॥ वि० ॥ ५ ॥ नाटक दुनियां देखते, नवि होय अभावो ॥ श्रीशुभ

वीरने पूजतां, घेर घेर वधावो ॥ वि० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ श्रद्धासंयुत० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ फलं य० ॥ स्वा० ॥ इति द्वादशव्रते त्रयोदशफल पूजा समाप्ता ॥ १३ ॥

॥ अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गायो गायो रें, महावीर जिनेश्वर गायो ॥ वीरमुखें व्रत उच्चरियां जिम, नर नारी समुदायो ॥ एकशो चोवीश अतिचार प्रमाणे, गाथायें नाव बनायो रे ॥ महा० ॥ १ ॥ व्रतधारीने पूजानो विधि, गणधर सूत्र गुंथायो ॥ निर्जयदावे शिवपुर जावे, जिम जग माल बपायो रे ॥ महा० ॥ २ ॥ तपगछ श्री विजयसिंहसूरिना, सत्यविजय सत्य पायो ॥ कपूर विजय गुरु खिमाविजय तस, जस विजयो मुनिरायो रे ॥ महा० ॥ ३ ॥ श्रीशुभविजय सुगुरु सुपसायें, श्रुत चिंतामणि पायो ॥ विजयदेवेंद्र सूरिश्वरराज्यें, ए अधिकार रचायो रे ॥ महा० ॥ ४ ॥ कष्ट निवारें वंछित सारे, मधुरे कंठें मलायो ॥ राज नगरमां पूजा नणावी, घरघर उछव थायो रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ मुनि वसु नाग शशी संवत्सर, (१८८७) दीवालीदिन

गायो ॥ पंमित वीरविजय प्रनुध्यानें, जगजस पडह वजायो रे ॥ मह्वा० ॥ ६ ॥

॥ इति पंमितश्रीवीरविजयजी कृत-
द्वादशव्रतपूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ ॥

॥ पंमितश्रीवीरविजयजीकृत पिस्तालीश ॥
॥ आगमनी अष्टप्रकारी पूजा प्रारंनः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथमजलपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर पासजी, साहिब सुगुणगरीठ ;
शुनगुरु चरण पसायथी, श्रुतनिधि नजरें दीठ ॥ १ ॥
शासननायक वंदियें, त्रिशलामात मल्हार ;
जस मुखथी त्रिपदी लही, सूत्र रचे गणधार ॥ २ ॥
सुधरमा गणधर तणी, रचना वरते सोय ;
द्वादश अंगथकी अधिक, सूत्र नहीं जग कोय ॥ ३ ॥

आगें आगम बहु हुंता, अर्थेविदित जगदीश ;
कालवशें संप्रति रह्या, आगम पिस्तालीश ॥ ४ ॥
आथमते केवल रवि, मंदिरदीपक ज्योति ;
पंचमआरे प्राणीने, आगमनो उद्योत ॥ ५ ॥
प्रथम ज्ञान पछी दया, दशवैकालिक वाण ;
वस्तुतत्व सवि जाणियें, ज्ञानथी पद निरवाण ॥६॥
ज्ञान भगति करतां थकां, पूजा जिनअणगार ;
ते कारण आगम तणी, पूजा भक्ति विशाल ॥ ७ ॥
ज्ञानोपगरण मेलियें, पुस्तक आगल सार ;
पीठरची जिनबिंबने, थापीजें मनोहार ॥ ८ ॥
ज्ञानउदय अरिहा तणी, सांभली देशना सार ;
देव देवी नंदिसरें, पूजा विविध प्रकार ॥ ए ॥
तिम आगम हयडे धरी, पूजो श्रीजिनचंद ;
ध्येय ध्यान पद एकथी, पामो पद महानंद ॥१०॥
न्हवण विलेपन कुसुमनी, धूप दीप जलकार ;
अक्षत नैवेद्य फल तणी, पूजा अष्टप्रकार ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ अनि हांरे वाह्लोजी वायेछे वांस ॥
॥ ली रे ॥ ए देशी ॥

॥ अनि हांरे गंगा क्षीरसमुद्रना रे, जलकलश ज

री नर नारि, ज्ञानें वडा श्रुतकेवली रे॥ श्र०॥ न्ह वण करो प्रभु वीरने रे, दृष्टिवादना जाणण हार ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ श्र० ॥ पांचे भेदछे तेहना रे, सांभ लतां विकसे नाण ॥ ज्ञा० ॥ श्र० ॥ परिकरमें सात श्रेणियो रे, अठ्याशी सूत्रवखाण ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ श्र० ॥ पूर्वगतें चउद पूर्वछे रे, महामंत्रने विद्यानरे ल ॥ ज्ञा० ॥ श्र० ॥ जंबूवेलंधर देवता रे, धरे पूर्व समुद्रनी वेल ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ श्र० ॥ दशवस्तु विन यी जण्या रे, पहेले पूरव उतपाद (१) ॥ ज्ञा० ॥ श्र० ॥ वस्तु चउद अग्रायणी रे, (२) अड वस्तु वीर्यप्रवाद (३) ज्ञा० ॥४॥ श्र०॥ अस्तिप्रवादें (४) अढारछे रे, बार वस्तु ज्ञानप्रवाद (५) ॥ ज्ञा०॥श्र०॥ सत्यप्रवादें (६) दोय वस्तुछे रे, शोल वस्तु आ त्मप्रवाद (७) ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्र० ॥ कर्मप्रवादें (८) त्रीश धारीयें रे, वीश वस्तु पूरव पच्चरकाण (९) ॥ ज्ञा० ॥ श्र० ॥ पन्नर विद्या प्रवादमां रे, (१०) बारवस्तु कही कल्याण (११) ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ श्र० ॥ प्राणावायमां (१२) तेरछे रे, त्रीश वस्तु किरियाविशाल (१३) ॥ ज्ञा० ॥ श्र० ॥ पणवीशं करी सोहतुं रे, चउदमुं लोकबिंदु (१४)

सार ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ अ० ॥ पुंजमशीलखे त्र्यशीं रे, त्र्याशी गज शोल हजार ॥ ज्ञा० ॥ अ० ॥ श्रीशु भवीरना गणधरु रे, रचतां त्रीजो अधिकार ॥ज्ञा०॥८॥

॥ दोहा ॥

॥ दश पूरवपूरण भणे, लब्धिक्षीराश्रव होय ;
तिणे जिनकल्प निवारियो,ज्ञानसमो नहिं कोय॥१॥

॥ अथ गीतं ॥ मनमोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ भेद चोथो हवे सांभलो ॥ मनमोहन मेरे ॥ दृष्टि वाद अनुयोग ॥ म० ॥ दोय भेदें करी शीखियो ॥ म० ॥ जंबूगुरु संयोग ॥ म० ॥ १ ॥ पंचमभेदें चूलिका ॥ म०॥ पहेले पूर्वें चार ॥ म० ॥ बारने आठ दश चूलिका ॥ म० ॥ चोथा पूरवलगें सार ॥ म० ॥ २ ॥ दश पूरवें नथी चूलिका ॥ म० ॥ नंदीसूत्र विचार ॥ म० ॥ दृष्टिवाद ए बारमुं ॥ म० ॥ अंग हतुं सुखकार ॥ म० ॥ ३ ॥ बार वरस डुकालियें ॥ म० ॥ बारमुं अंग ते लीध ॥ म० ॥ संप्रतिकालें न वि पडे ॥ म० ॥ एहवो काल प्रसिद्ध ॥ म० ॥ ४ ॥ मंदमति परमादथी ॥ म० ॥ पूर्वगयां अविलंब ॥ म० ॥ श्रीशुभवीरने शासने ॥ म० ॥ पूजो आगम

जिन बिंब ॥ म० ॥ ५ ॥ इति प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे पिस्तालीश वरणवुं, कलियुगमां आधार ;
आगम अगम अरथ भर्यां, तेहमां अंग अग्यार॥१

॥ ढाल ॥ इमनरागिणी, धनधन जिनवाणी ॥ ए देशी ॥

॥ चंदनपूजा चतुर रचावो, नागकेतु परें भावो रे ॥ धनधन जिनवाणी ॥ राय उदाइ प्रभुगुण गावे, पद मावतीने नचावे रे ॥ ध० ॥ १ ॥ काल सदा जे अ रिहा थावे, केवल नाण उपावे रे ॥ ध० ॥ आचारां ग (१) प्रथम उपदेशें, नामनी भजनाशेषें रे ॥ ध० ॥ २ ॥ आचार रथ वेहेतां मुनि धोरी, बहुश्रु त हाथमां दोरी रे ॥ ध० ॥ पंच प्रकारें आचार व खाणे, गलिया बलद किम ताणे रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ दो श्रुत खंध आचारांग केरा, संखित अणुउगदारा रे ॥ ध० ॥ संख्याति निरयुक्ति कहीश, अश्ययणा पण वीश रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ पदनी संख्या सहस अढार, नित गणता अणगार रे ॥ ध० ॥ सूत्रकृतांगें (२)

नावजीवादि, त्रणशें त्रेशठ वादी रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ अध्ययन त्रेवीश ठे बीजे, अवर पूरव परें लीजें रे ॥ ध० ॥ डुगुणां पद हवे सघले अंगें, दशगाणा ठाणांगे (३) रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ दश अध्ययने श्रुतखंध एको, हवें समवायांग (४) ठेको रे ॥ ध० ॥ शत समवाय श्रुतखंध एकें, धारियें अर्थ विवेकें रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ नगवती (५) पंचमुं अंग विशेशा, दश हजार उद्देशा रें ॥ ध० ॥ एकतालीश शतकें शुनवीरें, गौतम प्रश्नहजूरें रे ॥ ध० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निरयुक्ति प्रतिपत्तियो, सघले ते समनाव ;
बीजी अर्थपरूपणा, ते सवि जुजुआ नाव ॥१॥

॥ अथ गीतं ॥ जुंबखडानी देशी ॥

॥ ज्ञाताधर्म (६) वखाणीयें रे, दश बोल्या तिहां वर्ग ॥ प्रन्नु उपदेशिया ॥ कंठ ते कोडी कथा कही रे, सांनलतां अपवर्ग ॥ प्र० ॥ १ ॥ उगणीश अध्ययनें करी रे, बे सुत खंध सुनाव ॥ प्र० ॥ उपासग दशांग (७) मां रे, दश श्रावकना नाव ॥ प्र० ॥ ॥ २ ॥ अंतगडें (८) अड वर्गठे रे, अणुत्तरोववा

ई (ए) त्रण वर्ग ॥ प्र० ॥ एकसूत्रें सुगति वखा रे, बीजे गया जे सग्गं ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रश्नव्याकरण (१०) ज सूत्रमां रे, दश अध्ययन वखाण ॥ प्र० ॥ सूत्रविपाकें (११) सांजलो रे, वीश अध्ययन प्रमाण ॥ प्र० ॥ ४ ॥ बे सुतखंधें जाखिया रे, डुःखसुख केरा जोग ॥ प्र० ॥ इम एकादश अंगनी रे, जक्ति करो शुरुयोग ॥ प्र० ॥ ५ ॥ आगमने अवलंबतां रे, उलखियें अरिहंत ॥प्र०॥ श्रीशुजवीरने पूजतां रे, पामो सुख अनंत ॥प्र०॥ ६ ॥ इति द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अंग तणा उपांग जे, वारे कह्यां जगवंत ;
गणधर पूरवधर तणी, रचना सुणियें संत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग सारंग ॥ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानावरण दूरें करो रे मित्ता, पामी अंग उपांग ॥ फूल पगर पूजा रचो रे मित्ता, वीरजिनेश्वर अंग रे, रंगीला मित्ता ॥ ए प्रजु सेवोने ॥ ए प्रजुसेवो सान

मां रे मित्ता, ज्ञान लह्यो भरपूर रे, रंगीला मित्ता ॥ ए प्रभु सेवोने ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सांमइयुं उववाई (१) मां रे मित्ता, करतो कोणिक भूप ॥ अंबड शिष्यने वरणव्या रे मित्ता, प्रश्न ते सिद्ध स्वरूप रे, रंगीला मित्ता ॥ ए प्र० ॥ २ ॥ रायपसेणि सूत्र (२) मां रे मित्ता, सूर्याभनो अधिकार ॥ जीवाभिगम (३) त्रीजुं सुणो रे मित्ता, दश अध्ययन विचार रे, रंगीला मित्ता ॥ ए० ॥ ३ ॥ श्यामसूरि रचना करी रे मित्ता, पन्नवणा महासूत्र (४) ॥ बत्रीश पद गुरुपासथी रे मित्ता, धारो अर्थ विचित्र रे, रंगीला मित्ता ॥ ए० ॥ ४ ॥ जंबूदीव पन्नत्तीयें (५) रे मित्ता, जंबूद्वीप विचार ॥ छठ्ठा सूरपन्नत्ती (६) मां रे मित्ता, रविमंमल ग्रहचार रे, रंगीला मित्ता ॥ ए० ॥ ५ ॥ चंदपन्नत्ती पाहुडे (७) रे मित्ता, ज्योतिशचक्र विशेष ॥ आगम पूजो प्राणिया रे मित्ता, कहे शुभवीरजिनेश रे, रंगीला मित्ता ॥ ए० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नवमंमलमें न देखियो, प्रभुजीनो देदार ;
आगमपंथ लह्या विना, रमल्यो हुं संसार ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ वीरजिणंद जगत उपगारी ॥
॥ ए देशी ॥

॥ केतकी जायनां फूल मंगावी, पूजो अंग उपांगजी ॥ बंनीलीपी श्रीगणधरदेवें, प्रणमी नगवती अंग जी ॥ केत० ॥ १ ॥ आठमु निरयावलि (८) उपांगें, देवादिक अधिकारजी ॥ कप्पवर्मंसग (९) नवम उपांगें, दश अध्ययन उदारजी ॥ केत० ॥ २ ॥ पुफिया (१०) नामे उपांग ठे दशमुं, वली पुफचूलिया (११) जाणजी ॥ बारमुं वन्हिदशायें (१२) सघले, दश अध्ययन प्रमाणजी ॥ केत० ॥ ३ ॥ गीतारथ मुख अमीय जरंतां, आगम लागुं मीठजी ॥ दूर गई लोकसन्नाठारी, तव प्रनुदरशन दीठ जी ॥ केत० ॥ ४ ॥ दरशनथी जो दरशन प्रगटे, विघटे नवजल पूरजी ॥ नावकुटुंबमें मंदिर मारुं, श्री शुनवीर हजूरजी ॥ केत० ॥ ५ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंनः ॥
॥ दोहा ॥

॥ आज पयन्ना ठे घणां, पण लहो एक अधिकार ;

दशपयन्ना तिणे गण्यां, पिस्तालीश मझार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ साचुं बोलो सामलिया ॥ ए देशी ॥

॥ एकजन श्रुतरसियो बोले रे ॥ हो मनमान्या मोह नजी ॥ प्रभु ताहरे नहीं कोय तोलें रे ॥ हो मन०॥ अमे धूपनी पूजा करियें रे ॥ हो० ॥ दुरगंध अना दिनी हरियें रे ॥ हो० ॥ १ ॥ तुम दर्शन लागे प्यारुं रे ॥ हो० ॥ अंते छे शरण तुमारुं रे ॥हो०॥ चउसरण (१) पयन्नु पहेलुं रे ॥ हो० ॥ अमे श रण कयुं छे वहेलुं रे ॥ हो० ॥ २ ॥ लही अर्थ अनोपम रीझुं रे ॥ हो० ॥ आउरपचरकाण (२) ते बीजुं रे ॥ हो० ॥ सांभलतां भक्तपरिज्ञा रे (३) ॥ हो० ॥ परिहरशुं चारे संज्ञा रे ॥ हो० ॥ ३ ॥ संथारापयन्नो (४) सिधो रे ॥ हो० ॥ सुकोशल मुनियें कीधो रे ॥ हो० ॥ भांषी तंडुल वियाली (५) रे ॥ हो० ॥ तुमे गर्भनी वेदन टाली रे ॥ हो० ॥ ४ ॥ अमने पण दुःख ए मोटुं रे ॥ हो० ॥ सनमुख न जु उ ते खोटुं रे ॥ हो० ॥ कांइ मेहेर नजरथी देखो रे ॥ हो० ॥ शुं रागीने उवेखो रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ रंग लागो चोल मजीठें रे ॥ हो० ॥ नवि जाए झाकण

दीवे रे ॥ हो० ॥ अमे रागी थइने कहीशुं रे॥हो०॥
शुभवीरने चरणे रहीशुं रे ॥ हो० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रभुचरणे रहेतां भजे, ज्ञानसुधारसकंद ;
जिनवाणी रसिया मुनि, पामे परमानंद ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग मालवी ॥ वंदो वीर ॥
॥ जिनेसर राया ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिशलानंदन वदन कीजें, ज्ञान अमृत रस पीजें रे ॥ बडो चंदा विज्झय (६) पयन्नो, विनयें वडो मुनि धन्नो रे ॥ त्रिश० ॥ १ ॥ गुरुविनयें सुकलायें वाधे, राधावेधतें साधे रे ॥ देवेंदथुई (७) पयन्ने रसिया, संथारे मुनि वसिया रे ॥ त्रिश० ॥ २ ॥ मरण समाधि (८) पयन्नेभावें, प्रभुसाथें लय लावे रे ॥ महापच्चखाण (९) पयन्नु गावे, पाप सकल वोसिरावें रे ॥ त्रिश० ॥ ३ ॥ गणिविज्झायें (१०) भाव घणेरा, जाणे मुनि गंभीरा रे ॥ साधे कार्य लगननी होरा, श्रीशुभवीर चकोरा रे ॥ त्रिश० ॥ ४ ॥
इति चतुर्थधूपपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमदीपकमालपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानावरणी तिमिरने, हरवा दीपकमाल ;
ज्योतसें ज्योत मिलाइयें, ज्ञानविशेष विशाल॥१॥

॥ ढाल ॥ चंद्रप्रभु जिनचंद्रमा रे ॥ ए देशी ॥

॥ जगदीपकनी आगलें रे, दीपकनो उद्योत ॥ करतां पूजा पांचमी रें, भाव दीपकनी ज्योतहो जिनजी ॥ तेजें तरणीथी वडो रे, दोय शिखानो दीवडो रे, झलके केवल ज्योत ॥ १ ॥ छेदसूत्र जिन भांखियां रें, निशिथ (१) धुरसिद्धांत ॥ आलोयण मुनिराजनें रे, धारे गंभीरवंतहो जिनजी ॥ ते० ॥ दो० ॥ झ० ॥ २ ॥ जीतकल्प (२) मां सेवता रे, चरण करण अणगार ॥ पंचकल्पछेदें (३) भण्या रे, पंच भला व्यवहारहो जिनजी ॥ ते० ॥ दो० ॥ झ० ॥ ३ ॥ व्यवहारछेदें (४) दाखिया रे, उछरंगने अपवाद ॥ दशाकल्प (५) मां दश दशा रे, उपदेश्यो अप्रमादहो जिनजी ॥ ते० ॥ दो० ॥ झ० ॥ ४ ॥ छेद महानिशिथ (६) मां रें, भांखे जगनो नाथ ॥ उपधानादि आचारनी रे, वात गीतारथ हाथहो जिन

जी ॥ ते०॥ दो०॥ ऊ०॥ ५ ॥ धर्मतीरथ मुनिवंदना रे, वरते श्रुतआधार ॥ शासन श्रीशुनवीरनुं रे, एकवीश वरस हजारहो जिनजी ॥ ते०॥ दो०॥ ऊ०॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रुतज्ञानावरणी तणो, तुं प्रनु टालणहार ;
खिणमें श्रुत केवली कस्या, देइ त्रीपदी गणधार॥१॥

॥ अथ गीतं ॥ तोरण आई क्युं चले रे ॥ ए देशी ॥

॥ धनधन श्रीअरिहंतने रे, जिणे उलखाव्यो लोक॥ सलूणा ॥ ते प्रनुनी पूजा विना रे, जनम गमाव्यो फोक ॥ सलूणा ॥ १ ॥ जिम जिम अरिहा सेवियें रे, तिम तिम प्रगटे ज्ञान ॥ स० ॥ ज्ञानीना बहु मानथी रे, ज्ञान तणो बहुमान ॥ स० ॥ जिम० ॥ ॥ २ ॥ ज्ञानविना आमंबरी रे, पामे जग अपमान ॥ स० ॥ कपटक्रिया जनरंजनें रे, मौनवृत्ति बगध्यान ॥ स० ॥ जिम० ॥ ३ ॥ मच्छरी खरमुख बजालें रे, करता उग्रविहार ॥ स० ॥ पाप श्रमण करि दाखिया रे, उत्तराध्ययन मकार ॥ स० ॥ जिम० ॥ ४ ॥ ज्ञान विना सुगति नहीं रे, किरिया ज्ञानीने पास ॥ स० ॥ श्रीशुनवीरनी वाणीयें रे, शिवकमला घरवा

स ॥ स० ॥ जिम० ॥ ५ ॥ इति पंचमदीपकमालपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चरम समय उपसह लगें, वरते श्रुत अविछेद ;
मूलसूत्र तिणे भांखियां, ते कहेशुं चउ भेद ॥१॥

॥ ढाल ॥ राग सारंग ॥ हम मगन भए प्रभु ॥
॥ ज्ञानमां ॥ ए देशी ॥

॥ जिनराजनी पूजा कीजीयें ॥ जिनपडिमा आगें प्रभुरागें, अक्षतपूजा कीजीयें ॥ अक्षयपद अभिलाष धरीनें, आगमनो रस पीजीयें ॥ जिन० ॥ १ ॥ प्रभुपडिमा देखी प्रतिबुद्धा, पूरवथी उद्धरिजीयें ॥ दशवैकालिक (१) दश अध्ययनें, मनक मुनि हित कीजीयें ॥ जिन० ॥ २ ॥ उत्तराध्ययन (२) ते बीजुं आगम, मूल सूतरमां गणीजीयें ॥ अध्ययनां छत्रीश रसालां, सदगुरुसंगें सुणीजीयें ॥ जिन० ॥ ३ ॥ शोल प्रहरनी देशना देतां, चतुर चकोरा रीझीयें ॥ श्रीशुभवीर जिनेश्वर आगम, अमृतनो रस पीजीयें ॥ जिन० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानउदय करवा भणी, तप करता जिनदेव ;
ज्ञाननिधि प्रगटे तदा, समवसरण सुर सेव ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग काफी, अखियनमें गुल ॥
॥ जारा ॥ ए देशी ॥

॥ आगम छे अविकारा, जिणंदा तेरो आगम छे अविकारा ॥ ज्ञान ज्योत प्रगटे घटमांहे, जिम रविकिरण हजारा ॥ जि० ॥ मिथ्यात्वी डुरनय सविकारा, तग तगता नहिं तारा ॥ जि० ॥ १ ॥ त्रीजुं उघ निरयुक्ति (३) वखाणुं, मुनिवरना आचारा ॥ जि० ॥ चोथुं आवश्यक (४) अनुसरतां, केवलीचंदनबाला ॥ जि० ॥ २ ॥ अल्पागम तप क्लेश ते जाणो, बोले उपदेशमाला ॥ जि० ॥ ज्ञान भगति जिनपद निपजावे, नामे जयंत भूपाला ॥ जि० ॥ ३ ॥ सायरमां मिठी मेहरावल, शृंगीमछ आहारा ॥ जि० ॥ शरण विहीना दीना मीना, उर ते सायर खारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ पंचम काल फणीविषज्वाला, मंत्रमणि विषहारा ॥ जि० ॥ श्रीशुभवीर जिनेश्वर आग

म, जिनपडिमा जयकारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति षष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ नैवेद्यपूजा सातमी, सात गति अपहार ;
सात राज्य करध जइ, वरियें पद अणाहार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ विमलाचल वेगें वधावो ॥ ए देशी ॥

॥ नित्य जिनवर मंदिर जइयें, मेवा मिठाई थालमें लहियें ॥ नैवेद्यनी पूजा करियें,तिम ज्ञाननी आगल धरियें रे॥ श्रुत आगम सुंदर सेवो ॥ मनमंदिर आगम दीवो रे ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ पहेलुं अनुयोगदुवारें (१), साते नयभंगप्रकारें ॥ निक्षेपानी रचना सारी, गीतारथवचने धारी रे ॥ श्रुत० ॥ मन० ॥ २ ॥ बीजुं श्रुत नंदी (२) वंदी, सुणतां दील होय आणंदी ॥ सवि सूत्र तणो सरवायो, जल्पे त्रिशलानो जायो रे ॥ श्रुत० ॥ मन० ॥ ३ ॥ मतिआदि पंच प्रकार, भांख्या छे ज्ञान अधिकार ॥ बहुला दृष्टांत देखावी, शुभवीरें रीत लखावी रे ॥ श्रुत० ॥ मन० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए पिस्तालीश वर्णव्या, आगम जिनमत मांहि ;
मणुअजन्म पामी करी, नक्ति करो उछाहि ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग वसंत फाग ॥ वीरकुमर ॥
॥ नी वातडी, केने कहियें ॥ ए देशी ॥

॥ आगमनी आशातना, नवि करियें ॥ नवि करियें रे नवि करियें, श्रुतनक्ति सदा अनुसरियें,शक्ति अनुसार ॥ आग० ॥ १ ॥ ज्ञानविराधक प्राणीया, मतिहिना ॥ तेतो परनव ङःखिया दीना, नरे पेट ते परआधीना, नीचकुल अवतार ॥ आ० ॥ २ ॥ अंधा लूला पांगु ला, पिंमरोगी ॥ जनम्याने मातवियोगी, संताप य णोने शोगी, योगी अवतार ॥ आ० ॥ ३ ॥ मूंगा ने वली बोबडा, धनहीना ॥ प्रिया पुत्र वियोगें ली ना, मूरख अविवेकें नीना, जाणे रणनुं रोऊ ॥ आ० ॥ ४ ॥ ज्ञान तणी आशातना, करी दूरें ॥ जि ननक्ति करो नरपूरें, रहो श्रीगुरुवीर हजूरें, सु खमांहे मगन्न ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति सप्तम नैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्ञानाचारें वरततां, ज्ञान लहे नर नारि ;
जिनआगमनें पूजतां, फलथी फल निरधार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सुण गोवालणी ॥ ए देशी ॥

॥ हो साहिबजी! परमातम पूजानुं फल मुज आपो ॥ हो साहिबजी ! लाखिणी पूजा रे शे फल नापो ॥ उत्तम उत्तम फल हुं लावुं, अरिहानी आगल मूकावुं॥ आगमविधि पूजा विरचावुं, उभो रहिने भावना भावुं ॥ हो० ॥ १ ॥ जिनवर जिनआगम एक रूपें, सेवंतां न पडो भवकूपें॥आराधन फल एहना कहियें, आ भवमांहे सुखिया थइयें ॥ हो० ॥ २ ॥ परभव सुरलोकें ते जावे, इंद्रादिक अपछर सुख पावे ॥ तिहां पण जिनपूजा विरचावे, उत्तम कुलमां जई उपजावे ॥ हो० ॥ ३ ॥ तिहां राज्य रीद्ध परिकर रंगें, आगम सुणतां सदगुरुसंगें ॥ आगमशुं राग वली धरता, जिनआगम जिनपूजा करता ॥ हो० ॥ ४ ॥ सिद्धांत लखावीने पूजे, तव कर्म सकल दूरें धूजे॥लहे

केवल चरण धरम पामी, जिनवीर मले जो विश रामी ॥ हो० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केवल नाण लही करी, पामी अंतर जाण ;
शैलेशी करणें करी, पामे अविचल गाण ॥ १ ॥

॥ अथ गीत ॥ राग पूर्वी ॥ घडी घडी सांभरो सांई ॥
॥ सलूणा ॥ ए देशी ॥

॥ नित नित सिद्ध भजो भवि भावें, रूपातीत जे स हज स्वभावें ॥ नित० ॥ ज्ञानने दरशन दोय विला सी, साकार उपयोगें शिव जावे ॥ नि० ॥ १ ॥ कर्म वियोगी अयोगी केरे, चरम समय एक समय सधा वे ॥ नि० ॥ निश्चय नयवादी ईम बोले, व्यवहारें समयांतर जावे ॥ नि० ॥ २ ॥ अगुरु लघु अवगाह न रूपें, एक अवगाह अनंत वसावे ॥ नि० ॥ फर सित देश प्रदेश असंख्या, सुंदर ज्योतसें ज्योत मिला वे ॥ नि० ॥ ३ ॥ आधि व्याधि विघटी भव केरी, ग र्भावास तणां दुःख नावे ॥ नि० ॥ एक प्रदेशमां सु ख अनंतु, तेपण लोकाकाशें न मावे ॥ नि० ॥ ४ ॥ परमातम रमणीनो भोगी, योगीश्वर पण जेहने

ध्यावे ॥ नि० ॥ फलपूजाथी ए फल पावे, श्रीशुभवीरवचन रस गावे ॥ नि० ॥ ५ ॥ इत्यष्टमफलपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ गायो गायो रे, महावीर जिनेश्वर गायो ॥ आगमवाणी अमिय सरोवर, झीलत रोग घटायो ॥ मिथ्यात मेल उतारी शिरपर, आणामुकुट धरायो रे ॥ महा० ॥ १ ॥ तपागछ श्रीसिंहसूरिना, सत्यविजय बुध गायो ॥ कपूरविजय शिष्य खेमाविजय तस, जसविजयो मुनिरायो रे ॥ महा० ॥ २ ॥ तास शिष्य संवेगी गीतारथ, श्रीशुभविजय सवायो ॥ तास शिष्य श्रीवीर विजय कवि, ए अधिकार बनायो रे ॥ महा० ॥ ३ ॥ राजनगरमें रहि चोमासुं, अज्ञानहेम हरायो ॥ सूत्रअर्थ पिस्तालीश आगम, संघ सुणी हरखायो रे ॥ महा० ॥ ४ ॥ अढारशें एकाशी माझर, मौन एकादशी ध्यायो ॥ श्रीशुभवीर जिनेश्वर आगम, संघने तिलक करायो रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ इति कलशः समाप्तः ॥ इति पंडितश्रीवीरविजयजीकृत पिस्तालीश आगमनी पूजा संपूर्णा ॥ शुभमस्तु ॥

॥ अथ ॥

॥ पंमितश्री रूपविजयजीकृत पंचज्ञान ॥
॥ पूजा प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम मतिज्ञानपूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ सकल कुशल कमलावलि, नायक नाणसमान ;
श्रीशंखेश्वरपाशनां, चरण नमुं धरि ध्यान ॥ १ ॥
करमतिमिर नर टालवा, ज्ञान ते अभिनव सूर ;
ज्ञानी ज्ञानबलें लहे, सपर सभावपमूर ॥ २ ॥
सरधा मूल क्रिया कही, तेहनुं मूल ते ज्ञान ;
तेहथी शिवसुख बहु जणा, पाम्या धरी इकतान ॥३॥
असंख भेद किरिया तणा, भांख्या श्रीअरिहंत ;
ज्ञानमूल सफलासवे, पंच भेद तस तंत ॥ ४ ॥
मइसुअ उहि मणपज्जवा, पंचम केवल जाण ;
पूजा करतां तेहनी, लहीयें पंचम नाण ॥ ५ ॥
जाणे केवलें केवली, श्रुतथी करे वखाण ;
चउ मूंगा श्रुत बोलतुं, भांखे त्रिभुवन नाण ॥ ६ ॥

॥ म० ॥ व्यंजना व्यग्रह चार ॥ म० ॥ अनुगह ई हा वली ॥ म० ॥ अवाय धारणा सार ॥ म० ॥ ॥ ३ ॥ पंचइंदि मन मेलतां ॥ म० ॥ चोवीश नेद सुहाय ॥ म० ॥ अडवीस नेद उनय मली॥म०॥ नांखे श्रीजिनराय ॥ म० ॥ ४ ॥ त्रणशें बत्रीश पण कह्या ॥ म० ॥ श्रुतनिःसृत मइनेद ॥ म० ॥ श्री जिनवर सेवाथकी ॥ म० ॥ पापताप होय बेह ॥ म० ॥ ५ ॥ समकेत मइसुत्र संपजे ॥ म० ॥ त्रणें एके काल ॥ म० ॥ जिनउत्तम पदपद्मनी ॥ म० ॥ सेवनारूप रसाल ॥ म० ॥ ६ ॥ इति श्रीप्रथममति ज्ञानपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयश्रुतज्ञानपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रुतअक्षर एकेकना, स्वपर विनागविचार ;
करतां पज्जवनी कही, राशि अनंती सार ॥ १ ॥
सरधावंत सुसंयमी, गुरुकुलवासी साध ;
श्रुत अन्यास करी नलो, तरे संसार अगाध ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ नलिनावती विजयें जयकारी ॥ ए देशी ॥

॥ जिनवर जगगुरु जग उपगारी, पूजो नावें नर नारी

रे॥ श्रुतना अधिकारी जिनवर जगतें सरधा आवे ॥ ते हथी श्रुतरस बहु पावे रे ॥ श्रु० ॥ १ ॥ छाशठ साग र सुयथिति जाणो, एक जीवउक्कीठ प्रमाणो रे ॥ श्रु० ॥ अनादि अनंत प्रवाहथी जाणो, सेवो श्रुत अनुनव आणी रे ॥ श्रु० ॥ २ ॥ चउदभेद सुअना णना सार, नांखे जिनवर गणधार रे ॥ श्रु० ॥ अह वा वीश नेद पण जाणो, थिर सरधा हियडे आणो रे ॥ श्रु० ॥ ३ ॥ अर्थथी श्रीअरिहंतें वखाण्युं, सूत्रे गणधर विरचाणुं रे॥ श्रु० ॥ए श्रुत नावधर्म दाता र, पूजी लहो नवजलपार रे ॥ श्रु० ॥ ४ ॥ श्रुतदा यक जिनराजने ध्याउ, जिम अतिशय ज्ञानने पाउं रे ॥ श्रु० ॥ श्रुतफलविरति विरतिफल ध्यान, ध्यान लहे समयिक ज्ञान रे ॥ श्रु० ॥ ५ ॥ खिमाविजय जिन उत्तम ज्ञाने, शिवसुंदरी वरे एकताने रे॥श्रु०॥ श्रीगुरुपदपद्मे दील राखे, चिद्रूप विजयसुख चाखे रे ॥ श्रु० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ अष्टाविंशति० ॥ मंत्रः ॥ ॐ नमोज्ञानाय० ॥

॥ अथ गीतं ॥ दोहा ॥

॥ श्रुतथी सरधाथिर रहे, सरधाथी व्रत सार ;
व्रतथी शिवसुख पामिये, तिणें श्रुत जगदाधार ॥१॥

श्रुतविण जे किरिया करे, ते संसारनुं मूल ;
श्रुत उपयोगें जे क्रिया, ते शिवपद अनुकूल ॥२॥

॥ ढाल ॥ मुने कांइक कामणकीधूं रे, पाठा व ॥
॥ लज्जो शामलिया, मारुं चित्तडुं चोरी लीधूं रे ॥
॥ ए देशी ॥

॥ तुमे आगम पूजा करजो रे ॥ होमनमान्या मोहनी या ॥ तुमे नवसायरने तरजो रे ॥ होमन० ॥ ए आगम अमृतदरियो रे ॥ हो० ॥ एतो स्याद्वादरस नरियो रे ॥ हो० ॥ १ ॥ सुअअंग अनंगप्रकारें रे॥ हो०॥ तिम बद्ध अबद्धविचारें रे ॥ हो० ॥ कालिक उतकालिक जाणो रे ॥ हो० ॥ दोय नेद कहे जिननाणो रे ॥ हो० ॥ २ ॥ अगीयार अंग मनरंगें रे ॥ हो०॥ श्रुत पूजो अधिक उमंगें रे ॥ हो० ॥ वली बार उपांग रसालां रे ॥ हो० ॥ पूजी लहो मंगलमाला रे ॥ हो० ॥ ३ ॥ पयन्ना दश गुणखाणी रे ॥ हो० ॥ प्रत्येकबुद्ध मुनिवाणी रे ॥ हो० ॥ खट छेद सूत्र गुणनरिया रे ॥ हो० ॥ एतो चरण करण गुणदरिया रे ॥ हो० ॥ ४ ॥ मूलसूत्र चार अनुसरजो रे ॥ हो० ॥ संसारसमुद्रने तरजो रे ॥ हो० ॥ नंदीने

अनुजोगदारा रे ॥हो०॥ पूजी लहो जवजल पारा रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ जावपूजा पंच प्रकारो रे ॥ हो० ॥ इव्यपूजा जेद अपारो रे ॥ हो० ॥ प्रजुवदनपद्म नी वाणी रे ॥ हो० ॥ चिदरूप सुधारस खाणी रे ॥हो०॥६॥ इति द्वितीयश्रुतज्ञानपूजा समाप्ता ॥२॥

॥ अथ तृतीयअवधिज्ञानपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

अवधिज्ञान आराधता, करजो त्रिकरण जोग ;
जाव विशुद्धिचित्त धरी, टाले कर्मना रोग ॥ १ ॥
त्रण्य ज्ञानधर जिनवरा, त्रिजुवनने हितकार ;
पूजो पदकज तेहनां, पामो जवजल पार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ घरे आवो नेम वरणागीया रे॥ ए देशी ॥

॥ हांरे वाला जावजगत मनमां धरी, जिनपूजा करोम नसंवरी जीरे॥ जावें पूजोरे मनमोहना ॥ हांरे वाला खयउपशम जावें करी, परणतिकरी ज्ञानरसें जरी जी रे ॥ जा० ॥ १ ॥ त्रण्य ज्ञानी जिनराजीया,विलसे निज गुणसत्ताजरी जीरे ।।जा०।। अनुगामी पमुहा लहो, षट जेद उहीना दिल धरी जीरे।।जा० ॥ २ ॥ जनम

समय जिनराजने, चले आसन सुरनां थरहरी जीरे ॥ ना० ॥ चोशठ सुरपति अवधियें, जिन जनम्या लइ जइ सुरगिरि जीरे ॥ ना० ॥ ३ ॥ रजत कनकने रत्तना, कलशा खीरोदकथी नरी जीरे ॥ ना० ॥ न्हवण उत्सव जिननो करे, समकितगुण निरमलता करी जीरे ॥ ना० ॥ ४ ॥ मिथ्यासुर अवधि लहे, जे पूजे जिन नगतें खरी जीरे ॥ ना० ॥ जिन उत्तम पद पद्मनी, पूजा चिदरूपविजयें करी जीरे ॥ ना० ॥५॥ काव्यं ॥ अष्टाविंशति० ॥ मंत्रः ॥ ॐ नमोज्ञानाय० ॥

॥ अथ गीतं ॥ दोहा ॥

॥ द्रव्य खेत्र कालनावथी, उत्कृष्ट अवधि ज्ञान ;
मनुजगतिमां पामियें, वधते शुचि प्रणिधान ॥ १ ॥
लोकावधि अवधि लगें, पडिवाई पण होय ;
तडुपरि अवधि जे होए, अपडिवाई ते जोय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ मोहनजी मोकलो रे मोशालुं ॥ ए देशी ॥

॥ निरमल करी मन वच काया, ठंमी सवे ममता माया, परमातम ध्यान सुहाया ॥ उहि जिन पूजियें मनरंगें ॥ जिम रमियें समकित संगे ॥ उहि जिन० ॥ १ ॥ खेत्र कालथी उहि नाणी, चउहा लहे वुद्धिने हाणी,

इम कहे जिन केवल नाणी ॥ उ० ॥ २ ॥ द्रव्यथी छुग वुद्धि वखाणी, जावथी पटवृद्धि जाणी, समुदायें चउ हा कहांणी ॥ उ० ॥ ३ ॥ जिनवर नाणी गुण खाणी, पूजो मन उलट आणी, वरियें जिम शिव पटराणी ॥ उ० ॥ ४ ॥ जिनवर उत्तम गुण गावो, प्रजुनां पद पद्म वधावो, जिम रूप विजय पद पावो ॥ उ० ॥ ज्ञि० ॥ ५ ॥ इति तृतीयावधिज्ञानपूजा संपूर्णा ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थमनपर्यवज्ञानपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अप्रमत्त मुनिवर गुणी, निरमल चारित्रवंत;
चढते संयम थानकें, लहे मनपज्जवतंत ॥ १ ॥
जिनवर जग गुरु जग धणी, जब संयम ग्रहे सार;
मण पज्जव तब उपजे, चोथुं ज्ञान उदार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ मनमोहना रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ अप्रमत्त गुणठाणमां रे, मनमोहना रे लाल ॥ वरतता श्री अरिहंत रे ॥ जग सोहना रे लाल ॥ संयम ठाण विशोधता रे ॥ म० ॥ लहे मनपज्जव तंत रे ॥ ज० ॥ १ ॥ रुजुमति विपुलमति तथा रे ॥ म० ॥

दरूप उल्लास ॥ मो० ॥ पू० ॥ ५ ॥ इति श्रीपंचम
केवलज्ञानपूजा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ पूजो पूजो रे, नवि पंचज्ञान नित पूजो ॥ पंच ज्ञान
पूजन सम घटमां, उर न साधन दूजो रे ॥ नवि पंच
ज्ञान नित पूजो ॥ १ ॥ मइ सुअ उहिने मनपर्यव,
केवल पंचम जाणो ॥ अठावीश चउदश षट डुग इग,
नेदप्रमाण वखाणो रे ॥न०॥ २ ॥ ज्ञानआराधन साध
न सिद्धिनुं, साधि कर्म खपाया ॥ केवल कमला पा
मी अनंती, सिद्धियें सिद्ध सुहाया रे ॥ न० ॥ ३ ॥
ज्ञान ज्ञानीनी सेवा करतां, चिरसंचित अघ जाय ॥ पु
ण्यमहोदय कमला विमला, घटमां परगट थाय रे
॥ न० ॥ ४ ॥ श्रीविजयदेव सूरिसर पाटें, विजयसिं
ह सूरिराया ॥ तास शिष्य श्रीसत्यविजय गणी,संवेग
मारग ध्याया रे ॥ न० ॥ ५ ॥ शिष्य कपूर खिमा
जिन उत्तम, विजयपदें सोहाया ॥ श्रीगुरु पद्मविजय
पदपंकज, नमतां श्रुत बहुपाया रे ॥ न० ॥ ६ ॥
रिषि (७) गज (८) दिग्गज (८) चंद (१) संव
त्सरें, (१८८७) ज्ञान जगति मनलाया ॥ नेमीसर
कल्याणक दिवसें, पंचज्ञान गुणगाया रे ॥ न०॥ ७ ॥

तपगछ विजय दिणंद सूरिसर, दीपे तेजें सवाया ॥ तस राज्यें नविजन हित काजें, रूपविजयें गुण गाया रे ॥ न० ॥ ८ ॥

॥ काव्यम् ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥

॥ ज्ञानं स्यात् कुमतांधकारतरणिर्ज्ञानं जगल्लोचनं, ज्ञानं नीतितरंगिणीकुलगिरिर्ज्ञानं कषायापहं ॥ ज्ञानं निर्वृतिवंशमंत्रममलं, ज्ञानं मनःपावनं ज्ञानं पंचविधं यजेऽहमनिशं स्वर्गापवर्गप्रदम् ॥ १ ॥

॥ मंत्र. ॥

॥ ॐ नमोज्ञानाय० ॥ लोकालोकप्रकाशकाय जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा ॥

॥ इति पंमितश्रीरूपविजयजी कृत-
पंचज्ञानपूजा संपूर्ण ॥
सर्व ढालो अगीआर, गाथा (८९) श्लोक
संख्या (१५०)

॥ अथ ॥

॥ श्रीपद्मविजयजीकृत अष्टप्रकारी ॥

॥ पूजा प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रुतधर जस समरे सदा, श्रुतदेवी सुख कार ;
प्रणमी पदकज तेहनां, भणशुं पूजाप्रकार ॥ १ ॥
अर्थ सुणी जिनमुख थकी, सूत्र रचे गणधार ;
ते आगमने अनुसरी, रचशुं अष्ट प्रकार ॥ २ ॥
न्हवण विलेपन कुसुमनी, धूप दीप मनोहार ;
अखंड अक्षत नैवेद्यनी,अष्टमी फल सुविचार॥३॥
भावस्तवने कारणे, द्रव्यस्तव अधिकार ;
कारणथी कारय सधे, तिणे धुर पूज उदार ॥४॥
पीठ मनोहर थापीने, अरिहंत प्रतिमा सार ;
ताल मृदंग वाजित्रयुत, करियें हर्ष अपार ॥ ५ ॥
तीर्थोदक कुंभो भरी, रत्नप्रमुख श्रीकार ;
अष्ट सहस अड जातिना, अथवा कलशा चार ॥६॥

॥ ढाल ॥ रागभैरव ॥ ताल सुरफाग ॥
॥ प्रथम पूरवदिशें ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम शुभ भवि जनां, जिनवर पूजना, कीजीयें लीजीयें, मुक्ति थानो ॥ जल तणी आदि तेणे, कर्म मल खालना, त्रिगडे वेसी कहे, त्रिजग भानो ॥ प्रथ० ॥ १ ॥ कृत शुचिस्नान जल, कुंभ ग्रही शुभमना, मानु भवसमुद्र, तरवाज फानो ॥ क्रोध पावक बल्या, तास उपशामना, करण जलपूज, मानु प्रधानो ॥ प्रथ०॥ २ ॥ पापनिंद्योजलांजलि, इंम स्थापना, जिन तणो एह, आश्चर्य जाणो ॥ पाकशासन परें, प्रभु पद पूजना, आतम होवे निज, शुद्ध ज्ञानो ॥प्रथ०॥३॥

॥ दोहा ॥

॥ इंणी परे जलपूजा करी, करियें अप्पा शुद्ध ;
माने विणु जे एहमां, जाणो तेह अबुद्ध ॥ १ ॥

॥ राग देवगंधार ॥ ताल चंपक ॥
॥ सुरपति मेरु शिखर न्हवरावे॥ ए टेक ॥

॥ जनमकाल जिनवरको जाणी, पंचरूपें करी आवे ॥ सुर० ॥ १ ॥ रतन प्रमुख अड जातिना कलशा, औषधि चूरण मिलावे ॥ खीरसमुद्र तीर्थोदक

आणी, स्नात्र करी गुण गावें ॥ सुर० ॥ २ ॥ इणी परें जिनप्रतिमाको न्मवण करी, बोध बीज मानु वावे ॥ अनुक्रमें गुणरत्नाकर फरसी, जिनउत्तम पद पावे ॥ सुर०॥ ३ ॥ इति प्रथमजलपूजा समाप्ता ॥१॥

॥ अथ द्वितीयचंदनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे करवा गुणवासना, असंख्यात प्रदेश ;
चंदननी पूजा करो, आणी भाव विशेष ॥ १ ॥

॥ राग प्रभाती ॥

॥ आतमसाधन रसी, सरस चंदन घसी, शुद्धघन सार, मांहे धरीजें ॥ निज करशुं लसी, चंद्रकिरणज सी, रजतकचोली, मांहे भरीजें ॥ आ० ॥ १ ॥ जिनपति गुण कसी, निजगुणमां वसी, विधिशुं नव अंग प्रभु, तिलक कीजें ॥ भविजिन उल्लसी, आतपें ज्युं शशी, कर्म आतप हरण, ए रचीजें ॥ आ० ॥ २ ॥ देह सौगंध तिसी, महकी रहे दश दिशी, देश परदेश, आतम वरीजें ॥ शुद्ध गुणगण वसी, शिवसनमुख धसी, अनोपम ज्ञानादिक, गुण वरीजें ॥ आ०॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूजाने परिणाम दोउ, करो चंदनकी रीत ;
शीतलताने सुगंधता, जिम लाजे नवनीत ॥ १ ॥

॥ राग पट ॥

॥ चंदनपूजा करो नवि नावें, जिम निज अप्पा शुद्ध थावे ॥ संपूरण शीतलतायें आवे, पूर्णिमायें शशी पूर्णस्वनावें ॥ चं० ॥ १ ॥ अगर कस्तुरी बरास नेलावो, बावनाचंदन मांहिं मिलावो ॥ ए सवि हुं प्रजु अंग चढावो, आत्मपरणति शुद्ध सोहावो ॥ चं० ॥ २ ॥ एणी परे चंदनपूजा बनावे, तो शिव सुंदरी ध्रुव परणावे ॥ नवअर्णव प्रजुपदकजनावें, उत्तम गणे लहे ए जणावे ॥ चं० ॥ ३ ॥ इति द्वितीयचंदनपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

॥अथ तृतीयपुष्पपूजा प्रारंनः॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे त्रीजी सुमनस तणी, पूजा अतिहि उदार ;
सुमनस सुख जिणथी लहे,तिणे सुमनस परकार॥१॥

॥ राग विनास ॥

॥ विविधवर कुसुमनी, जिनवर पूजनां,कीजीयें नवि

जना, धरिय रागो ॥ चंपगाशोग, पुन्नाग वरकेतकी, महमहती विस्तरें, सुहपरागो ॥ विविध० ॥ १ ॥ बकुल कोरिंट, अंकोल नवमालिका, जाई जुई सह, कारनागो ॥ पाडल पउम, मरुउ मचकुंदना, सरस अतिमुक्त दम, एय पियंगो ॥ विविध० ॥ २ ॥ मोगरो मालती, कुंद जासुलवर, बोलसिरि वेलि नवि, ग्रहीअ थागो ॥ लाल गुलाब, सेवंतरी केवडे, पूजा करी पामीयें, नवह तागो ॥ विविध० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणिधाने सद्गति होए, पूजथी किम नवि होय;
सुमनसनावें डुर्गता, पूजपंचाशक जोय ॥ १ ॥

॥ राग रामकली ॥

॥ पूजा करो जिनवरकी, नवि तुमे पूजा करो जिनवरकी ॥ विविधजाति वरकुसुम ग्रहीने, रचना करो सुखकरकी ॥ नवि० ॥ १ ॥ जाई जुई वरदमण चंबेली, नरीय गाब रूपनकी ॥ जिम सुरपति जिननक्ति करत शुन, तिम नवि तुमे करो जिनकी ॥ नवि० ॥ २ ॥ काल अनादि कुवास टालनकुं, पीर हरन मदनकी ॥ इव्यपूज हे नावको कारण, जि

नवाणी ए वदनकी ॥ नवि० ॥ ३ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थधूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हुताशनथी कच्छ ज्युं, तिम ध्यानानलें कर्म;
तिणे मिशें धूप पूजा करो, पामो ज्युं शिवशर्म॥१॥

॥ राग देशाख ॥

॥ शुद्ध दशांग चूरण करी, घनसार मिलावो ॥ कृष्णा गरु मांहे वली,अंबरयुत भावो ॥ शु० ॥ १ ॥ तुरुक चंदन कस्तूरीका, कुंदरुक अणावो ॥ रतनजडित कंचन तणुं, धूपधाणुं करावो ॥ शु० ॥ २ ॥ जिनप ति संगें आयकें, वामंग धरावो ॥ दशदिशि परिमल विस्तरें, अशुभ रजकुं खोभावो ॥ शु० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इंणीपरे धूपपूजा करी, जिनआगल शुभभाव ;
टाली विभावनी परिणति, दूर करो परभाव ॥ १ ॥

॥ राग वेलावल ॥

॥ धूप प्रगट करी रे भवियां, जिनमंदिर जईयें रे॥

॥ राग सारंग ॥

॥ प्रजुसनमुख स्वस्तिक कीजीयें ॥ मुक्ताफल उज्ज्वल की रचना, विचें विचें रतन धरीजीयें ॥ प्र० ॥ १ ॥ अथ उज्ज्वल अक्षत तंडुल शुज, वासित जूरि जरीजीयें ॥ चउगति चूरक चोखे चित्तशुं, पूरी अक्षय सुख लीजीयें ॥ प्र० ॥ २ ॥ अथवा नंदावर्त्त करीने, जवआवर्त्त हरीजीयें ॥ कर जोडी जिनवरपुर रहीने, इम कहीयें शिव दीजीयें ॥ प्र० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्षय फल लेवा जणी, अक्षत पूज उदार ;
इह जव पण नवि क्षय होये, राजरिद्धि जंमार॥१॥

॥ राग काफी ॥

॥ स्वस्तिक पूरो उदार रे, महारा प्रजुजीके आगें ॥ स्वस्तिक०॥ रतनरकेबीमांहि मनोहर, वासित करी घनसार रें ॥ महारा० ॥ १ ॥ अक्षत पूज प्रसिद्ध प्रवचनमां, अक्षय फल दातार रे ॥ महारा० ॥ २॥ जावमंगलको एहिज कारण, इव्यप्रधान विचार रे ॥ महारा० ॥ ३ ॥ इणविध पूज करत जिनवरकी,

लहत उत्तमजव पार रे ॥ मह्रारा० ॥ ४ ॥ इति प
ष्ठाक्षतपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमनैवेद्यपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नैवेद्य निवेदना, कीजें जिम हलीराय ;
जवनिर्वेद प्रजु मुखें, मागो अविचल गाय ॥ १ ॥

॥ राग मल्हार ॥

॥ रतनजडित हेम थालमां रे, जरी विविधजाति प
कवान ॥ पूरो परिघल जावशुं, आणी चित्तमां बहु
मान ॥ १ ॥ जवि कीजें रे शिव लीजें रे, मह्रारा
प्रजुजीनी नैवेद्यपूजना विधि जोय ॥ १ ॥ ए आंक
णी ॥ घृतपूर मोदक लापशी रे, वली पंचामृत पर
धान ॥ शालि दालि शुज शालना रे, धरी संपूरण सु
हध्यान ॥ जवि० ॥ २ ॥ पंचशब्द वाजित्रशुं रे, व
ली गोरी करे गीतगान ॥ अति आमंबरें जिनघरें,
आवो देतां बहु दान ॥ जवि० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्त्ता जोक्ता मुज नहीं, पुजलजावनो जीव ;
तिणे पुजलनी त्याजना, करतां शर्म सदैव ॥ १ ॥

॥ राग नट्ट ॥

॥ नैवेद्यथाल नरीजें जिणंद मुखे, नैवेद्यथाल नरीजें ॥ कर जोडी सन्मुख प्रभु निरखी, इणी परें नावना कीजें ॥ जिणं० ॥ १ ॥ पुद्गलपुद्गल संगिअनादि को, पुद्गलनाव तजीजें ॥ शुन पुद्गल प्रभुपाय ठवीने, अणाहारीकुं नजीजें ॥ जिणं० ॥ २ ॥ विग्रहग ति अणाहारी होवे, पण विग्रह ते वहीजें ॥ विग्र हातीत अणाहारी पद तिणे, जिनउत्तम मुज दीजें ॥ जिणं० ॥३॥ इति सप्तमनैवेद्यपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ फलपूजा करतां थकां, सफल करो अवतार ;
फल मागो प्रभु आगलें, तार तार मुज तार ॥१॥

॥ राग सोरठ ॥

॥ श्रीफल सरस अखोड नीमजां, पीस्तां फनस ना रिंग रे ॥ जायफलने कमलकाकडी, पूंगी चूअफल चं ग रे ॥ मन रंग रे, जिन संग थाल अनंग रे ॥ मन० ॥ १ ॥ विविधजाति फल नरिय जिणंद मुख, ठविय लहो शिवसंग रे ॥ म० ॥ शींगोडां

अंजीर अंगुर, लींबू मीठ बदाम रे ॥ दाडिम द्राख जमरूक तरबूज, कोहलां खरबूज नाम रे ॥ मन० ॥ २ ॥ टेटी अन्नास रायण बीजोरुं, जे जे देश मिलंत रे ॥ ते ते जिनपति गेह बहु माने, नवि जिन आय ढोयंत रे ॥ मन० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जस फल उपम जग नहीं, पाम्या पछी न अंत;
अव्याबाध अचल अरुज, मागो सुख अनंत॥१॥

॥ राग पूर्वी ॥

॥ पूजनफल मोय दीजें जिणंदराय ! पूजनफल मोय दीजें ॥ सवि साधन ए फलके काजे, साधक प्रारंभीजें ॥ जिणं० ॥ १ ॥ ते शिवफल अनोपम एक मागुं, उरन क्युं जाचीजें ॥ शुद्धनिमित्त प्रभु जो थाउ, तो निज ऋद्धि प्रगटीजें ॥ जिणं० ॥ २ ॥ इणीपेरें पूज्यनी पूजा करतां, पूजक भवि पूजीजें ॥ ते कारण जिनवर उत्तम पद, नित नित पूजन कीजें ॥ जिणं० ॥ ३ ॥

॥ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ भावो भावो रे भवि ! अष्टप्रकार चित्त भावो ॥ अष्ट

नेद जिनपूजा करतां, अष्ट महासिद्धि पावो रे ॥ न
वि० ॥१॥ अष्ट करमको घात करीने, अष्टम गति तुमे
पावो ॥ जिम धनोघादिक पूजा एकेकथी, पाम्या शुद्ध
सहावो रे ॥ नवि० ॥ २ ॥ निजगुण ऋद्धि तिरोना
वें थइ, ग्रहण करत परनावो ॥ प्रनुगुण ज्ञान ध्या
नमां रहेतां, होवत आविरनावो रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥
सत्यवचन नाषक सत्यविजयो, संवेगी तस दावो ॥ क
पूरसमी उज्ज्वल जस कीर्त्ति, कपूरविजय बुध ध्यावो
रे ॥ नवि० ॥ ४ ॥ तत्व शशी अड चंद संवत्सर,
(१०१३) खिमाविजय जिन गावो ॥ उत्तम पदकज
पूज करंतां, उत्तम पदवी पावो रे ॥ नवि० ॥ ५ ॥

॥ इति पंमितश्रीपद्मविजयजीकृत अष्ट
प्रकारीपूजा संपूर्ण ॥ सर्व ढाल (१६)
गाथा ॥ (७६) श्लोक. (१२५)

॥ अथ ॥

॥ श्रावकगुणोपरि एकवीशप्रकारी ॥

॥ पूजा प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम स्नात्रपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री सुख पूरवा, कल्पवेलि अनुहार ;
पूजा भक्ति जिननी करो, एकवीश भेद विस्तार ॥१॥
(पावांतरें) विधिपूर्वक विस्तार ॥ १ ॥ स्नात्र विले पन भूषणं, पुष्प वास धूप दीव ; फल अक्षत ति म पत्रनी, पूंग नैवेद्य अतीव ॥ २ ॥ उदक वस्त्र चा मर तथा, छत्र वाद्य गीत जाण ; नृत्य स्तुति जिन कोशनी, वृद्धिए एकवीश ठाण ॥ ३ ॥ शुचितनु तै ल जलादिके, पहेरी चीवर सार ; पवित्रिकोपरि जि न ठवी, जिनआणा सिर धार ॥ ४ ॥ गंगा मागध क्षीरनिधि, औषधिमिश्रित सार ; कुसुमें वासित शुचि जलें, करो जिनस्नात्र उदार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ सूरती महीनानी-देशीले ॥

॥ मणिकनकादिक आठ विध, करी भरी कलश सफा

र ॥ सुन्नरुचि जे जिनवर न्हवे, तस नहीं डुरित प्र
चार ॥ मेरुशिखर जिम सुरवर, जिनवर न्हवण अ
मान ॥ करता वरता निज गुण, समकेत वृद्धि
निधान ॥ ६ ॥ काव्यम् ॥ हर्ष नरी अप्सरावृं
द आवे, स्नात्र करी एम आसीस नावे ॥ जिहां ल
गें सुरगिरि जंबुदीवो, अम तणा नाथ जीवो तुं जी
वो ॥ ७ ॥ इति प्रथम स्नात्रपूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ बावना चंदन कुंकुमें, मृगमदने घन
सार ; जिनतनु लेपे तस टले, मोह संतापविकार
॥ ८ ॥ ढाल ॥ सकल संताप निवारण, गारण सवि
नवि चित्त ॥ परम अनीहा अरिहा, तनु चरचो न
वि नित ॥ निज रूपें उपयोगी, धारी जिनगुण गेह॥
नाव वंदन सुहनावथी, टाले डुरित अर्हेह ॥ ए ॥
॥ काव्यम् ॥ जिनतनु चरचतां सकल नाकी, क
हे कुग्रह उसता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता
आज माकी, नव्यता अम तणी आज पाकी ॥१०॥
इति द्वितीयविलेपन पूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥ तिलक मुकुट कुंमल जुगल, अंगद
कंवी हार; नूषणनूषित जिनतनु, करी पामो नवपार
॥ ११ ॥ ढाल ॥ मणि मुगता फल हीरला, लालडी

पाची पीरोज ॥ नीलवी विद्रुम पुष्कर, लसणीया ल हे बहु मोज ॥ कनकजडित वर नूषणें, नूषित जिन वर देह ॥ साधक धर्म जगायवा, अतिशय संपद ए ह ॥ १२ ॥ काव्यम् ॥ शोनता नूषण देखि बीजे, जडमयी आतमा स्वगुण बीजे ॥ अविकारी जिनतणे देखि एह, नवि लहे तत्व, आणंद रेह ॥ १३ ॥ इ ति तृतीयनूषणपूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥ शतपत्री वर मोगरा, चंपक जाय गु लाब; केतकी दमणय बोलसिरि, पूजो जिन नरी नाव ॥ १४ ॥ ढाल ॥ अमल अखंमित विकसित, शुन सुमनी घणि जाति ॥ लाखीणो टोमर ठवो, आं गी रची बहु नांति ॥ गुणकुसुमें निज आतमा, मं मित करवा नव्य ॥ गुणरागी जडत्यागी, पुष्प चढा वो नव्य ॥ १५ ॥ काव्यम् ॥ जगधणी पूजतां वि विधफूलें, सुरवरा ते गणे कूण अमूलें ॥ खांति धरी मानवा जिनप पूजे, तस तणां पाप संताप धूजे ॥ १६ ॥ इति चतुर्थकुसुमपूजा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ बावना चंदन कुंकुमं, सुरनिजातमंदा र; घनसारें युत वासशुं, पूजो जिनप उदार ॥१७॥ ढाल ॥ सरस सुगंधित वासें, वासे जिनपति जेह ॥

जेह ॥ ज्ञानादिकगुण गावें, नावे स्वस्तिक एह ॥ ३० ॥ काव्यम् ॥ स्वस्तिक पूरतां जिनप आगें, स्वस्ति श्रीनइ कल्याण जागे ॥ जन्म जरा मरणादि अशुन नागे, नियति शिवसर्म रहे तास आगें ॥ ३१ ॥ इति नवमाक्षतपूजा ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥ अमल अखंमित अग्रयुत, शुन संख्याइ पत्त ; जिणकरपत्तें पत्त नवि, ठवतां बहुगुण पत्त ॥ ३२ ॥ ढाल ॥ विश्वगुणाकर नागर, आदर धरी ग्रहे जास ॥ नोजन उत्तर देवे, लेवे तस मुखवास ॥ तेह सुपत्तें पूजतां, पूजक वाधे नूर ॥ अहमरुघादिकपत्तें, विनत्ति नत्तें पूर ॥ ३३ ॥ काव्यम् ॥ पूजना पत्रशुचिनाव जागे, अग्र उपयुक्तता सवि दोष तागें ॥ नावतंबोल श्रीजेह माचे, शिववधू ते हथी सद्य राचे ॥ ३४ ॥ इति दशमपत्रपूजा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ उज्ज्वल शुद्ध सुस्वाद्यवर, नव्य नव्य जे जाति ; जनप्यारी सोपारी वर, पूजो जिन नलि नांति ॥ ३५ ॥ ढाल ॥ मंगल कारण लावियें, नावीयें घरघर हर्ष ॥ स्वस्तिक मंमन खंमन, डुरित तणा उत्कर्ष ॥ क्रमुकफलें जिनअरचा, विरचे धरी गुणराग ॥ मंगलमाला पावे,पावे नवजल ताग ॥३६॥काव्यम्॥

शुद्धस्याद्वाद मृडुनावसंगें, शुक्कता शुद्धवर नाव रंगें ॥ नावथी पूजतो एम पूगें, नियति आनंद घर तेह पूगे ॥ ३७ ॥ इत्येकादशपूंगीफलपूजा ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥ सरस सुची पकवान नर, शालि दालि घृतपूर; करे नैवेद्य जिन आगलें, कुधा दोष तस दूर ॥ ३८ ॥ ढाल ॥ लपनश्रीवर घेवर, मृडुतर मोतीचूर ॥ सिंह केसर सेवइया, दलिया मोदक पूर ॥ साकर डाख शींगोडा, नक्क व्यंजन घृत सद्य ॥ इम नैवेद्य जिनने करे, तस मिले सुख अनवद्य ॥ ३९ ॥ काव्यम् ॥ ढोकता नोज्य परनाव त्यागे, नविजना निजगुण नोग मागे ॥ अम नणी अम तणुं स्वरूप नोज्य, आपजो तातजी जगत पूज्य ॥ ४० ॥ इति द्वादशनैवेद्यपूजा ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥ शुनरुचि शुचिनिर्वाणनुं, पूर्ण कलश नरि तोय; जिनपति आगल ढोकतां, गततृष्णा नवि होय ॥ ४१ ॥ ढाल ॥ जगजीवन गुणपावन, निम्मल शीतल जेह ॥ उदक रयणें जिन पूजतां, न रहे पातिक रेह ॥ अतिन्नीष्में नवग्रीष्में, नवि पीडाये तेह ॥ सुखनर शिववर वासवा, आदिमंगल एह ॥ ४२ ॥ काव्यम् ॥ निम्मलें समजलें जेह प्राणी, नरी पात्र श्र

ध्यान ते सुगुणखाणी ॥ एकता जिनगुणे देवदेवा, ज
जे जावथी जल तणी एह सेवा ॥ ४३ ॥ इति त्र
योदशजलपूजा ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥ चीनांशुक सुखमल अमल, जरबाफी
शुद्ध पट्ट; सरस सुकोमल मूल घणां, वस्त्रपूज ग
हगट्ट ॥ ४४ ॥ ढाल ॥ वस्त्रजोडी मन कोडें,
थापो जिनउगमाग ॥ गतशोचे उल्लोचे, अह जि
नमंदिर राग ॥ शोजावो ध्वज गावो, चावो करी ब
हुमान ॥ वस्त्रपूजा हरे जविकनां, दुःख शीतादि अ
मान ॥ ४५ ॥ काव्यम् ॥ जावथी वस्त्रयुग जे परि
न्ना, ते धरे जिनतणी आणलीना ॥ शिशिर जडआ
श्रवे मोहग्रीष्में, नवि लहे दुःख संसारजीष्में ॥४६॥
इति चतुर्दशवस्त्रपूजा ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥ अति उज्ज्वल अंगुल तणुं, एकशत
आठ प्रमाण; चामररत्नें पूजतां, नासे दुरित्तविहा
ण ॥ ४७ ॥ ढाल ॥ कनकरयणने दंमें, मंमित चा
मरजोडि ॥ हरखतां जिनमुख निरखतां, वीजे होडा
होडि ॥ विकसित कज जिम जिनमुख, सन्मुख आ
वी हंस ॥ सेवे इम उपमित करे, जवि जन धरी आ
संक ॥ ४८ ॥ काव्यम् ॥ ज्ञान नय किरिय उज्ज्वल

स्वनावें, नति उन्नति गौणमुख्यादि नावें ॥ मानगुणसंख जिनराज आणे, नावथी बुद्ध चामर वखाणे ॥ ४ए ॥ इति पंचदशचामरपूजा ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥ उज्ज्वल सारद चंद जिम, उत्रत्रय बहु मूल; ठाविजें जिन उपरें, तस डगसिरी अनुकूल ॥ ५० ॥ ढाल ॥ उत्रत्रय जिम फरके, थरके पातिकवृंद ॥ मोहादिक अरि त्रागा, नागा करे आक्रंद॥ जे नित पूजे उत्रें, बुनगोत्रें लहे जन्म ॥ ततखिणे उत्र धरे हरि, सुरगिरे उत्सव कम्म ॥ ५१ ॥ काव्यम् ॥ हृत्कजें जेह जिनराज ध्यावे, लीनता अवंचक योग ठावे ॥ नावउत्र त्रयी गुणसमाजे, सादि निरअंत शिवराज राजे ॥ ५२ ॥ इति षोडशउत्रपूजा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥ नंना नेरी मृदंगवर, तंत्री ताल कवताल ; जल्लरी ऊंडुडी संख इति, वाजित्र पूज विशाल ॥ ५३ ॥ ढाल ॥ जिम जिम वाजित्र वाजे, गाजे अतिघन घोर ॥ तिम तिम जिनगुणे राचे, माचे शुं घनमोर ॥ निसुणि नृपति नंका, वंका तस्करदूरि ॥ जाये तिम वाजित्रथी, गात्रथी दोष ते चूरि ॥ ५४ ॥ काव्यम् ॥ श्रीजिनआण वरते गंनारी, नित्य उपयोगी वचन ते वाय नारी ॥ घोषहास लखि

मोहत्रासें, नावथी वाद्यपूजा प्रकाशे ॥ ५५ ॥ इति सप्तदशवाजित्रपूजा ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥ नैरव बिन्नस आसावरी, टोडी नट्ट कल्याण; धन्यासिरि पमुहें तवे, पूजा गीत प्रमाण ॥ ५६ ॥ ढाल ॥ गुणरागें शुद्ध रागें, रागें जे जिन गान ॥ जागे अनुनववासना, मागे केवलमान ॥ तान मान स्वरग्रामनी, मूर्छनानेदें नेद ॥ लय लागे रुचि जागे, तागे ममता खेद ॥ ५७ ॥ काव्यम् ॥ शुद्धनिरद्वंद्व जिनरूप धारी, अहव वाबल्यता गुणसंनारी ॥ दव्वगुण पज्जवा शुद्धनाषे, नावथी गीतरस तेह चाखे ॥ ५८ ॥ इति अष्टादशगीतपूजा ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥ मुकी सकसंसारनी, जिनपति आगें जत्ति; करी नृत्य सूर्यान परें, तस नहीं नवनय नृत्य ॥ ५ए ॥ ढाल ॥ नूचर खेचर अमरवर, किन्नरी नरी शुनचित्त ॥ नाचे माचे जिनगुणें, सांचे सुकृत वित्त ॥ योग अवंचक एहथी, तेहथी जिनपद हेतु ॥ चउगइगमणनिवारण, तारण नवजलसेतु॥६०॥ काव्यम् ॥ जेह निजयोगगति सहेज रंगें, फोरवे अमृतानुष्ठानसंगें ॥ अतुलगुणतान न चूके असंगें, नावनृ

त्यपूजना एह ढंगें ॥ ६१ ॥ इति एकोनविंशतिनृ त्यपूजा ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥ व्याकरण काव्य अलंकृति, तर्कछंद अ प्रबंध; दोष न दोषें स्तुति करे, स्तुतिपूजा गुणसंबंध ॥६२॥ढाल॥ स्वरपदवर्णवि राजति, भ्राजति जक्ति अनूप॥ अतिशय धारी उपगारी, अह तस शुद्ध स्वरूप ॥ संपद त्रिक इम स्तवतो, उवतो जिनगुण चित्त ॥ सुर नर किन्नर थवे तस, एणीदृश कवे नित्त ॥ ६३ ॥ काव्यम् ॥ जेह पटद्रव्य जिन आण जापे, शुद्ध स्याद्वाद नी टेक राखे ॥ अवर एकांतता दूर नाखे, जावस्तुति पूजना एह आखे ॥६४॥ इति विंशतिस्तुतिपूजा ॥२०॥

॥ दोहा ॥ निज सुकृतउदयें लह्यु, न्यायोपार्जित वित्त; वृद्धि जिनपतिकोशनी, करे पूजा जह शक्ति ॥ ६५ ॥ ढाल ॥ रूपैया सोनैया, अजिरामि अति चंग ॥ हुंन पूतलिया गव्वर, उपन्न जेद प्रसंग ॥ पुण्यें पामी लच्छी, स्वच्छी मतिजिनकोश ॥ वृद्धि करो अ प्पा जरो, निजगुण जावसंतोष ॥ ६६ ॥ काव्यम् ॥ प्रतिद्दणें जेह जिनराजआणे, निजपरजावविन्नाण ना णे ॥ जेहथी आत्मगुणगाण वाधे, जावथी कोशनी वृद्धि साधे ॥ ६७ ॥ इति एकविंशतिकोशपूजा ॥२१॥

॥ दोहा ॥ इम एकवीश विधिपूजना, विरचे जे थिरचित्त ॥ मानव नव सफलो करे, बाधे समके तचित्त ॥ ६८ ॥ ढाल ॥ अगणित गुणगण आगर, नागरवंदितपाय ॥ श्रुतधारी उपगारी, श्रीज्ञानसागर उवझाय ॥ तास चरणकज सेवक, मधुकरपरें लय लीन ॥ श्रीजिनपूजा गाइ, जिनवाणी रसपीन ॥६९ ॥ काव्यम् ॥ संवतगुणयुग अचल इंडु, हर्षनर गाई उ श्रीजिनेंडु ॥ तास फल सुकृतथी सकल प्राणी, लहो ज्ञानउद्योत घन शिवनिशानी ॥ ७० ॥ दोहा ॥ इगवीश श्रावकगुणवनें, पूजा पुष्कर मेह ; सुरनर सुख फूलें फलें, शिवसुख लहे अछेह ॥ ७१ ॥

इति श्रावकगुणोपरि एकवीशप्रकारीपूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

॥ देवपालकविकृत स्नात्रपूजा प्रारंभः ॥

॥ पूर्वदिशायें अथवा उत्तरदिशायें बाजोठ मांमी, ते ना उपर कुंकुमनो स्वस्तिक करी, पछी तेना उपर एक थाल मूकीयें, ते थालमां केशरनो स्वस्तिक करि मांहे पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापन करियें. पछी श्रावक पं

चामृतनो कलश नरी तेने अंगलुहणे ढांकीने ते कल
शने त्यां स्थापन करी. नीचें लखेली गाथा कहे.

(गाथा) आर्या ॥ मुक्तालंकारविकार, सारसौम्य
त्वकांतिकमनीयम् ॥ सहजनिजरूपनिर्जित, जगत्रयं
पातु जिनबिंबम् ॥ १ ॥ ए गाथा कही, प्रतिमाजीना
अलंकार उतारीयें ॥ गाथा ॥ अवणिय कुसुमाहरणं, प
यई पयडिय मणोहरछायं ॥ जिणरूव मज्जणपीढ, सं
ठिअंवो सिवं दिसउ ॥ (पाठांतरे) संठिअंवो सवन्न
हस॥२॥ ए गाथा नणी निर्माल्य उतारीयें ॥ गाथा ॥
बालत्तणम्मि सामिअ. सुमेरुसिहरम्मि कणयकलसेहिं
॥ तिअसा सुरेहिं एहविउं, ते धन्ना जेहिं दिठोसि
॥ ३ ॥ ए गाथा कही, कलशें पखाल करी संक्षेपें पू
जीयें. पठी स्नात्र कारकना हाथ,धूप चदने वासी हा
थमां कुसुमांजलि आपी, प्रनुनी जमणी बाजु पाटला
उपर उनो राखीयें पठी नमोऽर्हत् सि० ॥ कहियें.

॥ ढाल ॥ (चाल) पवित्र उदक लेइ अंग प
खालि ॥ विविधवस्त्र जदवचिरमाली ॥ कुसुमंजलि
म्हेलो आदि जिणंदा ॥ तोरां चरणकमल सेवे चोश
ठ इंदा ॥ कुसुमांजलि० ॥ १ ॥ (गाथा) आर्या ॥
सयवत्त कुंद मालय, बहुविह कुसुमाई पंचवन्नाई ॥

जिणनाहन्हवणकाले दिंती सुरा कुसुमंजलि हठा ॥ एम कही, प्रभुना चरणे कुसुमांजलि चढाविये ॥ इति प्रथमकुसुमांजलिः ॥ १ ॥ नमोऽर्हत् सि० ॥ कहीयें-

॥ ढाल (चाल) सिंहासण सामी थापीजें, पयकमलें कुसुमंजलि कीजें ॥ कुसुमंजलि म्हेलो शांति जिणंदा ॥ तोरां चरणकमल सेवे चोशठ इंदा ॥ कुसु०॥२॥ गाथा ॥ दोहा ॥ जामुक्किय सुरासुरेहिं, मजण पढम जिणेस ; सा कुसुमंजलि अवहरउ, जविय दुरिय असेस ॥ एम कही कुसुमंजलि चढावीयें इति द्वितीय कुसुमांजलिः ॥ २॥नमोऽर्हतसि०॥ कहीयें.

॥ ढाल (चाल) कनककलश जल निर्मल जरियें, सामीनें सिरपर एह्वणज करियें ॥ कुसुमांजलि म्हेलो नेमजिणंदा ॥ तोरां चरण० ॥कुसु०॥३॥ (गाथा) ॥ आर्या ॥ गंधाईढ्ढियमहुयर, मणहर जंकारसद्दसंगीया ॥ जिणचलणोवरि मुक्का, हरउ तुम्ह कुसमंजलि दुरियं ॥ १ ॥ एम कही, कुसमांजलि चढावीयें ॥ इति तृतीयकुसमांजलिः ॥ ३ ॥ नमोऽर्हत्सि० ॥ कहीयें.

॥ ढाल ॥ चाल ॥ अगर कपूर धूप कर वासीजें, करसंपुट चंदन चरचीजें ॥ कुसुमंजलि म्हेलो पास

जिणंदा ॥ तोरां चरण० ॥ कुसु० ॥४॥ वस्तु ॥ मुक्क जिणवर मुक्क जिणवर न्हवणकालंमि, कुसुमंजलि सुरवरहिं, महमहंति तिहुयण मह्ग्घिय,निवडंतु जिणपयकमलिं हरउ डुरिय सिरिसमणसंघह, पासजिणंदह्पयकमलिं, देविहिं मुक्कसंतोस, सा कुसुमंजलि अवहरउ, नविय डुरिय असेस ॥ १ ॥ एम कही, कुसुमांजलि चढावियें ॥ इति चतुर्थकुसुमांजलिः ॥ ४ ॥ नमोऽर्हत् सि० ॥ कहीयें ॥

॥ ढाल ॥ (चाल) ॥ सरस सेवंतरी मालतीमाला, गुण गावे इम कविय देपाला ॥ रूपन्न अजित संनव गुण गाउं, अनंतचोवीशी जिननी उलग पाउं ॥ कुसुमांजलि म्हेलो वीर जिणंदा ॥ तोरां चरण० ॥ कुसु० ॥ ५ ॥ वस्तु ॥ जाइजुईहिं जाइजुईहिं कुंदमंदार, नीलुप्पल कमलदल, सिंडुवारचंपय समुज्जल, पसरंतु परिमलमिलिय, गंधलुद्ध लुटंत महुयर, इय कुसुमंजलि जिणचलणिं, चिंतिय पावपणास, मुक्कियतारागण सरिस, (पागंतरे) मुक्कियतारा अणुसरिस, नवियह पूरउ आस ॥ १ ॥ एम नणीने कुसुमांजलि चढावियें. छूटां फूल, नगवंतनी सन्मुख वधावीयें, कुसुमनो मेघ वरसावीयें ॥ इति पंचमकुसु

मांजलिः ॥ ५ ॥ पढी स्नात्रीया चैत्यवंदन करी, हाथ धूपी, कलश लेइ उन्ना रहीने श्रीआदिनाथनो जन्मा न्निषेक कलश कहे. ते लखीयें छैयें.

॥ अथ आदिनाथजन्मान्निषेककलशः ॥

॥ वस्तु ॥

॥ विणयनयरि विणयनयरी, नान्निनिवगेहिं, मरु देविहिं उयरिंसिरि, राय हंससारिछ सामिय रउ, न सहेसर पढम जिण, पढम रायवर वसहगवढावीयें सह अलंकिय कणय तणुं,जायो जगआधार कहीयें. य वंदिय तसु तणो, कहिसुं जम्मसुविचार निर्मल ॥ ढाल ॥ सवठविमाणेह चविय नाह, उवरमांज आविअ गयविबाह ॥ कुलघर सिरिनान्निनरिंदगे ॥१॥ सम दुःसुम तिय अरयठेहिं ॥ २ ॥ जं

॥ हरिगीतबंद ॥ सुसम दुःसम, अरयमंमण, सवठ विमाणह सुरचविं ॥ सिरिनान्निराया, कुलहमंमण, उ वऊावरिं अवतरिं ॥ सुविशाल माला, पउढमुगता, गीत नाद सवे करे ॥ उत्सव जाणी, मन्न आणी, ति थंकरकुल अवतरिं ॥ हवे दान दीजें, पुण्य कीजें, म न्न रीझे अति घणां ॥ घरघर मंगल, तरियां तोरण, उ

त्सव होय वधामणा ॥ निसिन्नरें पोढी, हरष आणी, इसुं जाणी इम कहे ॥ पाछली राति, प्रनात वेला, सुपन मरुदेवा लहे ॥ १ ॥

॥ अथ सुपननी ढाल, उलालानी ॥

॥ प्रथम ऐरावण दीठो, नयणे अमीय पइठो ॥ बीजे वृषन उदार, दीठो अति सुखकार ॥ १ ॥ त्रीजे मृगपति पेखे, दरिसण डुरित उवेखे ॥ चोथे लख मीअ सोहे, जिण दीठे जग मोहे ॥ २ ॥ पांचमे कुसुमनी माला, छठे चंद विशाला ॥ सातमे तमहर दिनकर, आठमे इंद्रध्वज जयकर ॥ ३ ॥ नवमे कलस मनोहर, दशमे पद्म सरोवर ॥ इग्यारमे सागर सुंदर, बारमे अमरनुं मंदिर ॥ ४ ॥ तेरमे मणिन्नर गगने, चउदमे निर्धूम अगनि ॥ इति सुणी सुपनना पाठक, बोल्या [illegible]जमुख शुचिक ॥ ५ ॥ राजन् तुम सुत हो[illegible] कुं तस मुख जोसे ॥ नरपति अहवा जिणंद, तुम [illegible]पाव्यो ए चंद ॥ ६ ॥ राय दिये बहु मान, पाठकेन घणुं दान ॥ पाठक सुपन सुणावे, घरणी निज घरे आवे ॥ ७ ॥ इति सुपननी ढाल ॥

॥ मूल गाथा ॥ मरुदेवीहिं उयरि उपन्नह जाम,

निझर, अठ सहस चउसहिजुअ, पंचवन्न कलसेहिं, न्हवइ सोहम्मउ जिण एह्वइ तप्पजणु संखेवि ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ (चाल) ॥ इसाणिंद जिण उछंग लेई, चउ धवल वसह सुरवइ करेई ॥ तसु सिंगिहिं अठ सु गंध धार, जल निवडइं सुर तियलोय सार ॥९॥ वाजं तइ मद्दल तिवलनाद, वर जल्लरि झुंगल नेरिसाद ॥ गा जंते अंबर देवि देव, जिण मज्जिय नच्चिय करइ सेव॥ १०॥ पूजइ वर कुसमहिं रिसहनाह,बहुभत्तिअ नावें हुइ सनाह॥आरत्तिअ मंगल दीवुरकेव, उत्तारइ सुरवइ रंगहेव ॥ ११ ॥ वस्तु ॥ रिसहमज्जण रिसहमज्जण करिय सुरराय, उप्पाडिय जयजय करिय, जणणिपा सि मिल्हेवि जत्ता, नंदीसर अठ दिवस, करिय देवदे वी नियगण पत्ता, इणिपरिं सयल जिणेसरहिं,करहु न्हवण बहुभत्ति, मुणिरयणायर पावहर, जिम तुम दियइ वरमुत्ति ॥ १२ ॥ इति श्रीआदिनाथजन्माभि षेककलशः समाप्तः ॥

॥ अहीं कुसमांजलि वाला स्नात्रीया, त्रण खमा समण देइ जग चिंतामणि चैत्यवंदन करी, "नमुत्थु णं" कही, जयवीयरायपर्यंत कहे. पछी एक, कल शधारक श्रावकना हाथ धोवरावी, चंदन चरची

धूपीने मुखें मुखकोश बांधे, पछी त्रण खमासमण आपी एक नवकार गणी, पंचामृतनो कलश, अंगलूहणे ढांकी फूलमाला पहेरावी हाथमां लेइ, हृदय आगल धरी उनो रहीने मुखथकी "श्री पार्श्वनाथ स्वामी" नो जन्माभिषेक कलश कहे. ते कलश लखीयें छैयें.

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ कलशः ॥

॥ श्रीसौराष्ट्र देशमध्ये, श्रीमंगलपुर मंमणो, दुरित विहंमणो, अनाथनाथ, असरणसरण, त्रिभुवनजनमनरंजणो, त्रेवीशमो तीर्थंकर, श्री पार्श्वनाथ, तेह तणो, कलश कहिशुं ॥ ढाल ॥ हांरे वणारसी नयरी वसेय अनुपम, उपम अवदाधार ॥ तिहां वावी सरोवर नदीय कूपजल, वनस्पति अढार ॥ तिहां गढ मढ मंदिर दीसे अभिनव, सुंदर पोलि प्राकार ॥ कोसीसा पाखल फिरति खाई, कोटें विसमा घाट ॥ १ ॥ जिनमंमप सिखर बहुत प्रासादें, दंम कलश ब्रह्मांम ॥ अति गिरुआ गुणसागर बहु सोहे, दीसे पुहवीप्रचंम ॥ तिहां हाट चउटा वस्तु विवेकी, विवहारीआ अनेक ॥ लखेसरी कोटी गढतल मंदिर, बोले वचन विवेक ॥ २ ॥ हवे ते नगरी बहुरी व्यवहारी, घर घर मंगल चार ॥

नारीकरकंकण सुंदर जलके, करी सकल सिणगार ॥ तिहां राजा अश्वसेन महीमंडल, दानखडग जीपंत ॥ अति न्यायवंत दीसे नरनायक, वामादेवीकंत ॥ ३ ॥ हांरे सरगलोकथी चवीय सुरवर, उपन्नो कुल जास ॥ तिहां कृष्ण चोथें चैत्रमासें, ए हवे अति उल्लास ॥ तिहां राणी पश्चिम रयणी पेखे,सुहणा चउद विसाल ॥ तस कुखें अवतरशे जिनवर, जीवदया प्रतिपाल ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपननी ढाल, उलालानी ॥

॥ पहेले गयवर दीठो, मुज मुखकमलें पईठो ॥ बीजे वृषभ उदार, दीठो अति सुकुमार ॥ ५ ॥ त्रीजे सिंह संपूरो, मही मंडलमांहे ए सूरो ॥ चोथे लखमी ए दीठी, रतन कमलें ए बेठी ॥ ६ ॥ वर उतरती ए माल, कुसुमनी फाकफमाल ॥ छठे पूनिम चंदो, अमीय फरे सुखकंदो ॥७॥ तेजें तपंतो ए नाण, करतो सफल विहाण ॥ धजा उतरती आकासें, लोडंती अंबरवासे ॥ ८ ॥ कणयकलस सिरें करियो, अमीय महारस भरियो ॥ दसमे पदमसरोवर, दीठो वामादेवी मनोहर ॥ ए ॥ खीरसमुद्द घरें आयो, मुज मन सयल सु

ह्यायो ॥ ठंमी निज निज गाम, आव्युं आव्युं अमरवि मान ॥ १० ॥ पेखी पेखी रयणनी रासि, सग पण चढी आकासि ॥ जलण जलंतो ए दक्खिण, जागी वामादेवी तक्खिण ॥ ११ ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ ढाल ॥

॥ नवमे मासे आठमे दिवसें, जायो जिनवर रायो जी ॥ घरे गूडी तरियां तोरण लहेके, जिनमंदिर उब्बायो जी ॥ १ ॥ ततखिण ठप्पन्न कुमरी आवे, वधावे जिणंदो जी ॥ डुस्तर कालमांहिं ए जिनवर, प्रगटयो पूनिमचंदो जी ॥ २ ॥ उलालीवज्ज सुर इम बोले,आसन कंपे इंदो जी ॥ तियां जोइ अवधि नाणे तेणी वेला, अवतरिया जिणंदो जी ॥ ३ ॥ तिणे थानकें जनममहोत्सव करवा, आवे चोशठ इंदो जी ॥ मेरुसिखर पर रत्नसिंहासन, बेठा पास जिणंदो जी ॥ ४ ॥ तिहां हुउ सनाथ ठत्र सिर सोहे,ढाले चामर सुरेंदो जी ॥ पद्मुतासुर मली प्रज्ञुथानकवर, लब्धिपात्र जयवंतो जी ॥ ५ ॥ नवपल्लव जिन महिमासागर,आगर तणो नंमारो जी ॥ इरकागवंस तिहुयण मनरंजण, जिनसासन सिणगारो जी ॥ ६ ॥ न

ऐ वङचंमारी अम मन, वसिउ श्रीअरिहंतो जी ॥ नीलवरण तनु महिमासागर, जयउ जयउ जगवंता जी ॥ ७ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथकलशः संपूर्णः ॥

अहीं स्नातस्याप्रतिमस्य० ॥ ए श्लोक, आ चोपडीना पृष्ठ (५०) मां ठे ते कहिने, कलशाजिपेक करियें. पठी दूध, दधि, घृत, जल, अने शर्करा, ए पंचामृतनो पखाल करि पठी पूजा करियें ॥

॥ मोगर लाल गुलाल मालती, चंपक केतकी वेलि ॥ कुंद प्रियंगु नागवरजाति, वोलसिरि शुचि मेलि ॥ मो० ॥ १ ॥ जूमंमल जल मोकले फूलें, ते पण शुद्ध अखंमि ॥ जिनपदपंकज जिम हरि पूजे, तिण परें जवि तुमे मंमि ॥ मो०॥ २ ॥ गीतं ॥ पारंग तेरे पदपंकज पर, विविध कुसुम सोहे॥ठरनकुं हे आक धतूरे, तुम समो नवि कोहे ॥पा०॥१॥ विविध कुसुमजाति सोहे, पांचमी पूजा पूजे ॥ तव जवि जिन रोग सोग, सवि उपद्रव धूजे ॥ पा० ॥ २ ॥ इति देवपालकविकृत स्नात्रपूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ लूणउतारणं ॥

॥ लूण उतारो जिनवर अंगें, निर्मल जलधारा मन

॥ अथ श्रीदेवचंदजीकृत स्नात्रपूजाविधि प्रारंभः ॥

प्रथम निस्सही पूर्वक श्रीदेरासरमध्यें आवी अंग शुद्ध करी,नवीन वस्त्र पहेरी,स्वनालतिलक करी,बाजो ठनी स्थापना करी, ते उपर बाजोठ मांडी, स्नात्र पीठ उपर थालनी स्थापना करवी; ते उपर तंडुलनी ढगली करवी; तेनी उपर रूपानाणुं तथा नालीएर धरीने पछी स्नात्रीयाएं पोताना हाथे मौली सूत्र बांधवुं, तथा बीजा कलश प्रमुख स्थानकें मौलीबंधन करी, कलशाने धूप दइ, डुध,दधि, घृत, जल, तथा शर्करा, ए पंचामृतथी कलश भरी राखवा. पछी मुख कोश बांधी मूल नायकजी आगल आवी नमस्कार करी, अने धूपधाणुं हाथमां लइ धूप उखेववो. ते समयें मुखथी धूपावलीनी गाथा कहेवी, ते आ प्रमाणेः—

॥ असुरिंद सुरिंदाणं,किन्नर गंधव्व चंद सूराणं ॥ विद्याहरा सुराणं, सज्जोगा सिद्धाण सिद्धाणं ॥१॥ मुनिय परमठ विठ्ठर,विगछ विविह तव सोसियंगाणं ॥ सिद्धवहू निम्नरकं, ठियाणं जोगीसराणं च ॥ २ ॥ जे पूया भगवंत, तिछयरा राग रोस तम रहिया ॥ वि

एय पणएण तेसिं, सुमुहूर्त्तं मे इमे धूउं ॥ ३ ॥
तित्थंकर पडिमाणं,कंचण मणि रयण विद्दुममयाणं ॥
तिहुयण विभूसगाणं, सासय सुरनर कयाणं च ॥४॥
सिद्धाण सूरि पाठग, साहूणं जाण जोग निरयाणं॥
सुयदेवय माईणं, सुमुहुत्तं मे इमे धूउं ॥ ५ ॥

ए गाथाउं कह्या पछी प्रथम अक्षतने धोइ तेउं ने केशर तथा चंदन लगाडवुं; तथा पुष्पोने पण जलथी शुद्ध करी राखवां, तदनंतर ते अक्षत तथा फूलनी कुसुमांजलि हाथमां लइ, उना थइने "नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्ध"० ॥ एम पाठ कहेवो, अने पछी बे श्लोक पठन करवा, ते आ प्रमाणेः—

"श्रीमत्पुण्यं पवित्रं कृतविपुलफलं मंगलं लक्ष्म लक्ष्म्याः, क्षुद्रारिष्टोपसर्गग्रहगतिविकृतिस्वप्नमुत्पातघाति ॥ संकेतं कौतुकानां सकलसुखमुखं पर्व सर्वोत्सवानां, स्नात्रं पात्रं गुणानां गुरुगरिम गुरोर्वर्चिता यैर्न दृष्ट ॥१॥ अशेषजनवनांतराश्रितसमाजखेदक्षमो, न चापि रमणीयतामतिशयीत तस्यापरः ॥ प्रदेश इह मानतो निखिललोकसाधारणः, सुमेरुरिति तापिनः स्नपनपीठभाव गतः ॥ २ ॥

एम कह्या पछी स्नात्र पीठ सन्मुख कुसुमांजलि

अर्पण करवी, तदनंतर स्नापनपीठ पखाली लूहीने
कुंकुमनो स्वस्तिक करवो ; धूप उखेववो ; अने सर्व
स्नात्रीआउना हाथने धूपावली आपवी ; पछी क
पूर लगाडवो ; अने एक नवकार कहीने स्नात्र पीठ
उपर प्रतिमाजीनी स्थापना करवी. ते प्रतिमा प्रायें
पंचतीर्थिक, अथपर कर संयुक्त स्थापवी. तेना मुख
आगल अक्षतोनी ढगली करवी. अने तेनी उपर पं
चामृतनो एक कलश मुकवो. पछी हाथमां कुसुमांज
लि लइने (मुक्तालंकारविकार०॥) ए आर्या नणी कु
सुमांजलि अर्पण करीने, प्रतिमाजीनां निर्माल्य उ
तारी प्रक्षालन करवुं. पछी अंगलूहणाथी प्रमार्जी
धूप उखेववो; अने केशर, चंदन, कपूर तथा कस्तू
घसी ते पवित्रनाजनमां नरीने ते नाजन प्रतिमा
आगल धरवुं.वली कुसुमांजलि हाथमां लइ उना थ
"ॐ नमो अरिहंताणं० ॥ नमोऽर्हत्सिद्ध०॥" कहीने
स्नात्र पूजानीपहेली पांखडी कहेवी.एम अनुक्रमे पांच
पांखडी कही, कुंसुमांजलि पूर्ण करीने हाथमां चमर
लइनें ते नगवंतनी उपर ढोलतो ॥ वस्तु ॥ "सयल
जिनवरथी मांमीने यावत् वधाई वधाई थइ अतिव"
सुधीनो पाठ कहे ते पूर्ण थया पछी चैत्य वंदन करवुं.

शक्रस्तव कही जयवीयराय"सुधी नणवुं. पठी हाथ धो इ धूप कर्पूरादिक हाथने लगाडवां. त्यारकेडें पूर्वें कलशोने धोइ धूप आपी कंठें मौलीसूत्र बांधी उपर स्वस्तिक करी तेउमां पंचामृत नरी, अक्षतोना ढगला उ उपर धारण करी, तेनी उपर अंगलूहणां ढांकी धूप उखेवी, तेउमाना मात्र बेज कलशोने आसपा स जलधारा देइने राख्या होय. पठी स्नात्रीया ना हाथमां स्वस्तिको करी सर्वें जणोयें श्रेणीबद्ध उना रहेवुं, अने प्रत्येक स्नात्रीआयें खमासमण देइ, पंचांग नमस्कार करवो. पठी प्रत्येक स्नात्रीआयें पोताना बे हाथमां कलशो लेवा, ते कलशधारक "नात्रीआयें पोताना बन्ने हाथने विपे रहेला कलश ो उत्तरासंग वस्त्रवडे ढांकी राखवा, अने पोतें उना उतां मुखथी "श्रीतीर्थपतिनो कलश मज्जन०" इहांथी मांमीने संपूर्ण पूजा नणवी. त्यार पठी, प्रति माजी उपर कलशो ढोली, पखाल करी अंगलूह णाथी मज्जन करी, केशर चंदनथी अर्चन करीने फू ल चढाववां. पठी थालमां स्वस्तिक करी बिंबनी स्थापना करवी; अने धूप करवो. ते समये आ प्रमा णे पाठ नणवोः —

॥ अथ कलश ढालवा समयनुं स्तवन ॥

॥ इंद्र कलशजर ढारे श्रीजिन पर ॥ इंद्र कलश०॥ हाथो हाथ अमरगण आनत, खीर विमल जल धारे ॥ श्रीजिनपर० ॥१॥ सुरवनिता मलि मंगल गावे, नावत नाव मल्हारे ॥ श्रीजिनपर० ॥२॥ किन्नर अरु गंधर्व महोरग, नीरत नीर नित सारे ॥ श्रीजिनपर०॥ ॥ ३ ॥ देव डुंडुभिधुनि गर्जत अति, शिर पर सुजस विथारे ॥ श्रीजिनपर० ॥४॥ परमानंद जिनराज जगतपद, जगजीवन हितकारे ॥ श्रीजिनपर० ॥ ५ ॥ इति कलशढालवासमयनुं स्तवन ॥

पछी रकेबीमां लूण पाणी लइने आरतिनी परें करवुं. अने ते वखतें मुख थकी गाथाउ कहेवी, ते आवी रीतेः—

॥ अथ लूण उतारण गाथा ॥

॥ उवहि पडिभग्ग पसरं, पयाहिणं मुणिवइ करेऊणं॥ पडइ सलूण त्तणलज्जियं च लूणं हु अवहंमी ॥१॥ पिरकेविणु मुहजिणवरह, दीहर नयण सलूण; न्हावइ ल२ मञर नरिय, जलणी पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूणउ जिनव२जिणवरह, तिन्नि पयाहिण देउ; तडयड सद्द सुधीनो प० विज्जा विज्ज जलेण ॥ ३ ॥ जं जेणविज्ज

विक्काइ, जलेण तं तह निह्वइ सस्सद्दं ॥ जिण रूव मच्छरेणुव, फुट्टइ लूणं तडयडस्स ॥ ४ ॥ ए गाथाउ कहीने लूणने अग्निशरण करवुं. पछी वली प्रथमनी पठे लूण पाणी लइने मुखथी आवी रीतें गाथाउ कहेवी.—

॥ सवं मुणिवइ जलविजउ, तंतह भमडइ पास ॥ अह्व कयंतसुनिम्मलु, निग्गुण बुद्धि पयास ॥ १ ॥ जज आणेविणु जलणिहि पासह, नर विकयंजलि ना विहिं पासह ॥ तिन्नि पयाह्विण दिंतिय पासह, जिम जिउ बुट्टइं नव डुह पासह ॥ २ ॥ जल निम्मल कर कमलहि लेविणु, सुरवइ न्हावहि मुणिवइ सेविणु ॥ पजणइ जिणवर तुह पइ सरणं, जय तुट्टइ जम्मइ सिद्धि गमणं ॥ ३ ॥ ए गाथाउ कही लूण पाणी उतारीने जल शरण करवुं. त्यार पछी माला लइ उना रहीने आ प्रमाणे गाथाउ कहेवीः—

॥ अथ पुष्पमालपूजा गाथा ॥

॥ उन्नय पय्यम नत्तस, नियठाणे संठियं कुणं तस्स ॥ जिणपासे नमिय जिणस्स, निय ठाणे संठियं तस्स (पाठांतरे) पिछतुह हुय वहे पम्हणं ॥ १ ॥ सवो जिणप्पन्नावो, सरिसा सरिसेसु जेण

रच्चंति ॥ सव्वन्नूण मपासे, जडस्स जमणं ण संकम
णं ॥२॥ अच्चंत डुक्करं विहु, हुअवह निवडेण जडेण
कयं ॥ आणा सव्वन्नूणं, न कया सुकयब्ब मूलमणिं
॥३॥ ए पाठ जणीने माला चढाववी, पछी हाथमां छूटां
फूलो लेवां, ते वखत गाथाउ कहेवी, ते आ प्रमाणेः—

॥ अथ छूटां फूलपूजा गाथा ॥

॥ उसरणो जिणपुरउ, परिमल मिलिया उखिवि
ह संगीया ॥ मुत्तामरेह्रिवो कुणउ, मरमल मिलिया
उरिकविह्सं ॥ १ ॥ उवणेउ मंगलं वो, जिणाण मु
हलालि जाव संवलिया ॥ तिब्ब पव्वतण समए, तिय
सेवि मुक्का कुसम वुंही ॥ २ ॥ ए पाठ कहीने प्रभु
नी आगल फूलो उछालवां. हवे आजरण तथा व
स्त्रो लइने उजा छतां गाथाउ कहेवी. ते आ प्रमाणेः—

॥ अथ वस्त्राजरण पूजा ॥

॥ श्लोकः ॥ शक्रोयथा जिनपतेः सुरशैलचूला,
सिंहासनोपरिमितस्नपनाऽवसाने ॥ दध्यक्ततैः कुसुम
चंदनगंधधूपैः कृत्वार्च्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥
॥ १ ॥ तद्वत् श्रावकवर्गएष विधिनालंकारवस्त्रादिकं,
पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिजक्त्याहृतः ॥

नीरागस्य निरंजनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्व स्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ ॥ २ ॥ एम कही आनरण तथा वस्त्रपूजा करवी॥

॥ पठी ज्ञान पूजा करे, तेनी गाथाउ ॥

॥ नमंति सामिति महीवनाहं, देवाय पूयं सु जहेव पुवं ॥ नत्तीय चित्तं मण दाम एहिं, मंदार पुप्फेह सवेह नाहं ॥ १ ॥ तहेव सद्यामण मुत्त एही, सुगंध पुप्फेह वरंस एहिं ॥ पूयंत वंदंत नमंत नाणं,नाणस्स ला नाय नवरकयाय॥ २॥ए गाथाउ कहीने पुष्पोनी माळा चढाववी ; तथा रौप्यमुद्रा, सुवर्णमुद्रा,मणि रत्न, तथा वस्त्र एउंएं करी स्वशक्ति अनुसार ज्ञाननी पूजा करवी.

॥ पठी धूप करती वखतें आ गाथा कहेवी ॥

॥ मीनकुरंगमदारमसारं, सारसुगंधनिशाकरता रं ॥ तारमिलन्मलयोद्भविकारं, लोकगुरोर्दह धूप मुदारं ॥ १ ॥ एम कहीने धूप उखेववो. पठी मंगल दीपक करीने आ गाथाउ कहेवीः—

॥ अथ मंगलदीपक पूजा ॥

॥ कोसंबी संतियस्सवि, पयाहिणं कुणइ मउलिय पइवो ॥ जिणसोम दंसणोदिण, यरूव तुह नाह मं

गल पइवो ॥१॥ नामीजंतो सुर सुंदरीहिं तुह नाह मं गल पइवो ॥ कणयायलस्स निक्किय, नाणुव्व पयाहि णं दिंतो ॥२॥ ए गाथा कहीने मंगलप्रदीप करवो. पछी रकेबीमां कर्पूर धरी, आरतिमां बत्ती सलगावीने मुख थकी आ गाथाउ कहेवीः —

॥ अथ आरति गाथा ॥

॥ जं मरगय मणि गडिय, विसाल थाल माणिक्क मं डिय पइवो ॥ एहवण यरकरु खित्तं, भमउ जिण आ रत्तियं तुम्हं ॥१॥ आरत्तिअं नियब्बह, जिणस्स धूव कि सणागरुब्भायं ॥ पासेसु भमउ निक्किय, संगमय विनिन्न दिट्ठिव ॥२॥ पसमेयव्वो भवंतर, समक्कियं कम्मरेणु सं घायं ॥ आरत्तिय मंगलग्गा उछलंति सलिलधारा ॥३॥ एवी रीतें आरति करवी ॥ इति संक्षेप आरति विधिः॥

॥ पछी उत्तरासंग करी, चैत्यवंदन करवुं, अने अ ष्ट प्रकारें पूजा करवी. कदाचित् अष्टप्रकारें पूजा न कराय तो शेष फल फूल ने नैवेद्य जे होय, ते एमज चढावी देवुं. पछी गुणगीत करवां, जय जय शब्द उ च्चारवा, सामीवात्सल्य करवो, तथा यथाशक्ति दान देवुं ॥ इति श्रीस्नात्रपूजाविधिः समाप्तः ॥

॥ आरति, दीपक, लूण जलविधिः प्रारभ्यते ॥

॥ प्रभुथी अंतरपट करी, प्रभु सन्मुख वेशी आरति करनारने नव अंगें कुंकुमना तिलक करवां. पछी एक थालमां स्वस्तिक करी, तेमां आरति, मंगल दीपक, जमणी बाजु राखी, त्यां आरतिमां घृत थोडुं भरवुं. अने मंगल दीपकमां घृत पूर्ण भरवुं. पछी केशर, फूल, तंडुलें करी, तेनी पूजा करवी. उपर कुंकुमना छांटा नाखी मंगल दीपक प्रगटावे. अने कर्पूर सलगावे तेनो मंत्र कहेछे. ॐ अर्हते पंचज्ञानमहा ज्योतिमयाय, ध्वांतघातने द्योतनाय, प्रतिमायादीपो भूयात्सर्वदाऽर्हते ॥ १ ॥ एम भणी. मंगलदीपक प्रगटावीने पछी ते मंगलदीपकथी आरति प्रगटावे. पछी दीवो नीचें मूकीने आरति उतारे. तेवार पछी दीपक उतारे. पछी लूणनी कांकरी लेइ "लूण उतारो जिनवर अंगें" इत्यादि पाठ कही लूणनी गाथा भणे. पछी बृहच्छांति कहे, ते न आवडे तो त्रण नवकार गणी, आ प्रमाणे श्लोक कहे ते॥ श्लोक ॥ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतं ॥ तत्सर्वं क्षमया देव! क्षम त्वं परमेश्वर ॥ १ ॥ एम कही चैत्य वंदन करे ॥ इति आरति दीपक लूण जलं विधिः ॥

॥ अथ सत्तरभेदीपूजा थ्यापन विधिः ॥

१ प्रथम स्नात्र करे, पछी अष्टप्रकारी पूजा करे, उज्ज्वल रूपा प्रमुखनी रकेबीमां कुंकुम तथा केशर विगेरेनो स्वस्तिक करे. पछी सुंदर कलश, केशर प्रमुख मिश्रित शुद्ध जलें भरी, स्थापनानो रूपैयो कलशमां नाखे. कलश रकेबीमां राखी, पछी स्नात्री आ मुखकोश उत्तरासंगथी करी त्रण नवकार गणी नमस्कार करे. हाथे धूप देइ रकेबी हाथमां धारण करे, मन स्थिर राखे, छीक वर्जन करे, स्नात्रीया प्रभुजी सन्मुख उभा रहे. पंचामृतनो कलश अभि ग राखे, मुखथकी पहेली पूजानो पाठ भणे, ते भणीने पछी प्रभुने पंचामृतनुं न्हवण करे तथा प्रभुनी मावी बाजुना अंगुठे जलधारा आपे.

२ पछी सुंदर सूक्ष्म अंगलूहणे जिनबिंब प्रमार्जी केशर चंदन, मृगमद, अगर, कर्पूरादिकथी कचोली भरी हाथमां लइ उभो रहीने मुखथकी बीजी पूजा नो पाठ भणे. ते भणीने विलेपन करी नव अंगें पूजन करे.

३ पछी अत्यंत सुकोमल सुगंधित अमुलक वस्त्र युग्म उपर केशरनो स्वस्तिक करी. प्रभुजी आगल

जनो रही, मुखथकी त्रीजी पूजानो पाठ जणे. ते जणीने प्रजुजी आगल वस्त्र युग्म चढावे.

४ पठी अगरचंदन, कर्पूर, कुंकुम, कस्तुरीनुं चूर्ण करी, कचोली जरी, प्रजु आगल जनो रही, मुख थ की चोथी पूजानो पाठ जणे. ते जणीने वासचूर्ण, बिंब उपर छांटे; जिनमंदिरमां चूर्ण उठाले.

५ पठी गुलाब, केतकी, चंपो, कुंद, मचकुंद, सो वनजाति, जूई, विउलसिरि, इत्यादि सुगंधयुक्त पंच वर्ण फूल लेइ, जनो रही, मुख थकी पांचमी पूजानो पाठ जणे. ते जणीने, पंचवर्ण फूल चढावे.

६ पठी नाग, पुन्नाग, मरुउ, दमणो, गुलाब, पा रूल, मोगरो. सेवंत्री, चंपेली, मालती प्रमुख पंचव र्णनां कुसुमनी सुंदर माला गुंथीने हाथमां लेइ, ज नो रही बठी पूजानो पाठ जणे. ते जणीने, प्रजुना कंठें फूलनी माला पहेरावे.

७ पठी पंचवर्ण फूल, केशरसुं आंगी रची, हा थमां लेइ मुखथकी सातमी पूजानो पाठ जणे. ते जणीने, सुगंधित पुष्पें करी, अत्यंत जक्तियें सहित जगवंतना शरीर आंगी रचे.

८ पढी घनसार, अगर, सेलारस प्रमुख सुगंधव टी इत्यादिक सुगंधचूर्ण रकेबीमां नाखी, हाथमां लेइ परमेश्वर आगल नजो रही मुख थकी आठमी पूजानो पाठ नणे. ते नणीने, प्रजुजीने सुगंधित चूर्ण चढावे.

ए पढी सधवा स्त्रीयो एकठी थइने पंचवर्णी ध्वजा, धूपसहित सुवर्णमय दंमें करी संयुक्त, उज्ज्वल थाल मां कुंकुमनो स्वस्तिक करी अक्षत, श्रीफल, रूपाना णुं धरीने, ते थालमां ध्वजा धारण करे. पढी सधवा स्त्रीना मस्तकें राखी, गीतगान गावतां सर्वजातिनां वाजित्र वाजतां त्रण्य प्रदक्षिणा आपे. पढी ध्वजा उपर गुरुपासें वासक्षेप करावे. प्रजु सन्मुख गुहली करे. उपर अक्षतथी स्वस्तिक करे. सोपारी चढावी मुखथकी नवमी पूजानो पाठ नणे. तेनणी ध्वजा चढावे.

१० पढी पीरोजा, नीलम, लसणीया, मोती, माणकथी जडेला एवा मुकुट, कुंमल, हार, तिलक, बेरखा, कंदोरा, कडां इत्यादिक आनरण लेइ, मुखथकी दशमी पूजानो पाठ नणे. ते नणीने, आनरण तथा रोकड नाणुं मबल चढावे.

११ पढी कोल, अंकोल, कुंद, मचकुंद, एवां सुगंधित पुष्पोनुं गृह बनावी जाली, गोख, कोरणी प्रमु

खनी रचना करी, हाथमां लेइ मुख थकी अगीआर मी पूजानो पाठ नणे. ते नणीने, फूलघर चढावे. फूलनी चंदनमाला, फूलनाचड्वा, पोठीआ प्रमुख बांधे.

१२ पठी पंचवर्णी सुगंधित पुष्प लेइ. फूलनो मेघ वरसावतो बारमी पूजानो पाठ नणे. ते नणीने पुष्प उठाले.

१३ पठी अखंम तंडुलने रंगी, पंचवर्णा करी एक थालमां दर्पण, नड्रासन, नंदावर्त्त, सरावसंपुट, पूर्णकुंन, मत्स्ययुग्म, श्रीवत्स, वर्द्धमान अने स्वस्तिक. ए अष्ट मंगलिक रची ते थाल हाथमां लेइ प्रनुजीनी आगल उनो रही तेरमी पूजानो पाठ नणे ते नणीने, रूपानाणें संयुक्त ते थाल, प्रनुजी आगल धरे.

१४ पठी कृष्णागरु, कुंदरुक, सेलारस, सुगंधवटी, घनसार, चंदन, कस्तुरी, अंबर, इत्यादिक वस्तुनुं धूपधाणुं रकेबीमां धरी, मुखथकी चौदमी पूजानो पाठ नणे. ते नणीने, धूपधाणुं उखेवे.

१५ पठी सुंदर स्वरूपवान एवी कुमार, कुमारिका उ मधुरस्वरें प्रनुजीनी आगल उनां थकां गीतगान करे. अने मुखथकी पंदरमी पूजानो पाठ नणे. ते नणीने पंदरमी पूजा करे.

१६ पछी पंचेंड्रियें परिपूर्ण एवा सुंदर कुमार अने कुमारिकाउं अथवा समान अवस्थावाली सधवा स्त्रीयो अथवा एकली कुमारिकाउं सुंदर वस्त्र, आभूषण पहेरी, प्रभुनी सन्मुख ऊभी रही, शंका कांक्षा रहित नाटक करे. कदापि स्त्रीयोनो योग न बने तो, समान अवस्था वाला पुरुष मली, नाटक करता थका मुखथकी शोलमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने, शोलमी पूजा करे.

१७ पछी मद्दल, कंसाल, तबल, ताल, झांझर, वीणा, सतार, तूरी, भेरी, फेरी, डुंडुभि, सरणाइ, चंग, नफेरी प्रमुख सर्व जातिनां वाजित्र वजावता थका मुखथकी सत्तरमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने, सत्तरमी पूजा करे.

पछी आरति करे, तेनो विधि कहेछे. पूजा भणी रह्या पछी सर्व वस्त्रप्रमुख पहेरी, उत्तरासंग करे. पछी प्रभुथी अंतरपट करी, पोताना ललाटें कुंकुमनुं तिलक करे. पछी अंतरपट दूर करी, रकेबीमां स्वस्तिक करी, मांहे रूपानाणुं, तंडुल, सोपारी धरे. पछी आरति, दीपक साथें संयोजीने प्रभुनी सन्मुख

दक्षिणावर्त्तथी सर्व वाजित्र वाजतां आरति करे. तेनो पाठ लखीयें छैयें. इति सत्तरभेदी पूजा विधिः॥

॥ अथ शांतिजिन आरतिः ॥

॥ जय जय आरति शांति तुमारी, चरणकमलकी में जाउं बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजिके नंदा, शांतिनाथमुख पूनिमचंदा ॥जय०॥ ॥२॥ चालीश धनुष सोवनमय काया, मृग लंछन प्रभु चरण सुहाया ॥जय० ॥३॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पांचमा सोहे, सोलम जिनवर सुर नर मोहे ॥ जय०॥ ४ ॥ मंगल आरति भोरहिं कीजें, जन्म जन्मनो लाहो लीजें ॥ जय०॥ ५ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमरपद पावे ॥ जय० ॥ ६ ॥ इति आरतिः ॥

॥ अथ वीश स्थानकपूजाऽध्यापन विधिः ॥

॥ वीश स्थानकनुं तप मांमतां, अथवा एक एक उली संपूर्ण थाय तेवारें, अथवा तप न कर्युं होय, अने स्वाभाविक भाव भक्तियें पूजा भणाववी होय, तो तेनो विधि आ प्रमाणे छेः—

दिनशुद्धियें शुभ उत्सवें आसन उपर एक पंक्तियें वीश प्रतिमा अलंकार सहित स्थापियें. तेनी आगल

वळी उपरा उपर त्रण बाजोठ मांमीने, तेनी उपर पंच तीर्थी प्रतिमा स्थापन करीने, प्रथम लघुस्नात्र नणा वियें. पछी तीर्थकूपादिकनां पवित्र जल आमंवरें सहित प्रथमथीज लावी मूकेलां होय. ते जलने सुवासित करी, ते जलमांथी थोडे थोडे जलें करी वीश कलश नरीने, पवित्र थयेला वीश पुरुषना हाथमां आपी तेमने उना राखवा.

वळी ते वीश अनिषेक करवाने अर्थें एक पुरुष, फूलनी माळा, एक पात्रमां राखे, एक पुरुष चंदनकेशरनो प्यालो राखे, एक पुरुष दीवामां पूरवाने अर्थें घृतनुं पात्र राखे, एमज फल, अक्षत, नैवेद्य, धूप प्रमुख जे सामग्री मेळवेली होय, ते सर्व चीज एक एक पुरुष पोत पोताना स्वाधीनमां राखे.

तेवार पछी एक पंक्तियें राखेली वीश प्रतिमा मांहेथी एक प्रतिमा लेइने, स्नात्र नणावेली पंचतीर्थी प्रतिमा पासें स्थापन करी, सर्व जनो वीश स्थानकनी पूजा माहेलुं प्रथम स्तवन, रुडी रीतें नणीने प्रतिमाजी उपर वीशे कलश नामे. तेवार पछी एक जण प्रतिमाने अंगलूहणुं करे, एक पुरुष, प्रतिमानुं पूजन करे, एक

पुरुष, फूलनी माला चढावे, एक पुरुष, प्रतिमा आगल बार स्वस्तिक करीने तेना उपर फल मूके, ए जेम प्रथम श्रीअरिहंत पदना बार गुणछे, तो त्यां बार स्वस्तिक करवा कह्या, तेमज जे जे पदना जेटला गुण होय, ते ते पदनी पूजामां तेटला तेटला स्वस्तिक करवा, एवी रीतें नैवेद्यादिक सर्व वस्तु चढावीने, जिन प्रतिमाने रूपानाणे पूजन करी फरी प्रथमस्थानके पधरावीने, पछी पूर्वोक्त वीश प्रतिमानी पंक्तिमांथी वीजी प्रतिमा लेइने पंच तीर्थिकनी प्रतिमा पासें स्थापन करे. तेवार पछी फरी वीश कलश थोडे थोडे जलें नरीने बीजुं स्तवन कही, प्रथमनी परें बीजो सर्व विधि करे. एम वीशे पदने विषे विधि करवो. विधि पूर्ण थया पछी छेवट आरति, मंगलदीवो करे. ए उत्कृष्ट विधि कह्यो, अंतमां मिछामि डुकडं देवो. पछी गुरु पूजा, प्रनावना, स्वामीवात्सल्य करवुं.

अने घणी शक्ति न होय तो एक पुरुषज, एक कलश लइ एक एक स्तवन कही पंचतीर्थीनीज पूजा करे. एम वीश वखत वीश स्तवन कहीने पूजे. एम एकज पंचतीर्थिक आगज यथाशक्ति क्रिया करे तो

पण चाले. कारणके द्रव्यथकी अशक्तने, जो नावनी बाहुल्यता छे तो तेने तेटलुं पण अत्यंत फल दायक थाय छे. इति वीशस्थानकसंक्षेप विधिः ॥

॥ अथ नवाणुंप्रकारीपूजाध्यापन विधिः ॥

॥ जघन्यथी तो, कलश ग्रहण करनारा नव श्रावक अने उत्कृष्ट पणे नवाणुं श्रावक जाणवा.

तथा जघन्यथी नव जातिनां प्रत्येक अगीआर फल लेइनें, प्रत्येक पूजा दीठ नव नव फल मूकवां. एम अगीआरने नव गुणा करीयें तेवारें नवाणुं फल थाय. एमज सुखडी पण जघन्यथी नव जातिनी अगीआर अगीआर नंग लावीने, प्रत्येक पूजा दीठ नव नव नंग मूकवां. तथा नवाणुं दीपक, वंशमालें धरियें. तंडुलना साथीया नवाणुं करियें ॥ इति नवाणुं प्रकारी पूजा विधिः ॥

॥ अथ चोशठप्रकारीपूजाध्यापन विधिः ॥

॥ विशाल जिनभुवनने विषे शुभ मुहूर्तें जलयात्रा वरघोडो रचीने तीर्थोदक मेलववां. अष्ट कर्मनुं मांडलुं, अक्षत रंगी आठ पांखडीनुं उज्ज्वल तंडुलें भरियें.

रेखा पंचवर्णी करियें. पढी रक्त गुलालें सिद्धनां आठ गुणने स्थानकें मंत्राक्षर लखीयें. ते मंत्रनां पद कहेडे.

१ ॐ ह्रीँ अनंतज्ञानात्मकेभ्यो नमः ॥
२ ॐ ह्रीँ अनंतदर्शनात्मकेभ्यो नमः ॥
३ ॐ ह्रीँ अनंतसुखात्मकेभ्यो नमः ॥
४ ॐ ह्रीँ अनंतचरणात्मकेभ्यो नमः ॥
पाठांतरे अनंतक्षायकेभ्यो नमः ॥
५ ॐ ह्रीँ अक्षयस्थितये नमः ॥
६ ॐ ह्रीँ अमूर्त्तये नमः ॥
७ ॐ ह्रीँ अगुरुलघवे नमः ॥
८ ॐ ह्रीँ अनंतवीर्येभ्यो नमः ॥

ए रीतें मंत्रपद लखियें; मध्यमां वृक्ष तथा ज्ञान पधरावियें. वृक्षने मूलें कुहाडो मूकियें. अखंम दीपक राखीयें. चोशठ मोदकनो एक थाल जरीने मूकीयें. श्रीमहावीर देवनी प्रतिमाने अजिषेक करियें. चोशठ कुमार अने चोशठ कुमारी उन्नां रहे. जघन्यपक्षें आठ कुमार ने आठ कुमारिका. ए रीतें अष्टप्रकारी पूजा, आठ दिवस पर्यंत नित्य जणावीयें. तेमां प्रथम दिव

सघी मांमीने आठमा दिवस पर्यंत जे जे वस्तु राखवी जोइयें, तेनी नोंध नीचे प्रमाणेः—

॥ प्रथम दिवसे ज्ञानावरणीकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

१ कुवानुं शुद्ध जल, २ केशर, ३ केतकी, जायनां फूल, ४ अगरबत्ती धूप, ५ पंच दीवेटनो दीवो, ६ उज्ज्वल तंडुल, ७ उत्तम नैवेद्य, ८ उत्तम फल ॥

॥ द्वितीय दिवसे दर्शनावरणीकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

१ नदीनां जल, २ चंदनकेशर, ३ मरुआ मरानां फूल, ४ अष्टांग धूप, ५ नव दीवेटनो दीवो तथा बीजो बे दीवेटनो दीवो, ६ कमोद चोखा, ७ नैवेद्य, ८ फल ॥

॥ तृतीय दिवसे वेदनीकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

१ कस्तुरी, बरासवाळुं जल, २ केशर, बरास, ३ फूलपगर जरियें, ४ पंचांग धूप, ५ बे दीवेटनो दीपक, ६ कमोदशालि अखंम, ७ नैवेद्य, ८ फल ॥

॥ चतुर्थ दिवसे मोहनीकर्मनिवारणार्थ वस्तु ॥

१ डाखनां पाणी, २ बावना चंदन, ३ जाय, केवडो अने जासुलनां फूल, ४ दशांग धूप, ५ बे दीवेटनो दीपक, ६ व्रीहि अखंम, ७ नैवेद्य, ८ फल ॥

चो

॥ पंचम दि

१ साकरनुं ... ली

नां फूल, ४ कुंद ... रक,

६ अखंड चोखा, ७ नवद्य, ८ फल ॥

॥ षष्ठ दिवसे नामकर्मनिवारणार्थे वस्तु ॥

१ दुध अभिषेक, २ सुवर्ण सार्थे घसेलुं केशर, ३ पंचवर्णी फूलें जाली भरियें, ४ पंचांग धूप, ५ बे दीवेटना दीपक, एवा एकशो ने त्रण दीपक करी वंशमालें धरीयें, ६ अक्षत पंचवर्णी चोखा, ७ नैवेद्य, ८ फल ॥

॥ सप्तम दिवसे गोत्रकर्मनिवारणार्थे वस्तु ॥

१ केशरनुं पाणी, २ चंदन केशर, ३ विविध फूल, ४ अगरबत्ती धूप, ५ बे दीवेटनो दीपक, ६ गोधूम अक्षत, ७ नैवेद्य, ८ फल ॥

॥ अष्टम दिवसे अंतरायकर्मनिवारणार्थे वस्तु ॥

१ पंचामृत जल, २ केशर, ३ मालती जायनां फूल, ४ अ[illegible] पांच दीवेटनो दीवो, एमज

वली अढी ... व

शमालें धरी

यें, ७ नैवेद्य

॥ एम आठ